(१५) मुगलयुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५६७ से ५७२ तक)

(१६) पुंडीर दाहिमी विवाह प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५७३ से ५७६ तक)

(१७) भूमिसुपन प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५७७ से ५८८ तक)

Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

Vol II.

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XIIto XXVIII.
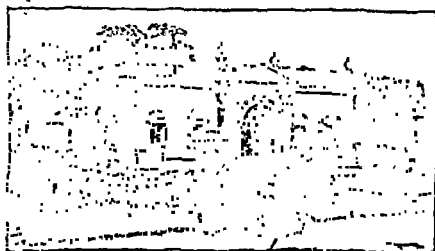
महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

दूसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व १२ से २८ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND MEDICAL HALL PRESS AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य ४)] [*Price Rs. 4.*

(१८) दिल्लीदान प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५८९ से ६०१ तक)

(१९) माधोभाट कथा।

(पृष्ट ६०३ से ६३० तक)

सूचीपत्र ।

(१२) भोलाराय समय ।

(पृष्ठ४४७ से ६१७ तक)

(२०) पद्मावती समय।

(पृष्ठ ६३१ से ६४१ तक)

(२१) पृथा व्याह वर्णन।

(पृष्ठ ६४३ से ६७० तक)

(२२) होली कथा प्रस्ताव

(पृष्ठ ६७१ से ६७३ तक)

(१३) सलप युद्ध समय ।

(पृष्ठ ५१९ से ५४२ तक)

३ ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया तो भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता। ६७१

४ तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर माग। ६७२

५ ढुढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकू। ,,

६ गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके। ,,

७ शिव जी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकें, गदहे पर चढ़ें, तरह तरह के स्वांग बनावें उनको छोड़ और जिसको पावे वह भक्षण करे। ,,

८ ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभी को गाली बकते, पागल से बने, गाते बजाते आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया। ६७३

९ इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया। ,,

१० जाड़ा बीतने और बसत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुढिका की स्तुति करते हैं। ,,

(२३) दीपमालिका कथा।

(पृष्ठ ६७५ से ६७९ तक)

१ पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो। ६७५

२ सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे। ,,

३ उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था उसकी स्त्री छल रहित थी। ६७५

४ स्त्री ने पति से कहा कि धन हीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो। ,,

५ सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञानध्यान की ओर चित्त दिया। ६७६

६ सत्यश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है। ,,

७ तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए। ,,

८ सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है। ,,

९ ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है। ६७७

१० ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग। ,,

११ ब्राह्मण ने दीपदान वर मागा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले। ,,

१२ राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ। ,,

१३ ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल सवा सेर रुई मगाई। ,,

१४ कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए। ६७८

१५ राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले। "

१६ लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देख कर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए। ६७८

१७ लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी। "

१८ तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा। "

१६ दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभीं इस नगर में न आऊंगा। ६७६

२० उसी घड़ी से उसके यहां आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली। "

२१ चारो दिशा में दीपमालिका का मान्य है। यह कथा कविचन्द ने कह सुनाई। ६७६

(२४) धन कथा।

(पृष्ठ ६८० से ७५८ तक)

१ खट्टू वन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना। ६८१

२ पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धि-मत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना। "

३ पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इस के अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो। "

४ पुतली के सिर का लेख, "सिर केटन से धन मिले सिर रहने से धन जाय"। ६८२

५ पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना। "

६ पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तूं निर्वंश मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है। ६८३

७ कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समर सिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचंद, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं। "

८ पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरो पाव देना और उसकी बड़ाई करना। "

६ पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समर सिंह के पास भेजना। ६८४

१० रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना। "

११ चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं। "

१२ रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा। "

१३ पत्र पढ़ कर समरसिंह ने हँस कर चंद पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह देवगति है। ६८५

१४ चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा

प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे। ७३५

१६८ पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू वन में चले वहां एक पत्थर का शिला लेख कमास को दिखलाई दिया। "

१६६ उस शिला लेख को देख कर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी। ७३६

१७० कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा। "

१७१ उसे पढ़ कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया। "

१७२ दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे। "

१७३ चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जग जोति कह गए हैं किए पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर कर के नागौर बन के धन को पावेंगे। ७३७

१७४ राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिमे पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं। "

१७५ चन्द को बुलाया, उस ने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है। "

१७६ रात को सब सामन्तों को रख कर रखवाली करो। "

१७७ कुछ सर्दार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया वहां एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उन को कैमास ने पढ़ा। "

१७८ उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देख कर तुम न हँसो तो पाषाण को देखो?। ७३८

१७९ सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे। "

१८० शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)। "

१८१ उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे। ७३८

१८२ विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया। "

१८३ चन्द्र ने मन्त्र से कील कर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे। "

१८४ चन्द्र की बात मान कर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए। ७३६

१८५ राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकालो। "

१८६ शिला काट कर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी। "

१८७ शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊंचा खोदा तब खजाने का मुँह खुल गया। "

१८८ बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला। ७४०

१८९ उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया। "

१९० जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले। ७४१

१९१ देवी की स्तुति। "

१९२ देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया। "

१९३ बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारागया। ७४२

१९४ चन्द ने स्तुति कर के इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी। "

१९५ देवी ने कहा जी लगा कर तू उसकी पूर्व कथा सुन। "

१९६ सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है। "

——:o:——

(२५) शशिव्रता वर्णन प्रस्ताव।

(पृष्ठ ७५९ से ८६४ तक)

(२६) देवगिरि समय ।

(८६१ से ८८१ तक)

(२७) रेवातट समय ।

(पृष्ठ ८८३ से ९१२ तक)

पृथ्वीराजरासो।

भाग दूसरा।

अथ भोलाराय समय लिख्यते।

(बारहवां समय)

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को संभरि-राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन।

कवित्त ॥ छत्तीसा[1] सुक्रवार। चैत पुष स्वित दुति पारिय ॥
भोराराय भिमंग। घोर ग्रिवपुर प्रज्जारिय ॥
भारज चांद्र सलष्य। राज संभरि संभारिय ॥
चाहुआन सामंत। मंत कैमास पुकारिय ॥
घरजान पवारह पट्टना। बोले वंक दुराइ दिल ॥
कैवार कथ्य नथ्यह तनी। पंगे राज क्रिसान पल ॥ छं० ॥ १ ॥

शुकी का शुक से इंच्छनी के विवाह की सविस्तर कथा पूछना।

दूहा ॥ जपि सुकी सुक पेम करि। आदि अंत जो वत्त ॥
इंच्छिनि पिथ्थह व्याह विधि। सुप्प सुनंते गत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

इधर चौहान तपता था उधर आबू का राजा सलष पंवार बड़ा प्रतापी था उसका वर्णन।

कवित्त ॥ तपै तेज चहुआन। भान ढिल्ली इच्छा घर ॥
वीर रूप उप्पज्यौ। पन्न रप्पै जुग्गिनि भर ॥
आबू वै अनभंग। जंग पंगौ पल दारुन ॥
जोग भोग पग मग्ग। नीर[2] पिची अवधारन ॥

---

(१) मो-चौआलीसा।
(२) को-धीर।

किती अनंत सलषेज भुत्र । धुत्र प्रमान पन रप्पई ॥
चव बरन सरन भुजदंड भर । दल दुज्जन भिर भप्पई ॥ छं० ॥ ३ ॥

सलष को एक बेटा जैत नाम का और मंदोदरी और इंछिनी नाम की दो बेटियां थीं ।

दूहा ॥ जैत पुत्र सलषेज लघु । इंछिनि नाम कुमारि ॥
बर मंदोदरी सुंदरि । त्रियन[1] रूप उनिहार ॥ छं० ॥ ४ ॥

बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदव के साथ होना ।

गाथा ॥ सो अप्पी बर भट्टं । रुद्रं बर माल थानयं भेवं ॥
षिद्धं सिद्ध सुपुत्तं । नामं जास भीमयं रायं[2] ॥ छं० ॥ ५ ॥

भोला भीमदेव के बल परामक्र का वर्णन ।

कवित्त ॥ अनहल्लपुर आभंन । राज भोरा भीमंदे ॥
देसां गुज्जर षंड । डंड दरिया से बंदे ॥
सेन सबल चतुरंग । बीर बीरा रस तुंगं ॥
अति उतंग अनभंग । त्रियन पुज्जै बल जंगं ॥
कलि[3]काल किति मित्ती इतिय । पलटि प्रीति[4] क्रत जुग करन ॥
भोरा नरिंद भीमंग बल । उभै दीन तक्कै सरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

गाथा ॥ तक्कै चालुक्क रायं । त्रैलोकं चरनयं सरनं ॥
सुरषंडं जं बलयं । सा बलयं भीमयं राजं ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीमदेव के मंत्री अमरसिंह सेवरा का वर्णन ।

कवित्त ॥ भीमराज राजिंद । राइ राइन उद्धारन ॥
अति अचंभ बलरूप । द्रुग्गपति सेव सधारन ॥
वाहन बट[5] बटबान । तुंग तेरह हिंसारं ॥
सिद्ध बटी बटवान । थान थट्टा धर धारं[6] ॥

(१) मो-त्रिनय । (२) मो-जो भीम नर रायं ।
(३) को क्ष ए-किल ।
(४) मो-रीति ।
(५) मो-चट ।
(६) मो-प्रति मे "थान थट्टा धर धारं" के स्थान पर "तुंग तेरह हिंसारं" है ।

---o---

(२८) अनंगपाल समय।

(पृष्ठ ९१३ से ९४३)

आरव्व गरव दरब दिल दल। चालुक्कां चित्तां चल्यौ॥
मंत्री सुराय[1] जूना जहर। अमरसिंघ सेवर पल्यौ॥ छं० ॥ ८॥

मंत्र बल से अमर सिंह का अमावस को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना।

कवित्त॥ जिन अमरसीह सेवरा। चंद मावसि उग्गाइय॥
जिन अमर सीह सेवरा। विप्र सब सीस मुडाइय॥
कहर कूर पाषंड। चंड चारन मिलिवत्तं॥
दुज दोपंजर षेम। देषि उत्तर घन चित्तं॥
नर नाग देव छंदा चल्ले। आकर्षे आर्वत कर॥
विदरभ देस दष्षिन दिसा। सब जित्ती पच्छिम सुघर॥ छं० ॥ ९॥

इंच्छिनी के रूप की बड़ाई सुन भीम का उसपर आसक्त होना।

कवित्त॥ जहोंरा पारक्क। सबं होढा पज्जाई॥
बारी बंभन बास। ठाम ठठ्ठा छड्डाई॥
माची माल्हन हंस। पालि आबू धर लग्गा॥
आगेंची सलषान। दई मंदोदरि सग्गा॥
आचंभ रूप इंच्छिनि सुनी। जन जन वत्त बषानियां॥
भोरा अभंग लग्यौ रहसि। काम करक्कै प्रानियां॥ छं० ॥ १०॥

आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इंच्छिनी की बड़ाई सुन सुन जैन धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो व्याकुल हुआ।

कवित्त॥ द्रव्य दार उद्दार। मरन कज्जे मुच नष्षै॥
कैषत्ता आबूअ। दिसान जितिहि मुष लष्षै॥
जेहा तुंग तुरंग। चंग जेवाइंन वही॥
पांवारी कथ भूंठ। तेसु पहिचानी रही॥

(१) ए-सुरार।

८ शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामन्तों को इकट्ठा कर के बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर सत्रु चढ़े हैं; ऐसा न हो की कायरता का धब्बा लगे और नाम हँसा जाय। ६१५

९ सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल कर के जीतना चाहिए। ”

१० सोमेश्वर ने कहा कि तुमने नीति ठीक कही पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी। ६१६

११ सामंतों ने कहा कि सेतु बाँधने में श्री-राम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस को मारने में छल किया, इसमें कोई दूषण नहीं है। ”

१२ सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तय्यारी करना। ६१७

१३ पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था। ६१८

१४ चारों ओर खलबली मच गई। रुद्र गण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे। ”

१५ योद्धाओं की तय्यारी तथा उनके उत्साह का वर्णन। ”

१६ सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए। ६१९

१७ संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है। ६२०

१८ यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुँह से बोल न सकता था। ”

१९ सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना २० दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया। ९२०

२० पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा। ”

२१ इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनंगपाल के पास जाकर पुकारा कि हे महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए। ”

२२ अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा। मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए। ९२१

२३ राज्य प्राप्त करने के लिये गत एतिहासिक घटनाओं का वर्णन। ”

२४ तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वी-राज को राज्य दिया। ”

२५ राजा, हाथी, घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परन्तु राज्य की सर्पमणि के समान रक्षा करे। ”

२६ अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला। ६२२

२७ पृथ्वीराज से मिल कर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंनें आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो। ”

२८ इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना। ”

२९ बसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं। ”

३० पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं। ”

३१ मंत्री का यह सुन कर उदास मन हो चला आना। ६२३

ओतांन राग लग्ग लिषै[1]। पट्टनवै पट्टैसरां॥
जै जैन भ्रंम उभगाइयां। तेन कूर लग्गौ करां॥ छं०॥ ११॥

देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंच्छिनी के ध्यान में पागल सा हो गया।

दूहा॥ मादक उनमादक नयन। सोषन द्रप्पन बान॥
इक सुपनंतर राग सुनि। इक दिष्टान बिनान॥ छं०॥ १२॥

कवित्त॥ मादक उनमादक। समीप[2] सोषन अरु द्रप्पन॥
बिय असोक अरविंद॥ चंद चंदन उर जप्पन॥
विमल तान उतान। सुबनि नामे इंच्छिनि सज॥
पट्टनवै पट्टयौ। लाज भग्गी[3] बर अग्गज॥
सपनानुराग बढ्ढ्यौ न्रपति। अरु ओतानन राग भय॥
पंमार सोहि टारै सलष। अनष एन आबू सुलय॥ छं०॥ १३॥

गाथा॥ दिष्टानं ओतानं। सुपनानं रागयं हुंती॥
तीनं राग प्रमानं। चालुकं रोग लग्गियं तीनं॥ छं०॥ १४॥ रू०॥ १४॥

गाथा॥ रोगंता मनमंथं। विहर्लं चंपि अंग अंगाइं॥
सुनि इंच्छिनीय नामं। फुट्टं सचेव लष्ष अप्पाइं॥ छं०॥ १५॥
लष्षं लष्ष लहिज्जै। इंच्छिनिय नामाइं फुट्ट सचाइं॥
चाउ हिसा विभूति। चतुरंगं मुक्कियं भीमं॥ छं०॥ १६॥

भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंच्छिनी का विवाह मेरे साथ करदो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा॥

कवित्त॥ तिन प्रधान पट्ठाइय। लिष्षि आबू दिसि रायं॥
तुम बड्ड घर बड्डे। बानि बड्ड चित चायं॥

(१) मो-लषै।
(२) मो-सुदृष्टि।
(३) मो-भड़ी।

३२ मन्त्री ने अनगपाल से आकर कहा कि मैं ने तो पहिलेही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान राज्य कभी न लौटावेगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए। ९२३

३३ अनगपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कमास को बुला कर पूछा कि मेरी साप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए। ,,

३४ जो लडाई करता हू तो अपनी मा के पिता (नाना) से लडता हू, और जो छोड देता हू तो अपनी हिनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो। ६२४

३५ कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानें यहाँ आकर भिड़ें तो फिर लडना चाहिए। ,,

३६ अनगपाल ने धूम धाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लडाई हुई अन्त में अनगपाल की हार हुई। ,

३७ हार कर फिर अनगपाल का बद्रिकाश्रम लौट जाना। ६२५

३८ आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड कर अनगपाल लौट गया। ,,

३९ मन्त्री सुमन्त की सलाह से अनगपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा। ,,

४० माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ आया। ६२५

४१ नीतीराव खत्री ने अनगपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया। ६२६

४२ पृथ्वीराज ने अनगपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आपको पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैला कर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं ? ,,

४३ जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म मे आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम मे जाकर तपस्या कीजिए। ,,

४४ आप सुलतान गोरी के भरमाने मे न आइए उसे तो हमने कई बार बाध बाध कर छोड दिया है। ९२७

४५ हरिद्वार में आकर दूत अनगपाल से मिला। संदेसा सुनते ही अनगपाल क्रोध से उछल उठा। ,,

४६ अनगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिख कर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र मे लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए, हम और आप मिल कर दिल्ली को विजय करें ,,

४७ दूत ने आकर अनगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ चला। ६२८

४८ सुलतान शहाबुद्दीन की सेना की चढाई तथा सर्दारों का वर्णन। ,,

सँध सगप्पन सध्यौ। चूरि चालुक परिहारां ॥
पज्जाई दो बार। बाल बांह हकारां ॥
नग हेम मुत्ति मानिक्क घन। कहि न जाइ लघ्या लियां ॥
इंच्छिनि सुचित्त चहुआन वर। तो आबू गिरि सर[1] भयां ॥ छं०॥१७॥

सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा सलष से मिलना।

छंद पद्धरी ॥ सज्जी सुभीम चतुरंग लच्छ। पट्टाय सलप पावार पच्छ ॥
तस पुत्र नाम जैतसी वीर। जित्तिया सिंघ बद्दी सधीर ॥ छं० १८ ॥
रावन सुमेघनद्दह[2] समान। भंजइं इन्द्र आरूढ थान ॥
इन भिरवि बह्वि बघबेल सब्बं। रपि आस रंन पंमार अब्ब ॥ छं० ॥१९॥
तिन बंधु भीम हम्मीरसेन। मेवाति भंजि ढिल्ली बलेन ॥
दैवत्त बांह द्रिग कमलरूप। अनपुच्छ तोइ जानिये भूप ॥ छं० ॥२०॥
दिग धरनि धरनि सलपेज धीर। भंजए जाइ धवलह सधीर ॥
बंभन सुवास पट्टन प्रजारि। ता समह भीम मंडन सुरारि[3] ॥ छं० ॥ २१ ॥
तिहो दूत आय परनाम कीन। परमार हथ्थ कागद सुदीन[4] ॥ छं ॥ २२ ॥

पंवार सलष की प्रशंसा।

अरिल्ल ॥ पांवारी परिगिह प्रनिक्कीनौ। बल कीनें बज्जो रस भीनौ ॥.
जिन ग्रम धरा भारथ धर लीनी। तीनों पन कित्ती रसभीनी ॥ छं० ॥ २३ ॥
गाथा ॥ कित्ती कित्ति गनिज्जे। जानिज्ज सलपयं देवं ॥
सैसव वै पौगंडं। किसोरं ब्रद्धयौ जसयं[5] ॥ छं० ॥ २४ ॥
गाथा ॥ पची पच गनिज्जै। मानिज्जै[6] कित्तयौ गुनयं ॥
सौयं दून प्रमानं। साहसं तेव सलपयो राजं ॥ छं० ॥ २५ ॥

पंवार सलष पर चालुक्य भीमदेव का जंपना और पत्र

(१) को ए क्र सारर।
(२) को क्र ए-सद्दह।
(३) मो-मड्न हरारि।
(४) मो० में यह पद नहीं है।
(५) मो-सजयं।
(६) को क्र ए-मडिज्जै।

४९ सिन्धु पार उतरकर बीस हज़ार सेना साथ देकर सुलतान ने तत्तार खां को अनंगपाल के लाने के लिये हरिद्वार भेजा तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला । ६२९

५० अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिए और सेना भरती करके लड़ाई की तैयारी की । ,,

५१ तीन सौ बीर जो अनंगपाल के साथ बैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने को तय्यार हुए । ,,

५२ तत्तार खां ने रात भर रह कर सबेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया । अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर उसने आगे बढ़ कर शाह को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे । ६३०

५३ अनंगपाल ने सब वृत्तांत सुनाया दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप हाजिर हो जावे तो उसे जीवदान करना चाहिए । सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो । पृथ्वीराज ने कहा ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करे अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता । ९३०

५४ पृथ्वीराज ने डंके पर चोट लगा कर सब सर्दारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला । ६३२

५५ दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सलतान से कहा । जो सब सरदार विरक्त होगए थे वे भी स्वामिकार्य्य के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए । ६३२

५६ सुलतान ने दूत से समाचार सुनकर चढ़ाई का हुक्म दिया । ,,

५७ पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा । ,,

५८ धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डंके पर चोट दी । ,,

५९ पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया । ६३३

६० आगे तत्तार खां को रक्खा मारूफ खां को बांई ओर खुरासान खां को दीहिनी ओर और अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया । ,,

६१ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की आगे कैमास को और पीछे चामंडराय को कर दिया । ९३४

६२ अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं जीते ही पकड़ना चाहिए । ,,

६३ दोनों दलों का साम्हना हुआ कैमास ने युद्ध आरम्भ किया । ,,

६४ दोनों दलो का साम्हना होते ही घमासान युद्ध होने लगा । ,,

६५ कैमास ने शस्त्र सम्हाल कर युद्ध आरम्भ किया । युद्ध का वर्णन । ,,

६६ शहाबुद्दीन को चामुंडराय ने पकड़ लिया पृथ्वीराज की जै हुई सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए । ६३७

में लिखना कि मन्दोदरी दिया है अब इंच्छिनी को भी देओ नहीं तो आबू की गद्दी से हाथ धोओगे।

कवित्त ॥ पतिपद्दार भोरा सु। बीर जंप्यौ चालुक्कं ॥
रंक अजुज्ञ पमार। भीर जानी भरतक्कं ॥
अति उतंग भारथ सु। चंग पथ पार्थ न मानिय ॥
बेनतेय सुत इंद्र। करन किती जिन ठानिय ॥
लच्छन उतंग इंच्छिनि सुनिय। तिन चालुक्क न वीसरिय ॥
मंदोद मंद मंदोदरिय। लै कग्गर फिर हूसरिय ॥ छं॥ २६ ॥

दूहा ॥ कै इंच्छिनि परनाय मुचि। रष्षि सगप्पन संधि ॥
जौ चित्तै चक्षुआन कों। गढ़ तें नष्पौं बंधि ॥ छं० ॥ २७ ॥

भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ राजा सलष का रखना, छठें दिन दरबार में आ उसका पत्र और भेट उपस्थि करना।

कवित्त ॥ तिन प्रधान आवंत। अरघ सांई सलष्प दिय ॥
दिवस पंच भोजंन। दुजन आदर अदब्ब किय ॥
षट्ट अग्ग संभ्भत्सु। पान कग्गर कर अप्पौ ॥
रस रसाल गुज्जरह। नरिंद रायं गन थप्पौ ॥
आरब्ब तेज ताजी तिसल। जर जरीन आभरन बर ॥
देषंत भेष लग्यौ बनै॥ दुञ सुदीन रिभ्भय सुनर ॥
छं० ॥ २८ ॥

सलष की बीरता की प्रशंसा और उसपर चालुक्य भीमदेव के कमर कसने का वर्णन ॥

दूहा ॥ अब्बू वै है गै समर। समर सप्पन तेज ॥
समर उभै समरंग करि। समर सुपुज्जै हेज ॥ छं० ॥ २९ ॥

कुंडलिया ॥ षेमकरन षंगार भर। बर उद्धरन नरिंद ॥
भीमजैत परतापपति। बर पद्दार बर चंद ॥
बर पद्दार बर चंद। नरन रूपह नाराइन ॥

अब्बू वै द्रुग भाम। अब्बु बंध्यौ जिहिं पायन ॥
ता उप्पर चालुक्क । वीर बंधी निम सीमह ॥
नर न करन करतार । कन्ह कुंभह वर भीमह ॥ छं० ॥ ३० ॥

राजा सलष और उसके पुत्र जैतसी की गुणग्राहकता और उदारता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ जै अब्बू वै भार । लाज अब्बू गज रष्यौ ॥
मान प्रमान समदान । अंग कवितन कवि[1] सष्यौ ॥
डोलो लंमन होइ । धाइ बज्जै रस भीरं ॥
सलष सुतनं पामार । समद लज्जा सुप नीरं ॥
मिलि मंत तंत इक्क सु करन । करक कमस सगुनं सुवर[2] ॥
संवरन मंत मंतह रवन । भान दान दिष्ये सुवर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

चालुक्य को मंदोदरी देकर नाता किया, परंतु भीमदेव ने इंच्छिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा ॥

चौपाई ॥ मंदोदरी दीनं पामारं । बर चालुक्क सरप्पन भारं ॥
सुनि इंच्छिनी तनरति अवतारं । पठय दिये परधान विचारं ॥ ३२ ॥

सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटैगा ॥

चौपाई ॥ अब्बू वै दूजो न विचारै । गढ़ अब्बू किरि उंच करारै ॥
जो इंच्छिनि इच्छन वर अप्पै[3] । गहि करि प्रान मान गढ रप्पै[4] ॥
छं० ॥ ३३ ॥

भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसी का क्रुद्ध होना ॥

छंदचोटक ॥ नर रिझ्झय देपि रसाल रसं । जिवदेव नरिंद किये बसयं ॥
जर पट्टन रष्षन अंबरयं । रज रंमि फिरंगत संमरयं ॥ छं० ॥ ३४ ॥
समहू वन हूव वधन्न दुनं । न फिरै तिन हथ्थन सीस पिनं ॥
अति उंच उतंग तुरंग तुरं । धरि चप्पि गिलंद उडंद पुरं ॥ छं० ॥ ३५ ॥

---

(१) मो-तन । (२) मो-सुचर ।
(३) को० कृ० ए-रप्पै । (४) कृ-नप्पै ।

निमिषं जुग जोजनयं बिसष। चित चंचल नारि चक्रं सुरयं ॥
घनसार विहरात आभरनं। अजु आजु निसा दिन सादरनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥
उर मंदोदरि सुंदरीयं। तिन पच्छति इंच्छिनि सुंभरयं ॥
इति दष्षिय कग्गर बंचिनियं। तहां जैतकुमार उठ्यौ सुनियं ॥ छं० ॥३७॥

जैतसिंह का तलवार संभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाषंड से आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के क्षत्रियों से कभी काम नहीं पड़ा है ॥

कवित्त ॥ तेग झारि पंमार। जैत जग हथ्थ वत्त क्रिया ॥
मंगै हैल सुगल्ह। तात अविवेक छित्ति दिय ॥
भोरा भीम नरिंद। बंध पाषंड प्रगट्टे ॥
आकर्षन मोहन मंच। जंच जुग जुग जे घट्टे ॥
धन द्रव्य देस बलि बल करन। जानै ना उत्तर अस्यौ ॥
धाराधि नाथ धारी धरनि। बहल बेल नाथह धस्यौ [1] ॥ छं० ॥ ३८ ॥
गाथा ॥ न थांनी घन घत्ती। षग्ग तमस उज्जलौ षरयं ॥
सोयं जैत कुमारं। भारथन थेव नष्थयो धरयं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

जैतसी का कहना कि पाषंड से अपना बल बढ़ाकर भीमदेव अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है ॥

कवित्त ॥ तेगझार पामार।। जैत जग हथ्थ उचारिय ॥
अरे भीम पाषंड। सच डंडह हनि जारिय ॥
हैघुर षग्ग सुभूमि। दान विद्या अधिकारिय ॥
रूपदान रसग्यान। तत्त नह मत्त बिचारिय ॥
भोरे सुमत्ति भूलै अमर। बुद्धि समर रुधनं सकल ॥
परधान बंध कीजै मतौ। रथ जुत्तह षट्टम कल ॥ छं० ॥ ४० ॥

भीमदेव के प्रधान का भीमदेव के बल की बड़ाई करके कहना कि वह पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा ॥

(१) मो-डस्यो।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-5.

THE PRITHVÍRÁJ RAŚO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XII. TO XVI.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व-१२ से १६ तक।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA, BENARES

1905.

मूल्य १)] Issued 20th September 1905. [Price Re. 1.

कवित्त ॥ वंधि पारि परधान। थान थानह द्रव संचिय ॥
ता पच्छै हेगै भंडार। अप्पन धर पंत्तिय ॥
ता पच्छै सामंत। नाथ मिलि एक सुवत्तिय ॥
भोरा राइ दिसान। सेंध सगपन की कथ्यिय ॥
आरब्ब तेज गढ़ उद्धरन। षेमकरन सिंगार सिर ॥
सुरदेस सलप सुत जैतसी। नव सुकोटि नागौर नर ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ घाट किराडू पारकर। लोद्रा चौ जालेर ॥
पुंगल गढ़ आबू सहित। मंडोवर अजमेर ॥ छं० ॥ ४२ ॥[1]

छंदत्रोटक ॥ नवकोटि मरुस्थल वीरवरं। दश अट्ठ सुअर्बुद राज घरं ॥
सर नागत रष्षिय कोन वरं। धन धन्नि नरिंद सुलोइ नरं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण हमारी सहायता करेंगे ॥

साटक ॥ जा रष्या हय गर्व प्रीछ्छित रिपं, दाशा नलं जालयं ॥
सोयं मातुल नंद वंधि सलिता[2], कावेरि नो प्रीतयं[3] ॥
जिं रष्यौ वर पानि प्रब्बत महा, गोवर्द्धनं धारनं ॥
सोयं सा हरि रिष्पि ध्रुवति वरं, जे हक्क गोक्लेश्वरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥

छंदत्रोटक ॥ सिय मंति सुमंतिय तत्त गुरं। हरि रष्पिय बालक विप्पनरं ॥
जम लोकसु आंनिय वंध तपं। क्रितकाल सुगोकुल कालथपं ॥ छं० ॥४५॥
भयकोपमयं दिवनाथवरं। हरि रष्पिय कूट सुअट्ठधरं ॥
धर धार वरष्पिय मेघघनं। जल सुक्कि तुवंत्तन बुंदजनं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कर कोमल पंकज पाइ हरी। करनी छत धाइय देव करी ॥
न्टप राज सुद्रोपद पुत्तवरं। किय कोटि दुकूल कला निकरं ॥ छं० ॥४७॥
रपि पंडव मंडव लष्पि ग्रहं। सलपानिय पत्ति सुनत्त षहं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ जिन रष्पी हरि भत्तिवर। दैहय्य हम तेग ॥
दुहुन भंति मंडन मरन। सुर नर रष्पौ बेग ॥ छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) यह दोहा मो० प्रति में नहीं है।
(२) मो०—सरिता।
(३) को-कृ-ए—थालयं।

सूचीपत्र ।

कवित्त ॥ षेमकरन पंगार[१] । मद्दन गोइंद चिलोचन ॥
पंच सत पंचौ सुवंध । स्वामि संकट रन मोचन ॥
लै संक्या[२] सिर पांन[३] । मनों पंडिवति पंच सम ॥
गोइंद सलप नरिंद । जोति रष्षन भारतभ्रम ॥
उत्तरिय गढ्ढ आवूधनी । रहिय विनग आवू न्टपति ॥
कह्यौ सुभ्भत न्टप नीठ कै । स्वामि ध्रंम रष्पन सुमति ॥ छं० ॥ ५० ॥

ऐसेही वाक्य जैतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर-जाना कि सावधान रहना तुम पर हम राजा को लेकर आवेंगे ।

दूहा ॥ इम कहि जैत सुतात सम ॥ गढ वपु रष्पौ सच्छ ॥
हम तुम जाइ सुराज पै । लै आवैं वर पच्छ ॥ छं० ॥ ५१ ॥[४]

राजा सलष का अपने यहां तयारी करना और इंच्छिनी को विवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

कवित्त ॥ गय सलषानी राव । वीर अग्गर गढ रष्पै ॥
वर आवू की लाज । षेम क्रंनह सिर भष्पै ॥
वंधो राव धरंनि । वीर पामर सुर सष्पी ॥
प्रजा पुलंत नरेस । ग्राम षट्टू दिसि रष्पी ॥
वर सुक्कि वीर धारह धनीय । हथ्थराज परषान लिपि ॥
सोमेस पुत्र प्रथिराज कों, दै इंछिनि सगपन सुविध्रि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ वर उद्धरन नरिंद । षेम क्रंनह गढ साहिय ॥
जोग मग्ग लभ्भियन । परग मग्गह मुति पाइय ॥
वहुत सिद्ध साधन सुमंडि । जोग आरंभ विचारिय ॥
मुक्कि त्रिगुन गुन गहै । छिमा सद्दै क्रमनारिय ॥
हम परत भूमि पंचह सुधर । पहिलै सोधर चंपिहै ॥
गोइंद परै वड़ गुज्जरैं । आवू आनि सुजंपिहै ॥ छं० ॥ ५३ ॥

(१) छ० को० ए०—उद्धरन ।
(२) मो०—सुंष्यो ।
(३) मो—भार ।
(४) मो० प्रति में यह दोहा नहीं है ।

भीम देव का सलष पर चढाई करने के लिये अपने सामंतों से सलाह और उन्हें उत्तेजित करना ॥

कवित्त ॥ आसोंजे रानिंग राव । परवत्त बेढाने ॥
सो बन गिरि संथान[1] । राव सामंत सिवानैं ॥
चारु षक्कि चालुक्क । राइ भोरा भुवपत्तिय ॥
कढ्ढि अपो पंमार । पंडि छंडो छत्त पत्तिय ॥
आरब्ब उधाइ मंडली । गुज्जर राइ गरब्बियो ॥
प्रथिराज राज राजंग गुर । तप्पि तरक्कस तप्पियो ॥ छं० ॥ ५४ ॥

चालुक्य और चैाहान से जो विवाह का झगड़ा पड़ा है उसका वर्णन चन्द करता है ॥

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन सों । बंधे तोरन माल ॥
ते कविचंद प्रकासिया । जे हूंदे दल चाल ॥ छं० ॥ ५५ ॥

जैतसि का भीमदेव के संदेसे पर महा क्रोध प्रकाश करके पिता से कहना कि यह कभी न होना चाहिए ।

दूहा ॥ सलष कुंवर जैतष अनुज । मंगै भोरा राइ ॥
आबू तर उप्पर करो । कै इंच्छिनि परनाइ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ तव जरिय जैत पामार । सलष नंदन इह कथ्यिय ॥
भोरा भंगुर राइ । राइ प्रज्जुन[2] सुप सथ्यिय ॥
रा भोजन भुग्र पत्ति । कुलह कुंडल कलिमंडिय ॥
सस्त्र बस्त्र करि नस्त्र । तिनां दंतन तिन पंडिय ॥
गुज्जरिय ग्रब्ब गो उप्परिय । गेहरि गल नहन कहै ॥
चालुक्क भष्य वघ्यहतनो । किम प्रगट्ट इंच्छनि लहै ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ जिन दीनो जीयन मरन । दई हथ्थ हम तेक[3] ॥
और न चिंतन चिंतिये । सो रन रष्पै एक[4] ॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) ए॰ को॰ ए॰–संथार ।
(२) को–प्रान ।
(३) मो–तेग ।
(४) मो–एग ।

सुलतान ने कहा कि दान, खड्ग, विद्या और सम्पति ये साझे में नहीं होते ।

दूहा ॥ कही बत्त सुरतान नै । जो सारँग वर बीर ॥
　　दान खग्ग विद्या विभो । एनह बंदै सीर ॥ छं० ॥ १२१ ॥

अरिल्ल ॥ दानह पग्ग विभोही बंदै । लच्छि बीर पार्वड उमंडै ॥
　　को अप्पै लच्छी परिमानं । मोहि आज चरका चहुआनं ॥
　　　　छं० ॥ १२२ ॥

गाथा ॥ भूमी द्रवै सुलच्छी । बंका बीरां इवं कियं भूमी ॥
　　नह बंकी धर कव्वं । वंक बीरांइं बंकियं होई ॥ छं० ॥ १२३ ॥

पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझसे क्या शेखी मारता है मैं उसे भी मारूंगा ॥

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती । बीर बंका अनुसरई ॥
　　बीर दान भोगवै । बीर पग्गह गुर करई ॥
　　अन्न पान रस द्रवै । लगै कादर नह अच्छी ॥
　　है पुर पग्गह धार । बीर भोगह वर अच्छी ॥
　　जंपै न बीर सारंगतं । भोरा नाम अभंग भर ॥
　　भुग्गवै कैान के भुग्गिहैं । करौं चरक्का पग्गवर ॥ छं० ॥ १२४ ॥

स्लोक ॥ न कस्यापि कुले जाता न कस्य नरनारियम् ॥
　　हयखुर खड्ग धाराच । बीरभोगी वसुंधरा ॥ छं० ॥ १२५ ॥

यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की बड़ाई करना ।

दूहा ॥ सुनिय मत्त सारंगवर । केहा देहा नेह ॥
　　दई दुहथ्थें पिंजरै । हिंदू मेछन छेह ॥ छं० ॥ १२६ ॥

छंद भुजंगी ॥ न हिंदू न मेछं बरै काहि कोयं । बरै ताहि तायं रसं बीर भोयं ॥
　　कहै बत्त भोरं सुभोराति नामं । भज्यौ इक अब्बू लग्यो सीस तामं ॥छं०॥१२७॥

कवित्त॥ तब भीमवत्त सलषान। जैत बंधौ उच्चारिय॥
भूमि तात अप्पनी। रुधिर कूटै गल सारिय॥
आदि अवनि व्योहार। धनी धर धार न छंडै।
धन लुट्टन गोआल। परह पुक्कारन छंड॥
देषियै दीन घर घर फिरै। गरुअतन हरुअत्तनै॥
निद्रा पियास छुध मोह[1] तजि। दुप्प सुप्प इक्क न गनै॥ छं०॥ ५९॥

दूहा॥ हरूअ घर घर वुल्लियै। कुजस कहै सब कोइ[2]॥
बहु उचार मुष उच्चारै। जुद्ध विनाइ लषोइ॥ छं०॥ ६०॥

सबकी सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय॥

दूहा॥ सकल परिग्गह एक किय। षट दिस पूजा सद्धि॥
कागर दै चहुआन कौं। पठइय दूत समद्धि॥ छं॥ ६१॥

दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना॥

छंद वृद्धनाराच॥ परदि पुत्ति भेदि भेदि ढिल्लि दिस्सि संभरं॥
सलष्ष राज काम साज सुद्ध वत्त विस्तरं॥ छं०॥ ६२॥
सरंन काज चालुकं सवालुकं समत्तियं॥
रषे जु षेमसी करंन राज पत्ति षिच्चियं[3]॥ छं०॥ ६३॥
चढंत यं गिरा गिरं धरा धरं सुहल्लियं॥
सतं मुषं जुसत्तसूर सच चूर चल्लियं[4]॥ छं०॥ ६४॥
सुनंत मंच मंचियं सुसोम पुच सज्जियं॥
सुसेन सोभ सोभियं सुछित्त छच छज्जियं[5]॥ छं०॥ ६५॥

सलष का पत्र पढ़कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना॥

दूहा॥ सुनि कग्गर न्टपराज प्रथु। भौ आनंद सुभाइ॥
मानौं बल्ली सूक ते। बीरा रस जल पाइ॥ छं०॥ ६६॥

(१) मो—बुध सोह। (२) मो—सोइ।
(३) को—कृ-ए-पच्चियं। (४) मो०—सतं मुषं जुसत्त पत्र सूरं पत्र चल्लियं।
(५) कृ-को-ए—सज्जियं।

शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारूंगा पीछे भीमदेव चालुक को।

कवित्त ॥ पुनि गज्जन वैसाहि। कहै भोरा भीमंदे ॥
धर पावंड निदान। वीर विद्यादिय वंदे ॥
दीहा दोती मंझ। मोहि चहुआन चरक्का ॥
ता पच्छै गल्हवान। गल्ह करिहै धर धक्का ॥
पापंड डंड रहै नहीं। जिम्मीजर कंकर वरा ॥
संभरिय काल कंटक हनौं। तापाछैं गुज्जर धरा ॥ छं० ॥ १२८ ॥

मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का दल जब चलता है तो काल कांपता है।

कवित्त ॥ सुने सद्द सुल्तान। बोल वासीठ बुसद्दे ॥
रस रसाल केरी करकि। कर चोपि लुहद्दे ॥
भीमां सौं भारथ्थ। चाव लग्गे सुरतानं ॥
मुसलमान दीवान। वंक बोल्यौ मकवानं ॥
चालुक्क राह चालंत। काल कलह कंडन करै ॥
मेवार अजेपुर गज्जने। तीन राइ तिज्जर डरै ॥ छं० ॥ १२९ ॥

चालुक्य के आगे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, परोट, मरहट्टे आदि कोई नहीं ठहर सकते।

कवित्त ॥ नहिं जालंधर वार। वंग चंगी न तिलंगी ॥
कुंकन कच्छ परोट। थट्ट सिंधू सरभंगी ॥
गवरि गवर गुज्जरी। सबर मरहठ अरु पंडं ॥
मुरि मरहठ नंदवार। राइ मालव गुन कंडं ॥
चामिली वार डर सिंधवर। सकहि न मंडन षग्ग रूकि ॥
चालुक्क राइ चालंत दल। काल कल्ह मंडै न झुकि ॥ छं० ॥ ३० ॥

जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा और जादवों को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है।

मंत्री को पृथ्वीराज ने पांच हाथी, सो घोडे, पांच सो रुपया आदि दिया और आप सलष की राजधानी की ओर गया, यह सुनकर भीमदेव कुढ़गया ॥

कवित्त ॥ पंच हस्ति सत बाजि । द्रव्य दीनो सत पंचं ॥
धरमत्ती मेवात । दियो हिंसार सुपंचं ॥
तेग एक पुरसानि । इक्क माला गुन दानं ॥
आदर संजुत होव । मुक्कि मंची अगिवानं ॥
संभाग राज सोमेस सुअ । सलप राज कीनो गवन ॥
सुनि घात राय भोरंग हिय । मनो घाव दीनो लवन ॥ छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ करि जुहार भीमंग सो । चल्यो जैत कुंआर ॥
पेमकरन पंगार कैां । दै सिर उप्पर भार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

इंच्छिनी का पृथ्वीराज से व्याहा जाना सुनकर भीमदेव का सरदारों से सलाह करना ॥

दूहा ॥ गढ साह्यै। सुनि भीम ने । कन्यावर प्रथिराज ॥
बोलि मंचि सज्जन कह्यौ । दुहूं बाजएं बाज ॥ छं० ॥ ६९ ॥

भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत भेजना की उसे चहुआन शरण न रक्खे ॥

छंद पद्धरी ॥ जं बात सुनिय सलेपज बीर । परि तत्त तेल जनु बूंद नीर ॥
प्रजरंत रोस चालुक्क भान । धर धरिग धरा पल संक मान ॥ छं० ॥ ७० ॥
बंधू समेत पाताल मेत । जमराज पून को करे हेत ॥
इंछिनी पास पीठी मिडाइ । को तिरै समुद बिन हथ्य पाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥
को हथ्य सिंघ पुच्छी जगाइ । को लेइ नाग मनि सीस लाइ ॥
को काल ग्रेह गहै पंचि हथ्य । घालै जु कैान तत अग्गि बथ्य ॥ छं० ॥ ७२ ॥
रष्पै सु कैान चालुक्क पूंन । संभर्यौ कैान चैलोक हून ॥
मैं सुन्यौ कंन जुग्गिनि पुरेस । परमार रष्पि अप मध्यदेस ॥ छं० ॥ ७३ ॥
ज्यों पियो कृष्ण दावानलेस । त्यों पिंउ गढ्ढ आबूअ देस ॥

कवित्त ॥ जिन जूना जंगाल। बाढ बाढेल उरुट्टी ॥
जिन आसावलि अंग। देव बाघेल पलट्टी ॥
जिन भरि भोरा भीम। पालि चंपी आसेरी ॥
जिन जोग बेग जहीं। निकारि अब्बू अनसेरी ॥
मकवान बोलि अगवान सौं। मकरि तास सम जुड सचि ॥
ए धरनि भीम भंजन धरुण। अप्प कियौ करतार रचि ॥ छं० ॥ १३१ ॥

सुनकर सुलतान की आंखे क्रोध से लाल हो गईं और वह उसको मारने पर उद्यत हुआ।

कवित्त ॥ कलह न छंडै काल। देस पुब्बेस पुलंगी ॥
अग्निवान द्रवि प्रभा। धाइ कूनारस मंगी ॥
मुसलमान दीवान। साह अग्गे इह वुल्यौ ॥
लरै चंपि चहुआन। काल पग्गर सं तुल्यौ ॥
सुनि श्रवन मग्ग रत्ते नयन। बयन साहि तत्ते तमषि ॥
जानै कि अग्गि सिंचिय सु घृत। ताम तेज चढ्यो विहषि ॥
छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त ॥ मद्पानी किं करै। किं जंपै मतिहीना ॥
किं वायस ना भषै। किं न कवि करै सुहीना ॥
अवध बाल किं कहै। पलह सौं किं नह होई[1] ॥
चासवंत किं करै। पुधावंतह किं जोई ॥
किं करै काम अंती कठिन। किं न करै लोभी नवन ॥
किं करै न तसकर चप्पवर। अबुध इष्ट सत्तह सुमन ॥ छं० ॥ १३३ ॥

वज़ीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, इसमें बड़ा अयश होगा ॥

कवित्त ॥ रमन रोस सुरतान। हसम हाजुर फुरमानं ॥
वर वजीर वरजंत। श्रैव लग्गौ सुविहानं ॥
अवध वसीठह भट्ट। नीति हिंदू तुरकानं ॥

(१) को. कृ. ए—पलह निघटह कि न होई।

गढ चढै मान मन धरिग भार। सम करों जारि संपारसार[1] ॥ छं० ॥ ७४ ॥
मुक्कले दूत ढिल्लीय थान। रष्षै न सरन ज्यौं चाहुआन ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भीमदेव का चारो ओर मित्र राजाओं की सेना बुलाना और चढ़ाई की तयारी करना।

कवित्त ॥ जपि भोरा भीमंग। अंग कंप्पै रस वीरह ॥
बिषम भार उद्धार। बारि बोरें अरि नीरह ॥
दिसि[2] दिसान कग्गर। प्रमान पट्टे पट्टनवै ॥
बारिधि बंदर सिंधु। बाज सोरठ ठट्टनवै ॥
कच्छे न जथ्थ जद्दव जद्दर। सेन ढुक्क भए आनि भर ॥
चालुक्क राइ चालंत दल। अम्मर घुम्मर घुमर बर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

आबू पर चढ़ई की तयारी।

कवित्त ॥ बर गिरनार नरेस। कियो साहस चालुक्की ॥
लोहानो कट्टीर। सेन बंधे भुअलुक्की ॥
आबू उप्पर कूच। बीर भीमंदे दिज्जै ॥
बर निसान सुर गज्ज। गब्भि[3] जेजे अरि पिज्जै ॥
सहनाइ न फेरिय बीर बजि। सिंधुअ राग सु आदरी ॥
पंमार भीम पूजी सहर। बजी कूह गुन गद्दरी ॥ छं० ॥ ७७ ॥

भीमदेव की सेना के कूच की धूम का वर्णन।

छंद भुजंगप्रयात् ॥ धरा धूरि पूरं। सिरं सेत नेतं। षहं षंड षंडं। उडी रेन रेतं ॥
मदं गधं भैारं। लगे भार भारं। मनैा कज्जलं कूट। कलषंठ थारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
ढलं ढाल ढालैं। चलै ब्रंन ब्रंनं। मनैां केलि पंचं। रगंचा सुब्रनं ॥
चलें चैांर चावद्दिस बात पत्तं। मनैां भैारयं भैार वासंत मत्तं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
नवं नद्द नीसान बज्ज अघातं। गजै गैन कै सिंघ कै गिग्गिरातं ॥
नवं नद्द नफ्फेरि भेरी सभालं। तरक्कंत तेगं मनैा बिज्जु नालं ॥ छं० ॥ ८० ॥

---

(१) मो-छार
(२) को॰ कृ॰ ए॰-दस।
(३) को॰ कृ॰ ए-गब्भि।

स्वामि सकल बोलंत । बघ्घ अरु सप्पा षानं ॥
जल्लान आन साद्दाबदी । चल चलाल किज्जै गमन ॥
अनचल आलिल भैरवा । पलक षान षग्गह चसन ॥ छं० ॥ १३४ ॥

छंद मोतीदाम ॥ षयं षग षत्तिय मत्त प्रमान । भयौ रस बीर चलाचल जान ॥
तमी तम लग्गि नभी नभ भान । उयौ जनु बद्दल फुट्टि प्रमान ॥ छं० ॥ १३५ ॥

शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने वज़ीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गंवारों सी बात करता है ।

रिसं रिस रत्त तयौ तम नैन । उरं घन बीर सिरं लगि मैंन ॥
हुकंम हजूर वजीर सुषान । दलं दल गब्ब भई रस पान ॥ छं ॥ १३६ ॥
वजीरन मझ्झि कियो बल साहि । लगी जनु विज्जल श्री घन चाहि ॥
करी करुना रस केलि सुभत्त । मगी वर साहि कमान अहित्त ॥ छं ॥ १३७ ॥
बुल्यौ बर गामिय गुज्ज गवार । कहै सुरतानष सेन उवार ॥
टगट्टग चाहि रहे सब लोइ । दिष्यो वर तेज अदभ्भुत सोइ ॥ छं० ॥ १३८ ॥

यह सुन मकवाना को क्रोध आगया, उसने सामंत को एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया ॥

छंद भुजंगी ॥ बढी बीर बल्ली सुझभी अभत्ती । पर्‍यौ सीस अग्गै मनो साहि मत्ती ॥
उठी छिच्छ उंची रुधिं छीन छीनं । मनौं वीर मत्ते सिवा जाल पीनं ॥ छं०॥१४ ॥
घरी एक रवि मंडलं छिद्रकारी । तुटे कंध कामंध भो जुद्ध भारी ॥ छं० ॥१४१॥

इस पर ऐसा हाहाकार मचगया ।

छंद गीतमालती ॥ ढलकंत ढालैं, चंद्र सालैं, बंध चालैं, प्रब्बतं ॥
रस रसनि रागं, बहुत बागं, बीरजागं, उवंतं ॥
उर्वी न पावै, देव गावै, सार, भावै बीरयं ॥
मकवान थानं, भेदि भानं, करि प्रमानं, धीरयं ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बहु मंत क्रंतिय, भंति भंतिय, दंत दंतिय, उभ्भरं ॥
नग नग निमानं, बुद्धि दानं, निव पारानं नीसरं ॥ छं ॥ १४३ ॥

कमके नरं पान पगं पनकैं । मनौं काल पथ्थं सुविज्जू झलकैं ॥
जलं बेथलं बेथलें तथ्य नीरं । मनौं नंपियं बान रघुनाथ वीरं ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जलं बेत पुट्टी थनं बेत तुट्टी । थलं बेत छुट्टी फनं बेत उट्टी ॥
धरं रेन उड्डी सुलग्गै अभानं । दलं बेत वढ्ढी पयानं पयानं ॥ छं ॥ ८२ ॥
करी आनि सेना सुआबू गिरद्दं । मनौं पारसं चंद आभा सरद्दं ॥
कवी वीय ओपंम चित्तं बिचारी । उरं हूव माला सिवं ज्यौं अधारी ॥ छं० ॥८३॥
चिहूं कोर डेरा कहूं पीत सेतं । मनौं ग्रीषमं अंत उट्ठि मेघ मेतं ॥ छं ॥ ८४ ॥

गाथा ॥ आभा सरदं प्रमानं । सेनं सज चालुकं वीरं ॥
छिति छचीयं छयं । जनु वद्दलं कुटि संकरं मेघं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

छंद भुजंगी ॥ निसानं निसानं निसानंन वज्जै । दिसानं दिसानं दिसानंत गज्जै ।
तमंते तमंते तमं तेज भारे । झमंते झमंते झमंकार झारे ॥ छं० ॥ ८६ ॥
पुजै नाहि वानं कमानं प्रसारे । इसे राइ चालुक्क सेना समारे ॥ छं ॥ ८७ ॥

गाथा ॥ मत्ता मेघ दिसानं । रिस्सानं चालुकं राइं ॥
नैनं तेजति तुट्टं । ज्यौं तत्ताइं अग्गियं वुद्दं ॥ छंद० ॥ ८८ ॥

आबू की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ वलि भीमंग नरिंद । गढ्ढ मप्पौ चिहुं पासं ॥
नारि गौर सावान । वीर धावै रस रासं ॥
विय ऊंचौ पट कोस । पंच सुर मध्य लंबाइय ॥
बागवान जलथान । जानि कैलास वनाइय ॥
गिरि गंग सहित तिथ्थह जहां । देवथान उद्यांन तह ॥
रिषि संत जती जंगम जुगी । रचहिं ध्यान आरंभ मह ॥ छं० ॥ ८९ ॥

भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़कर जैन धर्म मानना ।

दूहा ॥ ठानिज्जै मानिज्ज मत । चानिज्जै गुर ग्यान ॥
वेद धर्म जिन भंजए । जैन ध्रंम परिमान ॥ छं ॥ ९० ॥

अमर सिंह सेवरा की सिद्धि का वर्णन ॥

कवित्त ॥ अमर सीह सेवरा । मंच भेदं उप्पाइय ॥
जैन ध्रंम षाचिग्ग । मंच कर कग्गर वाइय ॥

मकवान का अपने चित्त में सुलतान के संदेसा न मानने पर विचार।

दूहा ॥ कही चित्त मकवान नें। नह मंनी सुरतान ॥
अप्पन अप्पन सथ्य सों। बल मंडे चहुआन ॥ छं० ॥ १४४ ॥

कवित्त ॥ करि सिहानी आन। बंग जे सुन हित हिंदू ॥
ते हिंदू मुप निंद। निगम निंदै गुन जिंदू ॥
इक्क बार सुनि बंग। सहस पातक रजपूतन ॥
नरकह सोधि नरक्कह। कवन कढ्ढै न्रक पुत्तन ॥
रजपूत मुक्ति[1] पग चित्तपरि। विधि विनान यों न्रम्मयौ ॥
कलि जाहि मिटै महि मंडलहि। पै न मिटै तन अम्मयौ ॥ छं० ॥ १४५ ॥

इधर चालुक्क राय का अपनी सेना सजना ॥

गाथा ॥ सजी सेन असुरायं। उप्पमं चंद देवियं वरयं ॥
जानिज्जै परमानं। कै चल्लियं वद्दलं साहिं ॥ छं० ॥ १४६ ॥

कविस ॥ वद्दल दल बल उभरि ॥ सेन घुंमर घट घुम्मरि ॥
सयन वयन जक्कि नयन। मयन मत्ते जनु घुंमरि ॥
अरि अरिष्ट सम दिष्ट। धिष्ट धारन धर धुम्मर ॥
अग्गि भाल विन धूम। दूसे दप्पिय गज झुम्मर ॥
चालुक्क राइ सज्जे सयन। हय हिसार न उच्चरै ॥
सिद्धान वंस सिद्धान गति। सिद्ध इष्ट गुन विस्तरै ॥ छं० ॥ १४७ ॥

उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुजाब के सिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए।

कवित्त ॥ सुनि साहाब वजीर। बोल्लि बल की अप्पानं ॥
कक्कस कर तें वर। कमान तानी लगि कानं ॥
छल कुट्टी छातीह। हनत सारंग सुपानं ॥
मार मार उच्चार। तेग कढ्ढी मकवानं ॥

(१) को० उ० क-पुत्ति।

मोर सोर पप्पीह । जीह दद्दुर सुर लाइय ॥
हथ्थ द्रुथ्थ सुक्लैन । भेद अद्धी निसि आइय ॥
नाइक्क एक दष्षिन तनौ । दष्षिन दर कूंची दइय ॥
चौसट्ठि देवि परसाद करि । मंच भेद अमरै ठइय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

भीमदेव का रात के समय कूच करना ।

दूहा ॥ चल्यौ भीम भोरा सुभर । अंधारी निसि अद्ध ॥
रैरि परी गढ उप्परै । भेद सवै वर पद्ध ॥ छं० ॥ ९२ ॥

छंद भुजंगी ॥ उसद्देति सद्दे कुसद्दं गभीरं । चयं चंद बोधं अबोधं सरीरं ॥
हको हक्क वाजी गजे मेघ नद्दं । जगे लोइ लोयं कुसद्दे कुसद्दं ॥ छं० ॥ ९३॥
गती गत्ति छत्ती छितीता छितानी । कमट्टं विमट्टं निठं जाहि रानी ॥
छती छच मंचे विमंतेति भारे । सुनी छंन चालुक्क सेवक्क सारे ॥छं०॥९४॥

कुंडलिया ॥ जिनी ओंडां हंमीर हौ । तिन सलषानौ भार ॥
दियो कोट चालुक्क कौं । सों दीहा संसार ॥
सों दीहा संसार । भीम अप्पौ गढ अक्खौ ॥
कहै बंधु बीरंम । राज पंगर गढ चक्खौ ॥
हक्यौ भीम कुमार । सुक्कि मावित्तां कोडां ॥
चल्यौ जुद्ध पंमार । गयौ हमीरसी उंडां ॥ छं० ॥ ९५ ॥

गाथा ॥ बलभे बलभो बातं । नह अच्छी बीयं भेदयौ ॥
भेदै अच्छरि कुलयं । पावारं प्राति वालायं ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ वार दीह लगि नवमि । बहुरि रिन रत्तह लग्गा ॥
पामारां चालुक्क । सेन लुथ्थिन भोमग्गा ॥
दनु सुदेव है दैयकरंन । षल हलि गिरि कंनं ॥
कोटि तिथ्थि धारीह । धरत धारह पति तंनं ॥
इम भिरत पंच दस वासरह । सूर उद्ध उद्धरन धर ॥
कर हनिग राव गुज्जर दलां । मार मार उचरंत सिर ॥ छं ॥ ९७ ॥

कवित्त ॥ मार मार उच्चार । धार धव दए भीम दल ॥
षेम करन षंगार । देषि भर भीर तज बल ॥

हैजम हुजाब सिर उच्छटी । बीजलि के अंबर छरी ॥
कंनांन भंजि षुष्परि षला । मची अग्गि उछटी परी ॥ छं० ॥ १४८ ॥

कवित्त ॥ हैजम धुकि धर पस्यौ । पस्यौ माझी मकवानां ॥
रस रसाल लुट्टीय[1] । अैब लग्गिय सुरताना ॥
गयौ साहि औसाफ़ । साष भग्गिय दुनियाना ॥
बुरे बुरौ सब कोइ । कहत संजम सुनियाना ॥
करतार हथ्थ केती कला । किये सुलभ्भै अप्पना ॥
पापंग देह मही मिलै । दीदे देषि सु सुप्पना ॥ छं० ॥ १४९ ॥

भीमदेव ने अपने दूत का माराजाना सुन बड़ा क्रोध किया और गज़नी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा ।

कवित्त ॥ सुन्यौ भीमर बध्यो । बसीठ षेलै षज्जीनां ॥
करि सिद्धानिय आन । सेट मेछाइन दीनां ॥
बंग सह कंनान । जीह जंना जन बढ्ढौ ॥
असी सहस्स सेना । सजन गोरी जर कढ्ढौ ॥
ढल्लांन मलंढो चाल जनु । असम समुद्दसेना तिरिय ॥
मय मोह छंडि रत्ते विषम । दद्द दिवान गुन दुस्तरिय ॥ छं० ॥ १५० ॥

छंद फारक ॥ रत्तानी बानी यूबानी । नीलानी होचैं सावानी ॥
भुरवानी बानी बोलंदे । सिंधानी संकर तोलंदे ॥
सोरट्ठी बह निष्हायं । धुरम जहूरहु बहायं ॥
अग्गिवान कमान सस्लायं । सर सस्त्र कमा मय यंचायं ॥
छं० ॥ १५१[2] ॥

दूहा ॥ ढल्लानं हल्लौ हलं । चैरा नंच बदंत ॥
मोरानं भुअ उप्परै । मै कुद्दा मै मंत ॥ छं० ॥ १५२ ॥

दूहा ॥ घेरानं छचं छरं । मोरानं मंथ्यान ॥
सारन्नी पष्षर जरी । हेमानी गत्तान ॥ छं० ॥ १५३ ॥

---

(१) मो–लुट्टीय

(२) यह छन्द मो० और क० प्रतियों में नहीं है ।

सिर उड्डुन उतकंठ । हंस रस कीय कटारै ॥
अति निसंक अरधंग । कमध कीनो पंमारै ॥
दह पंकधार धारह धनिय । जुरन जुत्ति जुगहर गनी ॥
ता पच्छ मुगति लभ्भय सुवर । चिंति चिंति मुनि सिर धुनी ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कवित्त ॥ आसति अस्तुति अस्त । वस्त छिची छित रष्पी ॥
कहै तो रष्पौं हेत । केइ अगय दूह भष्पी ॥
ईस अचल दिषि अचल । अचल डुल्लै न पाइ तिन ॥
धू धू धू मंडलह । सार वज्जै सारन झिन ॥
वेहथ्थ दरट्टी द्रव्य ज्यों । अचल सचल सिर दिष्षइय ॥
पंगार षेम षेमह करन । जिति किति अभिलष्षइय ॥ छं ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ अचल कहै गिरि सिर धस्यौ । तहिन तें पन पानि ॥
रुधिर सुधिर सस्त्रह पस्यौ । धन्नि धन्नि सलषानि ॥ छं ॥ १०० ॥

कवित्त ॥ रष्पि रष्पि सलषानि । जूह सलषानि पवारं ॥
बर भीमंग नरिंद । सीस दीनौ भर भारं ॥
उर्द्ध राव उद्धरन । कोट नव कोटी लाजं ॥
पुंजा पुंज पहार । लाज विभ्भूतिय साजं ॥
महनसी टंक माह मरद । गज्जिधार सिर वहिग बन ॥
जाने कि सद्द पर सद्द गिरि । सुन हंक्यौ मंतह पवन ॥ छं ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ मत्त मत्त मातंग वर । छह पत्ता मुष मंडि ॥
ते पंडे सो पंड ए । जम किंकर क्षित छंडि ॥ छं ॥ १०२ ॥

गाथा ॥ कुट्टा मुत्तिय पुहपं । तुटा रुधिराइ धार धारयं ॥
जानिज्जै षहगग्गं । जग मग्गं पेह यो पथयं ॥ छं ॥ १०३ ॥

सलष और भोम की सेना से घोर युद्ध ।

छंद भुजंगी ॥ मिले सेन पंमार चालुक्क एतं । कुहू रैन हुंहैं मनौं प्रेत हेतं ।
झरं सीस तुट्टैं विकुट्टैं बिहारं । करैं गल्ल रुज्जैं दिहाचं चिहारं ।
तरक्कंत घायं परैं पाइं कच्छी । मनौं नीर तुक्कैं तरप्फंत मच्छी ।
कियौ जुंहरं जालि बालानि तथ्यं । चढ्यौ राउ भोरा सिरं

सेना सजने पर आग लगने से अपशकुन होना।

कवित्त ॥ नीला नीनी जूह। धाम लग्गी चालुक्कां ॥
चक्कारी चाकंत। सध्य सत्तरि वै भुक्कां ॥
गोम गज्ज उक्करीय। धाम धर कंपि चलक्किय ॥
नाग भाग सत दीह। नीय तन कंप सलक्किय ॥
प्रज्जाल मान हिंचाल्ल चलि। कलि कलाप कलि उल्लटिय ॥
पहु राइ पिट्ठ छित्तंग छिति। नित नियंग सुर उच्छटिय ॥ छं० ॥ १५४ ॥
दूहा ॥ बोली [1] बंधनि चाय धन। पंमारे चहुआन।
बीरं दाइ बसीठियां। है हिंदू सुरतान ॥ छं० ॥ १५५ ॥
दूहा ॥ जित्ती धर चहुआन की। जित्ती [2] ताइ तुषार ॥
परठी पट्टनवै परत। मग्गां दान सवार ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो खुरासान के राज्य पर शहाबुद्दीन रहे तो मेरा नाम नहीं।

छंद भुजंगी ॥ करी राज भोरा प्रतंग्या प्रमानं। चवे बोल अप्पे सु उंचेच मानं ॥
रचै साचि गोरी षुरासान थानं। नहीं नाम चालुक्क भीमं परानं ॥ छं०॥१५७॥
धर्यौ नाम रजपूत सू बंभ लट्टौं। इतौ दोष दंदं दचै जौ न कट्टौं ॥
धरै ध्यान छत्री डुलै चित्त मंझै। परै त्त्रक आव्रत बुझ्झै न सुझ्झै॥ छं०॥१५८॥
जिते बाल उपवैन झूठे उचारैं। धरै नाम छत्री न सस्त्रं पचारैं ॥
इमं [3] बीर बीरं कहो भीमराजं। गजे गुंग नीसाम ईसान गाजं॥ छं० ॥ १५९ ॥

उधर शहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी।

कवित्त ॥ गज्जनेस गोरीय। सेन चय गय अपसज्जिय ॥
षां ततार षुरसान। मीर माची पव रज्जिय ॥
चय गय नर असुरान। सुनी चावद्दिस वत्तं ॥
पट्टनवै पट्टन। बीर गोरी जुध मत्तं ॥
मैमंत राज प्रथिराज पर। अप्पू वै ऊपर करै ॥

(१) कृ० को—बोलां।
(२) मो—जितीक।
(३) मो—इमं।

चपं चच्चरंची सुरंची झनक्कै। वज्यौं जानि घरियार संझ्या टनक्कै॥
रुधिं धार धारं भई भूमि रत्ती। रमैं जानि वासंत निस्संक छत्ती॥
छं०॥ १०६॥

सलष का मारा जाना, उसकी वीरता की बड़ाई॥

कवित्त॥ षेमकरन पंगार। उद्ध उद्धरन गह्यौ गिरि॥
वल बरसिंघ ततार। सार लग्गै प्रहार सिर॥
मंस अंत तुट्टई। वीर वंटई जुराज्यौ॥
जरासिंघ जोरयौ। जोर दिष्पिय ज्यौं पाज्यौ॥
दिषि मंत मत्त मत्ती उमा। जै जै जै जंपत सुभर॥
पंमार पंच पंचौ मिले। रह्यौ एक औसाफ धर॥ छं०॥ १०७॥

कवित्त॥ षेमकरन पंगार। जुरत जों हर संपन्निय॥
लिय गिर गुज्जर राइ। कंध निन हंस उडन्निय॥
सिर तुट्टै धर भिरिग। ढरत कर लई कटारिय॥
कर कत्ती सुकमंध। कंध विन करिय पवारिय॥
वरन विन्न वित्त कवित्त यौ। लष्पि पमार सुलष्पन॥
सक्क सों काल कमधज्ज किय। सुकवि चंद कित्ती भषन॥ छं०॥ १०८॥

कुंडलिया॥ अब्बुअपति पामार पह। लिय गिर गुज्जर राइ॥
ता पछ वित्त कवित्त यौ। कह्यौ चंद बरदाइ॥
कह्यौ चंद बरदाइ। कज्जभर वित्त कवित्तौ॥
पट्टन वैहै गै पलान। मुरधर संपत्तौ॥
सलष अलष करि कित्ति। सुयसु संसारह जानिय॥
करन नंद करिवार। गढ्ढ चंपत वष्वानिय॥ छं०॥ १०९॥

भीमदेव का आबूगढ पर अधिकार करना।

कवित्त॥ परे क्रुक्षिक्ष रन धीर। मरन ज्यौं जानि जन्म वर॥
पुत्र मित्र सज्जन सुलच्छि। टरे नन काल काल कर॥
धरी लच्छि धर धस्यो। धारि उद्धार पमारं॥
सह परिगह कह पुत्त। तुट्टि धारा धर धारं॥

सुरतान सेज सज्जे सुने। धर गिरजत्त रज उच्छरै ॥ छं० ॥ १६० ॥

सुलतान और चालुक के अपनी अपनी सेना सजाने पर चहुवान का भी दिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजाना।

दूहा ॥ ढिल्ली वै सेना सजय। रंजन रन रावत्त ॥
मधुर महुब्बति पानवर। दिय कग्गद गुन मत्त ॥ छं० ॥ १६१ ॥

छंद चनूफाल ॥ रावत्त रत्त दिसान। सजि चालि[1] सेन सुरतान ॥
सारुंड गोरिय आइ। बहु सेन अखेप[2] सुजाइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
प्रब्बाह सेन समुद्द। मिटि गई छित्ति सरद्द ॥
नागौर ढिल्लिय राज। हज्जार अट्ठ विराज ॥ छं० ॥ १६३ ॥
सुभ च्यारि सहस प्रमान। षट उभै सेना मान ॥
चालुक्क भोरा भीम। को काल चंपै सीम ॥
बर करै तमकत रीस। तिहि जगैं जग्गि गिरीस ॥
सोभंत्ति चालुक राइ। मनु वीर कच्छि प्रवाइ ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है।

कवित्त ॥ चाहुआन सामंत। मंत कैमास उपाइय ॥
बंदि लग्ग हुंकार। बंध बंधान उचाइय
दस गुंनां दल देषि। साजि साधन सु सुगंधह ॥
दुहु मुष्षांहीं लग्गि। बीच चंप्यौ सुखदंगह[3] ॥
गोरीय एक गुज्जर धनी। मुष विचिच धनि संभरी ॥
हज्जार दून दादस भरह। दो मिलग्गि दुहु दिसि बुरी ॥ छं० ॥ १६५ ॥

कवित्त ॥ सारुंडे साहाब। दीन सुरतान विलग्गा ॥

---

(१) कृ० मो० को–चलिय।

(२) कृ० को०–लष्ष। मो–सलष

(३) ए–मदंगी।

धुम्र धाइ भीम[1] लीनौ सुगढ । सुकल पच्छ पुंनिम सुदिन ॥
जय दंद[2] वत्त चालुक्क सुनि । नभ लग्यौ सलषान तन ॥ छं० ॥ ११० ॥

एक महीना पांच दिन आबू में रहकर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना ।

दूहा ॥ एक मास दिन पंच रहि । गढ़ मुक्यौ तिन वार ॥
पट्टन वै पट्टन गयौ । अब्बू वै सिर भार ॥ छं० ॥ १११ ॥

अपने राज्य में आकर भीमदेव ने शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आप सारूंड आइए हम आप मिलकर पृथ्वीराज को जीतैं, पत्र देकर मकवान को भेजना ।

छंद भुजंगी ॥ थपी थान थानं सुअब्बू प्रमानं । गयौ राज पट्टं सु पट्टं निधानं ॥
दियं कग्गदं साहि सुरतान गोरी । करौं भेद[3] वत्तं वधौं पिथ्थ जोरी ॥
छं० ॥ ११२ ॥

धप्यौ साहि गोरी सुसारुंड आवै । हमं सब्ब सेनं पसो कित्ति धावै ॥
दऊं गढ्ढ अब्बू रुजंबू निधानं । हनौ साहि चौहान करि पग्ग पानं ॥ छं॥११३॥
तहां मुक्कल्यौ वीर मकवान राजं । लिषे कग्गदं चालुकं राजकाजं ॥ छं ॥११४॥

मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इंछिनी के ही कारण से मैंने सलष को सकुटुंब स्वर्ग लोक को भेजा है ।

दूहा ॥ पूत परिग्गह बंधु सह । मैं मुक्कलि स्त्रग[4] लोग ॥
एकै इंच्छिनि कारनह । मति सलपानि अजोग ॥ छं० ॥११५ ॥

और मेरे मन का दुखः तब दूर होगा कि जब चौहान पर चढाई करूं, सुलतान मुझसे मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूं ।

(१) को. छ. ए–गट्ट ।
(२) को–जयचन्द ।
(३) मो–तेह ।
(४) को–स्रग ।

सोभत्ती भर भीम। राव सप्पह असदग्गा ॥
नागौरें सामंत। ईस चहुआन पिथाई ॥
अस पति गुज्जर पती। जानि म्रदंग बजाई ॥
दो बीच हजारी भट्ट हव। ग्रेहा मंत परठ्ठयौ ॥
चामंड राइ कैमास सम। पीची पग्ग बरठ्ठयौ ॥ छं० ॥ १९९ ॥

कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिये नागौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतों की सभा होना उसमें कैमासादि का अपना अपना विचार प्रकाश करना।

कवित्त ॥ मतौ मंडि नागौर। राइ कैमास विचारं ॥
दल सब्बह सुरतान। मिल्यौ नाहर परिचारं ॥
सोभत्ती चालुक्क। राइ भोरा षढि लग्गा ॥
तुक्क अवाज सजि जूह। जियन कज्जै नह भग्गा ॥
चामंड जैत उचारयौ। बाचारो[1] लंबी सुभुअ ॥
सुरतान सेन[2] कितक[3] कहै। हम ठेलैं पुरसान धुअ ॥ छं० ॥ १९७ ॥

उसमें चामंड राव और जैत राव की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ कहै[4] तो बंधौ साहि। धाय चालुक्क विडारौं ॥
हम स्वामि[5] काज सामंत। मरन तन तिनुक विचारौं ॥
अप्प अंग सुज्जीव[6]। पुत्र बंधव विजि भानं ॥
चक्रवर्ति तिन मान। बीत रागी करि जानं ॥
अंतरौ एक कैमास सुनि। मरन तुच्छ मारन बहुत्त ॥
उन असमो तन आस हम। निरगुन ए वे सहित मत्त ॥ छं० ॥ १९८ ॥

---

(१) ह को—बाचारो।
(२) ह० को०—" सेन " नहीं है।
(३) ह० को०—" कितक " की जगह " कितकक " है
(४) मो—कहै।
(५) ह० को—सामि।
(६) मो—" अप्प अग्ग मे सुज्जीव "।

गाथा ॥ मम मनरंजन भंजौ। सजौं सेनाइं संभरी देसं ॥
जो मिलई सुरतानं। भंजौं राज दिल्लियं पानं ॥ छं० ॥ ११६ ॥

भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश।

कुंडलिया ॥ कग्गर गुरिय सहाबदिस। भरि लिषि भोरा राइ ॥
तुम धरि संभरि उत गहौ। हम नागौर निहाइ ॥
हम नागौर निहाइ। बंधि संभर गिरि अब्बू ॥
जो मिलंत मुहि आइ। देउं घन अंबर दब्बू ॥
पट्टु पारक पटनेर। सीस भष्पर ही अग्गर ॥
गुज्जरवै गढ़ अत्त। लिषे गोरी दिस कग्गर ॥ छं० ॥ ११७ ॥

घोड़े, चमर, पश्मीना आदि भेट दे कर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना।

कबित्त ॥ बहन बटी सौ तुरग। चमर पसमी चौरंगा ॥
पंच घाट पंचास। अस्सि तंबोली षंगा ॥
उभय मत्त गजराज। सेत बलभद्र समानं ॥
लिषि कग्गर चालुक्क। बोलि सारँग मकवानं ॥
सालोभ अंगनन झूठ मन। चित उदार सची कहन ॥
इन दूत सुलच्छिन होहि नृप। तब सुराज हथ्यह गहन ॥ छं० ॥११८॥

पत्र पढ़कर सुलतान ने कमान खीचकर कहा कि या तो मैं म्लेच्छों को मारूँगा या खुरसान ही में रहूंगा।

दूहा ॥ सुनि कग्गर गोरी गरुअ। कर षंची कम्मान ॥
कै भंजौं मेछान दल। कै रंजौं षुरसान ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कबित्त ॥ षां ततार षुरसान। षान न्याजीषां रुस्तम ॥
षां पिरोज पाहार। बली निसुरत्ति जुद्ध जम ॥
तुंगीषा निरहुंति। अग्गवानी दल पानी ॥
है उजबक्क उज्जाक। रेह रष्षन मै दानी ॥
चालुक्क लिषे कग्गद जुवै। बषतषान दस्सन दुनम ॥
हंमीर मिले हंमीर बर। बर भीमानी भीम रम ॥ छं० ॥ १२० ॥

बग्गरी अर्थात् देव राव बग्गरी का कथन।

कवित्त ॥ पहिल्ले भंजौं भीम। कहिग बग्गरी विसाल्ले ॥
मदनसीह[1] परिहार। देव दुज्जर मुंछाल्ले ॥
राज दुअं जद जद्दव। जीभ जहो जा मानिय ॥
षो[2] छाडी सारंग। देव पट्टे पर थानिय ॥
चालुक्क चंपि धूनी धरा। सो सुरतानह संभरी ॥
बेदलह धाइ वधाइयां। बोल उचा उंचा करी[3] ॥ छं० ॥ १६८ ॥

राव बड़ गुज्जर का कथन।

कवित्त ॥ रा प्रथिराज प्रसंग। राव बोल्ले बड़ गुज्जर ॥
तिन तांमी तरवारि। साह उप्पर दल दुज्जर[4] ॥
कैमासै गढ़ सौंपि। कह्यौ कोटां रा रष्षन ॥
तुं मंची सस्त्रधार। भार भारी भर[5] भष्षन ॥
आलोच[6] अषारी संभरिय। मति विहत्त ते बत्त हुअ[7] ॥
आरीर हजारी पंच सें। चाहुआन पत्त घत[8] तुअ ॥ छं ॥ १७० ॥

लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चाहुवान सेना फेरता था वहां जा मिलना।

कवित्त ॥ लोहानौ भयौ अग्ग। तीन सै पंच हल्लक्किय ॥
पंच हजारह लेन। एक दस अठ्ठह भेरिय ॥
उच्छंगी संनाह। टारि ते सुभट सनेरिय ॥
मिल्ले जाय जहां अग्ग*। फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढाल वैरष बनिय। पज्जूनह सो टारियह ॥
अस पत्ति सेन नष षग्ग कहि। सावन सार सुनत्त यह ॥ छं ॥ १७१ ॥

---

(१) क्ष को०—मदनसिंह। (२) मो—जहा।
(३) मो—'उचा उंचा भरी' की जगह 'षाल उबाए डंभरी।
(४) को० क्ष—उज्जर। (५) क्ष० को—हर।
(६) मो०—आलोप।
(७) मो०—"मति विहत ते बत्त हुअ" की जगह—"मत्त बहत्तति बत्त हुअ"
(८) मो.—वत्त।

सामंतो का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग किए, एक चामुंड राव जैतसी के साथ सुलतान पर चढ़ा एक और दूसरा चालुक्क भीम देव पर।

कवित्त ॥ मतो मंडि सामंत। सेन बंटे चहुआनं ॥
जैतसि राव चमुंड। मुक्कि कैमासहथानं ॥
अड्डे ए संबोधि। चंपि चालुक मुप लग्गा ॥
जित्ते मिल्ले संभरी। जोग सद्दै अप भग्गा ॥
बंटई फौज प्रथिराज भर। अर्क बार राका चरी ॥
बर लाज लई धर संभरी। संभरि बद्द कंधह धरी ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दुओरी चढाइयों की सेना की शोभा का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ बँटी फौज दूनों चढ़े चाहुआनं। भरं स्वामि दूनों भरे चित्त थानं ॥
तिनं की उपंमा कबी चंद पठ्ठे। मनौ कर्क चरु मक्र निसिदीह बठ्ठे ॥
छं० ॥ १७३ ॥

दुई इक्क मन्नैं उमन्नै मथाई। करी संभरी सत्य दूनो दुहाई ॥
चितं मुष्प उचं दिपै चाहुआनं। मनौ संमरी बाल उग्गो बिभानं ॥
छं० ॥ १७४ ॥

फिरै उंच तेजं तुरं गंति ताजी। जिनै[1] देषनै नैन गत्यैं[2] न लाजी ॥
चचै बाग उट्टे चुटक्कै चरेवं। मनौं मंडियं मौज केकी परेवं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
पछू पाइ मंडं तनं चित्त झंपी[3]। मनौं पातुरं चातुरं तं बिसंपी ॥
कबी चंद ओपंम दंती करत्ती। मनौं कज्जलं कूट धावै धरत्ती ॥ छं०॥१७६॥
तिनं[4] उप्परं ढाल नेजे सुरंगं। तिनं ओपमा चंद चिंती सुचंगं ॥
जरे पाटनारी बिचैं हेम गुंथे। मनौ चम्मुरी केलि जुग मेर मंथे ॥ छं० ॥१७७॥
ठनक्कंत घंटा चलैं अंग मोरैं। मनौं कूलटा कैलि चित चालि चोरैं ॥

(१) मो०–तिनै। (२) कृ० को० मो–गति पैंत ॥
(३) मो.–चपी।
(४) कृ. बिनं। को. मो.–तिनं।

छंद त्रिभंगी ॥ संचारी देसं, कुंजर भेसं, करि पेडेसं, शृंगारं ॥
आकर्षन मंचं, एक सचरत्तं, दर्पन हस्तं, कर्नारं ॥
कबरी करतारं, कज्जर सारं, हार सुधारं, भिम्भारं ॥
मुष मंडन नीलं, कर नष नीलं, नेवर[1] नीलं, सुद्धारं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
वै संधि समानं, उप्पय जानं, कव्वि वषानं, रितुराजं ॥
रितुराज चढंतं, फागुन अंतं, वत्ति आमंतं, इन साजं ॥
हरि हरि भारं, मुष उद्दारं, बिहु बिम्भारं, थनथोरं ॥
घन घंट किसोरं, मुष तंमोरं, प्रोढन भोरं, इन जोरं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
जावक रंग पायं जेहरि भायं ओपम आयं मिलि चंदं ।
कंचन घर[2] घुघ्घर बजि रस दुभ्भर रति समउभ्भर मैजानं ॥
पीरे घन भौरं, लगि मन मोरं, अग्गी सक्तोरं मन मालं ।
अलि अलि वेकारं चल दिन तारं ससि सम रारं पहु रारं । छं०॥२५३॥
चलि चंचल नेनं, संभरि बेनं, कवि छवि देनं पचिहारं ।
नर नागन ओरं, देवन जोरं, रचि पचि[3] ओरं, तन थोरं ॥
कटि किंकन रोरं, गंध्रव ढोरं, ढपे सरोरं, सिर दोरं ।
चिहु चकित नैनं, नट्ठिय[4] ऐनं, मधु रस वैनं रस सेनं ॥ छं० ॥२५४॥
ढल कंतिय वैनी भिंभरनैनी, जुग फल देनी रस मैनं ।
बसतर तन मंडिय भूषन थंडिय गुन बहु मंडिय दुपछंडी ॥
तारक विन सस्सिय आभा लस्सिय भाइ प्रकासिय भव छंडी ।
आवरदा लज्जिय संमर रज्जिय, नन नं नज्जिय, थन थोरं ॥छं ॥२५५॥
चल चंचल नेनं, मधुरित वेनं, भंभरि भैनं, बनि रोरं ॥
प्रज्जंक सुगंधं नव नव नंधं रुवि नावंधं हरि छोरं ।
आचिज्ज सरस्सय किंकन कस्सय हंहं हस्सय दुजदोरं ॥ छं०॥२५६॥
गाथा ॥ पारवती जिन मंन्नी । कामनपं रषियं बरयं ॥
इन दिष्टि सुधामय बाले । अनंग नाम अंग सो मिलयं ॥ छं० ॥ २५७ ॥
छंद नाराच ॥ अनंग अंग अंग मांन अंग अंग नितयं ॥

(१) मो०--भीलं। (२) मो-घन। (३) मो०--जर। (४) मो०--तुट्टिय।

झमैं दंत दंती सुनेनं[1] विराजै। मनों विज्ज मत्ता नभं मध्य छाजै[2] ॥ छं०॥ १७८॥
मुषं सूर सूरं सुमुच्छी विराजै। तिनं चंद बीजं गतं[3] देषि लाजै ॥
पटे वीय पासं उपंमा सुवव्वो। मनों राह बीयं रनं [4]चंपि रव्वो ॥छं०॥१७९॥
सजे आवधं सूर छत्तीस उव्वे। मनों राह रूपं ससी कोटी दव्वे[5] ॥
करी सेन गोनं मिलानं दवानं। चढी वेय बाजू सरित्ता किजानं ॥छं०॥१८०॥
गह्यौ मुष्ष गोरी प्रथीराज राजं। मनौ राह अरु भांन मिलि जुद्ध साजं ॥
मुषं रोकि सुर्तान को चाहुआनं। उते रोकि कैमास भोरा मुहानं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ षीची षग्ग परट्टि बर। वर भीमंग चालुक्क ॥
तिहुं दिस तिहुं बर धाइया। ज्यौं पच्छिमी आरक्क ॥ छं० ॥ १८२ ॥

कुंडलिया ॥ मुच्छ उच्छटिय वंक भरि। दसि कपोल भय लोल ॥
जौं जंबुक वर घत्ति है। तौ सिंघानै तोल ॥
तौ सिंघानै तोल। लोल लंबी चलि बाहं ॥
मनौं बीर सौ अंग। उठे सिर गंग प्रवाहं ॥
तन उतंग आरत्त। मत्त आरत्त सुदिट्ठी ॥
मानौ चालुक राय। देव दूसासन उट्ठी ॥ छं० ॥ १८३ ॥

इधर सुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उधर भीम से लड़ने के लिये चौहान का नागौर जाना ॥

दूहा ॥ रोकि मुष्ष सुरतान को। चहुवान दै वान ॥
बर बसीठ भोरा सुभट। चलि नागोर निथान ॥छं० ॥ १८४ ॥

छं० विअष्षरी ॥ नागौरें चहुआन पिथाई। चंद विअष्षर छंदह गाई ॥
सोभती चालुक मुष लग्गा। नागौरें गोरी दल षग्गा ॥ छं० ॥ १८५ ॥
असपति गजपति नरपति बीरं। धाए तिहुं दिसि सज्ज सरीरं ॥
ज्यौं कुरषेत किस मति कीनी। भारथ बेन सेन मति भीनी ॥ छं० ॥ १८६ ॥

(१) को. क. मो.–सनेनं। (२) मो.–साजे।
(३) मो.–गती। (४) मो.–रतं।
(५) मो–हव्वे।

कि वाल काम साल कांम काम काम पत्तयं ॥
मनों कि सेंन सागरं सुबुद्धि ताक सोदयं ॥
मनों कि हाय भावकै विचित्र चित्त सोधयं ॥ छं० ॥ २५८ ॥

कवित्त ॥ अंग चरित्र कि चित्त । [1] चित्तं मनमथ विकारिय [2] ॥
मानों सेनं तरंग[3] । [4] अनँग आनंग प्रचारिय ॥
किधौं जोग मन भजन । रजनि सायक सुपसागर ॥
मानों मयन रवंन । सेत सज्जी रति नागर ॥
सरिता सुरूप[5] छोइन लहरि । रहै मीन मन मोर [6]परि ॥
घन हाइ भाइ गुन भाव सम । कवि का ब्रंनन करै[7] करि ॥ छं०॥२५९॥

आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मंत्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है ॥

गाथा ॥ आचिज्ज बालचरियं । किंहो जंम्म जम्म विन हरियं ॥
कै विधि पुब्बह लिषियं । जो मन मारुत सुष सुषांइ [8] ॥ छं० ॥ २६० ॥

वचनिका ॥ प्रथम सदा दुज्जन राइ कैमास मंत्री दुष्टां तो ॥
उन संतो कामां तो ॥
अमर महा तम देवि प्रसादां तो । कैमास दुष्टां तो ॥ छं० ॥ २६१ ॥
दूसरे हंस राव बोल्यौ ॥ दुर्लभ राइ कुमारां तो ॥ पाचांतो पानिग्रहनांतो ॥
पर्यंकांतो कामांतो । रति सांतो घट होलांतो ॥ छं० ॥ २६२ ॥

छंद त्रिभंगी ॥ घनं नंकि घटंतो भजि भजि मंतो । इय कलि तंतो [9] गुनवंतो ॥
सकति गुन सुंदरि अंमरि संचरि मिस्रन मंजरि रतिवंतो ॥[10]
लवली पुपफं जरि करकिय पंजरि मिलि मीनं जरि[11]जुगजंतो ॥
विक्षित्त सिर मंडिय ह्वां प्रभु मंडिय प्रभु मन मंडिय सुभ संतो॥छं०॥२२६॥

दूहा ॥ दूरत [12] बाले बाल गुन । रहो चित्र परिमांन ॥
कै आई अछि लोकतें । कै अमरेष वषांन ॥ छं० ॥ २६४ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर । इह आचिज्ज सुकीन ॥
धनि मंत्री खेवर अमर । दाहिम [13] सुबल सुकीन ॥ छं० ॥ २६५ ॥

---

(१) क० मो०--चित्त । (२) मो०--आधिकारिय । (३) मो०--तुरंग । (४) मो० अंग । (५) मो०--संपूर ।
(६) मो०-- तीर । (७) मो०--कहे । (८) मो०--दुषाइं । (९) मो०--जयवंतो ।
(१०) मो०--यह तुक नहीं है । (११) मो०--'मिलि मीनं जरि' की जगह 'मिलि मिलि नंजरि' पाठ है ।
(१२) मो०--दूरति । (१३) मो०--दाहिमा ।

सामदान करि भेद सुदंडं। बंधे वर चहुआन विपंडं ॥
जिन चहुआन परहर लीनी। वहुत दोष देवत्तन भीनी ॥ छं० ॥ १८७ ॥
सुवर बीर कीनो वर अंसं। किल्ल सुगोकुल मथुरा कंसं ॥
गोरी वै मद पान उमत्ता। तिन वसीठ हंते विन मत्ता ॥ छं० ॥ १८८ ॥
पिम्भ चालुक्क निसान वजाए। दल सम्रुच सजि दुभ्भर धाए ॥
दुहुं वंध्यौ नर वैर प्रमानं। उत गोरी सन्हौ चहुआनं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
चालुक मतौ विचार न कीनौ। अमर सीह बोल्यौ मति भीनौ ॥
भैरूं भट्ट सुवंभन लीला। करौ मंच वर मंच अकीला ॥ छं० ॥ १९० ॥
शुद्ध मंत बंधौ सुरतानं। अरु गोरीसाचौ[1] चहुआनं ॥
छल वल करि कैमासह वंधौ। सुचि सुमंच सुचि क्रंम[2] विरुधौ ॥ छं० ॥ १९१॥

कवित्त ॥ मिलि धर भीमंगराव। चाव पत्तौ पति गुज्जर ॥
विषम वैर उद्धार। सार धोरत्त सुदुज्जर[3] ॥
चाहुआन सुरतान। काम कंदल क्रत लग्गं ॥
देवंग बद्दल सीम। मार जरजीज सुजग्गं ॥
कलमलिय उअर[4] परताप तन। क्षुध पियास निद्रा गमिय ॥
अनुराग तरुनि पल पेष जिय। दुअ दुराह चालुक दमिय ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवित्त ॥ सोभत्ती द्वै गै उभार। दल अरि संपत्तौ ॥
सुभर सार भीमंग। गज्जि गज्जन अतिरत्तौ[5] ॥
आयस रहसि विचार। मुष्य मंची आभासिय ॥
तिहि निसाह परधान। अंध लच्छी उप्पासिय[6] ॥
पामार राम रन उद्धरन। गुर गुरीठ पैरंग गुर ॥
रानिंग भ्माल पग भ्मालि नर[7]। वीर देव वघेल धुर ॥ छं०॥ १९३ ॥

(१) को० कृ० मो०—सन्हौ।
(२) मो०—"सुचि सुमंत्र सुचि क्रंम विरुधौ"— की जगह "सुचि सुक्रंम सुचि मंत्र विरुद्धौ।"
(३) मो०—उज्जर।
(४) मो०—चरि।
(५) मो०—असि अत्तौ।
(६) मो०—उसासिय।
(७) कृ०को० मो०—भ्रल।

अमर सिंह के मंत्र के वस में कैमास ऐसा प्रवल स्वामि भक्त मंत्री फँस गया ।

कवित्त ॥ जिन मंत्री कैमास । द्रव्य उद्धरि धर लीनी ॥
जिन मंत्री कैमास । प्रनै जद्दव कुल पीनी ॥
जिन मंत्री कैमास । लियो पट्ट निधि धारी ॥
जिन मंत्री कैमास । जंग संभरि उद्धारी ॥
मंत्री अनास कैमास सों । मति उचार अमरा कियो ॥
गंधर्ब घाट दुर्गा विसार । मंच विसेषन जे भयो ॥ छं० ॥ २६६ ॥
जा दिपंत मंचिदसु । पंचदस वयन प्रपत्ती ॥
नर्वा वध्यो मेदान । राज मंगल गुन रत्ती ॥
होत बरस नव दून । जाइ थट्टा रन भंज्यौ ।
उभै वीस इक मास । अट्ठ अद्धें गुन सज्यौ ॥
भंजयो वीर वंभनति वस । अव अमंच मंची [१] कियो ॥
कैमास भयो धन वसि विपन । मंच सत्त सचव गयो ॥ छं० ॥ २६७ ॥
दूहा ॥ यों [२] वसि भयो कैमास वर । ज्यौं रोगी भेषेज ॥
ज्यों नट वसि कपि नंचई । ज्यों त्रिय वसि पति सेज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

कैमास ऐसा मंत्रमुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज के वशवर्ती हो गया ॥

अरिल्ल ॥ यों वसि कियो दाधिमों प्रमानिय । कोह मोह लोह मद ठानिय ॥
इक[३] आंन फिरी [४] चालुक्क मांन की । मेटी आंनि प्रथीपति जानिकी ॥
छं० ॥ २६९ ॥
दूहा ॥ कियो वसि कैमास तवां । अमर मद्दानम उट्ठि ॥
सकल सद्दर भीमंग वर । प्रयुक्त आंनि संपुट्ठि ॥ छं० ॥ २७० ॥

कैमास के वश होने से नागौर में भीमराय चालुक्य की आन फिर गई ॥

कवित्त ॥ मंत्री भो कैमास । काम न्टमरो नेह जिहि ।
सांमि ध्रंम सुक्कयो । नीत मुंकी अनीत ग्रहि ॥

(१) मो०--मुक्ती । (२) मो०-- वति ।
(३) मो० 'इक' नहीं है । (४) क्र--" आन "--इतना और अधिक है ।

कवित्त ॥ सोढा सारँग देव । गंग डाभी सु गुज्जगुर ॥
बर चाविग्ग[1] सुदेव । धरि बाघेल ध्रंमधुर[2] ॥
अमर सीह सेवरा । बीर विद्या बल जासं ॥
मिच अह मिलि काज । चिंत चिंतिय चिंत सारं ॥
उच्चरै गरुव भीमंग सब । करौ मंत्र उच्चार चित ॥
पंमार सरन चहुआन गय । लहौ हीर सगपन्न हित ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सब सामंतों का गुर्जर नरेश से कहना ॥

छंद पद्धरी ॥ सम कही सवन गुज्जर नरेस । चिंतौ सुसब्ब कारन सुरेस ॥
पम्मार सरन चहुआन रष्ष । औगुन अनेक अष्षेव नष्ष[3] ॥ छं० ॥ १९५ ॥
साहाब दीन सारंग सद्धि । उभ्भरे कोप बोल्यौ विरुद्ध ॥
चिंतेव चित्त सज्जौ समंत । सो कज्ज लज्ज मनकंध संत ॥ छं० ॥ १९६ ॥
उच्चरिग नाम सारंग देव । पुच्छो सुराव पुरंभ भेव ॥
सनमध सगप्पन चाहुआन । उच्चरिग मंत चिंतौ उरान ॥ छं० ॥ १९७ ॥
जै जंपि तांम पैरंभ राव । बूझै न मंत कौ अंम ठाव ॥
अपराध कौन पम्मार कीन । ताहन्य मदोदरि तुमहि दीन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
अब रचौ बुद्धि सो राज सार । सब छोड़ सोइ लग्गी उद्दार ॥
उच्चरिग भाल रानिंग ताम । गत सोच[4] न कीजै षत्त काम ॥ छं० ॥ १९९ ॥
पतिसाह बैर बंध्यौ विराह । संमाज हूह मनु सिर गजाह ॥
बघघेल सुजंपै बीर देव । अनभूत भेव कारज्ज एव ॥ छं० ॥ २०० ॥
सनमंध कुंवर कचरा सुकाज । ता सोंह सगप्पन संधि[5] लाज ॥
तुम करहु संधि सम चाहुआन । मिलि जुरौ जुद्ध सुरतान ठान ॥ छं० ॥ २०१ ॥
इन भंजि षित्त गुज्जर नरेस । षिति काज किित्ति बहु असेस ॥
सेवरा ताम तमि अमरसीह । तुम कही बत्त सांची[6] सलीह ॥ छं० ॥ २०२ ॥

(१) मो०—बारचिक्र ।
(२) मो०—धर्म्मधुर ।
(३) मो०—तष ।
(४) मो०—चीत ।
(५) मो०—बंधि ।
(६) मो०—संची ।

मादक उनमादक समप्पि। सोषन द्रव बानिय ॥
बंध भ्रंम्म कंडयौ। अंध काश उनमानिय ॥
लज्जा सुमंत मन संकि रह्यौ। रवि पति पंक अलुझयौ ॥
चालुक्क आंनि नागौर फिरि ॥ मरन अंध नन सुझयौ ॥ छं० ॥ २७१ ॥

चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ॥

आनि फिरी सीसंग। नैर नागौर घरं घर ॥
बसि कीनौ दाहिम। धरनि भौ कंप धर द्दर ॥
सुपन बीर बरदाइ। भरकि उठ्यौ जु चरित तहं ॥
जहं मंची भर सुभर। करिग बसि बसन देव जहं ॥
धूमंग धूप डंबर परिय। झिल झिलंत डमरू करह ॥
दनु देव नाग सब बसि करन ॥ कितक बंध बुद्धी नरह ॥ छं० ॥ २७२ ॥

यह जानकर चन्द ने देवो का आह्वान और उसकी स्तुति की।

दूहा ॥ इह चरित दिषि मंत तहां। कटक संपती अप्प[1] ॥
चंद जप्यौ जप जुगति सम। निसि सुदनंतर जप्प[2] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

छंद भुजंगी ॥ चढी सिंह देषी प्रक्रति पुरुष्यं। महा तेज जागुल्य चंद रुष्यं ॥
दिखे वाक वानीं समानी न जंपी। कुकंपे कपूरं नचे मेर तंपो ॥
सुभं सेत स्यामं रगं रत्त पीतं। मनो दिष्षियं धनुष नभ अभीतं ॥
बजै डक्क डोंरू चिसूलंत हथ्थं। स्वयं वाक वानी बिराजंत तथ्थं ॥
मिल्यौ अमर राहं सु कैमास भानं। भयौ अंधकारं दलं सा वयानं ॥
बधे जेन घहं रुध्धं अंधकारं। गई मत्ति चंदं भयौ सोत तारं।
कवो दिष्षियं रूप सा दिव्य अग्गै। पताल[3] नषं सिष्ष ता अभ्भ लग्गै ॥
जयं जै जयं जै [4]जपै चाहुआनं। तवै चंद कव्वी परतीत मानं ॥
उमा कै विसासी परतीत पाई। जहां अव्विसासी तहां देवि नाई ॥
उठ्यो चंद आसी पुरं प्रात राई। दई निरत नाही चहूवांन जाई ॥
किधौं केवलं मरन मरनं विचारौं। किधौं जैन भ्रमं जुगं पाइ टारौं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला।

दूहा ॥ सुकविचंद चल्यौ सुनिज। पुर नागौर निधांन ॥
जहां कैमास पलटि तन। करत केलि अह्वांन ॥ २७५ ॥

---

(१) मो०—आय। (२) मो०—पाय। (३) पाठांतर—बलानं। (४) मो०—जंपियं।

जलि [1] वचन येद भीमंग राव । चहुआन थान उचयौ दाव ॥
बंधिये बंध उत्तंग साव । उध [2] गज्ज गाच प्रथिराज राव ॥ छं० ॥ २०३ ॥
प्रथिराज काज कैमास अथ्य [3] । सामंत सूर सब तास सथ्य [4] ॥
करि अथ्य माहि विद्या अभूत । अति दुष्ट अयकारी सनूत ॥ छं० ॥ २०४ ॥
बसि करौ जाइ दाहिंम सोइ । चहुआन काज बूझै न जोइ ॥
बसि करौं सब्ब सामंत सूर । बल द्रव्य दुष्ट [5] अथ्यीस पूर ॥ छं० ॥ २०५ ॥
उद्दरौं आनि नागौर देस । भीमंग बढ्ढि कित्ती असेस ॥
प्रथिराज आइ लग्गौ [6] सुपाइ । सामंत सूर भर सथ्य आइ ॥ छं० ॥ २०६ ॥
वसि करौं सब्ब दल सजौं सार । भंजों सुजाइ साचाब भार ॥
खनि येत जित्त गज्जन नरिंद । जस बढे पहुमि उद्दार इंद ॥ छं० ॥ २०७ ॥
भति सुनी भीम सब अमरसीह । भल भलो पढ्ढि सब भषी लीह ॥
नागौर अमर सज्यो पर्यान । निरमत्त सथ्य सज्जै सयान ॥ छं० ॥ २०८ ॥
भैरव सुभट्ट वंभन सुलील । चारंन चंद्र नंदन छबील [7] ॥
लिय द्रव्य सब्ब सथ्यां सुभार । नागौर चले मति मंच तार ॥ छं० ॥ २०९ ॥

फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बांधने का पाषंड करना ।

दूहा ॥ इह कहि गहि वज्जन बिलसि । बज्जि निसान निघाय ।
करि पाषंड सुअमर बर । बंधन दाहिमराय ॥ छं० ॥ २१० ॥

पाटरिया रान का कहना कि कैमास को छल करके बांधूंगा ।

अरिल्ल ॥ छल करि बर बंधौ कैमासं । सजौ सेन सुरतानह पासं ॥
बोलि [8] रान पाटरिया बीरं । झाला अनी साधि सो धीरं ॥ छं० ॥ २११ ॥

(१) मो०—लनि ।
(२) मो०—" उधगज्जगाह " की जगह " उधंग जंग " ।
(३) मो० क०—अथि ।
(४) मो०—सथि ।
(५) क० को०—द्रष्ट ।
(६) मो०—लागे ।
(७) को० क०—सुबील ।
(८) मो०— बोलीय ।

नागौर पहुंच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर यह चरचा सुनी।

छंद मोतीदाम ॥ जहां तहां गल्ह सुनी परवांन। सुमित्तिय दांमय छंद बषांन ॥
जहां महां गल्ह सुनी परषांन। सुमि[1]त्तिय दांमय छंद बषांन ॥
बजी ग्रह ग्रेह घरं घर बात। मनों चिन उड्डिय वाय अघात ॥
कियौ बसि दाहिम मंचिय राज। बजी सुर सब्ब अकित्तिय बाज ॥
उडी बर नैरनि नैरनि नत्त। गई अजमेर सुनी सनवत्त ॥
धरद्धर कंपिय भ्रंम परांन। भयौ बसि दाहिम देव सुजांन ॥
सुनी चहुआंन कही कविचंद। भयौ न्रप बत्त अगाह दमंद ॥
स पठ्ठय बत्त जित्यौ कयमास। वरैं जिन षग्गह पिंचिय आस ॥
भयौ सपनंत चल्यौ कविचंद। मनों मकरंद उड्यौ रस भिंद ॥
सपत्त सुतथ्थ महा कवि वीर। जहां कयमास पलट्टि सरीर॥छं०॥२७६॥

यह देखकर चन्द ने बड़े क्रोध से भैरो तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया।

दूहा ॥ दिष्पि नयन झल हलि भदौ। हल हल हल्ल्यौ अंग ॥
क्रोध लग्गि किलि कुप्पयौ। दिष्पित डिंभ नरंग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

छं० भुजंग प्र० ॥ कहै चंद घंडो अहो भद्द भैरूं। तुवं लुट्टि विप्रं तनी लच्छि जोरीं ॥
अहो चारनं नंदनं दीन सानं। घटं मध्य काली कलं कल किलानं ॥
मयं घट्ट घट्टं बमंडंन जोरं। पुत्तं देव बोलै डुलै होइ सोरं ॥
थियो घट्ट थप्पे हयं थरथरानं[2]। जयं जैन भग्गी भजं भरभरानं ॥
कहै कोनं आरंभ जीत्यो सुजैनं। वजी हक्क चंदं लग्यौ सीसगैनं ॥
थरं थप्पि थानं थियं घट्ट मंडे। षजै सस्त्र दूनों जिनें सद्द सडे ॥
द्रुगे धाम धामं पियं पट्ट पांनी। ढिल्ली जैन भ्रंमं सबं राजधानी ॥
फिरे पक्खिमंचं महा मंच ऊंचो। हरे पंड पंडं सबं सस्त्र कूची ॥
मिले राज मर्भ्भं [3]मरज्ज्याद कुट्टी। उमा सत्त सामंत की सक्ति पुट्टी ॥
निरालंब लंबी थियं वीरबाहं। चिपा रतपुज्जी नची रत राहं ॥

(१) मो०—सुमुन्तिय। (२) मो०—थुरहरान। (३) मो०—मध्य।

अमरसिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश में करने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ बर पट्टन वैरांन। तेन [1] झाला अधिकारिय ॥
मतो मंडि चालुक्क [2]। अमर सेवर सुधि भारिय ॥
भैरों भट्ट प्रमान। बुद्धि कायप अधिकारिय ॥
सो मत्तें सो मत्त। बुद्धि सेनह विचारिय ॥
दल मलहि सेंन चहुआन कौ। अरु भंजै सुरतान दल ॥
मंत्री सराज कैमास वर। साम दाम [3] कीजै सुकल ॥ छं० ॥ २१२ ॥

चालुक्यराज की सेना की चढ़ाई और अमरसिंह का मन्त्र आरम्भ करना।

गाथा ॥ चढियं चालुक सेनं। चहुआनं साधनं भीरं ॥
दिसि कैमास प्रमानं। अमरसिंह सुक्रियं मंत्रं ॥ छं० ॥ २१३ ॥

अमरसिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिन अमरसि सेवरा। आनि देवंग परव्वत ॥
जिन अमरसि सेवरा। द्रव्य आन्यौ अनिअव्वत ॥
जिन अमरसि सेवरा। चंद मावसि उग्गाइय ॥
जिन अमरसि सेवरा। पदमनि मान रिझाइय ॥
षट उभय कोस उद्योत हुअ। विप्रसीस मुंडिय सकल ॥
चित मंत भ्रंम आश्रम वर। सुवर मंच किज्जै सकल ॥ छं० ॥ २१४ ॥

छंद मोदक ॥ इति मोदक छंदह बंध गनी। जरि सस्त्र सुभें। निय बंधमती ॥
दिसि अट्ठ दुरी दुरितान कला। चित मुक्कलि च्यार वसीठ वला ॥
छं० ॥ २१५ ॥
जिन मंच वसीठन चित्त करं। नव निक्कर नेह अव्रत्तधरं ॥
षिति बीरति बीरय मंच मुषं। तिन राषन राज निव्रत्त रुषं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

---

(१) मो०–तेग।
(२) मो०– "मतो मंडि चालुक्क" की जगह "सो मनि चालुक" है।
(३) कृ० को० मो०–दांन।

विथा जथ्य लग्गी तथा तो प्रसादं । कथा काल जैनं भयो एकवादं ॥
जहां बेद बांनी सती सत्त पाटं । तहां जैन जंपै सु पाषंड वाटं ॥
हुहुंकार हंक्का घटं घाट उठ्यौ । छलं छेद भेदं [१] दुअं धूम वुठ्यौ ॥
धरं धार झारा धरा कंप ठांनी । मिटी बूंद माया सु आकास [२]बांनी ॥
दुजं दोइ उड्डै छुटे सुग्ग मग्गं । घटं घाट फुट्या भ्रमं धाम भग्गं ॥
हतं छच मोहं महं म्लछ तुट्यौ । परा पेप तें जैन भ्रमं सु लुट्यो ॥
महा मंत्र मंत्री दिठी माउ मांनी । कवी चंद मंत्रं सिधी सो समांनी ॥
छं० ॥ २७८ ॥

संग्राम काले संग्राम ईश्वराय संग्राम भूपाय स्मरनं कृत्वा मंत्रं ॥
संग्रामे प्रविसे तु जयां संग्रामे विजयां भूपाल द्वारे स्मरणं कृत्वा ॥ *

चन्द का देवी की स्तुति करना

साटक ॥ चामंडा वर षग्ग मंडित करा हुंकार सदा धरं ॥
प्रभासं सहसंघ सत्य तपसं रुंडाल माला धरं ॥
लग्ना [३] हस्त मुषी प्रचंड नयना पायातु दुर्गेश्वरी ॥
काली कल्प कराल काल वदनां अंगे कलिंगे[४] जया ॥ छं० ॥ २७९ ॥
माया तूं हंदार माल कलया जीतं जगद् ब्रह्मनी ॥
माया तूं माहेश्वरी जह कहं अगोचरं गोचरं ॥
सिष्यं रिष्य [५] सपट्ट नंचत वसा हिंगोल हुं हुं करं ॥
साहुंका हुंकार इक्क सुनयं जातं दलं दुर्ज्जनं ॥ छं० ॥ २८० ॥
षग्गं जा मिति झाम झाम झमियं तस्यास्य मंत्रे मुषं ॥
सा मंत्रे उच्चार धार धरियं[६] अभ्भं अभंगा अरी ॥
जग्यानं जय जोग जोग पतयं पाषंड षंडायनं ॥
काली लंक ललंति कंति त्रिपुरा तस्यासि ध्यानं धरं[७] ॥

(१) मो॰ 'छलं छेद भेदं दुअं धूम वुठ्यौ' की जगहं छलं छेद दूयं धरं धूम उठ्यौ' है ।
(२) मो॰—आसमान । * यह मंत्र एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।
(३) मो॰—लग्नी हस्तमुषी प्रचंड नैनी पायातु दुर्गेश्वरी ।
(४) मो॰—कलिंगे जया की जगह कालिंगेश्वरी है ॥
(५) मो॰—रप्य ।
(६) मो—भंगा ।
(७) मो—धनं

छंद विअष्परी ॥ भैरों भट्ट सुवंभन लीला। चारन चंद्रानन्द क्वीला ॥
मचातम अमरसीच गुणग्याता[1]। साम दाम[2] भेदं सुविधाता ॥ छं० ॥ २१७॥
जिन अमरसी[3] अमरि रिझाइय। चालुक सेन सुमंच वढाइय ॥
मावस चंद जेन परगास्यौ। जेन[4] जैन अंमच अभ्यास्यौ ॥ छं० ॥ २१८ ॥
सिंगी हेम भरे नग पासं। लच्छि प्रसंनिय दारिद नासं ॥
भोरा राय भुअंग वजीरं। भै प्रसंन सुरसुरी सुनीरं ॥ छं० ॥ २१९ ॥
वाद जीति[5] सिर विप्र मुंडाइय। कुंम थप्पि जिन साप भराइय ॥
बोल्यौ कुंम कलकल वानी। नीर मध्य दुरगा सुसमानी ॥छं०॥२२० ॥
इष्ट गंठि तहां दिष्ट पसारिय। वेद उथापिक रैंभ विचारिय ॥
रथ पटधात हेमसिर छचं। चढि नागौर अमरसी मंचं ॥ छं० ॥ २२१ ॥
वर चैारासी सथ्थसु आसं। छन्न राजमहि मंच कैमासं ॥
दै दुज धरत नील पट मंजर। रतन हेम नग मुत्ति सुपंजर ॥छं०॥२२२॥
घट में कचै सुकीर प्रगासै। सुनत सुवीर अंम भर नासै ॥
जै भर धर चालुक्क प्रजाए। अमर मचातम बुद्धि रिझाए ॥ छं० ॥ २२३ ॥
इन विधि नर नागौर सँपत्ते। वीच निसा गुन करै सुरत्ते ॥
कल छंदै वंदे कर भूपन। लच्छि केर करनी कर रूपन ॥ छं० ॥२२४ ॥

कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया।

दल कैमास भई सुअवाजं। भोरा राइ वसीठन साजं ॥
चेटक चंचल नंचल कानं। आर भटी देषे सव्वानं ॥ छं० ॥ २२५ ॥
भेटि भट्ट कैमास कलापं। आदर अधिक कियो सुअलापं ॥
मुत्तिय माला कंठ सुवानी। भोला राव दई सहनानी ॥ छं० ॥ २२६ ॥
पचियं[6] पच पढै परवानं। वीर मंच पूजा सह दानं ॥ छं० ॥ २२७ ॥

(१) ह० को०—अमर सिंह महाग्याता।
(२) ह० को० मो०—दांन।
(३) ह० को० मो०—अमरसिंह।
(४) ह० को०—जिने।
(५) ह० को०—नीति।
(६) मो०—पत्री।

चन्द का देवी से वर मांगना कि जैन की माया को जीतें।

आई तूं उमया अपंड तनया दाना दुरी नाशिनी ॥
संतुष्टा सुर नाग किंनर गना दैत्यानि संचासनी ॥ *
रक्षा चारु चवंति चारु कमलं संतुष्टयं साधुनं ॥
जैनं[1] बर्द्धस बद्दयाइ चरनं जै जै सुजिह्वासनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

दूहा ॥ सुविधि विह्नि सेवर सुवर। बाद विह्नि परमांन ॥
जंच मंच जालप्प सौं। लगे रोस असमांन ॥ छं० ॥ २८३ ॥

छंद भुजंगी ॥ उठे चंद चंदं[2] बरद्दाय वीरं। भयौ तेज आकून संनी अधीरं ॥
बुल्यौ वीर वानीय ज्यों गेन पांनी। मनो उग्गियं वीर सिव दिष्ट जांनी ॥
महा मंडियं वीर अंकुस सिरानं[3]। तजा तेज तत्तं उठो वीर बानं[4] ॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ जिन मंची मंनाय[5]। द्रव्य उद्धरि धर लीनी ॥
जिन मंत्री रिनथंभ। ठेल्हि जद्दव कुल दीनी[6] ॥
जिन मंत्री ढुंढार। ढार कूरंभक सारी ॥
जिन मंत्री जंगली। जंग संभरि उद्धारी ॥
मंचो अभासि[7] कयमास सौं। मंति उचार अमरा कियौ ॥
बम्भरी भट्ट द्रुग्गाइ दुम। घट विघाट उभ्भा कियौ ॥ छं० ॥ २८५ ॥
उठ्यौ चन्द बरदाइ। बिरद द्रुग्गा सम्भलि सुर ॥
सुमन सस्त्र तजि मिच। पच बम्भिय जुमिच बर ॥
कल्ल कलंन [8]कल्यांन। कलह घटन औघट्ट बर ॥
भट[9] निघाय[10] रागी सुनट। भट साहस ध्रम्मं[11] धुर ॥
दिप्यो सु चारु मंची धरा। मति अचार[12] कर लिप्पयौ ॥
गन्धर्व[13] गांन चारन अमर। हर पापण्ड सुषिप्पयौ ॥ छं० ॥ २८६ ॥

---

* ये दो चरण रायल एशियाटिक सुसाइटी की प्रति में नहीं हैं।

(१) मो॰ 'जैनं वर्द्धस थाद चंडि चरनं'। (२) मो॰—चंडी। (३) मो॰—सिरानी।
(४) मो॰—थानी। (५) मो॰—कैमार। (६) मो॰—पीनी।
(७) मो॰—अनासि। (८) मो॰—करयांत। (९) मो॰—नट।
(१०) मो॰—धिंम। (११) मो॰—वि। (१२) मो॰—उच्चार।
(१३) मो॰—हंकि हंकारह छंड़ियो मनो चमर गुरु सिप्पयो।

छंद नाराच ॥ कलप्प कोलि मेलि मंद चंद चारु पट्टनं ।
तमेग दुग्ग सुग्ग सुभ्भ उभ्भ बन्ध कट्टनं ॥
नरिंदं नील सील संच वंचयं भुअप्पती ।
चरित्त चारु चालुकं नरिंद को नरप्पती ॥ छं० ॥ २२८ ॥
गाथा ॥ न को न को नरप्पती । पत्ती चालुक्क राइयो सीसा[1] ॥
किं चहुवान सुमंती । कैमासं जानयं वीरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥

चालुक्य राज का पत्र ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री जय भूप भूपति भयं, भीमं भयं वर्त्तते ॥
पाया पात्र लवंत[2] देव पिनयो, मंत्रान् मत्री नप्पते ॥
हेमं कोटिव षग्ग षग्ग बलयं, देवा चरित्तं भयं ॥
द्वारिद्रं यद ईव आनन रयो, द्रिष्टा स या पावयं ॥ छं० ॥ २३० ॥
साटक ॥ जं तं वारिधि वंधनेव चलयं भीमं भयानं वर्ल ॥
कल्यं कोलि मरोरि मारव दिसा, बध्यं पुरं बन्दरं ॥
दीवं देषय देव चब्बस पुरं, चस्सी हुजावं पुरं ॥
सोयं भीम वलिष्ट मध्य वलयं, लेनं कलं दुस्तरं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गाथा ॥ इंदो वारिधि वंधो । वारिधि मद्धे[3] सुइंद्रनं द्रिष्टा ॥
वारिधि अंचन इंदो । सा भीमं रूपयं भूपं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
गाथा ॥ भूपति भीम नरिंदं । भूभारं काज अवतारं ॥
तुं कैमास न जानं । तो नं तो छंडि चहुवानं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
छंद पारक ॥ हंमानी[4] वानी पुव्वानी । नीलानी सोर्हं सव्वानी ॥
मुरवानी वानी बोलंदे । सिंधानी सकलं तोलंदे ॥
सोरट्ठी थट्टी निचटेयं । चर वंजहु रावर वट्टेयं ॥ छं० ॥ २३४ ॥
छंद चोटक ॥ आगे वांनक वांनक सस्लकयं । सव सस्लक मंचक मंच नयं ॥छं०॥२३५॥

---

(१) मो० कृ० को०–सरसा ।
(२) मो "पात्रल" की जगह "एतल" ।
(३) मो० च ।
(४) मो०–षानी ।

समाचार पाकर चन्द का मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमरसिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना ।

सम[१] हो चन्द कविन्द वाद । अंकुस सिर मण्डिय ॥
मंच देव उच्चार । हंकि हंकारव छंडिय ॥
अमरसिंह बर भट्ट । बीर बम्भन विचारिय ।
मंडि बीर पाषण्ड । मंच जंचह उचारिय ॥
मंडयौ कुम्भ सलिलह सुमन । धूप दीप अच्छित धरिय ॥
सेवर सुगन्ध आडम्बरह । हथ्थ जोरि बीनति करिय ॥ छं० ॥ २८७ ॥

छन्द भुजङ्गी ॥ महावीर बीरं चितं जाप लीनौ । जिनैं कुच्छितं लुचितं पंथ कीनौ ॥
जिनैं जग्य भ्रंमं चरं नेति [२]भंजै । सुध्रंमं उथापे अध्रंमं सुरंजे ॥
बधं जीव टारयौ सुलोभं निवार्‌यौ । सतं सील आचार अंगं अधार्‌यौ ॥
रषे पंच भूतं प्रथी अप्प तेजं । ग्रहै नाहि धातं अघातं सुनेजं ॥
दमं दान भ्रंमं दयाजूह मंड्यौ । सुत्रं अमर उप्पासनं तासषंड्यौ ॥
छं० २८८ ॥

एक घडी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना । फिर संभलकर अपना अनुष्ठान करना देवता आदि का आश्चर्य के साथ दोनो का बल देखना ।

कबित्त ॥ खोल्यौ घट्ट सुघट्ट । बीर हुंकार हुंकतिय ॥
ता पछै मंची न मंच । आरंभ सुथतिय ॥
इक्क मुट्ठि दुअ मुट्ठि । चंद संमुह पढि नंषिय ॥
घरी एक भ्रम भ्रम्यौ । जगि द्रुग्गा जस लग्गिय ॥
बुल्लयौ बीर कविचंद मुष । हल हलंत हेमावलिय[३] ॥
सु प्रसंन मात भट्टह भट्टय । बस[४] पाषंड भ्रमाव तिय ॥ छं० ॥ २८९ ॥

(१) मो०-छंद २८७ के आदि के दो तुक का पाठ इस प्रकार है-"जनमय अचक्कजक्कज । मंत्र आरम्भ सुमण्डिय ॥ पउमावइ परतषि । हक्कि हुंकारव छण्डिय ।
(२) छ० को०-नन्ति+मो०-'भ्रंमं चरं नन्ति' की जगह 'धर्म्मं वरं नीति'-है ।
(३) मो-हेमावतीय । (४) मो-सब पाषण्ड भ्रमावतीय ।

अपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो।

चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना।

अरिल्ल ॥ लिष्यौ चित्र पुत्तल परिमानं। ज्यों कैमास भयौ बसि प्रानं ॥
बायव सें पंषा कर डुल्लै। त्यों कैमास मंत्रबल भुल्लै ॥ छं० ॥ २३६ ॥

कवित्त ॥ गुज्जर बैथर देहि। देइ धोरहरा ग्रामं ॥
मति संपूर कैमास। देइ बहु द्रव्य सुनामं ॥
मध्य पहरजं मध्य। द्रव्य आवै वंदर वर ॥
सो अप्पौं चालुक। करै कैमास इन्द्र घर ॥
को सुनै कहै को जंपि को। को उत्तर तिन देइ फिरि ॥
कैमास मंत्र किन्नौ वसै। लिष्यौ चित्र पुत्तलि लहरि ॥ छं० ॥ २३७ ॥

अरिल्ल ॥ सावि भरै घट सोइ प्रगासै। सुर नर नागनि[1] कौतिग आसै ॥
सब धत सहर सहर सब मिल्यौ। नट गति एम[2] अचम गति पिल्यौ ॥
छं० ॥ २३८ ॥

दूत ने लाले नामक एक खत्री की रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया ॥

दूहा ॥ घट सदय विधि दुज्ज दुअ। जैन ध्रंम अभिलाष ॥
श्रवन भष्भिक कैमास कहि। अमर मधानम भाष ॥ छं० ॥ २३९ ॥

अरिल्ल ॥ पिषी एक सुनैर[3] सुमत्ती। कलच एक सुरवर की गत्ती।
षट दिन केलि रसं रस मंडिय। मनि आभरन नारि सब[4] छंडिय ॥
छं० ॥ २४० ॥

छंद विश्वष्परी॥ पिषी एक नाम जिन लाले। ताके मुगध प्रौढ त्रिय बाले ॥
मध्या मान बाल सिरन्हाई। प्रौढा कै बारै निसि आई ॥ छं० ॥ २४१॥
अप्पन प्रौढ मुगध गति लीनी। च्यारो जाम रमी रस भीनी ॥
प्रात बालबेलह रस[5] जान्यौ। भूषन बिन स्रृंगार सुषान्यौ ॥ छं० ॥२४२॥

---

(१) कृ० को०—नागति। (२) कृ० को०—राम। (३) मो०—सुमैर।
(४) को० कृ०—सिर। (५) मो० "बेलह रस" की जगह "बलभरह"।

कह्यौ बीर कविचंद । प्रगट आचिज्ज दिषायौ ॥
कुंभ मध्य पावंड । षांन विद्या इन मायौ ॥
दनुज देव मानुष्य । सकल आचिज्ज सु जान्यौ ॥
है मनुष्य गति छेद । उपल जिम मिदै न पान्यौ ॥
सोचवै रिझ्झ जल जिमि प्रबल । भट्ट सरस रस बुल्लयौ ॥
गंध्रब बीर चारन अमर । धंमर उचित डुल्लयौ ॥ छं० ॥ २९० ॥
राजा बसुव पट्टनी । चंद कहौ उप्पर आइय[1] ॥
सयें साय चालुक्क । अमर भए तुंग सहाइय[2] ॥
रह्यौ भांन रथ पंषि । देव लगि तुंग तमासे ॥
कुटिल दिट्ट कुटट्टन[3] । आज मन लभ्भ[4] कैमासें ॥
उचस्यौ चंद उरव्वक्कयौ[5] । आरंभ्यौ वर मंच कै ॥
आचिज्ज लोइ दिप्पत[6] भयौ । अरु प्रारंभ न तंतकैा ॥ छं० ॥ २९१ ॥

चन्द ने अमरसिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मन्त्र आरम्भ किया ॥

छंद भुजङ्गी ॥ कियौ मंच आरम्भ प्रारम्भ कव्वी । जगी चैासठी देवि तो तेज सव्वी ॥
चितै चन्द कव्वी तषां रूप तैसो । मनो अर्क राकान छिचं मिलै सो ॥
मुषं चन्द कव्वी पढै दिव्य बानी । रिझें मात कव्वी तिनं सें समानी ॥
रिझें थावरं नाहि जंगंम कैसें । सुनें पंष बांनी मुनी मोन जैसें[7] ॥
सुनें कांन नारी सुधा बाल भग्गी । मनों तर्क उत्तर्क संदेस जग्गी ॥
सुनें मुष्पबानी प्रमांनी न जाई । मनों इन्द्र आगें चचा छूह गाई ॥
बुलै कंठग्रावं लिषे चित्तरेपं । लगे मंच मांनो सजीवं सुभेपं ॥
रहे सीत मन्दं सुगन्धं सुवातं । मुषं कें सुधारें सुरंनं अघातं ॥
रथं पेषि अर्कं अरुनं सुनावै । रह्यौ मोह माया क्रमं नं न धावै ॥
पल्यौ ग्राव रीझें गति कौकी लीनी । रसम्भौ भयानं अद्भूत चिन्ही ॥

(१) मो–राल बसु पट्टनी । चन्द उपर कहो आयो । (२) मो–सहायो ।
(३) ए–कुट्टेन । (४) मो–मतिलयि । (५) मो–इकमो । (६) मो–दिपित ।
(७) मो–मनो पष बानी मुनी मान जैसे ।

षिची सोइ जुनेर हिंसारं। बिन बिय एक कयौ शृंगारं ॥
तिन हित मांन केल तिथि मंडी। मीनह मनु अचवन सिर छंडी॥छं०॥२४३॥
षिची एक मुगध सूमत्ती। तहां मंच आरंभन जत्ती ॥
हरि हरि तहां कयौ उच्चा। पढ़े छंद गुन मंच बिचारं ॥छं०॥२४४॥
मंच स्लोक ॥ ॐ नमो गिरे[1] गर्जस्य। जल्पं जल्पेषु जानुपम् ॥
तत्वयं मंचं विध्वंसं। सारं धारं निवर्त्तयेत् ॥ छं० ॥ २४५ ॥
दूहा ॥ असूच नयन लष्यौ अलष। नर वु मंच वर अब्ब ॥
आकरषे तिन चारनह। भैरों भट गंभ्रब्व ॥ छं० ॥ २४६ ॥

दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया।

दूहा ॥ अमरसिंह पासे प्रसन। मानि मंच जल जथ्य ॥
तब तरुनि आनी चिहुनि। सुनै सुमंगल कथ्य ॥ छं० ॥ २४७ ॥

उस स्त्री के रूप का वर्णन।

कबित्त ॥ कुटिल केस वय स्याम। गौर गुन बाम काम रति ॥
चोर धनी उन्नित नतंब। जानि रवि बिंब बीय गति ॥
चष चंचल उद्दिय नरीह[2]। करी मनौं ब्रह्म अप्प कर ॥
ता समां न कोइ आन। नांहि असमान थान धर ॥
कवि चंद कहै का ब्रंन करि। पदम गंध मुषचंद सरि ॥
जुब्बन तुरंग सुमनह करन। मानौं मार अवंगि धरि ॥ छं० ॥ २४८ ॥
कबित्त। चंद बदन चष कमल। भौंह जनु भ्रमर गंधरत ॥
कीर नास बिंबोष्ठ। दसन दामिनी दमक्कत ॥
भुज म्रनाल कुच कोक। सिंघ लंकी गति बारुन ॥
कनक कंति दुति देह। जंघ कदली दल आरुन ॥
अल संग नयन मयनं मुदित। उदित अनंगह अंग तिहि ॥
आनी सुमंच आरंभ बर। देषत भूलत देव जिहि ॥ छं० ॥ २४९ ॥
दूहा ॥ कोटि ईस कीए सुव्रत। बिमति मत्ति परमान ॥
तहां मंच पत्ते सुबर। गहै काल म्रित पान ॥ छं० ॥ २५० ॥

(१) मो० क्र० को०-गिरा। (२) को० क्र०-"उद्दिय नरीह" की जगह "उद्दित नरीह"।

नगं सुंदरी नित चित्तै सुअब्बी । चल्यौ ग्राव रीझै कवी सांहि नंषी ॥
घरी एक चन्दं ठटक्यो सु सब्बी । मनों गज्जिअयं संझ पावान पुब्बी ॥
संगी सुंदरी सोहि दै सब्ब उट्ठी । करै दौरि तुझी करामात छुट्ठी ॥
छं० ॥ २९२ ॥

अमरसिंह का बहुत पाषण्ड फैलाना ॥

दूहा ॥ अमरसिंह सेवर सुबर । किय अनूप पाषण्ड ॥
सिर पष्षै धर नंचई । धर पष्षै नचि[1] मुण्ड ॥ छं० ॥ २९३ ॥

चन्द का पाषण्ड भंजन में सफल होना ॥

कबित्त ॥ कहै चन्द सुनि बाज । देय आसीस हुक्क पय ॥
नव सुक्किन क्किन नंक्क । बोल्लि बानी सुरङ्ग हय ॥
जै जै जै उच्चार । कह्यौ कबि तिम तिम नंच्या ॥
सब देषत बोलयौ । बहुत रचना कर रंच्यौ ॥
पाषण्ड डण्ड[2] सेवर अमिय । घट भंजन उप्पाय किय ॥
मांनुक्ख न जांनिय देव गति[3] । भ्रम भग्गौ[4] सुव चन्द जिय ॥
छं० ॥ २९४ ॥

दूहा ॥ तिनहु न तिन देषिय नयन । सयन सकल बिध बीर ॥
ते कयमास नरिन्द गति । कढ्ढन मतहि सुधीर ॥ छं० ॥ २९५ ॥

कबित्त ॥ सत्त सुमत्तियं तत्त । बाद लग्यौ चिहु पासं ॥
हय हय हुंकार वन । कुम्भ बुल्यौ बल भासं ॥
नव नितन नव घात । नवति बल मंच उचारहि ॥
एक एक सस्सवहि । एक एकन पढि डारहि ॥
लागंत चन्द बरदाइ तन । भ्रमत भस्यौ चक्किय उमा ॥
नन उगय[5] न निद्रा मण्डि बर । सुमति मन्त चिन्तिय उमा ॥
छं० ॥ २९६ ॥

छन्द पद्धरी ॥ गवरी सहय्य गवरी व ईस । जग्गायौ चंद मंच नवसीस[6] ॥

---

(१) मो०--हक्कि । (२) मो०--मंड । (३) मो०--मानुक्ख जानियतु देवगति ।
(४) मो०--'भ्रम भग्गौ' को जगह-'अभ्रमग्गौ' । (५) मो०--उग्या । (६) मो०--मंत्रन बरीस ।

अविवेक गारुडिय मात पास। लगै न लिप्प अरि स्रप्प तास[१] ॥
छं० ॥ २९७ ॥

दूहा ॥ आप सुप संमोय उर। रचिय काय[२] धृत धारि ॥
जै जै जै उच्चार वर। पार न लभ्भो पार ॥ छं० ॥ २९८ ॥

चालुक्य राज का मन्त्र नष्ट होना ॥

छंद भुजंगी ॥ मिटे मंच मंचं[३] सुचालुक्क राजं। भए विस्सिनी सब्ब मंची अकाजं ॥
सवै मंच मंची कवी चंद जंप्यौ। तहां पहनी राव आवत्त झंप्यौ ॥
कढो तेग वेगं निनारी निनारी। मनों वीज कोटी कलासी पसारी ॥
दई चंद अंप्यो सुन्यौ चंद वंसी। नईठांसअप्पं सरंनं सु अंसी ॥ छं० ॥ २९९॥

गाथा ॥ इक्कं ठाम मरिज्जै। नां किजै एकयौ ठामं ॥
किती नत्ति सुदेवं। दिष्यानं इक्कयै सेवं ॥ छं० ॥ ३०० ॥

चन्द का अमरसिंह को वाद मे जीतना ॥

दूहा ॥ करी एक किय वाद वर। को जित्ते कविचंद ॥
अमरसिंह सेवर सुवर। भयौ किक्ति गुनमंद ॥ छं ॥ ३०१ ॥
वर पाषंड न पुज्जयौ। किए अमर घन तंत ॥
को जित्ते कविचंद सों। दुगासहायक मंत ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

अरिल्ल ॥ जे पाषंड बहुत अभ्यासे। चंद मीन विष ज्यों अहि ग्रासे ॥
छिनक एक विरा गुन संधी। वर पाषंड मंडि कवि बंधी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥

दूहा ॥ वहा जैन सुजैन लगि। जीता चंद चरित्त ॥
भागीं भट्ट सुमंत[४] किय। मरन जियन करि चित्त ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
लुहि लये पाषंड सब। छुटि मंची कैमास ॥
हर हरंत आयास लगि। चंदन छंडे पास ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगाकर कैमास के पास जाना।

छंदभुजंगी ॥ महंदेव देवान चालुक्क चंपे। तहां तूं सहायं भयं राग जंपे[५] ॥

---

(१) मो०--वास। (२) मो०--काम। (३) मो०--मची।
(४) मो०--सुमित।
(५) मो०--कंपे।

जुराय रूप जुद्ध भीम सीम नाग धुक्कयं ॥
सुअंत सथ्थ[1]बिथ्थुरं अनेक भांति दाहई।
मनों कि दंड चच्चरीय बालकं उछाहई[2] ॥
झनंकि पग्ग सों निसा चम्द चमक्कई।
मनों कि चंद चंद सो धरा न भुम्मि सुक्कई ॥
अनेक भंति सा दुरं बजंत बान सावरं।
मनों कि जीव जंत पांनि उच्छयं उछारं ॥
बजंत राग पंच पट् मोह बंधि आनयं ॥
श्रवंत सेन संधि भूप चंद जंपि पानयं ॥
ढुरंत चौरं गज्ज सीस सस्त्र मग्ग उत्तरें ॥
मनों कि कूट सीसतें सुगंग भूमि विस्तरें ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

चावंडराय के युद्ध का वर्णन।

अरिल्ल ॥ जस धवली लद्धी कैमासं। चावंड राइ बंधव अभ्यासं ॥
सस्त्र मग्ग तन[3] तिल तिल पंच्यौ। बली जुद्ध भारथ फिर मंच्यौ ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

कवित्त ॥ धनिव सूर सामंत। लोन ह्वै मिल्ले अरिन अट ॥
इक मागिय छुट्ट पार[4]। भाग चौसट्ठि पार घट ॥
ते दुसेन मुष धरनि। लज्ज सों निठ्ठ उतारे ॥
मार मार विस्तार। सार संम्है गहि डारे ॥
उर धव्यौ सिंधु[5] सिंधुर सुभट। उदर मध्य फुट्यौ अमित ॥
चामंड राइ दाहर तनौ। सोंन नेह बंध्यौ अमित ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
एक बीस इकईस। एक इकतीस सहस बर ॥
इक्क सहस इक डेढ। इक्क धर उभय सस्त्र भर ॥
एक एक इक लष्प। विलप बल पुज्जहि देव ॥
ते जगिय वीर बीराधि। वीर बीरा रस सेवं ॥
मारु मइंन नाहर बलिय। दलिय किति दप्पिन बयह ॥
निडर नरिंद पज्जून बल। दाइ दाइ करे दिसि दसह ॥ छं० ॥ ३४४ ॥

(१) ए०–मत्त। (२) मो०–उछारई।
(३) मो०–तिन। (४) मो०–अपार। (५) मो०– आप।

निसा एक रत्ती असे जंग धायो । पलं ओन पेषीन भूची अघायो ॥
हहं[1] हार हंक्यौ मयं मात साथे । सदा देव द्रुगे अनाथं न नाथे ॥
सवा लष्ष सेना गजं वाजपूरं । अगं वान कंमान सज्जि गैन द्रूरं ॥
भमी भूम नेजे छिता[2] छष पषं । महा अब्ब अव्वं लषी मंष जंषं ।
धरा धार षंडे सुमंडे विसष्षे । परी[3] धार पाइक्क काइक्क लष्षे ॥
विना सामि सेना सुपंचं हजारं । तिनं मंझ सामंत पच्चीस भारं ॥
सुषं मंचि कैमास दिव कासमीरं । वियौ बग्गरी राव स्वामित्त धीरं ॥
तियौ जाम जद्दो लघु वंध जाजा । धरे लाज गुज्जर धरा राम राजा ॥
षटौ पग्ग तोनं जयं जैत छत्तं । गुरू राव गोयंद सत छत्र रत्तं ॥
सयं सिंह साना हनो अष्ट काली । जिनं द्रुग्ग देवं हमं तेज झाली ॥
दसं गौर गाजीय साजीव सामं । सुमी संभरी राव स्वामित्त नामं ॥
अषा राष हाडा चयं चंड देवं । जिनै द्वादसी धवल एकाहि सेवं ॥
तनं तुंग खंगा अभंगा विचारं । जिनै मारिया राय जंगी पहारं ॥
बली राइ वंको विरुद्दांन वंके । जिने ढाषि ढुंढेरिया राइ हंके ॥
बरं जोर कूरंभ राजंग सूरं । जिसौ पथ्थ पत्ताप मझ्झे खगूरं ॥
नियं राइ नीहर[4] तनो रथ सथ्थी । जिसौ राव संतन तनो भीष रथ्थी ॥
महा मल्ल सवज्यौ वियौ मल्ल भीमं । वरं तास चंपेन को जोर सीमं ॥
मषं वंदनं देषतो पास सेवं । युती मंच मुष्षं मयं जंपि एवं ॥
हु हुंकार हक्की सती सा विचारं । हढे मत्त अग्गे सुपंचं हजारं ॥
महा सेन सत्तारि तनो लष्षसांई । सुन्यौ राइ कित्ती दियौ रति वांई ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कवित्त ॥ बर वंधे बसीठ । ढीठ पाषंड निवारे ।
धोरहरा आभांन । सेन संन्नाह संभारे ॥
तोरी रति चौजांम । जांम बोल्यौ जद्दोनी ॥
होजा जारन जाइ । गस्त चौकी भीमोंनी ॥

(१) मो०—अहंकार । (२) मो०—सिता । (३) मो०—फरी ।
(४) मो० को०—नाहर ।

दूहा ॥ हय हय गय नह सूर बर । दिष्षि भयानक देव ॥
जंबूरा हंमीर सों । भर भारथ वित्तेव ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

यह युद्ध संवत् ११४४ में हुआ ।

* ग्यारह सें चालीस चव । बंधव पुच अछुट्टि ॥
सु फिरि राज सेना न्रपति । भो भारथ संजुट्टि ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

कवित्त ॥ हय गय नर आहुटें । लुथि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
इक्क हथ दुअ विहथ । उच्च चढ़ि षित्त मद्धि धर ॥
बलि वामन रामह सुबीर[1] । पंच पंडौ बल भारी ॥
जरासिंध नर केस । नरनि नर सिंघ उचारी ॥
इन समह समर इत देव मय । कत द्वापर कलियुग्ग मभ्फि ॥
इत करिय सोह करिहै न को । करो सुकोइ न बत्त बुभ्फि ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
तरनि तेज तप हरन । भरन पोषन दोषन षल ॥
उदर ब्रत्ति जं करिय । उदर कढ्ढै सुमध्य मल ॥
बल भट्टी जं करिय । करिय कर दंत मत्त गहि ॥
घरी एक इक पाइ । षग्ग टिक्क षग षेत रहि ॥
जंबूर लग्ग भग्गान तउ । बर बुल्ल तामस वयन ॥
चालुक्क आंन जंपै मुषह । रत्त मुष्ष अग्गी नयन ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

दूहा ॥ नयन बयन तन अग्गि जगि । कित्ति अग्गि जग जग्गि ॥
बर बिताल जंगम विहंसि । दयसीस नर षग्गि ॥ छं ॥ ३४९ ॥
रन षग्गा भग्गान को । पत्ता चालुक राइ ॥
हंमीरां हंमीर बर । भो बर बीर विभाइ ॥ छं० ॥ ३५० ॥

उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे ।

कवित्त ॥ सुअन[2] सूर सामंत । मंत लग्गे विरुभ्फानं ॥
रा चामंड जैतसी । रांम बड गुज्जर दानं ॥

३४६—* यह दोहा एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।
(१) मो०—राव हमीर । (२) मो०—सुग्रीव ।

चल्लाल चल्ल सेपंच दुति । सेनी भाज्जि दुरा [1] नरन ॥
सेसंध नेज भज्जव भिरिय । बंसी जान विषांन मन [2] ॥ छं० २०७ ॥

कैमास का लज्जित होना।

चौपाई ॥ बंसी जान बषांन प्रमानं । रह्यौ लज्जि कैमास निधानं ॥
चौसट्ठी मनों आव सुडारी । उठै सीस संमुष क्यों भारी ॥ छं० ॥ २०८ ॥

कवित्त ॥ उट्ठावै नष सीस । लज्ज दाहिम चहुवानं ॥
उठै सीस नष ईस । लज्ज कुल पन कुल पानं ॥
उठै सीस नष ईस । करै भारथ बहु काजं ॥
उठै सीस नष ईस । देव गति देवनि साजं ॥
उठै न सीस संमुष सरस । लज्ज विरह्यां भार सिर ॥
कैमास काज लग्गी गवनु । विसर थीर दिष्यो विधर ॥ छं० ॥ २०९ ॥

चन्द का कैमास को आश्वासन देना।

दूहा ॥ बर बरदाइ नरिंद कवि । दै आसिष छिति राज ॥
तूं लज्जिन कैमास बर । मंत विरोधन काज ॥ छं० ॥ २१० ॥

कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामंतों का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ चंद सुचंडि प्रताप । मिच कैमास कुडाइय ॥
मेटि आंनि चालुक्क । आंन चहुआंन चलाइय ॥
लाज राज कैमास । सीस ढंकै न उघारै ॥
सबला सों संग्राम । लरन रति चाह बिचारै ॥
उज्जली रैंन उज्जल दिसा । जस उज्जल कों धाईयां ॥
दाहिम राइ दाहर तनै । सिलह सुरंग बनाइयां ॥ छं० ॥ २११ ॥
सथ्थ राव चांमंड । सथ्थ सज्जिय परिहारं ॥
मदन सिंह बल्हार । नांम रांनौ षग भारं ॥
राभों हा चंदेल । राव भट्टी मद्द नंगी ॥
भर भट्टी बहु सथ्य । सार आग्गी तन दंगी ॥

(१) मो०--दुरान दल ।
(२) मो०--बल ।

उदिग बांह पग्गार। कन्ह कूरंभ पजूनं ॥
षीचीराव प्रसंग। चंद पुंडीर सु दूनं ॥
मह्नंग मेर माह्न मरद। देवराज वग्गरि सलष ॥
देवराज कुंअर अल्हन अनुज। इन धीरा रस लषि अलष॥ छं०॥ २५१ ॥
निडुर बर नर सिंघ। वीर भोंहा भर रूपं[1] ॥
वीर सिंह बर सिंघ। गरुअ गोइंद अनूपं ॥
रा बड़ गुज्जर राम। बलिय वंभन रस बीरं ॥
दाहिम्मौ नर सिंघ। गरुअ सारंग रन धीरं ॥
चालुक्क वीर रन सिंघ दे। दै दुवाह दुज्जन दहन ॥
सुर तांन गहन मोपन पचै[2]। चालुक्कां लग्गे महन ॥ छं० ॥ २५२ ॥
घट्टिय घट्ट निघट्ट। थांन दिष्षे इन भंतिय ॥
ज्यों प्रात उडग्गन चंद। दीह दीपक ज्यों कंतिय ॥
तमसि तमसि सामंत। जाइ बर वीर सुरुध्यौ ॥
उभय पुत्त इक बंधु। भीम भारथ बल बंध्यौ ॥
ओहनय हथ्थ लग्गी तनह। उपम चंद सारह करिय ॥
भूमली रत्ति में बंक पग। मनों चंद ह्वै विस्तरिय ॥ छं० ॥ २५३ ॥
नर नाहर ज्यों लह्यौ। अयुत नाहर धर षंडिय ॥
नाहर राइ नरिंद। षेत माथा तन मंडिय ॥
ढंढौ रिझ्झै ढाल। हाल चालुक्कह कढ्ढै ॥
आंन राज प्रथिराज। लाज सांईं सिर चढ्ढै ॥
हसि कहिहु बाग कढ्ढिय बली। मिलि मल्लौरि संम्हौ लग्यौ ॥
जांने कि अग्गि लग्गी बनह। वंस दाव द्व प्रज्जल्यौ ॥ छं० ॥ २५४ ॥
बड़ गुज्जर राजैन। छच देषै पट्टनवै ॥
वैं नीसांनी मार। घाट गिर वर घट्टनवै ॥
अधरा षंडन पग्ग। झग्ग झूरे सुपमारह ॥
मनों सराली जंग। पांन कुहैं गंमारह[3] ॥
रा राम देव देवत्त तुअ। जाजै जैारि जुहथ्थ किय ॥

(१) मो०–भूपं। (२) मो०–कहै। (३) मो०–सुगमारह।

आजुल्य तेज नरसिंघ नर । चाहुवांन कूरंभ गुर ॥
सामंत सत्त[1] सत्तह सुमति । सुबर बीर भारथ भर ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
परम पवित्र पमार । जांन उद्यांन पँचाइन ॥
सारंग सिसु चालुक्क । राज रघुवंस सुभाइन ॥
रति वाह मन चित्ति । सेन सज्यौ तिन राजं ॥
तरुन तेज तम हरन । मेघ मंते जनु गाजं ॥
कल हंत कोटि मंडिय विषम । गरुअ अव गहिलोत गुर ॥
खंगिरय खोह खग्गौरसै । स्वामि ध्रंम जिन भार धुर ॥ छं० ॥ ३१३ ॥
अचल वरुन ग्रत ताइ । कंन्ह तिन वीरव्रसिंगं ॥
रानिडुर रठ्ठौर । साल[2] झिल्लन रन रंगं ॥
बा बारो बरसिंघ । रेह राषन अजमेरं ॥
दहियां जंगल राव । जंग मग्गह धर मेरं ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । अकल मति जिन उद्धरिय ॥
ठिल्लै सुवज्ज वज्रंग तन । पल षंडै वज्जन वलिय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
बर जद्दव जै सिंघ । राव जंघारौ सुभ्भर ।
किल्हन कनक नरिंद । इन्द्र दल दिष्षय दुभ्भर ॥
बली बांह हरसिंघ । रेह रष्षै चहुआंनिय ॥
सुबर वैर बाहड्ड । वलिय संभरि धर जांनिय ॥
अजमेर मुक्कि चहुआंन कौ । ए कुट्टै भारथ भिरन ॥
द्दिन एक वीर वल वंड पल । उभय लभ्भि लड्डू जिरन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥

चालुक्य राज का सेना प्रस्तुत करना।

छंद भुजंगप्रयात ॥ फिरी गल्ल चौकी सुचालुक्क राई । सथै सठ हज्जार मकवांन घाई ॥
रनं पाटरी रांन ता नांम लीहं । बलं वैर वैरीन को चंपि लीहं
जिनै देषिया जुद्ध जाडे च सब्बं । जिने कक्क पंचाल्लची[3] सोपि अब्बं ॥
षटं वीय संन्नाह सज्जे सुअंगं । रुकै रुक्क अंगं[4] अरी कोटि संगं ॥
तिनंकी उपंमा कवीचंद गाई । सुते कंठ राषंत गोरष्ष पाई ॥

(१) मो०—सूर। (२) मो०—सार। (३) मो०—ची। (४) मो०—रंग।

नर नाग देव देवी विहसि। पंजुन्नि पंगु प्रहास किय ॥ छं० ॥ ३५५ ॥
जिन थक्का जरि देव। सेष थक्की मातंगी ॥
धर थक्की धर भार। भारथ क्यों शिव संगी ॥
कर थक्का करि वार। वांन थक्का कम्मांनां ॥
मुष थक्का मुष मार। ठांन थक्का तुरकांनां ॥
थक्कान जैत जज्जर वलां। कन्निन राम गुज्जर धरी ॥
चालुक्क राव गुज्जर पती। धाय धाय घुंमर परी ॥ छं० ॥ ३५६ ॥
दूहा ॥ परिय रार हिंदवांन सों। सोरुत्ती रति वाह ॥
दिल लग्गा वरदाइ वल[1]। जौ हंदे हथ वाह ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

युद्ध का वर्णन।

कवित्त ॥ हय हय हय उच्चार। देव देवासुर भज्जिय
हय हय हय उच्चार। घाइ घाइं घट वज्जिय ॥
चह चह चह चासंत। वहुल पग पग्गं गहन ॥
टूक टूक उत्तरिय। वाजि नर भर भर पट्टन ॥
हर हार वास हर हरु षुलिय। धुम्र मंडल सद्दह उन्नै ॥
मंगल धनेव[2] भारथ्य किय। जिन सु ब्रह्म साधन धुले ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
दोहा ॥ सर्व ध्यांन वंधन सु ब्रह्म। पंच पंचल्ले तत्त ॥
पंच पंच पंचह मिले। अप्प भूत अह वत्त ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
छंद भ्रमरावल ॥ नव जंपि नऊ रस वीर नचै। भमरावलि छंद सुकित्ति सचै ॥
रस भै छह तीय नवं नव थांन। दिष्यौ मुष रूप सु चालुक पांन ॥
भयौ मुष वीर सु भूप नरिंद। भयौ रस कारुन कट्टत कंध ॥
भयौ अदभुत भयांनक ब्रत्त। भयौ रसहास उमा क्रतपत्त ॥
भयौ रस रुद्र अदभ्भुत जुद्ध। भयौ तिन मध्य सिंगार विरुद्ध ॥
भयौ रस संत भई तिन मुत्ति। दिषै जनु पल्लव लालित गत्ति ॥
टगं टग चाह रहै पल हार। उठे तहां हंकि सुबीर हुंकार ॥ छं० ॥ ३६० ॥

(१) मो०-दल। (२) मो०-धुनेव।

तिनं हाय लै हाथ सज्जे उपाई। तिनंकी मयूषं रव्यं[1] होड लाई॥
सुयं कंठ सोभा नरं टोप सोभा। ससी अष्टमी अद्धये भांन लोभा॥
जरे जंजरायं भरं राग मिल्लै। मनों नौ अद्ध नाडिका होड विल्लै॥
हयं पष्परे पष्परं जंजरायं। कपो सीस द्रोनं मनो लंक लायं॥
फिरै गज्ज राजं मदं तेज गाजी। तिनं देषतें बद्दलं कंति लाजी॥
बली बीर कैमास सामुष्य आगैं। मनो राम कामं कपी कूट लग्गैं॥
सुनी कंन्ह भोरा सु चालुक्क बीरं। कुडायौ कहै कोय कैमास भीरं॥
हूकं नाम चंदं वरंदाइ बांनी। जिनैं भंजिया च्यारि मो मंच पानी॥
दिसा च्यारि रष्यौ निरष्यौ प्रमानं। जहां सज्जियं सूर चहुआंन थानं॥
रजं मोद बंकी करक्की कमांनं। धुनै तूल धूनी मनों कठ्ठ[2] थानं॥
हुकंमं नरिंदं सुचालुक्क दीनौ। रचौ आज चौकी सुझाला नवीनौ॥
चिहू कोद पथ्थीन की वीरटं फेरौ। निसा आज रष्यौ सुमंचीति मेरौ॥
चढौ चौक चौकी सुझाला निमांनी। उठी कूर दिष्टी सयं सेन जांनी॥
रच्यौ[3] यों महासेन भीमंग राजं। मिले मल्ल मल्लं अधमं सुसाजं॥ छं० ३१६

चालुक्य की सेना का वर्णन।

दूहा॥ सज्जि सेन चालुक्क भर। रहे लोह वरि कोट॥
पयदल गज वल हय चपल। भए आंनि सब जोट॥ छं॥ ३१७॥

छंद भुजंगी॥ महा सेन सेनं गभीरं गरज्जं। मनों मेघ माला सुकाला धरज्जं॥
झमं झंम झंमंति झाला निदानी। चढी चक्क चक्की चवट्टी सुबांनी॥
सयं सहस.ते नेज कैमास आगै। सयं तीन सथ्थं जयं जाजु लग्गै॥
सयं पंच जद्दों सु जामानि तक्कै। सयं अठ्ठ अठ्ठे रमं राम पक्कै॥
दुहूं बाद सेना बरं बीर बाढी। मनों कुं[4]डली छाडि सामुद्र बाढी॥
अद्ध मेव सामंत स्वामित्त लग्गै। सु मानो कि सेना दनू देव षग्गै॥
भए जन जनं दिठ्ठं दिठ्ठ चौकी। मनों अंकुरी दिष्ट दो नारि सौकी॥
धरे ढिग्ग पग्गे भिरे झल्ल भल्ले। घरी एक भग्गे नहीं दोय बल्ले॥

(१) मो॰—रवि। (२) मो॰—कंठ।
(३) मो॰—रच्यौं। (४) मो॰—मंडली।

दूहा ॥ दल बल कल साँई विसल। मरन महूरत संधि ॥
चाहुआंन चालुक्क कै। लगे वीर गुन बंधि ॥ छं० ॥ ३६१ ॥

छंद रसावला ॥ सूर साँई रनं। धीर चक्के बनं ॥ मोच मत्ते जनं। सार पीवं पनं ॥
सार वीरा इनं। काल जुट्टे जनं ॥ पग्ग पग्गं पनं। ज्वाल लभ्भं मनं ॥
अस्व तुट्टै तनं। रत्त जामें पिनं ॥ लोह वज्जे पनं। डिंभ डिंभी रनं ॥
तार तारं पिनं। काल औसे ननं ॥ रत्त अग्गं निनं। लोह न्हाए मनं ॥
तीय कुट्टै इनं। मांत पित्तं रनं ॥ स्वामि जित्ते तनं। पिंड सारे घनं ॥
देव कालं कलं। ग्यान कुट्टै छलं ॥ जोग पावै ननं। मुक्ति मग्गं गनं ॥
॥ छं० ॥ ३६२ ॥

छंद भुजंगी ॥ हुअं रौर रौरंग सोरंग[1] सोरं। प्रजाचंत बीरं निसानंत भोरं ॥
मुपं मंच कैमास नै भं[2] जिभीरं। कही चंद चंडी बरं जास पीरं[3] ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

आर्या ॥ पारसं अद्ध चंद्रं। तारका तार बंधं ॥ बीरका वीर संधं। सूर कुटै कबंधं ॥
कल चग्गा[4] प्रमानं। देव जग्गा दिवानं॥ गुज्जरं राय रायं। चन्द चल्यौ चिभायं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

स्वयं भोराराय के युद्ध का वर्णन।

कवित्त ॥ चाइ चाइ बिरुझाइ। नैंन तामस भय लखै ॥
दिष्पि रिष्पि अघरिष्पि। भिष्पि आभिष्प स लखै ॥
ग्रहन गरुअ ज्यौं भांन। राहु लग्यौ गुर केतं ॥
यों लगि गरुअ भीमंग। वथ्थ पल पंच जेतं ॥
यौं चल्यौ चंपि दिष्षे सकल। बलति रंघ कठु सदिष ॥
सिद्धांन धंनि सिद्धां सुपन। बिपन मत्त भारथ्थमिव ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

छन्द वेलीमुरिल्ल ॥ प्रमाद उमाद सु आवध संचर। वीर बिरं भरि भूवर[5] नंचर ॥
पंज सों पंज सनेह मिलं थर। संधिय रारि सुधारि सुधं भिर ॥
ठिल्लिय फौज मिले बल[6] दुंदरि। दिष्ट अलग्गि भयौ ससि सुंदरि॥
अप्पय अप्प मिले भर भींमर[7]। पार अपार सरड्डर[8] धुंधर ॥छं०॥३६६॥

(१) ए.—में नहीं है। (२) मो.—दिधिक्रास। (३) मो.—ना सरीरं।
(४) क्र. मो.—कलहलग्गा। (५) मो.—भूचर। (६) मो.—दल।
(७) मो.—सुम्भर। (८) मो.—सारधर।

भगे सीह रायं भई कूप सद्दं । सुनी राय भोरा भने कव्वि चंदं ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

कवित्त ॥ कलह अग्ग सामंत । कांम कैमास कुसल्लिय ॥
गज्ज अज्ज अहजाज । अनुज फिरि पर्यौ दुसल्लिय ॥
झुल्लानी[1] झरफुट्टि । छुट्टि संका सामंता ॥
ज्यों लज्जी परनारि । धींग मिलल्यौ धावंता ॥
असमांन हल्लि भूमिय धरिय । धाय धमंक धमंक धर ॥
बंदियषि बाह बाहू दुदल । प्रथीराज राजंग बर ॥ छं ॥ ३१९ ॥

चलुक्यराज का धोखा करना ।

दूहा ॥ भर भिरि चौकी चंपि चलि । मिलि ठिलि जहां दलराइ ॥
खबर जुद्ध दरबार भौ । चढि चालुक्क रिसाइ ॥ छं॥ ३२० ॥

युद्ध का वर्णन ।

छं० भुजंगप्रयात ॥ धमं धाम धामंत धामं निसानं । निसा स्याम बज्जी सुभेरी भयानं ॥
चिगं तंछि तेजी हयं हिन हिनानं । छुटे अंदु हस्ती मदं जासु रानं ॥
हयं[2] हाय हायं दलं हिंदवानं । महाबीर जग्गे सुदग्गेह मानं ॥
गिरें रत रावत्त तुट्टे बितानं । परी हल्ल हल्लं सुसामंत पानं ॥
कथा उच्च भारी सुभारह पुरानं । सुनें भ्रंम बड्ढे सुममें गियानं ॥छं०३२१॥

कवित्त ॥ मिल्ले मल्ल आलंग । जंग भोरा भुअंग जगि ॥
कै कुलाह कंतार[3] । धारा डंडूर पूर लगि ॥
कै कुलाह कुट्या कि । सिंघ मेंगल मैं मत्ता ॥
कै[4] अप्पा अप सेन । राव[5] रावत्त * विरत्ता ॥

(१) मो० कृ० को०—झाल्लानी ।
(२) मो०—भयं ।
(३) मो०—कुंतार ।
(४) मो०—"कै अपसेना अप्प । अप्प रावत्त विरत्ता" ।
(५) कृ०—मझ्झ ।
* राव० ए० की प्रति में नहीं है ।

पानि निषेध सजी भरसों भर । जानति नां जननी पिय वंभर ॥
सें हथ बाह सयं भर सुभ्भिय । गोहिल मुश्किल परे पय रंभिय ॥
हथिय हंकि भिरयौ प्रभु भीमिय । लष्प सवाय जिहीं दल जीमिय[1] ॥
उत्तर उत्त तुरंगति छंडिय । जद्दव षग्ग वियं करि मंडिय ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

लुथ्थि उलथ्थि पलथ्थि तनंषिय । हुंकत देव सिरं परि पंषिय ॥
रुंडन मुंड परे दरबारिय । जांनि कि कूर सुकठ्ठ कषारिय ॥
सें हथ हथिय सों जुज पारिय । जानि चनूर[2] कि भ्भर मुरारिय ॥
सें गुर बंध सु जांम सु चष्पय । सें दल रामति गुज्जर नष्पय[3] ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

तीन सु तुंग किए तन[4] कुंजर । मीडत जांनि मिली भुज पिंजर ॥
तीन निमेष जग्यौ जदु मुच्छिय । जयं[5] जय जोर पढे उर लच्छिय ॥

भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना ।

चंपिय पांनि हियं दल कुप्पिय । राय समेत पर्यौ धर धुक्किय ॥
प्रांन गयौ गज गुज्जर हारिय । स्वामि गुरज्जन चंद प्रहारिय ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कैमास पर टूटना

भुमि परे भयौ भीम भयांनक । भीम कि भीम[6] गजाधर जानक ॥
षग्ग तुटें कर कढ्ढि कटारिय । सो कयमास ग्रह्यौ कर भारिय ॥
राउ पनौ निरयौ निज चालुक । दंत[7] कै कंठ लग्यौ मनों कालक ॥
कष्प धर्यौ कयमास उचाइय[8] । पटन राइ जै सिंघ दुवाइय ॥
छं० ॥ ३७० ॥

कंन्न परी गुर गुज्जर रामहि[9] । जैत पवार सुमोहिल रांनहि ॥
लेन लगे चल चालत तांनहि । सिंघ परे बक्क में गजवांनहि ॥

---

(१) मो०—दलंदल । (२) को०—जा बिचनूर । (३) मो०—नंचय ।
(४) को० कृ० ए०—कोर । (५) मो० कृ—जय । (६) मो०—नीम ।
(७) मो०—दंतिय । (८) को० कृ० ए०—उचारिय । (९) मो०—कान्हहि ।

आहुत [1] सेन उत्तर दिसा। ईसाने लग्गिय लहरि॥
धावंत धाम सामंत सों। सूर समर लग्गे समरि॥ छं०॥ ३२२॥
चंडिय देवि पसाइ। हस्ति तोरै मै मत्ते॥
चल्यौ राय भीमंग। चोर मोरह सिलहंते।
कै अप्पानी रारि [2]। काइ धाम कि डंडूरिय॥
कै कुट्टा संग्राम। सिंघ संकर निज्जूरिय॥
कै वीर धांम धुज्जिय धरा। कै कलाल [3] कलपंत हुअ॥
जा जंपि जंपि जंपन कहै। जपै राज भीमंग भुअ॥ छं०॥ ३२३॥
नां अप्पानी रारि। नाहि धाइ सुडंडूरिय॥
नां कुट्टा संग्रांम। सिंघ संकर निज्जूरिय॥
है हक्कां धर कंप। चंप उत्तर थी लग्गिय।
चौकी गस्त गुराइ। कोट कोटन इत भग्गिय॥
सा द्रुग्ग देव सत्तरि पती। पति पहार ठेल्यौ करिय॥
आहंन हंन हंतेव हठ। निसि निसान सद्दह भरिय॥ छं०॥ ३२४॥

सप्तमी को घोर युद्ध का आरम्भ होना।

दूहा॥ सद्दां सद्द उसद्द भय। वज्जा वज्जिय लग्ग॥
जूना जंजर वैर [4] वल। भई सुरासुर जग्ग॥ छं०॥ ३२५॥
संभरि सों लग्गे समर। अमर कौतिग एव॥
घरी सत्त सत्तमि दिवस। उग्यौ उडग्गन देव॥ छं०॥ ३२६॥

छंद भुजंगप्रयात्॥ घरी सत्त सत्तं उग्यौ चंद मानं। वरं वीर चालुक्क पग्गं पगानं॥
बनी जूह कूहं कलं कोकनद्दं। मनों गज्जियं मेघ नद्दं प्रसद्दं॥
कुलं वीर जग्गे सुपं नीर भारी। परे लोह आहत्त सा व्रत सारी॥
बहै पग्ग धारं गजं सीस भारी। मनों धूम मज्झे उठै अग्गि झारी॥
तमी तेज भग्गे जगे तेज पग्गं। बजै जंग नीसांन ईसांन मग्गं॥
करै अप्प अप्पं न्रपं वे दुहाई। नचे रंग भैरूं ततथ्येन घाई॥

(१) मो॰—आवृनसेन। (२) मो॰—कै अपनी पार।
(३) मो॰ कृ॰ को—कुलाल। (४) मो॰—बैर।

हक्कि हमीर हस्यौ नृप नक्किय। तुम सामंत किनां नृप पक्किय ॥
गहि गल भीम झमक्कि हिलोल्यौ। अंब पस्यौ तर जांनि झंझोल्यौ ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

फिरि करि वाहि नरिंद कटारिय। सें नृप मल्ह[1] हमीर निवारिय ॥
गौ भजि भूप जहां रज पत्तिय। हल्लि भारें जल ज्यों गिर गत्तिय ॥
अप्प गज्यौ भर भीम महाभुज। उभय सुषग्ग सुवंक दुअंनुज[2] ॥
आय मिले भर भीम समथ्थह। जंपिय जीह हरी हर तथ्यह ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

डंभिय बीर महा बर बीरह। सोढा सारंग देव सधीरह[3] ॥
चोरा चाचिग देव सधीवह[4]। बीर बढेल सु जुद्ध अरेवह ॥
सथ्थह सत्त सहस सु सथ्थिय। जुद्द मच्यौ सम सूर समथ्थिय ॥
भीर भई भर सामंत सूरह। बीर जग्यौ सम बीर करूरह ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

कैमास पर भीड़ देख कर चामंडराय का सहायता पर पहुंचना।

कवित्त ॥ तामस मय चामंड। आप तथ्यह संपत्तौ ॥
चरन वंदि मथुरेस। सुने कारन क्रत तत्तौ[5] ॥
सुभट पंच सें सथ्थ। सिलह बंधी सवधीरं ॥
परसि तिथ्थ कटि पाप। अप्प आवरेसु बीरं ॥
देषियै भीर कैमास सिर। सेंधि रारि उससे अरुन ॥
हहकारि हक्क चामंड गजि[6]। सब्ब[7] लोह कड्ढ लरन ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

घोर युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कढे लोह सोहं जपे आंन ईसं। समं ज्वाल पावक्क में धूम दीसं ॥
बजे लोह रथ्थं[8] रजे रारि संधी। मिले षेल बीरं दुअं पंति बंधी ॥

(१) मो॰—मेल्हि। (२) मो॰—उनिय षग्ग सुबंक बिय दुज।
(३) को॰ कृ॰ ए॰ में यह तुक नहीं है। (४) मो॰—चोरा चाचीय देव सुदेवह।
(५) कृ॰ को॰ ए॰ सुनिय कायरन क्रत सत्तौ। (६) मो॰—गति।
(७) मो॰—सबहि। (८) मो॰—रत्तं।

बद्दै बांन आव्रत सावर्त्त तेजं । तहां चंद कव्वी उपमा कहेजं ॥
लगें अंग अरि गंजि सुग्रीव भारी । फिरंतं ज जंगम दीसे उतारी ॥
परें संध बंधं असंधं निनारे । मरोरंत चौरं मनों म्रूर वारे ॥
फिरें [1] मद्धि ढालं रिनं मंझ रीती । तिनं सुक्कियं कुंत वारी निव्रती ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना ।

कवित्त ॥ है [2] पग गै पग रथ अरथ । वढि वढी नर लग्गा ॥
कै घायां घन नंत । भयें भंभरि[3] भर भग्गा ॥
चालुक्का चंप्यो सयंन । सें दल सामंता ॥
गौरीरद कैमास । भूप भोरा धावंता ॥
रथ सथ सिलह सज्जन कह्यौ । गहकि गज्जि भोरा सुभर ॥
को करै काल सों चाल क्रत । मदन रंभ मानों अमर ॥ छं० ॥ ३२८ ॥

हक्कार्यो रा भीम । मत्त में गल गज्जानां ॥
सहस पंच साहन समंद । ढालै ढल्लानां ॥
जंच मंच गोला गहक्क । छोनी सव संकिय ॥
साहन वाहन वर विरह । आवत उत्तंकिय[4] ॥
लह्लरिय लोह अप्पां अपन । झर उझार लग्यौ गगन ॥
चल हले सेन सामंत [5] दल । मनों अंत [6] जस जुध्य पन ॥ छं० ॥३२९॥
ना कुट्टा रासिंघ । डांम डंडूरन उठ्यौ ॥
ना हंकाया आप । सेन भारथ्थ न जुट्यौ ॥
सा मंतारी हाक । धाक उत्तर दिसि लग्गी ॥
अप्पांनो सेना सुनत [7] । भारथ भिर भग्गी ॥

---

(१) मो०—हत्थि ।
(२) मो०—हैयथ गैयथ ।
(३) मो०—भूंभर ।
(४) मो०—उतंगिय ।
(५) मो०—सामंद ।
(६) मो०—अंठ ।
(७) मो०—सुमंत ।

धवक्कंत संगी षवक्कंत बीरं । भभक्कंत श्रोनं अमेनंति धीरं ॥
पलं[1] षंड तुट्टं कटिं षडुजामं । बधै बीर बीरत्त अंगं उधामं[2] ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

असी झाक बाजंत पावक्क उट्ठं । जरै टट्टरं धज्ज उभ्भार मुट्ठं ॥
हरै अंत अंती पयं रूक्कि[3] तुट्टै । कटिं[4] पाइ पानिं धरं सीस लुट्टै ॥
असी अग्गि उड्डुं लगें टोप दभ्भें । उठे श्रोन छिक्कं तिनं ताप रभ्भें ॥
परें हाथ चामंड बाजी बिभंगं । नरं रूथ्थ संनाह षंडं अलग्गं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

रिनं राइ चामंड षेलं कहरं । मनो भग्गलं नट्ट मंड्यौ बिरूरं ॥
चल्यौ गज्ज[5] पामार सिंघं समथ्थं । तिनं गज्जयं चंपि चामंड तथ्थं ॥
षप्यौ अस्व चामंड गो भूमि मग्गं । उठ्यौ अस्सि मग्गं[6] हयो सं समग्गं ॥
फट्यौ सीस कंधं समं झाक ताहं । गहै[7] दंत दंती धमक्यौ धराहं ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

फटे कुंभ प्राहार श्रोनं अजेजं । महामट्ट फुट्या मनों रंगरेजं ॥
चली कुंभ साडंभ भेजी डपट्टं । मनो भंजियं कन्ह सोदड्डि मट्टं ॥
पर्यौ सिंघ भूमं करै हक्क उठ्यौ । हयौ असि बिभाग होनी अपुठ्यौ ॥
हचक्कारि सारंग सोढा समथ्थं । समं आइ चामंड सों सेल हथ्थं ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

हयौ अस्सि दाहिम्म सा सीस मंधे । जरासंध फट्या जरा जानि संधे ॥
हयं सद्द जंपेव वट्टेल बीरं । समं अस्व चामंड चंप्यो सुधीरं ॥
हयौ सेल दाहिंम सीसं सुदेसं । फटै टट्टरं पुट्ठि उट्ठे परेसं ॥
ग्रहे[8] बांह चामंड चंप्यौ सुजरं । बिना अस्त्र नष्षो कलेवं सभूरं ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

---

(१) मो.—पलं पब्बु तट्टं करं । (२) मो.—बँधे वीर बीरं सुअंगं उधामं ।
(३) मो. रुक्कि । (४) मो. कटे ।
(५) मो.—सलष । (६) मो.—उठे असि दभ्भं । (७) मो.—गज्जे ।
(८) मो.—गहं ।

सन्नाह राय सज्जी सुकवि। विधि विधान लग्गिय अमर ॥
चालुक्क राइ चित धुंमरी । सार धार लग्गी समर ॥ छं० ॥ २२० ॥
मदन रंभ आरंभ । जग्गि[1] भेरा सनाह सजि ॥
तब लगि दल रक्कयौ । राज कंठीर कन्ह रजि ॥
भर अभंग चालुक्क । रोस आकास प्रमानं ॥
चाना चल मंमस्यौ । तमवि तामस तम भानं ॥
चैनेत जगि प्रलैकाल जमु । वंधि वंधि गज्जे उभय ॥
वंभांन जग्य जे उप्पने । करौं सोइ निर्वीर मय ॥ छं० ॥ २२१ ॥

युद्ध आरम्भ होना ।

पग उभारि दल रारि । नारि कछुन दुज्जन वै ॥
श्रौडन ष्थट नंचि । धंचि[2] भत चालुकन रवै ॥
कढि कवंध धर लुट्टि । लुथ्थि पर लुथ्थि अरुट्टिय ॥
श्रोन धार पल चलिय । मोह माया भ्रम छुट्टिय ॥
तुटि अंत दंत पाइक ढुरहि । बद्दर रूप धावै अरुग ॥
पग पगति सिंभ[3] पग पग सुगति । भुगति लभ्भ कित्ती सुजग ॥छं॥२२२॥

दूहा ॥ कित्ती[4] सजन लग्यौ न्टपति । सुर विध्वंसन काल ॥
वीस सहस पारस परिय । मनों वीर वर माल ॥ छं० ॥ २२३ ॥

छंद मोतीदाम ॥ समग्ग अमग्ग विमग्ग विसाल । रहे जुरि चालुक देवन साल ॥
जुरे वर वीर दसों दिसि पंति । मनों[5] घन भद्दव वर्त्तन भंति ॥
दोऊ दिसि घाव वढे करि साज। मनों चव चंग कुलंगन वाज ॥
परे बहु दंतिय[6] भंतिय काल । वरै वर ढूंढि विवांनन[7] बाल ॥
मनों मुगधा मन मांन प्रमांन । रही द्रुम अच्छरि रंक्ति विमांन ॥
सुदेव जयं जय नंषि पुहप्प । करै दोउ चंद सुकीरति जप्प ॥
इकै अइ[8] कीरति अमृत एक । कछूक कवित सुधारैं विसेक ॥

---

(१) मो॰—लगि । (२) मो॰—नंषि । (३) मो॰—शंभु ।
(४) मो॰—क्रित्ति सजन लग्यो नृपति । (५) मो॰—मनो घट भद्दव सद्द निरत्ति ।
(६) मो॰—पंतिय । (७) मो॰—निवांनन । (८) मो॰—अषि ।

चढ़ौ अश्व वढेल चामंड बीरं। जयं सद्द जंपे सुरं सीस धीरं॥
चढ्यौ अश्व चामंड चंपे अरेसं। बिनं षंड षंडं परंतं परेसं॥
परे संड मुंडं सु सामंत हथ्थं। मनों कोपि कोरों दलं पारि पथ्थं॥
परीहार सिंहं लग्यौ लोह रस्सं। मनो सूक षंषं सुरं मुष चस्सं॥
छं० ॥ ३८० ॥

भै धार हूंसं गहक्क बहंके। हनो सद्द जंपे लषे भीमधंके॥
तबे सां पुला आय बोरंम देवं। नृपं अप्प अडौ उचसे उरेवं॥
दुअं उंच गातं दुअं उच हथ्थं। दुअं सामि ध्रंमं सुधारंत मथ्थं[1]॥
दुअं सेत अश्वं छिरं गेन सारं। दुअं श्राइ आभासि सेलं उभारं॥
छं० ॥ ३८१ ॥

दुअं वाहि सेलं तनं मझ्झ भग्गे। ... ...॥
षिना बाज दूनं कढे षग्ग ढानं। जुटे अंगदं भीम दुर्जोधजानं॥
उभै षग्ग भग्गे कढे जंम दड्ढं। जुटे हथ्थ बथ्थं समथ्थं सनड्ढं॥
धवक्कं हुअक्कं जमं दड्ढ पानं। लषे सीसयं फूल नष्षे सुरानं॥
छं० ॥ ३८२ ॥

करे तर्पनं रत्तपिंडं पलोरं। करे केस कु स्सं नृभै तिथ सारं॥
बरं[2] रथ्थ रोहे चढे स्वग मग्गं। धनं धंनि बांनी सुवै सेन लग्गं॥

भोलाराय की सेना का भागना।

गहक्केव क्रम्यौ सु कैमास जामं। भइंराइ सेनं भगी भीम तामं॥
छं० ॥ ३८३ ॥

दूहा ॥ दस सहस्र दुअ भुज परत। रहि दरबार झुझ्झाइ॥
हसम सहित छुंवर सुमति। कतिहुन बांन सिराइ॥ छं० ॥ ३८४ ॥
दरसि राज पट्टन सुपति॥ गति फर पारस लग्ग॥
मनों इन्द्र इन्दी वरन। मुष मुष कंकन लग्ग॥ छं० ॥ ३८५ ॥
लुथ्थि रची दरबार गुथि। घरिय पंच अस रीस॥
तिन महि सक कैमास सथ। रहिग अठारह बीस॥ छं० ॥ ३८६ ॥

(१) मो०--मथ्थं। (२) मो०--वरं।

सुर च्छिनंत नहि वीर बखांन। बढे बर बांन क्रमां मय[1] थांन ॥
भ्रमंतिय गिद्धिय छुद्धिय[2] भांन। रची[3] इक अच्छरि अच्छ विमांन ॥ छं०॥३३४॥

वाजिद खाँ का लड़ना और बीरसा से मारा जाना।

दूहा ॥ सद्धि षांन बाजींद भिरि। पंच सहस तिन सथ्थ ॥
भर चालुक सेवक बली। जे घल्लै जम हथ्थ ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जूह[4] सिरदार। ढाहि दीने बलषांने ॥
नल कूबर मनि ग्रीव। जमल भग्गा नरकांने ॥
पुब्ब आप नारद सब्रप। किति दरसन हरि पाइय ॥
उत्तमंग उत्तरे। हूर लै सूर बधाइय ॥
उप्पारि षांन बाजीद लिय। षग्ग मग्ग वोहिथ्थ सें ॥
चालुक्क भीम परपंच परि। चंपि चूरि षग्गह षिसें ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

अष्टमी के युद्ध का वर्णन।

दूहा ॥ भर पर भर वज्जै सुभर। हय गै दल भर तुट्टि ॥
चंद सीस अद्धौ चढ्यौ। बर अष्टमी अहुट्टि ॥ छं० ॥ ३३७ ॥
सै बंधन बंधन ब्रह्म। पंच पंच लै तत्त ॥
दल छिक्कत छिपै सुगति। अप्प भूत अपतत्त ॥ छं० ॥ ३३८ ॥
सिसिर आइ कायर तनह। ग्रीषम सूर प्रमांन ॥
वे तट्टे ए तत्त गुन। विधि विधांन दै वांन ॥ छं० ॥ ३३९ ॥
बालप्पन जुब्बंनपन। लइ वड्डप्पन किति ॥
धनि हाला हल विति तहां। भई कन्ह जिमि किति ॥ छं० ॥ ३४० ॥

छंद नाराच ॥ परट्ठि सेन सज्ज वीर बज्जए निसानयं।
नराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं ॥
गजं गजे हलं मले हले चले गिरद्धरं।
कसंमसे उकस्स सेस कच्छपं उचक्करं ॥
उपारि भूमि दट्ठ तब्ब कंध आनि मुक्कयं।

---

(१) मो०—नय। (२) मो०—पावे न जांन।
(३) मो०—इम। (४) मो०—जूर।

अप्पांही अप्पां जुरिग । भग्गा बैर वर घाइ ॥
सुआ न को मृत जा करइ । कढ्ढी कढ्ढन षाइ ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

कवित्त ॥ आयौ कढ्ढी स्वामि काज । साहस सामंतां ॥
बारह से बानेत । सुभ्रत ढुढन धावंता ॥
द्वैवै लग्गै हथ्थ । तथ्थ भोरें राकज्जें ॥
जो वित्त कवित्तयौ । देव दरबार सु गज्जै ॥
संग्राम लग्गि संकट सु पहु । पहु प्रहास पिंगिय पहर ॥
तुट्टिय सु सस्त्र छिचिय सिरन । गहत गनत ब्रह्मै गहर ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

छंद रसावला ॥ छिंदु छिंदू ररी। लोह उड्डं[1] भरी ॥ मुक्क उक्कीबरी । मुक्क सुक्केसरी
राग रंगै तरी। भीर भागैं परी ॥ झल्ल मल्लै ढरी । ढल्ल कल्लै टरी ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

कढ्ढि कूटं करी। ईम ईमं अरी ॥ भीम लग्गी घरी । राइ तुंगं परी ॥
गोम छेमं लरी । आइ क्का उग्गरी[2] ॥ कंज कूरंभरी। दाहिमानी भरी ॥
छं० ॥ ३९० ॥

जड्डु हड्डे करी। षैर वज्जीषरी ॥ सून सेनं टरी । लुथि पा पथरी ॥
कोंन जंन्ने झरी। केथकेनी बरी ॥ जैत उप्पा भरी ॥ ... ... ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

कवित्त । काकढ्ढी झुम्भयौ । रच्यौ रानिंग देव उर ॥
जेन सहू धरि छच । मंच न्निबद्धौ मंडि सिर ॥
गरुअ राव पैरंभ । रच्यौ ग्यारह से संभर ॥
पारिहार पावार । नेह निव्वह्यौ सुनिव्वर ॥
जानै न चंद आतन अनत । सहस तीन तेरह परिग ॥
गुज्जरिय ग्रेह संदेह मिटि । सहस मत्त दह निव्वरिय ॥ छं० ॥ ३९२ ॥
चहुआंनां रे सेन । समुद विच बडवा गोरं ॥
अगि सु षग्ग षग्गयौ । सुतमरन धन धन कोरं ॥
स्यांम कोह दद्दयौ । रोस नथ्थयौ सु गढ्ढौ ॥

(१) मो॰—झम्मं । (१) मो॰—आइ कक्कांबुरी ।

दुति श्रोपम कवि चंद। चंद पारस विच ठड्डौ ॥
भुल्लई लोह लहरैं सुतन। तुटि गुरज्ज अरि छंडिलिय ॥
कड्डयौ समर चालुक्क रन। अप्प पंच मिलि अप्प जिय ॥ छं० ॥ ३९३।

पृथ्वीराज का राज्यस्थापन होना।

जित्यौ रनि रनि वाह। सिंघ लीनौ गज घेरिय ॥
बलि दाहिम कैमास। दियौ चालुक मुष फेरिय ॥
बरति संग वे थांन। राइ भोरा हथ मंडिय ॥
दिसि दिसान कग्गद प्रमांन। आव आवन लगि छंडिय ॥
ढुंढ्यौ षेत सामंत भर। आपन पर उत्तारयौ ॥
तिन रानि रारि चहुआंन दल। मंत सुमंत विचारयौ ॥ छं० ॥ ३९४

छं० भुजंगप्रयात ॥ पस्यो अप्पि हाडा हयं हड्डभग्गी। लस्यौ लोह भीमं सिरं कच लग्गी ॥
पस्यौ पंथ मारा[1] उपरिहार पाली। जिनै ब्रह्मचारी चितं किति आली ॥
पस्यौ माभ मोहल्ल मल्लीन वल्ली। जिनै देह रत्ती करी सस्त्र ढिल्ली ॥
त्रिभै जैत वंधं पस्यौ धार नाथं। मही राव भागै नहीं जासु हाथं ॥
छं० ॥ ३९५ ॥

सहदेव सोनिग्ग चौहथ्य हथ्यैं। रची रंभ ढिल्ली गुनं गैन गथ्यैं ॥
असारी असंभी जयं जोग ध्यानं। कवीचंद किती करैं का षपानं ॥

आबू का राज्य जैतसी को सोंपना।

रतिं वाह वित्यौ जयं जैत सूरं। षदे ग्रेह सामंत तत्ते सपूरं ॥
गजं वाज लुट्टे स कुट्टे पवारं। दियौ राज अब्बू सदुग्गं अधारं ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

परे स्वामि कांमं जु सामंत रुथ्थी। प्रकारे[2] सु चंदं दिसा सुद्ध पथ्थी ॥
जयं पथ्थराजे सु सोमेसपुत्तं। धस्यौ संभरी राव सो छत्र छित्तं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय सों जुद्ध सामंत विजै नाम द्वादस प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १२ ॥

---

(१) मो॰ प्यवार परिहार। (२) मो॰ प्रकांसे।

शाह की सेना का युद्ध वर्णन।

छंद रसावला ॥ साह गोरी भरं। सेन संभे फिरं। * * * * * * * * ॥
लोह कढ्ढे करं। बीज झंपं झरं। असि वंकी करं। चंद वीयं वरं ॥
नेंन रत्ते करं। कंध कढ्ढे करं(१)। वं वजे घुग्घरं। मुप्पजा कंदरं ॥५९॥
वीर वड गुज्जरं। सेन वढ्ढी परं। असि मारं भरं। उत्तकंठं परं ॥
रंभ ढुंढै वरं। लुथ्थि आलुथ्थरं। सेन भग्गं परं। लोहु लो उच्चरं ॥६०॥
पंथ ते उत्तरं। भार नंषे सरं। जोग दिष्पै नरं। सिद्ध नारी पुरं ॥
वजीयं यों करं। मुत्ति वंधं परं। सूर नांही डरं। स्यार पच्छे परं ॥ छं०॥६१॥

दूहा ॥ उनंगे सुरतांन दल। साढे चतुरंग ॥
दीह दुघटी रन मिले। सोभर नीं किं जंग ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलष राज का भी आकर मिलना।

छंद भुजंगप्रयात ॥ जुगं जंग लग्गे चलक्के गुमानं। ढलक्के सुने जा चढयौ सू विहानं ॥
निर्य नद्द नीसांन वज्जे विहानं। परी श्रैल आलंम हुअ जान थानं ॥
चढी चक्क चक्की हुअं सोर भोरं। मनों मेघ घोर कियं सोर मोरं ॥
कहैं पांन जादे अवे सू विहानं। चढयौ साहि सद्दें अरे चाहुआंनं ॥ ६३ ॥
भरक्के भराहं उनें हंस नद्दं। भए वंध हीनं घने मेछ अद्दं ॥
असोरा अछेहं भगे वंध फौजं। मिल्यौ आय फौजं सलष्यंति सौजं ॥
उतंगं सु गातं भरं वथ्य घातं। सनेही सुभट्टं मनों सिंघ वातं ॥
अलग्गं सुलग्गं उच्चारंत मेछं। उडी पंति गत्तं वंधे रेस रेसं ॥
कला सूर एकं असू रंस चैाकी। सचै कैान मारं विसुरं सु सैाकी ॥
छं० ॥ ६४ ॥

सलष की प्रशंसा।

कवित्त ॥ ढंढो रज्जषि ढाल। मुरें गैारी दल अविहर।
अविहर दल विहरंत। परे सिल्ला रति असि झर ॥
असि झर भर भिंगई। मलिक दावानल लग्गैा ॥

(१) को०–परं।

दावानल प्रज्जल्यौ । पिट्ठ सु समान विलग्यौ ॥
सूरिमा हाक संभरि सभिक । त्रिगुन सद्द लय दल सद्दुत्र ॥
दल प्रलय होत को अंग में । पष्पर लष्प सलष्प तुत्र ॥
छं० ॥ ६५ ॥

त्रिगुन त्रास पामार । भिरिग चौकीय चकाहिम ॥
चका व्यूह अहिवंन । मनों जै द्रष्ष सु दाहिम ॥
धरि धारह धारार । धार धारह आवहिय ॥
आहुट्टिय मनों सिंघ । सिंघ ए काम उपट्टिय ॥
जज्जरिय गात आघात उठि । प्रभु अवु अठहह.अठिल ॥
धरि एक सार संभरि सुभर । रन त्रिघात नंचिय नठिल ॥
छं० ॥ ६६ ॥

आजानबाहु लोहाना का मारकर भागना ।

लोहांनौ आजांन बाह । वाहन वहि लग्गौ ॥
त्रिगुन त्रास त्रिसीय । मार भारी भर भग्गौ ॥
तब जग्यौ सुरतांन । षांन षग्गह षंधारिय ॥
वाह वाह आलंम । अभग आलम कहि सारिय ॥
बिस्तरिय बहसि हिंदू तुरक । किरकि कंक मंजन करिय ॥
संभरिय धरिय संमर तनिय । कब्बि मुष्ष अस्तुति धरिय ॥
छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ जहां जहां रन अंकुरिय । तह तह चंपिय राज ॥
मिच्छ सेन एकत करिय । मनों कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सलष राज की वीरता का वर्णन ।

कवित्त ॥ ढंढो रिज्जे ढाल । ढाल ढंढोरि ढंढोरै ॥
मुरें ढालंढी चाल । चाल अरि माल विछोरै ॥
अरि बिछोरि अरि माल । सलष उभ्भो पय पय ग्रसि ॥
हंसि नाग गिरि नाग । तेग कढ्ढे बढ्ढे लसि ॥
दन देव दच्छ गंध्रब्ब गन । अजुत जुद्ध दिष्षे अदय ॥
चहुआंन सेन सुरतांन सों । सुजनु अंत लग्गे सदय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

अथ सलष जुद्ध समयो लिष्यते ॥

(तेरहवां समय ।)

सिंहावलोकन ।

दूहा ॥ गह उगाह निग्गह करन । भिरन भूप चहुआंन ॥
सिंघालोकन कथ्य कथि । सो कवि चंद वषांन ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ धन व्रिधन दोइ धपहि । धपहि रन वीरह काइर ॥
कुहैं वल वे पांन । धीर एक्के वल साइर ॥
अधम जुद्ध नह आदि । जुद्ध हिंदवान हिंदु वर ॥
चाहुआंन सुर तांन । कहो कलहंत केलि भर ॥
आदेष सेव चहुआंन किति । चालुक्कां लग्गे भिरन ॥
सम मुगति वंध वंधे वलिय । सुवर वीर लग्गे तिरन ॥ छं० ॥ २ ॥

गाथा ॥ ढिलिय ढाहन सत्तं । वज्जिय आराज राज राजेन्द्रं ॥
ग्रामं पुर अजमेरं । जग्गे सय धीर विकंदं ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ सयन सिंह लग्गा सुअरि । सुनि करि बर प्रथिराज ॥
सा हंडे संम्हौ चल्यौ । तहं गोरी प्रति बाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

गाथा ॥ भारद्वाज सु पंषी । उभयं मुष उहरं एकं ॥
त्यों इह कथ्य प्रमांनं । जांनिज्यो कोविदं लोयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

उधर भोला भीमदेव से सरदारों की लडाई ठनी इधर शहाबुद्दीन की खबर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना ।

दूहा ॥ उत भोरा भीमंग सों । सूरन संध्यौ सार ॥
इत प्रथिराज नरिंद को[1] । दूत संपते वार ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) छ० को० मो०--कै ।

बड़ गुज्जर और तातारख़ां का युद्ध वर्णन ।

बड गुज्जर रा रांम । उत्त तत्तार मंडि रन ॥
सार धार उभ्भरिय । श्रोन झंभ्भरिय गगन तन ॥
लोह षड्ड उड्डंत । हंस छुट्टंत श्रीर सर ॥
फिरत रुंड विन मुंड । दंत विन सुंड सार झर ॥
अदभुत भयावह समर मचिय । रचिय रक्त काली कहर ॥
ढुक लरत गिरत घुंमत घटत । भटकि नट्ट मंडिय बहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

छंद चनूकाल ॥ कहि चनुं कालय छंद । मिलि साहि गोरिय दंद ॥
तत्तार षांन मसंद । बड गुज्जर राम नरिंद ॥ छं० ॥ ७१ ॥
नट बरह मंडिय ष्याल । पर हत्ति हाल विहाल ॥
झरि रार रत्तह भीर । उठि ष्अंग अगनित बीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥
कढि लोह कोह दुहीन । बजि तार झार सुझीन ॥
कर कंठ कंठिय जांनि । करै देष दुंदुभि गांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥
नचि चक्क चक्कि गरिठ्ठ । अरि भवत दृष्ट सु दुष्ट ॥
बनि सार धार करक्कि । परि सीस भूमि तरक्कि ॥ छं०॥७४ ॥
उडि छिंछ इच्छ प्रकार । रुधि बहै अंगन पार ॥
इन भेष राजत बीर । मधु माध रुक्ख सरीर ॥ छं० ॥ ७५ ॥
सुनि श्रवन समझन बेन । आहत्त घाय प्रचेन ॥
परि अंग अंग निनार । वजि दिव्य देवन तार ॥ छं० ॥ ७६ ॥
असि बजत सार सरीर । जनुं झिलत सूरत नीर ॥
अँग अँग धार घनक्कि[1] । जलजात बोलत थक्कि ॥ छं० ॥ ७७ ॥
सुरतांन आंन कहंत । सुनि सेन सथ्थ गहंत ॥
टरि धरिय मध्य मध्यांन । चहुवांन देषिय भांन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दोनो सेनाओं का एक घड़ी तक एकमेक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना ।

(१) को०--घनक्कि ।

अंग भसम जंगम जुगति[1] । जटा जूट सिर मंडि ॥
कसिल गोट म्रिग चर्म पट । बड आडंबर फंडि ॥ छं० ॥ ७ ॥
नयन जोति वत्तन विदुप । असन दंभ कहुं आंन ॥
षवरि होन बुल्ले निकट । दुवा दीन[2] चहुआंन ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ श्री चहुआंन नरिंद[3] इंदं अवनी भूपान भूपालयं ॥
जंबू दीप महीप दीप निवलं कित्तीति विस्तारयं ॥
षग्गं चाम मैवास चास चसनं गर्भा न गर्भं गलं ॥
तोयं जैति जिहांन भांन तपनं मानं दृष्टा जे बलं ॥ छं० ॥ ९ ॥

वार्ता ॥ अचहु श्री चहुआंन गाजी । पलक तो षग राजी ॥
मेवास मार बाजी । षत्रै तो सरन साजी ॥
मैभीत भूपं चषेवं । फल पत्र कंदं भषेवं ॥
आवास निर्वास नेरं । जहां तहां तजमि धतूर घेरं ॥
अजमेर पीर सहाई । दुसमंन पैमाल षपो देव घाई ॥
पीर पैगंवर दुवाह गीर सारे । अन मीन सइनिन दंत चारे ॥
ढिल्ली तषत थिर राज तेतें । गंग जल जमन रवि चंद जेतें ॥ छं० ॥ १० ॥

दूत का आकर पृथ्वीराज को ख़बर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहाबुद्दीन आता है ।

दूहा ॥ सुनि दुवाह जंगम चरन । आडंबर तन तिच्छ ॥
रिंझिय गल्हां गुर सुतन । कहो षवरि की मिच्छ ॥ छं० ॥ ११ ॥
कहै दूत दिल्लेस सुनि । चरचि वत्त चहुआंन ॥
हम आए तब उन कियौ । बाहिर नगर मिलांन ॥ छं० ॥ १२ ॥
कहै विवर सांई सुनौ । गज्जनेस सह भेव ॥
तीन लष्ष साहन सबल । अकल अनंम अतेव ॥ छं० ॥ १३ ॥
वंके मुष बंके चषन । वंकी करन कमांन ॥
वंक दीह सम करि गनौ । वंके षग्ग अमांन ॥ छं० ॥ १४ ॥

(१) को.--सुगति । (२) मो.--दिय दुवाह । (३) मो.--नरिंद ।

कवित्त ॥ भांन दिष्षि धुंम्मरौ। रैंन उड्डी धर धूंमर ॥
चकित देव गंध्रव। ईस चकित गुन अंमर ॥
टोप नेत चक चेत। अग्गि उडिवी असि टोपं ॥
मुकर मध्य जनु ईस। नेत देषत चय कोपं ॥
घरी एक एकमिक्क हुअ। मद्दन रंभ मच्यौ सुविय ॥
इक परत गिरत तुट्टत सुतन। इम छिचिय छिति पर सुभिय ॥छं०७९॥

कैमास का साथ छोड़ कन्ह चौहान का भी सारूंडे में आ जाना।

दूहा ॥ कन्ह छंडि कैमास फुनि। सुधि सारूंडां रारि ॥
तनक भनक सी सुनत ही। जांनि कै धप्पी धारि ॥ छं० ॥ ८० ॥

कन्ह का बड़ी वीरता से धावा करना।

कबित्त ॥ धारि धाप धपि कन्ह। आंनि अनचिंत परी रन ॥
वसीह सम संघरन। जांनि दव दंग सुक्कवन ॥
कै आषाढ उडूर। तोरि तर म्मूल उक्कारिय ॥
कै व्यानी वाघनि सुपत्त। उकति आषेट उक्कारिय ॥
रूठो कि रिच्छ राषिस दलन। समर सेन धक्काह धरिय ॥
नंषंत जांनि सरवर सुभर। कढि सरोज मत्तौ करिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दोनो ओर के सरदारों का महा क्रोध कर करके युद्ध करना।

छंद भुजंगी ॥ पस्यौ धाइ सुरतांन सुविहांन गोरी। चंपे चाइ चहुआंन गौ पंच डोरी॥
षिझ्यौ वंक सूरं सलष्षं पवारं। न्रपं सार टट्टी किसारं किवारं ॥ ८२ ॥
षिझ्यौ कंन्ह कंकं झँडा मड्डि गाढौ। मनों राष्षसी सेन में कप्पि ठाढौ॥
गहै दंत दंतीय भुज्जं उषारै। [१]धरा कढ्ढि मूला मनो मार डारै ॥ ८३ ॥
दुवं वीर हक्क महावीर सद्दं। भये रंग रत्तं मनों मल्ल हद्दं ॥
लगै सस्त्र अन संष हथ्थीन टारै। [२]मनों कोपियं भीम पाहार फारै ॥ ८४॥

---

(१) को०—इस तुककी जगह यह तुक है"—मनो को पियं भीम पाहार फारै।

(२) को०—इस तुक की जगह यह तुक है "धरा कढ्ढि मूला मनो मार डारै।

दूत का बेवरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना।

छंद-पद्धरी॥ कर जोरि अरज तिन करी राइ। गनि कहैं सेन जे जुरे आइ॥
दस सहस सेन पक्खर अगंज। अति उंच गात सादूल पंज॥ छं०॥ १५॥
बत्तीस सहस कविली कहर। जम जोर जोध निज्झरि गहर॥
कसमीर कहर सत्तरि हजार। कमनैत काल मुठ्ठी समार॥ छं०॥१६॥
हबसीह संम चैपन हजार। कर धरैं कहर कत्ती वजार॥
पेंतीस सहस रूमी रहस्सि। तिन गहै लोह मह मह वहस्सि॥ छं०॥१७॥
सेंतीस सहस सज्जे फिरंग। तिन लंब झूल टोपी सिरंग॥
सहह हजार सज्जे पठांन। अनभंग जंग अनभूल थांन॥ छं०॥ १८॥
दस सहस सेन सज्जो सजट्ट। वाराह वैर बल घट अघट्ट॥
पन्नह सहस पस वांन साह। अंगन अगंज को सकै गाहि॥ छं०॥१९॥
पचीस सहस सागिरद पेस। कामीक कमल पेपे असेस॥
सुलतांन पवरि इह सेन पाइ। इगसी सहाव वरनी सुनाइ॥ छं०॥२०॥
तिन मद्धि इक्क लष अकल जीव। जांनै न भज्जि[१] वज्जी करीव॥
तिन मद्धि मीर के चमर धार। तिन माया न मोह पिष्षिय लगार॥छं०॥२१॥
तिन मद्धि मिले कोतवल साज। सम रंग जंग जनु परत गाज॥
पचास सहस तिन मद्धि असंक। तिन चित्त अभै भै भीत वंक॥ छं०॥२२॥
तिन मद्धि तीस वहरी वलाइ। हुकमी हसंम जनु सोर लाइ॥
तिन मद्धि सहस दस समर धार। अरि मार सार जै करैं सार॥छं०॥२३॥
तिन मद्धि पंच सें सच सूर। रन रंग नेंन लषियै कहूर॥
पंच वीस पंच दिन करैं निवाज। हक अहक वस्त जिन नहीं काज॥छं०॥२४॥
चय काल पाक असांन अंग। छल छेद भेद जिन नहीं रंग॥
संमरन संग जिन नही दूव। अल्लाह लाह व्यापार भूव॥
की रीय करी जिन देह एक। पैराति परच पज्जी न टेक॥ छं०॥ २५॥

दूहा॥ कहै दूत प्रथिराज सम। मिछ सेना वरजोर॥
सहर निकसि बाहर भए। वंब वज्जि घन घोर॥ छं०॥ २६॥

(१) छ-भज्जिं।

तुटै टोप टूकं सुउड्डुंत दीसैं। मनों चंद तारा नये हथ्थ रीसैं॥
लगी नाग मुष्षी गजं सीस भारी। मनों हार रु धे पिरक्की उघारी॥८५॥
हुले सेल सालें वरं वीर दीसं। मनों सिद्ध नारी लगी सीस ईसं॥
परं तेन दीसं वरं वीर कोई। लगें धार धारा रजी रज्ज होई॥८६॥
पस्यौ राउ रघुवंस बरसिंघ जोरं। जिनें मुत्ति लभ्भी वरं वीर भोरं॥
बजें धार धारं गजं सीस तेगं। नचें जांनि बीजं घनं मध्य वेगं॥८७॥
लगै कुहुक वांनं गजं जोर सीसं। उठे छिंछ हुच्छं गिरं जक्र दीसं॥
भरं सुंड रत्तं सहं अंग डोरं। स्रवें वद्दली मेघ गेह्रन धारं॥८८॥
घुमें मुक्कि सीसं भटं लोह छक्कै। उभै जांनि भूतं महा मंत्र हक्कै॥
फिरें रुंड विन मुंड रस रोस राचे। मनों भग्गरं नट्ट विद्या कि नाचे॥८९॥
परै अस्व हुंत्तं सिरं जोर सूरं। तुटें पुष्परी हड्डु ह्वै भूर भूरं॥
लगै गुर्ज सीसं भजी भंति कुड्डुं। मनों मंथनं दद्धि मंथान उड्डुं॥९०॥
हुअै छीन छीनं छरी मार छक्कै। झरं रत्त डोरी महा मल्ल हक्कै॥
भिरै सस्त्र विन वथ्थ भर भीर भीमं। परें लोथि जूथं बिनं जीव हीमं॥९१॥
सरंतं जदीसै परं तेन कोई। लगे षग्ग षग्गं स्रमे मल्ल होई॥
तुटें दंत दंती कि रहा निनारें। मनों कज्जलं कूट तें चंद झारें॥९२॥
दोउ कन्न हस्ती चुवै रुद्धि भारी। मनों कूट तें उत्तरै भूमि रारी॥
वहै वांन कंमान मिटि थांन थांनं। तहां पंति पंषीय पावै न जानं॥९३॥
उते षांन गोरी इते सिंघ राई। मनों बीय सिंघं पलं काज धाई॥
चंपे गिद्धि मंसं उडै रुध्धि छुट्टै। मनों रत्त धारा नभं मेघ वुट्टै॥९४॥
मुस्यौ साहि गोरी महावीर धीरं। तसब्बी तिनष्षी लिए पिक्खि तीरं॥
धरी ध्यार ज्यौं चव्वरं षग्ग संध्यौ। पछै साहि गोरी सु चौहांन रुध्यौ॥छं०॥९५॥

कवित्त॥ करिय पार सो भंत। रुधिर जल रजि[1] सज्जिय सर॥
केस रज्जि सेवाल। मकर कर जंघ मीन नर॥
पुष्परि कच्छ सुअच्छ। बसें तहां गिद्ध सिद्धवर॥
रंभ अंभ तहां भरै। फुल्लि पोइन सु मुष्प नर॥

(१) को– रज्जि सजिय।

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना।

कवित्त ॥ सुनत सुवन सोमेस। भैस भैभीत भयौ मन ॥
रोस रंग प्रज्जलिग। मंगि संन्नाह अमर जन ॥
चयन हुकुम करि देन। मंत गज अंदु न पुच्छिय ॥
नालि गोल जुत जंच। रसम दाजुर सच बुच्छिय ॥
लोहांन बोलि आदर अनंत। विवरि बत्त दूतन कही ॥
विफरि वीर डक्कन सुनत। जनु कि पुंछ मिंडिय अही ॥ छं० ॥ २७ ॥

लोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना।

पुच्छ चंपि जनु चिल्ह। सिंघ सोवत जग्गाइय ॥
चक्कास्यौ कि वराह। दंग जनु अग्गि लगाइय ॥
बरड छता कै छेरि। गाय व्यानी बग्गांनिय ॥
कै जग्गाए वीर। भीर भारथ मग्गानिय ॥
विरचयौ लोह लोहांन सुनि। जच कच मेछन करों ॥
सोमेस आंन सुरतांन धर। तर ऊपर गज्जन करों ॥ छं० ॥ २८ ॥

आबूपति सलष आदि का अपनी सेना तयार करना।

सुनि अवाज सुविहांन। सलष अब्बू पति रष्पन ॥
सहस सत्त सजि सेन। गिलन गोरी भर भष्पन ॥
गजन पंति ढुलि ढाल। तत्त तोषार पष्परिय ॥
जंच गोर गहरांन। मिलन मेछांन मष्परिय ॥
अनभूत भूत संनाह सजि। वजि निसांन घन घुम्मरिय ॥
हम जैत सुवन द्रुवननि दहन। लरन लोह मन गुंमरिय ॥ छं० ॥ २९ ॥
पुनि गुज्जर बलि बंड। लोह अन डंडनि डंडन ॥
रहसि राम रन जंग। नथन अन नथ्थन संडन ॥
अठ्ठ सहस असवार। सार पाहार प्रवत्तिय ॥
दांन ध्यांन असनांन। सोक संसार निवत्तिय ॥

जल देहिं ताहि तारिन कुटै। मात पित्त गुरु मंनि धुअ॥
नन करिय कोइ करिहै न को। करें जु ए सामंत भुअ॥ छं० ॥ ९६॥

दूहा॥ पुनित गुनित गुर मंत्र गुर। धुर वहल दल गाजि॥
सूर अमर संचरि समर। दिषन राम गज साजि॥ छं० ॥ ९७॥

आकाश में देवांगनाओं का वीरों को वरन करना।

कवित्त॥ गजं आगि जनु जग्गि। पवन बसि मंत्र वीर बर॥
धर अंमर धमधमिय। क्रमिय सव सेन हयनि हर॥
तीर तुबक तरवारि। कुंति किरवांन कटारिय॥
दुरित[1] ढाल गज माल। जांनु जल जोर अटारिय॥
हुअ धुंध धरनि सुभ्भि न नयन। श्रवन बयंन न संभरहि॥
अच्छर अकास अनंद मय। वैठि बिमान सुबर बरहि॥ छं० ॥ ९८॥

गुरु राम का एक मंत्र लिखकर म्लेच्छों की सेना पर डालना।

दूहा॥ राम मंत्र इक जंत्र लिषि। कग्गद सर मुष रष्षि॥
षंचि कठिन कंमांन कर। म्लिच्छ सेन पर नष्षि॥ छं० ॥ ९९॥
छँद विभूत पढि हथ्थ धरि। संमुह समर उडाइ॥
अचल चित्त जिन जिन तनह। धीरज तिनहि छिडाइ॥ छं० ॥१००॥

मंत्र के बल से शाह की सेना का माया में मोहित हो जाना, इधर से क़ाज़ी ख़ां का मंत्र बल करना और युद्ध होना।

छंद भुजंगी॥ करी मंत्र विद्या गुरं रांम गांनं। ठगे हैन मिक्कं हरे हेम जांनं॥
महा मोह मोहै रहै ठान ठांनं। मनों चित्र असवार झ्यंती विनानं॥छं०॥१०१॥
हने भूत से भीत षीजे षईसं। बंधे सब्द सूरं विना रोस दीसं॥
रहे साहि गोरीय तत्तार षानं। तियौ मान काजी महा मंत्र वानं॥छं०॥१०२॥
कहै साहि गोरी सुनौ मांन काजी। लियं बोलि हज्जूर तहं मीर हाजी॥
करी जोर विद्या सुजंनार दारं। करो कोंन जषेलभी क्या विचारं॥छं०॥१०३॥

(१) छ-दुरति। को० दुरहि।

अनचिंत्य आइ सारोंड सह । जनु अकाल पावस मँडे ॥
आवाज साह श्रवननि सुनत । सकल सुष्य विभ्रम छँडे ॥ छं० ॥ ३०

पुरोहित गुरु राम का आशीर्वाद देना ।

फुनि आई गुर राम । माम भुज डंड समर जिहि ॥
जांनु भारथं द्रोन । श्रोन वरषंत सस्त्र जिहि ॥
अस्त्र अयुत सिहि नीम । ग्यांन विग्यांन विनाँनिय ॥
मंच जंघ आराघ । सघ्य जिन बीर विग्यँानिय ॥
आसीस आंनि चहुआन दे । कहा विरम साजिन चलौ ॥
चंपै न सीमं साहाब सक । धक धकि धर करिचैा प्रलौ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ दिषि डरांन डूंगर सयन । गहकि गज्जि नीसान ॥
धर धुंमर अंमर[1] मिलिय । मुदित रोस रीसांन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वीराज का निकलना ।

कवित्त ॥ सहस पंच दस सेन ।अलप चहुवांन संघातिय ॥
वाल पोस प्रत्यंग । सस्त्र सवंग निघातिय ॥
चमर तबल टंकार । हंक हंकार हकारिय ॥
लोह छक्क धर धक्क । कंक अनसंक बकारिय ॥
सहस तीस सह सेन मिलि । गिलन मेछ गज्जे गहर ॥
तिन संग बीर वेताल चढि । पढत मंत वद्धे कहर ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये सारूंडे पर चढ़ाई करना ।

कवित्त ॥ सजि धायौ चहुआंन । साह सारुंड सु संभरि ॥
उन जित्यौ चालुक्क । रत्ति रति वाह सुभंमरि ॥
धनि सुभाग प्रथिराज । बीर भोरा विडारयौ ॥
अरि अनंत कलहंत । सेन सामंतन भारयौ ॥

---

(१) को०—अम्बर ।

तबं काजियं दस्त दुश्र मुष्य फेरी । जपै जाप पीरां दुवो सेन हेरी ॥
तबै मेछ सेनं सबै मोह भग्गो । सुनैं हिंदु सेनं फनी बद्ध लग्गो॥छं०॥१०४॥
गुरं गरुड आह्वान राम उचार्‌यौ । तबं बंधनं नाग तिन पंडि डार्‌या॥
भए सेन हुसियार दोऊ करारे। पिष्षे रोस असमान पिष्षे डरारे॥छं०॥१०५॥
पिरे पग्ग पुरसांन षां जेरदूनी । बढी बाग गुररांम जम धार दूनी ॥
तजी मंच विद्या सजी सार सारै। बजी पग्ग अग्गीय ओडंन डारै॥छं०॥१०६॥
सरं जाल पै काल उड्यौ अनुद्दं । बचै बाह जम दाह कुद्दं धनुद्दं।
उडे जंच गोरी नरं नारि धारी। धकें मंत मंते गिरे ज्यु अटारी॥छं०॥१०७॥
उड्यौ सोर असमांन कुचरांम ओेहो । पिष्षै जानि गंगेव बल बंध जैसो ॥
फिरें रुंड भक रुंड विन सुंड दंती । परें पीलवानं चढे पंषि पंती ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दूहा ॥ सुनि सषाय सावावदीं । चे छंडिव गजि[1] तक्कि ॥
मिले सामि कर भर सुभर । दल चहुआंन सु रक्कि ॥ छं० ॥१०९ ॥

मारुफ़ खां का शाह से कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन क़ाज़ी खां पर खुरासान का दार मदार था उन्हों ने तसबीह छोड़ दी, हिम्मत हार दी ।

कहै मीर मारुफ षां । परी भीर सुरतान ॥
तिन तसबी नंषी करह । जिन कंठन पुरसांन ॥ छं० ॥ ११० ॥

खुरासान ख़ां आदि सरदारों का फिर एकत्र होना और लड़ने का तयार होना ।

कवित्त ॥ षां पुरसांन ततार । षांन हुसेन विमाही ॥
षान षान रुस्तम । षांन निज बंध समाही ॥
षां जलाल षां लाल । षांनं षिलची षां गष्षर ॥
कोली षां कुंजरी । साहि भग्गी बल दष्षर ॥

(१) ह० को०—गज ।

लग्गयौ पग्ग उड़ि हथ्थ तें। त्रिया नयन मत्ता मयन ॥
गाहंन गहन दुज्जन दलन। सुवर सूर सज्जिय सयन ॥ छं० ॥ ७४ ॥

लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना।

लोहांनौ अगिवांन। सेन से पंच पलक्किय ॥
पंच सहस सों सोम। पुत्त करि तीन पलक्किय ॥
गौ डंडा नीसांन। एक दस अट्ठ सुमेरिय ॥
ओडंगी सन्नाह। फौज चहुआंन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढालकी वैरषौ। कोहंकै अट्ठारहां ॥
निसि जाम तीनि विते पतिय। पंजूराय सुढारहां ॥ छं० ॥ ३५ ॥

तातार खां का सुलतान से चौहान की सेना पहुंचने का समाचार कहना।

अरिल्ल ॥ तौ प्रसंन कीनौ चहुवांन। वल जल धर धंमर परिमांन ॥
आयौ अनी वंधि सुरतांन। कही षांन तत्तार प्रमांन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सुलतान का अपनी सेना को तयार करना।

दूहा ॥ दल सज्जिग सुरतांन नें। है गै गगन गभीर ॥
जनु भद्दों भर उंनमत। वाइ भांन चँपि सीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥

सुलतान का उमराओं से कहना कि अब की अवश्य जीतना चाहिए।

बोल्लि उंमरा मीर सब। यों जंप्यौ सुरतांन ॥
अब कै पग गढ्ढे गहौ। भंजो षेत परांन ॥ छं० ॥ ३८ ॥

खुरासान खां तातार खां आदि सरदारों का बादशाह की बात सुन आक्रोश में आना।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ततार। षांन रुस्तंम अधिकारी ॥
वली षांन पीरोज। नांम रोजन रज धारी ॥
षां हमी हबसी हुजाब। षांन षांनां रुस्तंम षां ॥
जमन जुद्ध वर सुद्ध। सुद्ध अनुरुद्ध मुस्त षां ॥

जिन भुजनि साचि साहिव तूंग । जिन ढिल्लां चल्यौ सुभर ॥
तिन धीर भीर संमुह परिय । पिष्षि नंपी तसवीषि कर ॥
छं० ॥ १११ ॥

छंद भुंजगी ॥ मिली मंडली फौज गोरी नरिंदं । मिले दीन दोइ कहै चंद दंदं ॥
गहै दंत दंती तजै मोह तुच्छं । दोऊ दीन धावै सुधारै सुमुच्छं ॥छं०॥११२॥
करै संभरी दीन साहिब्ब राई । उनंके उनाहं दुदोनं दुहाई ॥
सु पैठंत पीठं गलं वथ्थ घल्लै । धकै धीग धक्कै हलाए न हल्लै ॥छं०॥११३॥
काढी वंध अस्सी गजं सीस लस्सी । मनों बीज चंदं किते रस्स सस्सी ॥
तुटी भूमि भारी पुरं तार पायं । बजै षग्ग जंजं झनंके झनायं ॥छं०॥११४
तजे बीर अस्वं उपमांन ऐसी । मनो चच्चरी बाल छूड तैसी ॥
करै घाट औघाट निघट्ट घट्टं । तिनंकी उपमा कही चंद भट्टं ॥छं०॥११५॥
भरं भूमि भारी पुतारीति बज्जै । गहै षग्ग झोर षनकेति तज्ज ॥
बरं बीर धावंत ओपंम ऐसी । मनों मल्ल धावै छडू तक्कि तैसी ॥छं०॥११६॥
तरंफंत सीसं धरंगं निनारे । मनों मीन तुच्छं जलं में उछारे ॥
नियं नट्ट अस्तूति जंपी न जाई । मनों भंगुरं नट्ट विद्या बनाई ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ तान षान अहमद्द । तीर विय सहस लोकि तव ॥
अंगुर अठ्ठ भलक्क। बाइ वंधे नंषे कव ॥
मेघ धार बरषंत । टोप उप्पर चहुआंनी ॥
मनों जैत षंभ परि तत्त । वीर पावस वुठ्ठानी ॥
घरी एक मुठ्ठी नँषियत बर । षिष्षि किरवांन विचारि नर ॥
पष्षर प्रमान पहन सबर । धर तुट्यौ लग्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ११८ ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष । भयौ षुरसांन षांन दल ॥
एक एक भुज अमित । सेन रुक्काए अकल पल ॥
धार धार बज्जै प्रहार । गुरज बज्जै तन रज्जै ॥
मनों घट्ट घरि पार । प्रहर पूरन प्रति बज्जै ॥
यों बज्जि सार आतुर इतिय । ज्यों डंडूरिय बूंद धर ॥
पंम्मार सार धारह धनिय । ईस अनंदिय माल गर ॥ छं० ॥ ११९ ॥

सुरतांन चमाऊ चथ्थ धरि । गचकि गज्जि पग चथ्थ लिय ॥
रथ्थ सुजीय चम साच सुनि । जौ बंधै चहुआंन जिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सब सरदारों का सजकर धावा करना ।

दोलि मांन सुरतांन । बाच लंबी पसारिय ॥
चे चीना पुरसांन । सरन सांई अधिकारिय ॥
सरन जाइ पुरसांन । बंधि वा रूप मचंगल ॥
पेलि पांन सजि मांन । सेंन सज्यौ दिसि जंगल ॥
वढि सुबर भिस्त अरु वयन जिय । आरंद्यौ गौरी गरुव ॥
धाए सुभ्रम-बद्दर मनों । सस्त्र धार धावै धरुव ॥ छं० ॥ ४० ॥

सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना ।

छंद मोतीदांम ॥ सज्यौ बर गौरी साच सयंन । सुमोतिय दाम बरंन वयंन ॥
छिति छच दिली पति वज्जचि लोइ । उगे जनु अंकुर बीज सुदोय ॥छं०॥४१॥
वजे रन तूर वरद्दय[1] काल । जग्यौ जनु वीर दुती सिर पंन ॥
वजे रन रंग रजो दन मोद । फले वल मध्य कना छल क्रोध ॥छं०॥४२॥
चलं दुल बद्दल सद्दल वांनि । उपट्टिय सत्तय सिंध प्रमांन ॥
वजी रन रंग सुरंगय भेरि । धरी चय नारि छतीसउ फेरि ॥ छं० ॥ ४३॥
वजी सहनाइन फेरि उपंग । वजे दस पंच स सिंधुअ रंग ॥
वजे रव रंग निसांन दिसांन । वजे घन चंबक ढोल निसान ॥छं०॥४४॥
वजे घरियारि रनं किय घंट । वजे यनि घुघ्घर पप्पर अंट ॥
वजे तंवल सुर तंग नट्टूर । वजे रन वीरनि झालरि रूर[2] ॥ छं० ॥ ४५ ॥
वजी दिर चोट दमांमन रीस । नचै जनु गंगय आगय ईस ॥
फिरें गज राजन गज्जन पंति । करी मनों कज्जल पव्वय कंति ॥छं०॥४६॥
वनी गजराजन वैरष पंति । मनों वनराइ वसंत चलंत ॥
चले बनि पंतिय दंतिय जोर । ढुरै छच रंग नछच चिलोर ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढे गज अंडन वंधिय पांनि । चढें गज राज चले गिर जांनि ॥
करं कर पाइ हुतौ कर चोइ । पुजै नच वांन कमांनच कोइ ॥छं० ॥ ४८ ॥

(१) कृ० को०—रवद्दय । (२) कृ० को०—क्रूर ।

दूहा ॥ गरल धरन गल माल धर। टपकत बुंदन रत्त ॥
मेष भयानक भंति निहि। कंपति दिपिगिर जत्त ॥ छं० ॥ १२० ॥
कोइक कमल कहि कहि हसत। कोइक हंकत हंक ॥
मार मार कोई कहत। मुदित माल शिव अंक ॥ छं० ॥ १२१ ॥
कवित्त ॥ षुरासांन तत्तार। षांन रुस्तम अधिकारिय ॥
एक स्वामि रन अग्ग। है है दुहुं बांह विधारिय ॥
पुट्ठि पवन बल्लोच। साहि रष्षें सुरतानं ॥
मावसि राह नरिंद। आइ पच्छा मुष भानं ॥
मध्यांन टरिय निसि मुदित भय। कमल विमल छक्किय विक्कुरि ॥
सारस सुरंग को तरनि तर। उडि पंषी अंषी निजरि ॥ छं० ॥ १२२ ॥
छंद चोटक ॥ चकचक्कि बिचक्कहि थांन बरं। उडि पंष सकोतर चित्त धरं ॥
सपयोनिधि मद्धि पतंत रवी। समनों दिसर्चों दिस दून छवी ॥
सत पच मुदेक मुदै उघरैं। निसि विप्प सुग्यांनह तेज हरैं ॥
मनमध्य चढे भुवतीन जनं। सुविषै विरही जन कंप तनं ॥
नन दिप्पिय पंथ निहारि मगं। उलटी वर दिष्ट निहारि मगं ॥
उतरी जनु चंगय डोरि डरी। विरही जन दिष्ट सुधान फिरी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
साटक ॥ मोदं मोद हसंत कंमुद कला चक्कीय चक्की चितं।
चंदै चंद वढंत तत्त कलयो भानं कला छीनयो ॥
मत्तं मन्मथ जांन बांनति बरं अंगुष्ट तेउच्छुदं ॥
सासत पच्चय तत्त काइर मुषं वीरा रसं सूरयं ॥ छं० ॥ १२४ ॥

अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

छंद चोटक ॥ इति चोटक छंद उदंत कलं। रस बीर जगावत बीरबलं ॥
घन नंक्कि त्रिघोष निसांन बजं। वर बढ्ढिय बंबरि छच सजं ॥
बढि गोरिय साहि सयंन मुषं। नन सुभ्भय सूर दिसांन षषं ॥
नष भ्रिति निरेष्षिय बीर रसं। जिन कौ जस ब्रह्मय देव कसं ॥ छं० ॥ १२५ ॥
धनि हथ्थ सराहिय दीन दुहं। कवि जीह प्रमांनय सार वहं ॥
प्रथिराज विराजत सेन मझं। सुमनों बडवानल दड्ढ दझं ॥

सउज्जल दंत न उप्पम थांनि। मनों वग पंति पनी[1] घट जांनी ॥
बढ़ै नन अंकुस वूह चिकार। सचै मन षज्जय षज्ज प्रचार ॥ छं० ॥ ४९ ॥
जरें नग दंत न हेमह मुत्ति। मनो घन मंझह विज्ज पवंत ॥
छयं घन पट्ट सु छिंछय तांम। झरें झरनां जनु पव्वय स्यांम ॥ छं०॥ ५०॥
मचै तहां कद्दव कीच झकोर। करै तहं दद्दुर घुग्घर सोर ॥
धरें धर पाइ हरे हर जोट। चलावत मेर कहां कहो कोट ॥ छं०॥ ५१ ॥
बियं बिय वैारंग जें गज लेहि। लरें नद सायर ढिग्ग समेहि ॥
बनी षर नारिय रेसम रंग। चढें गिर इंद वधू मनों चंग ॥
तिनं उपमा बरनी नन जाइ। प्रलै घन संकर कुहिय पाय ॥ छं० ॥ ५२ ॥
दूहा ॥ पाइ दाइ धर वर धरै। सद मद रोसन जंग ॥
दुअन दिषाऐ देषिये। जनु बिस भरे भुजंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चैाहान की सेना का पूर्व और पच्छिम दोनों ओर से चढकर मिलना।

निसि पद्धरी नरिंद तैा। सज्जि सेन चहुआंन ॥
मिल्ले पुव्व पच्छिमहुतें। चाहुआंन सुरतांन ॥ छं० ॥ ५४ ॥
हय गय दल बद्दल सुअन। नर भर मिलि चतुरंग ॥
चाहुआंन दै वेजु सों। बढिय रारि रन जंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

खुरासानियों का चैाहानों पर टूट पड़ना।

घरी एक पल बिपल हुअ। लोह षोलि षुरसांन ॥
उररि परे दोउ दलन वल। चाहुआंन तुरकांन ॥ छं० ॥ ५६ ॥
लै संभरि पति सगुन वर। पुठ्ठि पवन प्रथिराज ॥
जुग्गिनि चक्र अचक्र बर। सो सम्ही अरि काज ॥ छं० ॥ ५७ ॥
लै जुग्गिनि प्रथिराज वल। संमुह दै पति साह ॥
च्यारि घरी घरियार ज्यों। चच्चर सी सम राह ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१)-कृ०-घनी। को- घनी।

दोय दीन दुवाइय दंद[1] पढै। चढि सार प्रचार पयोनि गढै॥
कटि कंध कमंध गिरै दुसरै। उकरै मनु प्रब्बत चीर चरै॥छं०॥१२६॥
नव हंसन एक न मुक्कि चलै। नव लुहि नई मुकतें न पुलै॥
लगि सस्त्र भए जर अंग इसे। तन वाचत जंगम जांनि जिसे॥
निकरें नव हंस उमंग मगै। तिन पंजर फेरिन आइ लगै॥छं०॥१२७॥

कवित्त॥ चलत मेर नन चलहि। चलन सव सथ्य हथ्य चलि॥
चलन भांन नन चलहि। चित्त नन चलै मोह पुलि॥
अश्व चलन नन चलहि। चलन रहयौ असु असुमय॥
सो ओपम कवि चंद। कहिय आनंद हथ्य सय॥
निंधनिय नारि अकुलास त्रिय। अग्गयानी जी मुट्टई॥
इम अश्व पांव तत्तार को। सार धार वर तुट्टई॥ छं०॥१२८॥

मुरिल्ल॥ नागौरै मंची सत मिल्लयौ। भोरा राइ भुअंगम किल्ल्यौ॥
सारुंडै संमुष सुरतांनह। चच्चर षग्ग कियो चोहानह॥ छं०॥१२९॥

पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बांधा जाना॥

छंद मुकुंदडांमर॥ चहुआंन उदंडिय चंडिय चंपिय साह सुसद्धिय बंध धरे॥
हाकंत हनंत सुसोम हनं दन बंदन वंदित दूरि करै॥
भुअ कंपित जंपित संपित गोरिय लुथ्थि अलुथ्थि पलथ्थि परे॥
पल एक सुतीन कियो निल मत्तह भारि भयानक भूमि टरे॥
स.मंत सितुंग तुरंग तुरावध आवध आवध अग्गि भरे॥छं०॥१३०॥
धरकंत सुमीर गंभीर गहं अह अब्ब गुंडावन वीर वरे॥
नर वीर दिवादिव देवस. पुब्बह अब्ब गुजाइय तुंग ढरे॥
जय पत्त जपत्त भमंनिय जुग्गिनि ओन सुषप्पर चंपि करे॥छं०॥१३१॥
तुरयं तुर तांन प्रमांन. कमांनय सुभिभय भांन जुआंन अरे॥
जुग जीति पथं सुधि अंथन वंथन सथ्थन वंधिय वंधि धरे॥
जितयो चहुआंन गह्यौ सुरतांन हयौ तुरकांन किसांन जरे॥
छं०॥१३२॥

(१) को-चंद।

इस युद्ध में सलष राज की वीरता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ हय हथ्थिय कननंकि । बज्जि झननं झननं कहि ॥
दंति दंत आहुरहि । षंड षंडेन ठनंकहि ॥
घट घट लग्गिय संग । फौर पत्तिय पतिषानं ॥
मनु षंचे बलराम । हथ्थ हथिनापुर जानं ॥
षंचै कि द्रोन हनवंत कपि । कै कन्ह षंचि गोवरधनह ॥
कर करी दंत सलषह धरन । यौं सुभ्भै हथ्थी रनह ॥ छं० ॥ १२३ ॥
पिष्षि राज प्रथिराज । गहिय करिवान चंपि कर ॥
रोस मुक्किलि बरीय । दंतधाही सुकुंभ थर ॥
धार मुत्ति आहुरिय । पंति लग्गे सुभि बीरं ॥
मनह रोस गहि पग्ग । टरै धाराधर नीरं ॥
कै दुतिय चंद बद्दल बिचह । पंति लग्गि उड़गन रचिय ॥
धर धुक्कत मंत सुदिष्षियहि । मनहुं इन्द्र बज्जह बचिय ॥ छं० ॥ १२४ ॥
दूहा ॥ जिन लग्गे तिन भ्रंन किय । धर धर धुक्किय धार ॥
पहर एक पर हथ्थरैं । सिर सिर बुठ्यौ सार ॥ छं० ॥ १२५ ॥
सस्त्र अस्त्र सिर सिर परहि । डरहि न जन कुमदंग ॥
भीर स्वांमि संकट लपत । परत कि दीप पतंग ॥ छं० ॥ १२६ ॥
गाथा ॥ पतन पतंग रूपं । घूपं धरा जांनि विषमायं ॥
हरन स्वांमि भय चिंतं । चित वियन जन्म मरनाई ॥ छं० ॥ १२७ ॥
दूहा ॥ ठांम ठांम सिंधू बजहि । बजहि सार मुष मार ॥
तन तरवर जहं तहं ढरहि । जे झूझार मुक्कार ॥ छं ॥ १२८ ॥

सलषराज का घोर युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई ।

स्वामि सलष लषियत लरत । भंजि मीर चहुआंन ॥
ईकाह्यौ ना जाइ मिक्क । तो सम को पहुआंन ॥ छं० ॥ १२९ ॥
कवित्त ॥ तूं अब्बू पति धनी । राज रष्षन दिल्ली धर ॥
तूं चालुक चंपनौ । भार भंजन गुज्जर धर ॥
भडर अकल आजांन । पान भंजन मेछाइन ॥

निम संभरेस अब्बूधनी । अनी बनी रस विरस भरि ॥
नग जोति जरकज दीप दुति । नवीं श्रवन बाजंव करि ॥ छं० ॥ २३ ॥

सलषराज की प्रशंसा ।

पंच हस्ति मद वहि गिरंद । गरुश्र गरजंत मेघ जनु ॥
तुरी बीस ऐराक । तेज तन अगिन पवन मनु ॥
जर कंमर जंनेउ । हथ्य संकर नग मंडित ॥
सत्त सुषम पर काल । हेम तें तन तन छंडित ॥
बारोठि विवह वक्तह समझि । सह चक्रत पिष्पत रहिय ॥
विवहार विवुध जोतिग गिनत । सलष कित्ति जातन कहिय ॥ छं० ॥२४॥

तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मंगलाचार होना ।

दूहा ॥ तोरन कर बर बंद नव । मुत्तिय अच्छित डारि ॥
मनों चंद त्रिय भेष धरि । अच्छित अच्छ उछार ॥ छं० ॥ २५ ॥

साटक ॥ बंदे विंद कलस्स तोरन बरं तुंगे रसं मन्मथं ।
सुष्पं साजति सक्र चक्रति कला निश्राह नु आहनी ॥
जां निज्जै त्रैलोक उम्भति पुरे बंदे कवी उप्पमे ।
दुश्र पासं दुश्र नारि दिष्पत बरं मनो नैर वर दिष्ययं ॥ छं० ॥ २६ ॥

नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना ।

कवित्त ॥ न्रपति काज अलि दिपहि । अलिन दिष्पत नर नारिय ॥
जनु मिलनराज प्रथिराज । नयर त्रिय बांह पसारिय ॥
जनु धन्द्दी गुर देव । सत्ति स्लाघा घाघा हुश्र ॥
जै जै जै उच्चार । राज रवनी रंजत रुश्र ॥
पंमार सलष वंदन बलिय । दिष्पि कला मनमथ्थ पिथ ॥
दिष्पै सुचिया दुरि दुरि नयन । मनहु तरंग कि काम तिथ ॥ छं० ॥२७॥

छंद पद्धरी चित काम वीर रज्जियं श्रोर । संकुल्यौ जांनि मनमथ्थ जोर ॥
दुरि दिषें बाल झीनेति वस्त्र । उपमान चंद जंपंत तच ॥
जाने कि जार परि मध्य मीन । पुज्जे कि दीप भोडल प्रवीन ॥
इक करन पलटि इक करन लेत । घुंघट्ट बदल लज्जा सुभेत ॥ छं० २८॥

अपमुष आयौ साहि । साहि सपी इक्कइन ॥
प्रथिराज प्रबोधिय धार धर । हंकि साह उप्पर परिय ॥
जांने कि अग्गि उद्यान वन । वंस सूर दव प्रज्जरिय ॥ छं० ॥ १४० ॥

पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ॥

फुनि प्रथिराज नरिंद । करिय ऊपर जैतह रन ॥
भरनि भार भंभरिय । हंकि हुंकरिय सिंघ जनु ॥
मद गज ढहनि कि तरनि । तरनि लुप्पन जनु जलधर ॥
अकह कथिय करि वार । काल कुप्पिय जीवनि पर ॥
सोमेस सुअन विरचंत रन । पढ पट घट भट्टह लुटिहि ॥
हय अयुत बत्त पिष्पत नरह । भुजनि भार अंनक्क फुटहि ॥ छं० ॥ १४१ ॥

पृथीराज की वीरता की प्रशंसा ।

भरनि भीर पल भलन । रेन हल मलति पवन करि ॥
लोथ लोथ पर परति । अर्क नहिं सकत गवन करि ॥
स्रोन छिंछ उछरंत । सुभट सुभ्भति जनु किंसुव ॥
गजन ढाल कंदुरति । मार संघर तक मध भुव ॥
विरचंत विफुरि सोमेससुअ । सहस करन वर कर वढिय ॥
वन दंद पियन बडवा नलकि । क्रम्म जांनि संमुह कढिय ॥ छं० १४२ ॥

दूहा ॥ हाला हल हूह पिथ्थ जहं । भाला हल भंकाल ॥
उतरन कुप्पौ सलष लष । काला हल कंकाल ॥ छं० ॥ १४३ ॥

सलष राज के युद्ध की घोरता का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ कुप्यो रन साहस लष्पिय लष्य । रूपे रन रोह अरेह विपष्य ॥
करक्कर वज्जिय सारन मार । भरभ्भर हंकत हक्क करार ॥
तरत्तर तेग तरफ्फर अंग । जित्तत्तित होत घनं घट भंग ॥
चढे मुष मेक्क ससंद मसंद । जित्तत्तित टूटत तेक असंध ॥ छं० ॥ १४४ ॥
लरथ्थर पथ्थर सथ्थर तोम । मनों जनमेजय चिल्लिय होम ॥
गिरंत उठंत कमंध विहाल । हहंकत मुंष भसुंड विहाल ॥
इसो रन रंग सलष्प सरूप । मनो मुचकुंद कि जग्गि विरूप ॥ छं० ॥ १४५ ॥

धुंमलिय रैंन जनु वद्दल ओट। उभकंत चंद जनु आंनि कोट॥
कर उंच बाल अच्छित उछारि। जनु कमल वाइ बसि ओस झार॥
गावंत गान बहु विधि सवारि। कलयंठ कंठ जनु रति धमारि॥
मुसकंत हास दिषियै विसाल। विकसंत कमल जनु चंद ताल॥
तनु ऐंठि मेंठि भोंहै कि वाल। झरक्यौ मेन जग वही ष्याल॥२९॥छं०

सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर आरती उतारना।

दूहा॥ कलस बंदि सुभगा सिरह। मछुर मद्धि सय मेलि॥
बहुरि सुहाग सुहागिनी। वई कांम रस बेलि॥ छं०॥ ३०॥
कनक थार आरति उदित। सुभग सुवासिनि लाइ॥
जनु कि जोति तम हर परह। नव ग्रह करत वधाइ॥ छं०॥ ३१॥
मछुर पंच सें थार धरि। दुति दूलह जिय जांनि॥
कांम कसाए लोइननि। हन्यौ मदन सर तांनि॥ छं०॥ ३२॥

सलष की रानी का दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना।

सषिन ओट सलषह घरह। दूलह दुति दृग देषि॥
कोटि काम छवि पिष्षि पिय। जनम सफल करि लेषि॥ छं०॥ ३३॥

स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवांसे में आना।

महल झुंड महलनि बहुरि। जनवासह जुरि जांनि॥
सोभि साम सामंत सह। जनु विटन शनि भांनि॥ छं०॥ ३४॥

जनवांसे की तयारी का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बहुरी बरात जनवास थांन। छवि सोभ सुवन भुवभंति भांन॥
संग सुभट थाट सामंत सूर। बलवंत मंत दिषियै करूर॥
अँग अंग अंग उल्हास हास। जनु लच्छि लाह सोभा प्रकास॥
सत षन अवास साला सुरंग। सुभथांन जैत आवू दुरंग॥ छं०॥ ३५॥
जालीन गोष सोभा न पार। रवि सोम क्रांति क्रनन प्रसार॥
पंच रंग व्रंन चित्रत सुवेस। बहु गरथ रूप मंडित जुदेस॥
रेसंम गिलम दुल्लीच मंडि। तिन जोति छोति दुति चित्र षंडि॥छं०॥३६

म्लेच्छों की सेना का मुंह मोड़ना, सुलतान का हाथी छोड़ घोड़े पर चढ़कर भागना।

दूहा ॥ मेक सेन बहु भरि परिय। केविड रिग्गय डग्ग ॥
फिरौ मुष्य सुरतान कौ। हथ्थि छंडि हय मंगि ॥ छं० ॥ १४६ ॥

म्लेच्छ सेना और सुलतान की भगेड़ का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कहै पांन जादे। रिग्यौ साह आलंम सब सेन बादे ॥
सबै सेन दिष्षौ इसौ साह मुष्षं। मनों प्रात चंदं सुकंती अरुष्षं ॥
बरें पारि बेहू समुद्दं न रुक्कै। जबै साह गोरी पुरासांन चुक्कै ॥
फिर्यौ एक लष्षं सलष्षं पवारं। मनो रोहियं रोह बाराह दारं ॥छं० ॥१४७॥
भग्यौ साहि गोरी बिलं देषि मथ्थं। तबै रुद्धियं आनि पंम्मार सथ्थं ॥
रषत्तं बपत्तं हयं हथ्थ सथ्थी। भग्यौ साहि गोरी बिबांनै न कथ्थी॥
इकं दीह चौहांन फल्ल है प्रमानं। कुथ्यौ रुद्धि कैमास सुरतांन भानं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

इस युद्ध में सलषराज के यश पाने का वर्णन, सुलतान का बांधा जाना।

कवित्त ॥ चामर छत्त रषत्त। तषत लुट्टे सब कोई ॥
जस लद्धौ पामार। सेन सागर मथि जोई ॥
रतन कित्ति संग्रही। रज्ज आबू तन घोई ॥
हय गय दल बल मथित। कित्ति फल लभ्भिय सोई ॥
बंध्यौ सुचँपि पुरसांन पति। रनिधाहै चालुक्क जिनिय ॥
जै जया देव जंपत जसह। नव सुचंद कित्ती सजिय ॥ छं० ॥ १४९ ॥
दूहा ॥ जीति लियौ जय पति रनह। बर चतुरंगी मोरि ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष हुअ। गौरी ढाल ढंढोरि ॥ छं० ॥ १५० ॥

सुलतान को जीतकर सलषराज का लूट मचाना॥

कवित्त ॥ जीत लियौ जैपत्त। चाह चतुरंग सु मोरी ॥
इक लष पषर प्रमांन। ढाल गोरी ढंढोरी ॥

द्वादसह सेज विछाय पंचि । तिन ढिग्ग मूढ गादीय संचि ॥
प्रति सेज सेज फूलन अमार । तिन सोभ गंध रग रंग पार ॥
इक लाप पांन बीरा बनाइ । घनसार मद्धि बीरन लगाइ ॥
कुंम कुमन कुंभ जहं तहं छुटंत । वातीन अगर धूपन लुटंत ॥
कर्द्दमन जष्य मषि कीच भूमि । नाना सुरंग रचि गंध धूमि ॥
मस्साल दीप प्रज्जरि फुलेल । केतकी करन वेली गुलेल ॥
ऊड़त कपूर पवनं पषांनि । तिन सरस गंधि सक्कि न बषांन ॥
सुरंत क्रांति सोभा विसाल । सोभंत जुरे तहं अब भुआल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
प्रथिराज कुंअर कुअरन नरिंद । धरि भूप रुप अवतार इंद ॥
मनु कांम रुप रति भमन चित्त । अश्विनि कुमार ससि सोभ मित्त ॥
नग कनक मंडि षासन विचित । ससि सूर सोभ सुभ सज्जि छत्र ॥
वर विप्प अप्प गज गाह धारि । जनु सोम उभय आरति उतारि ॥ छं० ॥ ३९ ॥
आसंन अस्स प्रथिराज आइ । तहां पंच सबद बाजे बजाइ ॥
संग एक कुंअर जल पान धार । डयौढी न रुकि सामंत भार ॥
गुर राम चंद कवि ढिग्ग आई । परधान कन्ह काइथ अताई ॥
पुनि कंन्ह काक गोइंद राइ । परिपुर्न क्रोध जे लगत लाइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
पुंडीर धीर पावस्स संग । दाहिंम दूव जम जोर जंग ॥
जैतसी सलष लष्यनह सिघ । छिति छत्र अंस जे इष्यि रंघ ॥
वलिभद्र सिंघ कूरंभ राइ । अनि नांम सूर कित्तक गिनाइ ॥
प्रथिराज इंद दिकपाल सूर । अंग अंग वहि सब जोति नूर ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ गवष जाल महलनि महल । फिरे चाह मन सर्व ॥
सोंज सोभ अंतन लही । दिष्यन भग्गत[1] गर्व ॥ छं० ॥ ४२ ॥
महलनि सालमि महलमंडि । दासी सालनि गांन ॥
मंडप मंडित वेद धुनि । सुभटन सोभ समांन ॥ छं० ॥ ४३ ॥
जहां तहां आनंद उमग । अनंग उछाह अनंत ॥
वंस छत्तीस छत्रीन छह । भाट विरद भनंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥

(१) को० छ०—भग्गो ।

षांन सुरति परि षेत। षेत गोरी उप्पारी॥
रिन ढुढ्यौ चहुआंन। साह भोरी करि डारी॥
बज्जे सुबीर बज्जन न्टपति। बहु लुट्टे सुरतान गै॥
नीसांन षांन षुरसांन पति। चामर छत्त रषत्त मै॥ छं०॥ १५१॥

सुलतान की सेना का भागना, चौहान का पीछा करना, पृथ्वीराज की दोहाई फिरना॥

दूहा॥ भै भग्गा सुरतांन दल। लै लग्गा चहुआंन॥
ताप तेज तुंगी तरुनि। प्रथीराज फिरि आंन॥ छं०॥ १५२॥

पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना॥

कवित्त॥ कहि जित्यौ चहुआन। गरुअ गोरी दल भज्यौ॥
कहि जित्यौ चहुआंन। ईस सीसह धर रंज्यौ॥
कहि जित्यौ चहुआंन। चंद नागौर सुनंगे॥
कहि जित्यौ चहुआंन। सत्त सामंत अभंगे॥
जित्यौ सु सोम नंदन कहिय। सहिय सद्द सुर लोक हुअ॥
पामार पष्ष सलष्ष नह। धरनि काज धर पंक धुअ॥ छं०॥ १५३॥

पृथ्वीराज के सरदारों की वीरता की प्रशंसा॥

छच धार सुविहांन। छच धारी लोहांनो॥
पच धार जो गिनिय। कुक्क लग्गिय आसानो॥
मंच धार पामार। सलष भंज्यौ मेछानो॥
जनु गुवाल गो डंड। सेन हंकिय सुरतानो॥
जित्यौ जुवांन चहुआंन रिन। मुरिग वैर बलिबंड बर॥
धर गवरि नाह नंचिय रहसि। गह्यौ जाहि भंजे सुषल॥ छं०॥ १५४॥

पृथ्वीराज का जीतना, तेरह ख़ां सरदारों का पकड़ा जाना, सारुंडे का टूटना॥

अरिल्ल॥ जित्त्यौ वे जित्या चौहानं। भग्गा सेन सन्या सुरतांनं॥
तेरह षांन परे परमांनं। सारुंडै तोड्यौ तुरकानं॥ छं०॥ १५५॥

छंद मोतीदाम ॥ गहने नग जोतिन हीरन लाल। पटंमर पूर भरप्पिय झाल ॥
मनि मांनिक मोतिन हीरनि हार। भगीरथ अंत हिमग्गिरि धार ॥
रितं रित भूषन भांति अनेक। धरे धन पंतिय आनि धनेक ॥
रंग रंग वारनि वारनि वार। धरे नवला नव भूषन भार ॥
तिते सब संचि सवारिस ओप। झलंमल झालन ढालन नोप ॥
सकुंकम कूएन वंदिन पोति। सुहाग सुमंगल अष्ट न होत ॥ छं०॥४५

दूहा ॥ अष्ट मंगल्लिक अष्ट सिध। नवनिध रत्न अपार ॥
पाटंबर अंमर वसन। दिवस न सुझ्झहि तार ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जनवासे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लौटना ॥

फिरिय हार करि फिरिय सब। भोजन कारन बोलि ॥
भाव भगति आदर अमित। देव पूजि सम तोलि ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इच्छिनी का शृंगार आरंभ होना, शृंगार वर्णन ॥

जनवासे पधराइ बर। करी सिंगार अरंभ ॥
जुरि जुब्बन सुर सुंदरी। जे रस जांनत डिंभ ॥ छं० ॥ ४८ ॥

छंद चोटक ॥ बिन बस्तर अंग सुरंग रसी। सुहहै जनुहाष मदंन कसी।
लव लोनइ लोइ उवट्टनकौं। कि बस्यौ मनु कांम सुपट्टन कौं ॥
द्रिग फुल्लिय कांम बिरांमन कें। उघरे मकरंद उदै दिन कें ॥
बिन कंचुकि अंग सुरंग घरी। सुकली जनु चंपक हेम भरी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
सुभई लट चंचल नीर भरी। तिनकी उपमा कवि दिव्य धरी ॥
तिन सों लगि कें जल बूंद ढरै। सुछुटै मनु तारक राह करै ॥
जु कछू उपमा उपजी दुसरी। मनों माटय स्यांम सुमुत्ति धरी ॥
अति चंचल ह्वै बिछुटै मुषतें। मनों राह ससी सिसुता बषतें ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुमनों सति स्वात असुत्त इयं। तिनकी उपमा बरनी न हियं ॥
कबहूं गहि सुक्त सिषंड बरें। मनों नंषत केसन सिंदु सरें ॥
जु सितं सित नीर लिलाट धसैं। सुमनों भिदि सोमहि गंग लसैं ॥
जल में भिजि भूंह कला दुसरी। सु लसै मनु बाल अलीन धरी ॥
बुधि चित्त उपंम कितीक कहौ। जिन पाट अभै व्रत वेद लहौ ॥ छं० ॥ ४२ ॥

इधर शहाबुद्दीन को दंड देने, उधर कैमास का चालुक्यों को जीतने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ साह डंड डंडयौ । मेच्छ मंड्यो नागोरिय ॥
भट्टिय रा भटनेर । राय सिंघासन तोरिय ॥
जा रानी जग हथ्थ । मंडि मंडोवर पासह॥
जै जै जै प्रथिराज । देव सद्देति अकासह ॥
आरज्ज लज्ज सुरतांन कहि । फिरि मिलांन दीनौ पुरां ॥
जो सथ कथ कैमास किय । चालुक्कां सोझति घरां ॥ छं० ॥ १५६ ॥

शाह के बांधने, भीमदेव के जीतने और इंछिनी के ब्याहने की प्रशंसा ॥

एक दीह इक घरिय । राज लद्दू वेलह्वा ॥
रत्तिवाह संजित्त । साह गोरी गहि बद्धा ॥
वर भीमंग नरिंद । षोदि कढ्ढौ कैमासं ॥
वर वज्जे नीसांन । राज जित्यौ रन भासं ॥
वर बंधि साहि गोरी गह्यौ । वर इछनि पानी ग्रहन ॥
नव दीह नवंमिय नेह नव । सुवर चंद वत्तो कहन ॥ छं० ॥१५७॥

सं० ११३६ के माघ सुदी में सुलतान को बांधना, माघ व० ३ को इंच्छनी का पाणि ग्रहण करना, दंड लेकर सुलतान को छोड़ना और फिर खट्टूवन में शिकार को जाना ॥

ससिर सु मगगह अंत । तीस षट वीर समंधर ॥
ग्यारह सें परवींन । साहि बंध्यौ गोरिय वर ॥
माह प्रथम वर तीज । बीज रवि सप्तम थानं ॥
वर पांनिग्रह मंडि । सुवर इंछिनि चहुआंनं ॥
मुक्कयौ साहि घन डंड लै । वर बाजें नीसांन घन ॥
आषेट फेरि मंडिय न्रपति । वन षट्ट कवि चंद मन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

दूहा ॥ मयनि मत्त अस्नान करि । सुभ दंपति दिन सोधि ॥
चाहुआन इंछिनि वरन । मयन रीति अवरोधि ॥ छं० ॥ ५२ ॥
करि मंजन अंगोछि तन । धूप वासि वहु अंग ॥
मनो देष जनु नेष फुनि । हेम मोज जनु गंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तन चंपक कुंदन मनों । कै केसर रंग जुत्ति ॥
पीय वास छवि छीन लिय । और छीन सव जुत्ति ॥ छं० ॥ ५४ ॥
अंग अंग आनंद उमगि । उफनत वेंनन मांझ ॥
सषी सोभ सव वसि भई । मनों कि फूल्ली सांझ ॥ छं० ॥ ५५ ॥
निरषत नागिनि वसि भई । किंनर जष्य कितेक ॥
सव सोभा ससि सांनि कैं । सांची इंछिनि एक ॥ छं० ॥ ५६ ॥
प्राग माघ अस्नान किय । गज गंजे घन घाइ ॥
विश्वनाथ सेए सदा । प्रथीराज ते। पाइ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥ कमल भाल जनु वाल । मकर कर मंडि इंछनिय ॥
निरषि नेंन प्रतिविंव । करषि निवछार निछिनिंय ॥
प्रमुदित अगनि अनंग । कोक कूकन उच्चारत ॥
एक रमन रस रंग । वात वातन मुचारत ॥
गंध अर वस्त्र गहनै करनि । हास भास मंडीर रिय ।
तिन मध्य पवारी पिष्यियै । जनु विधिना अप्पन घरिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥
अवननि लगत कटाच्छ । जनु पवन दीपक अंदोलित ॥
मुसकनि विकसत फूल । मधुर वरसति मुष वोलति ॥
इठलनि अलसति लसति । सुरनि सागर उद्धारति ॥
रति रंभा गिरजादि । पिष्षि तों तन मन वारति ॥
तिह अंग अंग छवि उत्ति वहु । छंद वंध चंदह कहिय ॥
जीरंन जुग्ग मधि अजर इह । कलू एक कीरति रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥
कमल विमल लज्जा सुगंध । वाल विस माल लाल उर ॥
भूषन सोभ सुभंत । मनों सिंगार सुचिर धर ॥
अलप जलप रति मंद । चंद वारुनि कुल तारुनि ॥

शुकी से शुक ने जो कथा चालुक्यों के जीतने की कही उसे सारूंडे में कविचन्द ने वर्णन किया ॥

दूहा ॥ सुकी सरस सुक उच्चरिय । प्रेम सहित आनंद ॥
चालुक्कां सोभति सध्यौ । सारूंडैं में चंद ॥ छं० ॥ १५९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सलष जुद्ध पाति साह ग्रहन नाम त्रयोदश प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १३ ॥

———o———
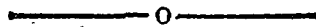
सो ढुंक्किनि पामार । राज सुद्धिय अति सारनि ॥
सत च्यारि बरष बरनि सुंदरिय । सुर बिसाल गावत गरज ॥
चहुंआंन सुअन सोमेस कहि । विधि सगपन सांई अरज ॥ छं० ॥ ६० ॥

छंद मोतीदाम ॥ सजे पट दून अभूषन बाल । मनों रति मात्त विसालनि लाल ॥
धर्यो तन वस्त्र सुकोर कुआर । मंडी जनु सिंभ मनंमथ रारि॥ छं० ॥ ६१॥

छंद कंठाभूषन॥ इक गावही रस सरस रस भरि बिमल सुंदर राजही ॥
मनों चंद उडगन रत्ति राका सोम पंति विराजही ॥
इक त्रित रंगन कांम अंगन अजस लज्ज कि सुंदरी ॥
मनों दीप दीपक माल बालय राज राजन उच्चरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
सुभ सरल बांनिय मधुर ठांनिय चित्त भंजय जोगयं ॥
द्रिग निरषि निरषि कटाच्छ लग्गहि जुत्त रंभन भोगयं ॥
अलि रूप नयनं मनहु बयनं चलिहि निप्प कटाष्पयं ॥
कुहंन निकरहि बार पारह करत तक्कि ननतच्छयं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

ब्राह्मण लोग विवाह की विधि करने लगे।

कवित्त ॥ विधि विवाह दुज करिय । करिय तन अंग वाम जन ॥
निरषि नयन मुष कांति । भयैा रोमंच स्रब्ब तन ॥
फुल्लिग नयन मुष वयन । भयैा आरूढ कांम मन ॥
चित बसीकरन समह । भयैा आनंद स्रब्ब तन ॥
अभिलाष मिलन हित हिलन मन । काकविंद कवितह करै ।
प्रथमह समागम मिलन कों । बहुत अडंबर विस्तरै ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ सोंधा सुगँध घन डंमरी । सुमन सुदिष्ट पसार ॥
धूप अडंमर धुंधरिय । झाल मल जल समढार ॥ छं० ६५ ॥

पृथ्वीराज के रहने को जो बाग़ सजा गया था उसकी शोभा का वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ बरबग्ग मग्ग चिहुं दिसा दिष्षि । जहां तहांति सुमन अति बैठि पिष्षि॥
कच मग्ग भूमि चिहुकोद गस्सि । नारिंग सुमन दारिम बिगस्सि ॥

अथ इंछिनि व्याह कथा लिष्यते ॥

(चौदहवां समय)

शुकी के प्रश्न पर शुक का चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इच्छिनी के व्याह का वर्णन करने लगा।

दूहा ॥ कहै सुकी सुक संभलौ। नींद न आवै मोहि ॥
रय निरवांनिय चंद करि। कथ इक पूछौं तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥
सुकी सरिस सुक उच्चर्यौ। धर्यौ नारि सिर चत्त[1] ॥
सयन संजोगिय संभरै। मन मैं मंडय चित्त ॥ छं० ॥ २ ॥
बन उद्दौ चालुक संध्यौ। बंध्यौ पेत पुरसांन ॥
इंछनि व्याह इच्छ करि। कहौं सुनहि दै कांन ॥ छं० ॥ ३ ॥

शाह को दंड देकर छोड़ने पर राना सलष ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा।

मुक्कि साह पथिराइ करि। दंड दियौ सलषांनि ॥
लगन पठाइय विप्र करि। बर व्याहन षिष्यांन ॥ छं० ॥ ४ ॥
पठयो प्रोहित भांन कर। कनक पच लिखि लग्न ॥
श्रीफल बहुल रत्तन भरि। पिष्षि होत जिहि मग्न[2] ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ अबू वै अब्बू समप्पि। सीस बंधी दह गुन्निय ॥
पाषारी इंछनिय। व्याह सोधन बर मन्निय ॥
लच्छि ग्रेह कूबेर। अंत ग्रीषम दिन धारी ॥
परनि राज प्रथिराज। हथ्य श्रीफल अधिकारी ॥
नर नाग देव गंधर्व गुन। गान जांन[3] मोहैं सकल ॥
अहै उतंग लच्छन सहज। दांन नंधि बंधी विकल ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) को-सूचित्त।
(२) को-लग्न।
(३) को-गान गान।

प्रतिबिंब तास दिषिय सरूप । उसंम एम जंपै अनूप ॥
नव बधू अंग नवजल प्रवेस । मुसकंत दंत दिष्षिय सुदेस ॥ छं० ॥६६॥
प्रतिबिंब चंप देषे फुलीन । दीपक्क माल मनमथ्थ दीन ॥
उप्पंम और उर एक लग्गि । संजीव म्हरि जनु जोति जग्गि ॥
हल हलै लता कछु मंद वाय । नव बधू केलि भयकंक पाय ॥
उपमा उर कवि कहीय तांम । जुव्वन तुरंग अगि ओगि कांम ॥ छं०॥६७॥
पाटीन दिष्षि चकचौंधि होइ । ससिपरह उठ्ठि घन घटा दोइ ॥
सुभ माग सरल सूधी सुवानि । ससि कन्न चली घन छेकि जांनि ॥
फुल्ले सुगंध के वरनि फूल । देषंत वग्ग पावस्स भूल ॥
घन घर अनंद अग्गें निसव्व । जनु रंक इच्छ पासै सुदव्व ॥छं०॥६८॥
नल नलिनी नीरू चह वचनि उद्वि । घरधार गंग जनु उठिवुद्धि ॥
विट विटनि वेलि झुलि वेल फूलि । जनु काम ग्रह वाग तर छच झूलि ॥
कदलीन पत्र हलि पवन जोर । जनु करत पषा न्टप पिथ्थ ओर ।
कलरव करंत दुजनेक थांन । संगीत कांम चट सार गांन ॥
निरतंत केक केकीन संग । पावसह जानि गिर रमत रंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ नंदन वन वैकुंठ जनु । इंद्र लोग सुर वाग ॥
वृंदावन भूलोग जनु । सोभा सुभग सुभाग ॥ छं० ॥ ७० ॥

गाहा ॥ तिहि थांनं रजि राजं । उत्तरियं बीर सा साजं ॥
सव संवल वियानं । जांनं वुड्डायइं बीजयौ चंदं ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ को इंद्रो गुर राज । भांन सत्तम अधिकारी ॥
भांन नवम प्रथिराज । राह दुष्टम अधिकारी ॥
वर वज्जी नीसांन । वंदि लीनं नृप राजं ॥
प्रीय चिया चित वंधि । सोइ इंछिनि वर पाजं ॥
चियांह तात अरु बाल सह । उचरैं मुषे इंछिनि सुनहि ॥
घनि घनि गवरि पूजा लह्यौ । सुवर सुवर सुंदरि समहि ॥ छं० ॥ ७२ ॥
ब्रह्म वेद सहसूय । अग्नि होतय वर राजय ॥
स्वाहा अगनि विवाह । रत्ति कामह गुन गाजय ॥
दुहिति नाम दुहुरिष्षि । दुहुति परहं दुंहुं गोती ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इंछिनी का रूप नाम आदि पूछना।

दूहा ॥ प्रथु पूछत बंभननि सुनि। कहौ वाल किन वेस ॥
कितक रूप गुन आगरी। सुनन मोहि अंदेस ॥ छं० ॥ ७ ॥

इंछिनी की सुन्दरता का वर्णन।

साटक ॥ वाले तन्वय मुग्ध मध्यत इमं स्वपनाय वै संधयं ॥
मुग्धे मध्यम स्यांम वांमति इमं मध्यान्ह क्काया पगं ॥
वालप्पन तन मध्य जोवन इमं सरसी अवग्गी जलं ॥
अंगं सद्धि सुनीर जे मल ससी सुभ्भै सुसैसव इमं ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ अति सुरंग वय स्यांम। संधि वय संधि जुरिय वरं ॥
ज्यों दंपति हथ लेव। पंथ जोगिंद मिलत गुर ॥
नयन मयन आरुच्चिन। धस्यौ आरुद्दन थांन दिन ॥
कछु कज्जल अंकुरिय। करिन आवें पें लज्ज मन ॥
ज्यों करकादि निसा मकरादि दिन। करक आदि से सब सुगुर ॥
मकरादि वाल जोवन जदिन। काम धुरा लीनी सुधुर ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ स्यांम सु वांम अनंग भय। घटी न घट्टि किसोर ॥
वालप्पन वैवेस तन। मनें भरें घन चोर ॥ छं० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ षट हथ्थी बहु हेम। रतन गुर पाट पटंबर ॥
पीत रत्त गुन सेत। स्यांम नग सुन गति अंमर ॥
सो मंगी चालुक। सोइ[1] दीनी प्रथिराजं ॥
मनु इंद बधू सचीव। कांम बंधी चढि पाजं ॥
बर बरनि राज संभर धनी। सुफल बंधि फल संग्रहिय ॥
इंछनि अवाज आवाज क्रम। अदिन भंजि के दिन सजिय ॥ छं० ॥ ११ ॥

साटक ॥ नां पतनी नल राज राजन बधू दमयंति नो इंद्रयं ॥
नां सचीव सुनाथ नायक धरं लछीन धरया धरं ॥
नां रत्ती मनमथ्य सत्ति कलया मंदोदरी रावनं ॥
सोयं सा प्रथिराज इंछिनि बरं समयै न लभ्भै कवीं ॥ छं० ॥ १२ ॥

(१) क्र०–साइ।

राजं गुरु उच्चरै । सलष चहुआंन सकोती ॥
अनेक भाव दिप्पहि सुदिव । दिव दिवांन दुंदुभि वजइ ॥
प्रथिराज राज राजन सुवर । तिहित लपे रतिपति लजइ ॥ छं० ॥ ७३

कुंदन ओपति अंग । संग जनु चंद किरनि सिर ॥
वैनी सुभग भुजंग । फूल मनि सीस मीस थिर ॥
पट्टिय घंुटित मैंन । तिमिर कज्जल छवि छीनिय ॥
भुअजुग गोस धनुप्प । वदन राका रुचि भीनिय ॥
सुक नास नैंन फूले कमल । कंवु कंठ कोकिल कलक ॥
दुलह सुचित्त फंदन मनहु । फंद मंडि रष्पिय अलक ॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना ।

दूहा ॥ फुनि पंडित मंडप मँडिय । वेद पाठ आधार ॥
षट करमी सरमी अनिघ । गुर संगह गुर भार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूलह का मंडप में आना ।

तिन दूलह मंडप वुलिय । हम सत घमस निसांन ॥
जनु वद्दल व्रज छिल पर । सुरपति वहुरि रिसांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥

देषि सोभ प्रथिराज चिय । वारत राई नोंन ॥
हर्ष हास मुष चष उदित । जनु कमल विकस रवि भोंन ॥ छं० ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥ देसन देस नरेस । भेस अमरेस अमर भति ॥
सील सत्त गुनवंत । दांन षग कहन कोंन मति ॥
जरकस पसम जराउ । गंध रस सरस अमीवर ॥
तेजवंत उद्दार । बडम विवाहर ग्रंथ भर ॥
मंडप्प जांन दुअ दिसि मिलत । हास तर्क जान न गन्यौ ॥
दीपति नगनि निसि दीह भय । वर दाई दिव वर मन्यौ ॥ छं० ॥ ७८ ॥

स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना ।

दूहा ॥ साल अटा जालिन गवष । रष्षत नव रनिवास ॥
कच काह छवि करत जित । भमर मत्त रस वास ॥ छं० ॥ ७९ ॥

पृथ्वीराज का व्याहने के लिये यात्रा करना ।

दूहा ॥ निंघ सुंदरि व्याहन न्रपति । रिति ग्रीषम दिन संधि ॥
चल्यौ सूर संभरि धनिय । सुष संचन पल बंधि ॥ छं० ॥ १३ ॥
धर अंबर नर जलध वल । कहुं न सूर तप सीत ।
अगम पंथ नर घरनि सुष । विलसत दंपति मीत ॥ छं० ॥ १४ ॥

साटक ॥ पंथं दुस्तर वाय मुकुलितसरं[१] ज्वाला दूला दुस्सहा ॥
क्रीलायां धन क्रयन थांइ सुथनं नजीव प्रब्दं धरा ॥
आवर्त्तं वर तत्त मित्त करनी धूमाय विदिसा दिसा ॥
सरनं मरनयं पंथ ग्रीषम पथं सुष्यं अष्टं प्राणिनां ॥ छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ प्रानी पंथ न सुष्य जल । मरन सुनिस्चय मांन ॥
दीह उदय दिसि सुदय भय । सुरति स्वयंवर ठांनि ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन ।

कवित्त ॥ सथ्य कन्ह चहुआंन । सथ्थि निड्डुर रषि राजं ॥
सथ्य सोम सामंत । अल्ह पल्हन प्रति साजं ॥
बलिय गरुअ गाहिलौत । बलिय भोंहा बर सिंघ नर ॥
दाहिमो कैमास सथ्य । सूरौ चावंड गुर ॥
मति भद्र मंति साधन सकल । जोहांनौ स्वांमित्त धुर ॥
चतुरंग सूर वय रूप गुन । लिए राज राजान गुर ॥ छं० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज की वारात की शोभा वर्णन ।

छंदपद्धरी ॥ चढि चल्यौ राज प्रथिराज राज । रति भवन गवन मनमथ्थ साज ॥
सिर पहुप पटल बहुसा पवास । अवलंब रहिय अलि सुर सुरास ॥
मुष सोभ जलज कंद्रप किसोर । दीजै सु आज न्रप कौंन जोर ॥
चिति काम बार रजि अंग और । सकस्यौ जान मनमथ्थ जोर ॥
जिम जिमति लाज अरु चढत दीह । लज्जा सुजांनि संकलिय सीह ॥

---

(१) कृ० को०–तर ।

नग मोती गष्ने अगन। गिरत न सुद्धि सम्हार॥
कांम उदरि कवि छोल उठि। दुति दरियाव वेपार॥ छं० ॥ ८० ॥

स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना।

मंगल गावत कुंमकनि। कोकिल कंठी नारि॥
सुघर पुरुष जोवन छके। सुनहि सुचाई गारि॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूलह दुलहिन का पट्टे पर बैठकर गंठ जोड़ा होकर गणेश पूजन करना।

परां बैठि पट गंठि गुह। पूजे प्रथम गनेस।
दुहु कुल चारि विचार कर। व्याही वांम नरेस॥ छं० ॥ ८२ ॥

नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण, की पूजा कर आषोच्चार होना।

ग्रहन पूजि, ग्रहदेव पुजि। पूजि अगनि दुज देव॥
साषोचार उचार धुनि। प्रसन भए नृप सेव॥ छं० ॥ ८३ ॥
चंद सूर तर्हां साषि दिय। बन्ह वाहन बुध वाइ॥
प्रोहित गुर उपदेस करि। वांम अंग तव आइ॥ छं० ॥ ८४ ॥

ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना।

पढि संकलप विकलप तजि। भजि भगवति भगवंत॥
तम सु पाइ परसाद करि। चिर जिऔ दूंछिन कंत॥ छं० ॥ ८५ ॥

सलषराज का कन्या दान देकर विनय करना।

अब्बूपति पट गंठि चिय। विनय जोरि कर कीन॥
इह कन्या नृप सोम सुत। दासपंन पन दीन॥ छं० ॥ ८६ ॥

कान्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी।

कही कन्ह तव जैत सम। मंडन संभरि ग्रेह॥
ज्यों गवरी सिव लच्छि प्रभु। त्यौं तन वाढो नेह॥ छं० ॥ ८७ ॥

जिम जिम सुनंत न्रप श्रवन बत्त। तिम तिम हुअंत रस काम रत्त।
मधु मधुर बेन मधुरी कुंआंरि। रति रचिय जांनि सेंसव सवारि॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

स्लोक॥ साय दीपसमो दिष्टे। जैति जैति विजै जितं॥
देवासुर मनुष्यानां। काले केक न गच्छति॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त॥ कोंन काल बसि पस्यौ। काल ग्रह कोंन न बंध्यौ॥
कोन काल जित्तयो। काल किंचि घाइ न रुंध्यौ॥
मठ बिहार वापीन। बिरष सुर थावर जंगम॥
सुवर राज राजिंद। कोंन दिष्यौ न अभंगम॥
ज्यां बंधयौ साहि गोरी सुबर। मरन तिनं कति नंतयो॥
दूंढनिय दृच्छ दृच्छा सुफल। सुबर बीर बीरह जयो॥ छं० ॥ २० ॥

साटक॥ बीरं जा बर बीर भीमनि बरं कामं तनं उप्पया॥
पंथे वानति वान मानति वरं कुरनंद केवं कुरू॥
धाता मानय बीर वामन बलिं पूरोरवा भर्थयं॥
तू पत्नी प्रथिराज कालनि रष्षं कालं जसं वर्तते॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का आते हुए सुनकर सलषराज का धूमधाम से अगवानी करना॥

कवित्त॥ सुनि आवत चहुआंन। करिय अग्गैान सलष बर॥
हय गय लच्छि सुअच्छि। आदि उम्मह्यिय राज दर॥
पट अंबर रुजराव। जेब नंगन जगमग्गिय॥
फुल्लिय मानहु संझि। चित्त चकचोंधिय लग्गिय॥
चहुआंन रत्त तोरन समय। लगन गोधूरक संधयो॥
जांनै कि अर्क राका दिवस। इक्क थांन उगि रुंधयो॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनो राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन।

जिम सावन भादव सिंधु। घुमरि घन घटा मिलत दुअ॥
जनु समुद्र अरु गंग। उमडि मिलि दुहुंन सोभ हुअ॥
जनु सुर अरु सुक्र। सिंगि रिषि गननि गगन मिलि॥
जनु दधि मथि सुर असुर। करन मधुपांन विभिर ठिलि॥

लग्न साधकर तब राजा का ज्योनार करना।

लगन साधि आराधि नृप। पुनि ज्यौंनारि जिवाइ ॥
छ रस अंन अंतन लहै। क्यों कवि कहै बनाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

ज्योनार के पकवानों का वर्णन।

अगनि पक्क घृत पक्क कर। दूध पक्क वेपार ॥
तेल पक्क लपियै नहीं। जहं तहं लूट अमार ॥ छं० ॥ ८९ ॥

छंद भुजंगी ॥ रहस्यं रहस्यं अनेकांन भंती। घनं जोति मिष्टांन पानं प्रभंती ॥
उडंदं पुडंदं गुडंदंति मासं। किते व्रंन प्रंनं किते वीर भासं ॥
किते स्वाद स्वादं प्रथी देव वंछे। तहां केवलं व्रंनि आवर्त्त गंछे ॥
मरे एक वारं सितं षंड मद्धी। दिषे स्वाद राजं चन्नै देव वंधी ॥ छं० ॥ ९० ॥
घनं अंमरं डंमरं दिसि प्रमानं। उठै जब तीनौ सुगंधं निधानं ॥
अँगं अंग अंगं सलप्पत नारी। महा लालचै काम वसु भो निनारी ॥
हथं लेव राजं सुदंपत्ति वंधे। मनों मिस्स अग्गें गुरं चित्त संधे ॥
वधें अंचलं संचलं इन प्रकारं। मनों वंधियै मैंन मनमथ्थ धारं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
लियौ हथ्थ राजं चिया हथ्थ सोहै। मनों पैसि सत पष कंमोद सोहै ॥
जनं अंग अंवं वरं माहधारी। मनों काम अग्गं जु विद्या पसारी ॥
कितं कित्त राजै नरं नाह नारी। मनों जीवनं काम लज्जी उघारी ॥ छं० ॥ ९२ ॥
परं पुब्ब कथ्थं कथी कब्बि चंदं। रही लजि मनों रत्ति फिरि दहन दंदं ॥
दियै तिलक दद्धि अछि अक्षत सारे। मनों उग्गि अंकूर सुष सेन भारे ॥
दिषे कंकनं हथ्थ चहुआंन राजै। मनों रत्ति वंध्यौ दई छाप छाजै ॥
रहै एक ग्रेहं घरी अद्ध भारे। तहां वेद मंत्रं दुजं जा उचारे ॥ छं० ॥ ९३ ॥

कवित्त ॥ सुभत वीर तन तांम। बाल राजै दिसि वामं ॥
मनहु मुत्ति पहिचांन। रत्ति वंधी कर कांमं ॥
अति सोभा सोभई। चंद ओपम तहं वर वर ॥
मनों मकर मकरेस। आय चंपाई अप्प घर ॥
सज्जे सुरत्ति मनमथ्थ वर। कै इंद्रानी इंद्र परि ॥
संप्रति लच्छ लच्छिय सुबर। संपति तन सज्जेउ बर ॥ छं० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ वर सोभे वर राजपति । त्रिय दच्छिन छत वांम ॥
मनों व्याह पूरन करै । सुत्रिन बीरतम धांम ॥ छं० ॥ ९५ ॥

पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बतलाता है।

परनि बीर प्रथिराज वर । बहुत कहै रस जोइ ॥
कवि धर वरनत नां बनै । वर भूपन तिन गोइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

नव दुलहिन की शोभा का वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ लज्यातिं मांन गुन ग्रब कटाक्ष । अल्प पढति जलप सुलपढ सुलाक्ष ॥
भोर भर अभय भय सील नील । सरसात पिंम रस पिंम चील ॥
गुंजंत ग्रांम सोभित कुआंरि । तिहि हरत हरनि मनमथ्थ रारि ॥
तन सात नितंबनि तई प्रमान । बर हरैं बरनि पिय लटि प्रमान ॥
सित असित सुहत कटाक्ष वान । शृंगार मध्य भूषन रसाल ॥
रस रास मध्य शृंगार होइ । संकर सुभाग उप्पनै लोइ ॥ छं० ॥ ९७ ॥

साटक ॥ कामं जा गढोइ लज्ज गढने भय भ्रत्त भय कोटकं ॥
घू घट्ट पद् डोढि वानति वले ऊधी सुकागक्ष रसे ॥
जातिं जात न जासि जोगित वरं भंजे मनं विभ्रमं ॥
नां दीसंत गता गतेस सैनं द्रग्गं चलं निश्चलं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

छंदचोटक ॥ वरनं गुरु अच्छिर अंति पयौ । इति तोटक छंदय नाग गयौ ॥
स्त्रिय नाग सुबद्दिय बाहनयं । पग पत्ति विपत्ति सुगाहनयं ॥
बरनं बरनं बरनीन कथं । सु चथ्या जनु मेघ प्रथंम रथं ॥
प्रग अंचल चंचल बाल ढंके। तिहि कांम बिरामन बांन थके ॥छं०९९॥
नव बास सुनूपुर सद्द गुरं । न्टप आगम जाइ बधाइ धरं ॥
गज ज्यों मनमत्त जंजीर जरी । क्रम निठ्ठुन निठ्ठय पाइ भरी ॥
दस पंच सषी न्टप पास गई । ति मनों सुप श्रीफल हाथ दई ॥
करुना तिसुची रस भैार सता। श्रम भै अभिलाष रु ग्रब्ब जिता छं०॥१००॥
न्टप पुठ्ठ मुषं अवलोक करै । सु मनो धन रंक विलोकि गुरै ॥

अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(पन्द्रहवां समय।)

इंछनी को ब्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुदगल का पूर्व वैर निकालने का विचार।

दूहा ॥ प्रथीराज राजन सुबर। परनि लच्छि उनमांन ॥
दिसि मुग्गल संभर धनी। वैर पटक्यौ प्रान ॥ छं० ॥ १ ॥
वैर पटक्यौ पुब्बवर। मति मंची मेवात ॥
बर उद्दित संभर धनी। अरत वीर भय गात ॥ छं० ॥ २ ॥

मेवात राज का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज को मारना चाहिए।

कवित्त ॥ वैर पटक्यौ पुब्ब। करिय सोमेस सुराजं ॥
सो आनें सोमेस। तात मुग्गल भजि काजं ॥
सारंग वैर सारंग। देषि कढ्यौ तिन बेरं ॥
सो संभरि प्रथिराज। मत्त बढ्यौ धर वैरं ॥
घम मत्त मत्त गुरजन कहै। सर्व वेर लज्जी अवन ॥
प्रथिराज राज काटन मनै। निचित पंथ कीजै गवन ॥ छं० ॥ ३ ॥

यमुना की एक घाटी में मुगलराज का छिप रहना।

चित्त मुग्गल चिंतयौ। राज प्रथिराज वैर वर ॥
मद्धि थांन मेवात। रह्यौ चंपे सुढिल्लि धर ॥
ढिल्ली वै बर धाम। सुपल्ल अंगन मेवातं ॥
तत्त मत्त उप्पन्नौ। वीर वीरा रस गातं ॥
मुगल नरिंद मेवात पति। कूच राज चिंत्यौ सुबर ॥
बहच सुएक जमुना विकट। सुघट घाट औघट नयर[1] ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए० को०—औघटन पर।

ति कंद्दी न बनै कविचंद कथा । सु लजै रसना अरु वीर जथा ॥
सुकछूक कहौं दिठि क्रंम क्रमं । सुमनो मनता बरनी न स्रमं ॥ छं० १०१ ॥

प्रथम समागम का वर्णन ।

दूहा ॥ औन सैन रति मैन सय । प्रथम समागम बाल ॥
नेह देह दुअ एक हुअ । परे प्रेम रस जाल ॥ छं० ॥ १०२ ॥

गाथा ॥ इत्तं सुष्य गनिज्जै । लज्जीजै जोहयौ कव्वी ॥
ज्यों वारिज विपनं मभ्भं । सुभ्भै ना यहि गरुआयं ॥ छं० ॥ १०३ ॥
मूलं वर मकरंदं । विजी पुर पाई सुंदरी वीयं ॥
मालचि दंपति वासं । चाहुआनं धीरयौ पत्ती ॥ छं० ॥ १०४ ॥
जंभ्रम भ्रमैति चित्तं । आवै नट्टेय ग्यांनयं चितयं ॥
जंभ्रमि भ्रमि सह रूपं । अवलोकं इक्कनी करियं ॥ छं० ॥ १०५ ॥
इक्क जगी विस बाले । काम भयंक पयौ द्रिगयं ॥
जानिज्जै गम सैसं । नैनायं जोग व सनायं ॥ छं० ॥ १०६ ॥
उअर उरोजति सद्दे । वुड्डी बालाय दिठ्ठयौ नैनं ॥
कुच तुक्क अंकुर उट्टे । मनों प्रीतम विस्राव हीयौ चढयं ॥ छं० ॥ १०७ ॥

चौपाई ॥ नैननि प्रथम प्रमांनिय पुव्व । सेवालय रोमावलि रुव्व ॥
अग्गानय जोवनति कुंआर । अब जांन्यौ सैसव चलि भार ॥ छं० ॥ १०८ ॥
इहिविधि मत्त गत्त भय रजनी । बाल लता वल्हम गहि सजनी ॥
यों डग मग सुंदरि विरुझाई । ज्यों वेलिय अवलंब लहाई ॥ छं० ॥ ०८ ॥

दुलहिन को लेकर दूलह का जनवांसे में आना और हाथी घोड़े धन आदि लुटाना ॥

दूहा ॥ पांवारी प्रथिराज वर । पुनि जनवांसे जाइ ॥
एक सहस हय हथ्यि भर । दीने तुरत लुटाइ ॥ छं० ॥ ११० ॥
होत प्रात जग्गिय सलष । भंति अनेक तिभोग ॥
जुककु देव देवंस मति । सो लभ्भै नहिं लोग ॥ छं० ॥ १११ ॥

छंद भुजंगी ॥ सुइंदं सुइंदं सुइंदंति राजं । सुतौ देषियै कोटि कोटेक साजं ॥
लषं लष्ष भाइं नटं नट्ट रागं । मनो देषियै यंद ग्रहग्रहेन आगं ॥

पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना, कैमास का उल्लू की बोली सुनना।

छंद माधुर्य ॥ जग जोति जिंगिनि निसि अभिंगिनि रत्त रत्तति अंबरं ॥
सामंत सूर सुथांन निद्रा भ्रमित क्रोध सुउत्तरं ॥
अति चतुर चिंतय समुद मित्तय कित्त चिहु चक विस्तरी ॥
कैमास जग्ग रु सकल निद्रा बीर सर सुअंमरी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आवत्त रत्त रुहंग नील रु थान पुव्वय उत्तऱ्यौ ॥
संनाह स्वामि नरिंद नामय कव्वच कित्तिय विस्तऱ्यौ ॥
बोलि घूघू अ साद दीविय मच्छनी[1] सुर उफ्फस्या ॥
इह सुनि रु सूरं धरि कछरं बीर बीरह उच्चस्यौ ॥ छं० ॥ ६ ॥

कैमास का बाईं ओर देवी को देखना।

कवित्त ॥ बर निड्डुर राठौर। राज सूतौ ढिग बीरं ॥
और सव्व सामंत। पास कैमास अधीरं ॥
नद वेहड बंकट सु। भ्रमत आषेटक आइय ॥
क्रोध सजल उच्चरिय। सद्द मोदें तन छाइय ॥
मत्ते सुभ्रमर पत्ते सुग्रह। पग बंधे निद्रा ग्रहिय ॥
जग्गै न कोइ जाग्रत सुभ्रित। वाम दिसा देवी लसिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरूराम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चंद से पूछिए।

बोलत देवी सुनिय। जगि निड्डुर नृप पासं ॥
राज गुरू जग्गाय। बोलि मंत्री कैमासं ॥
राज गुरं दुज राम। वलिय बंभन अधिकारिय ॥
सार सिंध रन द्रोन। तेन भारथ भर भारिय ॥
कवि चंद बोलि चाचिग मद्दर। सगुन संधि सज्जिय लगन ॥
आवै न मंच मंचीय घन। सुबर चिंत अघ्घिय अगन ॥ छं० ॥ ८ ॥

---

(१) को०—सनी।

जिते तार झंका नखे निनारे। मनों देषियै भांन ससि लप्प तारे॥
सुभंगं सुतालं मृदंगं बजावै। हषा हूह स्तुगं सुगंधर्व गावै॥ ११२॥
घनं पक्ष पांनं समानंत नेहं। करै प्रथिराजं अप अप्प देहं॥
करै राज राजं सबै व्याह काजं। मनों दिष्पियै राज सूजग्य साजं॥
धरे अग्ग राजं छिती छत्र जोरी। मनों उन्नयौ मेघ आषाढ कोरी॥
फिरै दास भारी वुल्लै राग वैनं। मनो नभ्यसी मास कै बीज गैनं॥ ११३॥
वजै ग्राम नारी छतीसों सुरागं। मनो बोलयं मोर आषाढ गाजं॥
वजै घुघ्घ नारियं रंग भारी। मनों दादुरं जोति मनमथ्थ सारी॥
रंगे कासमीरं सबै वस्त्रधारी। किधों बद्दलं रंग कै मृघन गारी॥
किधों इंद्रवद्धू चढ़ी नीर धारा। किधों राज वासंत भूपालवारा॥छं० ११४॥

दूहा॥ गति चिजांम भय प्रातवर। इह मनुहार प्रमांन॥
बर दिष्यौ चहुआंन न्टप। रत्ति काम उनमान॥ छं०॥ ११५॥

गाहा॥ रत्ति काम दुअ दाहं। कै दुःपंकरी कत्तरी बाले॥
सो इंछनि पांवारी। लभ्भी नृप मुत्तिका रूपं॥ छं०॥ ११६॥

छंद चंनुफाल॥ इति मुकति सकति सकोर। जिन लभि न पारस चोर॥
जिन कांम बांन झकोर। गुन मुदित मुदित सथोर॥
चित मित्त मित्तह जोर। मनों उदय निषचन चोर॥
सुष जुगति भुगति उपाय। का करिहि मुक्ति अभाइ॥ छं०॥ ११७॥
सुष करन दिन प्रति जीह। दिन सुफल घरियति ग्रीह॥
प्रति राज राजन जोर। पाषार सलषति ओर॥
मनुहार मंडित थोर। न्टप चलन ग्रेह सजोर॥
है गैति रथ बर वाजि। न्टप दए दांन विराजि॥ छं०॥ ११८॥

दहेज में सलषराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना।

कवित्त॥ सहस एक रथ साजि। दासि बिय तिपति इक्क मधि॥
इक्क इक्क करि सथ्थ। किरनि पंचो प्रति प्रति बधि॥
सौ हाथी इह भांति। माल मुत्तिय उतंग वर॥
लक्छि पटंबर अंग। दए राजिंद राज गुर॥

साटक ॥ जे मत्ताने मत्त कारन वरं पुद्धं न्रपं प्रानयं ।
जस्या सस्त समस्त अस्त कुंभकं सुयसं समुद्रं वरं ॥
निर्घोषं यमयाय धारन धरे विद्याधरा उद्धरं ।
सायं सो प्रथिराज वैरन वरं सोमेस निय अग्गियं ॥ छं० ॥ ९ ॥

चंद का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों के साथ वैर का कारण कहना ।

छंद पद्धरी ॥ न्र वस भट्टग आना नरिंद । दस पुत्र भय गति न वैर कंद ॥
चहुआंन नाम चहुआंन वैर । वीसल कुलान उप्पने नैर ॥
आदत्त वीर ढुंढा सुरप्पि । तिहि वंस भट्टग चहुआंन सप्पि ॥
जैसिंघ देव तिहि वंस वीर । धरि करिय अट्टर जज्जर सरीर ॥छं०॥१०॥
दोस्यौ जु वीर संभरि सुइंत । पट्टन प्रभास अरि हस्यौ कंत ॥
छंडाय सव्व मेवात भुम्म । आदत्त जुद्ध मंडयौ ह्रम्म ॥
तिहि वंस भयौ सोमेस सार । जंभए वीर परवत विधार ॥
उत्तस्यौ जाइ जंगल सुदेस । गहिया नरिंद भंजी प्रवेस ॥ छं० ॥ ११ ॥
विप्पान मग्ग जिम हुन उचीर । साधयौ जुद्ध किय सुद्धि धीर ॥
तिन पाट प्रथि प्रथिराज तप्पि । आबू नरिंद पावार थप्पि ॥
जस जाति भूमि अरु भर सदंद । मुग्गल मयंक तारका चंद ॥
ढंढोरि वैर पल करिय पंग । पारस परिय साइर अनंग ॥ छं० ॥ १२ ॥
तिहि वेर जग्गि मुग्गल नरिंद । जंपयौ वीर कविचंद छंद ॥
इह कहिय राज निद्रा असीय । चिंता न राज चिंता बसीय ॥
चहुआन वीर वर सोमनंद । तिन तेज नन्न मानों रविंद ।
निसि सेन श्रैन अवनी अनंग । फुनि कील केलिनि सिप्प रंग ॥छं०॥१३॥
भो प्रात भांन झलमल्यौ अंग । फुल्लेति कमल उडि चले भ्रंग ॥
कुल छैल चोर मन भए पंग । इंभार सव्द गो करि उतंग ॥
द्रुम द्रुमनि रोर पंषिय करंत । करैं क्रम सुभ्भ रव सुद्ध संत ॥
चकीय चक्क करि मिल्लिय रंग । भगि रोर चोर चय मन अनंग ॥छं०॥१४॥
ऊघरे पूज देवद्द कपाट । जग्गेति विप्र वर क्रंम घाट ॥

इतनौ देत सकुच्यौ न्टपति। तौ दिनता चरनन गद्दिय ॥
प्रथीराज राजन सुबर। सलप फेरि चल्यौ समिय ॥ छं० ॥ ११९ ॥

पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया।

दूहा ॥ पंच दिवस च्यारौं बरन। भुजत अंन अपार ॥
छरस अंन छह रितिन सुष। अब्बू वै आचार ॥ छं० ॥ १२० ॥
पलकि[1] चार अचार करि। समद करी सब सथ्थ ॥
है हथ्थी जर कस वसन। को कवि वरनै कथ्थ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

बारात की विदाई का वर्णन।

छंद पद्धरि ॥ पहिराइ राइ पावार सथ्थ। नह बुद्धि बरन वर विविध कथ्थ ॥
इक करी सत्त हय सोम राइ। औराक जाति जे पवन पाइ ॥
सिर पाव पंच जरकस पसंम। सूत रूपोत रेसम नरंम ॥
सोइ विदा कीन दूलह वनाइ। जमदार सोंपि संभरि गनाइ ॥ छं० ॥१२२॥
कलधूत कलस दस गढ़िन हथ्थ। इक उंच कुंडि जल न्हांन सथ्थ ॥
दस थार कनक प्रतिविंव सूर। वाटका वीस विश्र अभुत नूर ॥
ता सक्क पंच दुव मनह थार। वाजौठ एक हिम जटित लाल ॥
पालकनि हेम रेसम निवारि। अनि ठांम नंन्द को लहै सार ॥ छं० ॥१२३॥
कठ लोंनि वीस सोवन मटाइ। पल्लांन ऊच दावन चढ़ाइ ॥
मन बीस पंच इह सोज श्रव्व। जिन कोय करौ छिचीस ग्रव्व ॥
दुश्र हथ्थि साजि मांझे जिजीर। रूपेन साज सज्जे वजीर ॥
हँडवाइ बीस मन साजु सुद्ध। उज्जल रज रजक्क जनु उफनि दूध ॥ छं० ॥ १२४ ॥
दस सहस हेम दासीन संग। तिन देषि रंग रँभ होत भंग ॥
सामंत सत्त इक रस्स अग्ग। पहराइ तिनह न्टप नमिय पग्ग ॥
इक तुरी जात औराक थांन। अग्गीय अंग पग पवन मांन ॥
इक इक्क वटुश्र मालाति इक्क। मुद्रकी इक्क इन पुहचि किक्क ॥ छं० ॥१२५॥
सिर पाव उंच सरकस[2] अनूप। तिन दिष्षि होत हैरांन भूप ॥

---

(१) कृ० को०—पालिका।

(२) कृ० को०—जरकस।

उच्चरहि वेद वा नीति चंग । न्रंमल प्रवाह जनु जलह गंग ॥
बहु भंति क्रंम आचरत लोइ । बंदैति पुज्ज गुरु देव दोइ ॥
आभंन पुहप असनांन दान । मंडै सुजन नर थांन थांन ॥ छं० ॥ १५ ॥

सबेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ शिकार के निकलना ।

तब जग्गि नंद सोमह कुमार । अनभंग अंग अरि कुल पयार ॥
कैमास बोलि सामंत सूर । चढि चल्यौ राज आषेट दूर ॥

मुगलराज का आकर रास्ता रोकना ।

इत्तनै होत बज्जी अवाज । मुग्गल सु आइ करि सकल साज ॥
रुक्केति पंथ गिरि कंठ ठेर । मग्गयौ आंनि तिन पुव्व वैर ॥ छं० ॥ १६॥
संभरिय वैन सामंत नाथ । ज्यौं सुन्यौ वैर लगि सीस माथ॥ छं० ॥ १७॥

तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानो बड़वानल समुद्र पीने के लिये धसा हो ।

कवित्त ॥ बढि अवाज गिरि गाज । राज भय अंग न आनिय ॥
ज्यों कमल पांनि जोगीनि । कुंभ चीकट जिम पानिय ॥
मूढ मत्त गूंगं सवाद । मांन कल तंत सूर भय ॥
यों सोमेस कुमार । दिषि षिन वट अंग तय ॥
करि मिलह अंग है तेज करि । कढिह वाग कढ्ढी असिय ॥
जाने कि पियन सागर जलह । वडवानल मध्ये धसिय ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ।

भो वडवानल राज । समुद सोषन मैवाती ॥
भो वडवानल राज । जांनि रषि अंजुल घाती ॥
भो वडवानल राज । मोह वित रागत सो सो ॥
भो वडवानल राज । ज्यों दोस अदोस स दे सो ॥
प्रथिराजन जांनिय मान तप । मद्दन रंभ बंक्के वलह ॥
ज्यौं बंक्के अवधि सुंदरि पिया । त्यों कलहवंत बंक्के कलह ॥ छं० ॥ १९॥

वंभन बनंक कायस्थ संग । पसवांन लोग जे रविक अंग ॥
लघु दिग्घ और असवार पाल । करि सुमन सब्ब अब्बू भुआंल ॥
पंच से सोम रनिवास नांम । रेसंम सूत गनि पंच ठांम ॥ छं० ॥ १२६ ॥
सब चर्प सचित समदे नरेस । सजि चले सुभट सब अप्प देस ॥
इंछनिय मद्धि पिथ बैठ ढाल । गज गाह घुरें दुहुं अंग भाल ॥ छं० ॥१२७॥

बारात का विदा होकर अजमेर की ओर चलना ।

दूहा ॥ चल्यौ व्याहि संभरि धनी । मंगन भए निहाल ॥
पुहु चावन घन संग भए । न्रपगुन चवें रसाल ॥ छं० ॥ १२८ ॥
पंच कोस परथिथ्थ कहु । विदा मंगि अबु ईस ॥
और देन तुम सोभ कह । कांम तुम्हें हम सीस ॥ छं० ॥ १२९ ॥
नवमि मंडि बहुरे घरह । वे सज्जे अप देस ॥
न्रपति व्याह दुअ रस रह्यौ । हिम गिरि जांनि महेस ॥ छं० ॥ १३० ॥
आरिज आरिज सलप तें । इंछनि इच्छा पूरि ॥
भुअ मंडल मंडित दिनह । सिर दधि अच्छित जूर ॥ छं० ॥ १३१ ॥
चलन राज प्रथिराज वर । वरनिं पत्त वर राज ॥
मद्धि अमोलक सुंदरी । डोला सठ्ठिन साज ॥ छं० ॥ १३२ ॥
यों आयौ नृप ग्रेह वर । सुनि अवाज चिय कांन ॥
मानों बीर दुहाइयां । कांमहि नंपन वांन ॥ छं० ॥ १३३ ॥

बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त ॥ सोमेसर संभरिय । राज आवत प्रथिराजह ॥
है गै रंभ सुसाज । इंद चहयौ लष साजह ॥
कोटि कोटि मनु इंद । इंद दिष्पो इंदासन ॥
एक एक दंपतिय । बरह बंधे विधि साजन ॥
दुज मानं वेद मंगल चिथह । मुत्ति अछित वंदहि सुबर ॥
नृप मौर सुष्प मुत्तिय लगहि । सो ओपम कविराज धर ॥ छं० ॥ १३४ ॥
अरिल्ल ॥ लगत मुत्ति नृपति सुपतिं सुप वरं । मांनों भानं* उनग्रेह सुतारक ऊवरं ॥
मिलि सो फिरि चलहि ससिंगन भांन कों । मांनहु लपद्दै जांनि आनै आंनकों ॥
छं० ॥ १३५ ॥

दूहा ॥ कलह कूर बढ्ढिय निजरि । भयौ समुद्द अरि सैंन॥
बा वारौ मंगै न्रपति । हथ्थ जोरि मति दैन ॥ छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ कितक बत्त मेवात । राज मेवात पत्त कह ॥
ता उप्पर चहुआंन । नेग बंधै सु राज हह ॥
मुक्कि बलिय कूरंभ । मुक्कि सारंग चालुक्कह ॥
हूक्क हूक्क सामंत । रांचि मारन न हथ्थ कहि ॥
नृप होइ जुद्ध सुरतांन सों । कैपंग राग संभ्भौ लरै ॥
गामी गवार मैवात पति । राज राज सम्हौ भिरै ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ नृप कुहन बर हुकम मुष । दिठ्ठाही धावंत ॥
बर मुग्गल सामंत रन । दल दारुन गाहंत ॥ छं० ॥ २२ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला॥ बोल बुल्ले घनं । स्वामि सद्दे रनं । लग्गियं सग्गरं । धार धारं धरं ॥
रोस लग्गै जदं । सिंघ मद्दे मदं । बीर बीरं बरं । ओघ नचै घरं ॥छं०॥२३॥
सार सज्जे हसे । बज्र बज्जे जिसे । सार अग्गें भिलें । रुक रूंडं पिलें ॥
रंग रत्ते रनं । कंक प्रत्ते मनं । नाग बज्जौ जुरं । मेघ गज्जै घुरं ॥ छं० ॥२४॥
टूक तुट्टे पगं । विज्जु वालं लगं । तीर कुट्टे हसे । रत्ति तारा जिसे ॥
सार उड्डे रनं । भद्द ज्यों जिंगनं । प्रार मत्तो भरं । कव्वि जोई सरं ॥ छं०॥२५॥
पिथ पंथं बरं । लोह लग्गे लरं । कन्ह एकं अपं । अग्गि पीए षपं ॥
काल जित्ते ननं । मेंटि आवा गमं । काल जित्ते निते । अभ्भ योंचो मिते॥छं०॥२६॥
सूर सूरं ६रं । ठांम लद्धी नरं । मित्त हत्ती रनं । रिंन कुट्टे ननं ॥
हथ्थ कित्ती कियं । बंध कुट्टे जियं । क्रंमनासा नदी । अंम कीने सदी ॥ छं० ॥२७॥
धार धारं धरं । बीर भज्जै भरं । कालकूटं करं । जम्म जुद्धं बरं ॥
बीर मत्ते परं । रुक रुक्के धरं । लोह लग्गे नरं । तार बज्जे हरं ॥
कंक जित्ती जिनं । क्रंम भज्जे तिनं । लाज सिंधू गिरे । बीर बीरं तिरे ॥छं०॥२८॥
जोति सद्धी गनं । सिद्द पुज्जै बनं । मुष्प मुच्चै ननं । धार मुच्ची घनं ॥छं० ॥३०॥

कवित्त ॥ सोलंकी सारंग । जंग जंमिन मुष लग्गिय ॥
हय गय भर उद्धार । आनि मुग्गल मुष पग्गिय ॥

दूहा ॥ बंदि लियौ बरनी सुबर। चिया हेत लजि गांन ॥
मांनों वैसंध सुंदरी। चलत समप्पत दांन ॥ छं० ॥ १३६ ॥

शुकी के पूछने पर शुक का इच्छिनी के नषशिष का वर्णन करना।

बहुरि सुकी सुक सों कहै। अंग अंग दुति देह ॥
इंछनि अंक बर्षानि कैं। मोहि सुनावहु एह ॥ छं० ॥ १३७ ॥

छंद हनूफाल ॥ घन धवल गावहि बाल। मनमथ्थ तिथ्थ विसाल ॥
बहु फुल्लि केवर फूलि। बग वैठि पावस भूलि ॥
घन धवल दै मनमथ्थ। आनंद अंगनि सथ्थ ॥
जनु रंक पाये दव्व। नल नलन नीर चहव्व ॥ छं० ॥ १३८ ॥
धर धार गंग किं उठि। फिर नभ्भ परसि अपुठि ॥
बट बिटप बेलिय झुल्लि। ग्रिह बाग तरु कुच झुल्लि ॥
नृप परनि पुचि पवार। जनु जुबन सैसुब रारि ॥
इह रूप राजित देव। इन्द्र इन्द्रनी अहमेव ॥ छं० ॥ १३९ ॥
सोइ सलष राज कुंआरि। नृप लसी ब्रह्म सवांरि ॥
लहि लच्छि पूर सहज्ज। व्रत नाथ व्रत करि कज्ज ॥
कविराज ओप प्रकास। आवै न कोटि विचास ॥
सिष नष्य व्रंन सुरत्त। किम करय मंद सुमत्त ॥ छं* ॥ १४० ॥
जगि रंग जोबन जोर। ससि बिलसि वयक्रम थोर ॥
बर उदै गुन बर गौर। वै स्यांम राजत और ॥
बनि केस देस सुवेस। कवि कहत उप्पम तेस ॥
चढि मेर नागिन नंद। ससि गहत संमुष फंद ॥ छं० ॥ १४१ ॥
उपम्म कवि कहि वाम। जुब्बन तरंग अगि कांम ॥
पाटीय चकचुंधि होइ। सिसि परह उठि घट दोइ ॥
लिलाट आउ प्रकार। मनमथ्थ अंगन थार ॥
तिन मद्धि मुत्ति तिलक्क। कवि कहत ओपम थक्क ॥ छं० ॥ १४२॥
हरि कठिन गंगय मांन। ससि भेद ग्रस चलि जांन ॥
कविराज ओपम दीय। दक्कि पुचि ससि मिलि हीय ॥

भर हनि जुट्टिय मुष्ष । तेग लंबी उभ्भारिय ॥
घम घरियारे घत्ति । लत लोहा करि भारिय ॥
सम रंग सार टिभ्भिझ्य पष्षर । गहन इक्क मचौ सघन ॥
मुगल नरिंद चहुआंन भर । अंग अंग सध्यौ नयन ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ कायर मुष अैसे भए । ज्यौं चित पुत्तल पौन ॥
सूरन मुष अैसे भए । ज्यौं नष सुंदरि जांन ॥ छं० ॥ ३२ ॥
असिन असित दोइ बीर है । ता पट कैंवर अंन ॥
ज्यों जानै तन संग्रह्यौ । बर भारथ्थें कंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

मुगलराज को चारो ओर से घेर कर बांध लेना ।

छंद पद्धरी ॥ उतरिय घाट पलेट सुबीर । पत्तेति सूर सामंत तीर ॥
घेर्यौ सुराइ मुग्गलय राज । गिरवर कि सिंघ ग्रज्यौ अगाज ॥
जानैं कि विंट तारक मयंक । संकन निसंक गहि षग्ग बंक ॥
रुक्कंत सूर सामंत सत्त । बल घट्यौ राज मेवात पत्त ॥ छं० ॥ ३४ ॥
उप्परिन हथ्थ हथियार छुत्त । बिन नेह पिया मनुहार पत्त ॥
अंगन अनंग तन में छिपाइ । रहै म्लून मनह तन ज्यौं लुपाइ ॥
बंध्यौ सुराज मुग्गन नरिंद । छंडाय सत्त भारथ्थ इंद ॥ छं० ॥ ३५ ॥

मुगल को कैद करके इंछिनी को साथ लिये पृथ्वीराज आनंद से घर आए ।

कवित्त ॥ बंधि राज मुग्गल नरिंद । जिति अप्पथान संपत्तिय ॥
देस देस अनगेस । कित्ति मुष्ष मुष्षन कहिय ॥
रिन अड्डौ अरि अंग । षग्ग कोइ षंतिय पावै ॥
जस बंध्यौ सिर मौर । व्याह दल दुज्जन आवै ॥
आषेट करिव अरि निग्रह्यौ । इंछिनि रत्तौ हंस सर ॥
कलि केलि रमै कामिनि कमल । मनों मनमत्तौ भिंग भर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथीराज रासके मुगलकथा वर्णनं नाम पंचदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १५ ॥

तिन मध्य म्रग मद व्यंद । कवि जंपि उप्पम छंद ॥
ससि उडत मद्धि कलंक । वर चत्त अंकच अंक ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लच्छिन्न चरि तन ताच । ससि थांन वैठौ राच ॥
अति चलत चपलच भौंच । कवि कचत उप्पम सौंच ॥
ससि धरत ज्रूप सु ऐंन । निचि चलित चक्रित नैंन ॥
मन धरत उप्पम ध्यांन । अभि संधि अलि सुत जांन ॥ छं० ॥ १४४॥
वर वाल नैंन झकोर । ग्रच जियन वानच जोर ॥
जिम भए भौरच चोर । भै भरै धाम झकोर ॥
इक कची ओपम चाइ । पंजन कि उडि फल पाइ ॥
जनु वाग कुट्टिय ऐंन । तिम चोत चक्रित नैंन ॥ छं० ॥ १४५ ॥
सित असित नैंन उचार । मनों राच तारक चार ॥
तिन मद्धि सोभै रत्त । विधि धरिय मंगल गत्त ॥
रसवास नासिक नीय । तिल पुच्प चंपक दीय ॥
मनों लज्जि मंजरि मध्य । कल प्रगटि दीपक सध्य ॥ छं० ॥ १४६ ॥
नव रुलत मुत्तिय नास । तसु किंच ओपम भास ॥
रस ग्रचन अंम्रत चाइ । तप करै ऊरध पाइ ॥
मुष कीर सोभित जोस । जनु चुनत कनक्रत ओस ॥
जगिनीय पुर मन रज्जि । कवि कची उप्पम सज्जि ॥ छं० ॥ १४७॥
अध अधर रत्त सुरंग । ससि पीय रंग तरंग ॥
उत्तंग रंग सुभाल । जनु फुलि कमुद्दिनि ताल ॥
कै पक्क विंव संभाल । सुक डसिय ग्रसिय न आल ॥
तिन मध्य दंतन कंत जनु वज्र राजत पंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥
फुनि कची ओपम राज । सुत स्वाति सीपय राज ॥
सति इक्क ओपन अक्क । वत्तीस लक्ष्छन लक्क ॥
इक अलक सुम्भत मुष्प । कवि कचत ओपम सुष्प ॥
ससि मुक्कि मधुरय अंक । वर भजत विभय कलंक ॥ छं० ॥ १४९॥
जनु जनम धारा रेप । कै मिल नगी चलि सेप ॥
कल ग्रीव रेप चिवल्लि । कवि राज ओपम भल्लि ॥

अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नांम प्रस्ताव लिष्यते।

(सोलहवां समय।)

राजा सलष की वेटी के व्याह के वर्ष दिन वड़े सुख के साथ वीते।

दूहा ॥ वरस व्याह वीते सकल । सुंदरि सलष कुंआरि ॥
विधि विधि भोग संजोग रजि । नवल मुगध सुविचार ॥ छं० ॥ १ ॥

गाथा ॥ रन जय पत नरिंदं । पुत्तय सुतं च निरमना कित्तो ॥
नव नव मुगध सुरत्तं । चैाजुत्तं रज्ज सुप्पाइ ॥ छं० ॥ २ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उस पर प्रेम होना।

दूहा ॥ चंद पुँडीर नरेस घर । सुंदरि अति सुकुमार ॥
प्रेम प्रगट राजन भयैा । गुन पुच्छत विस्तार ॥ छं० ॥ ३ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन।

छंद चनूफाल ॥ गुन वाल वेस कमांन । सैसव सुपंचन वांन ॥
कुटि नष्य क्रमन[1]आंन । सेसब्ब वै संधि जांनि ॥
लज रत्त जाहि नरंत । सैसव सुतुच्छ वलमंत ॥
नव न्रिमल उप्पम नास । अरधंत मो मनि भास ॥ छं० ॥ ४ ॥
नव नास उप्पम पुहि । मनु काम मंजरि फुहि ॥
सोरंग ओपम पाइ । भ्रम वांन वाल वनाइ ॥
वर जंघ ओपम अभ्भ । मनु वाल कदली अभ्भ ॥
सोइ वदलि कदली चंद । कवि करत रत्त सुदंद ॥ छं० ॥ ५ ॥
जलरूप विंट विराज । उर मदन सदन सुपाज ॥
सैसव सुवै कहि छंडि । जोबन्न गुन कनि मंडि ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) क्र०—क्रनन

ससि मिलत पुब्बय बैर। गुरदेव सेव सुसेर॥
गर पोति जोति विचारि। ससि चरन फंदय डारि॥ छं०॥ १५०॥
ससि समर दंद प्रमान। जिति राहु बैठो थांन॥
कै संष श्रीवर जांनि। कर अंगुलिं इक थांन॥
कालंक दिठवन जोर। कवि इक्क उप्पम दौरि॥
जनु कमल कोर प्रकार। सिसु अंग बैठे वार॥ छं०॥ १५१॥
रस सरस कुच कवि चंद। उर उकिर आनँद कंद॥
ससि बदन मदन सु जोर। चित रचै चाहि चकोर॥
कलि काकि कंज अनूप। उर उदित रवनिय[1] रूप॥
कथि कलभ कुंभ प्रमांन। छवि स्यांम रंग सुदांन॥ छं०॥ १५२॥
गुन गँठिय मुत्तिय माल। कुच परस कंत विसाल॥
बिय सिंभ सीस कि चंग। चढ़ि चलिय गंग सुरंग॥
नव रोम राजिय राजि। कची कषी ओपम साजि॥
मनों नाभि कूप प्रमांन। भरि भूरि[2] अम्रत थांन॥ छं०॥ १५३॥
अंम्रत्त आवहि जाहि। पप्पील रंगहि चाहि॥
उर उदित सुभगय बाल। अनंग रस सति बाल॥
जनु लक्कि क्रीडिं ताल। हिम फाव लग्गि रसाल॥
सुभ निरषि त्रिवली तेह। कवि चंद ओपम एह॥ छं०॥ १५४॥
वयसिसु मिलनह बाल। सिढ़ि मंडि कांम विसाल॥
रिपु उभै सुम्मिय आंनि। छवि लंघि लंक प्रमांन॥
नित्तंब उत्तंग रज्जि। मनमथ्थ चक्क विसज्जि॥
पैरंग पिंडिय ढार। सित सीत उष्न तुसार॥ छं०॥ १५५॥
नव रंभ गति विपरीत। छवि षंभ देवल जीत॥
गज सुंड सुलप सरूप। मनों कुंद कुंदन भूप॥
किधों करभ कोर प्रकार। तिन मद्धि उतरत ढार॥
मनों मींन चिचत देह। छवि छरत पिंडुर एह॥ छं०॥ १५६॥

(१) को·—रवनिय।
(२) को·—भूमि।

पुंडीर का कन्या देना स्वीकार करना।

दूहा ॥ सुनि श्रोनान नरिंद् श्रुत्र। कह्यिय बत्त पुंडीर।
रूप अनूपम राज वरि। दिय राजन चित धीर ॥ छं० ॥ ७ ॥

शुभ लग्न विचार कर चंद पुंडीर का कन्या विवाह देना।

लगन सुदिन थ्थलेव करि। चंद सत्त गजराज ॥
एक अग्ग रुत्तरि सुथ्थय। नग मोती बहु साज ॥ छं० ॥ ८ ॥
परनि राज पुंडीरनी। सुम चंदानि कुंआरि ॥
दइ विधिना करि न्त्रिमई। ब्रह्मा विरंचि सँवारि ॥ छं० ॥ ९ ॥

पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनन्द विलास का वर्णन।

नव जोबन जोरी नवल। छंदानित्त नवल्ल ॥
बात बिनोद बसंतरै। सुनी दाहिमी गल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ नवल पुहप फल नवल। नवल नारी नव जोवन ॥
द्रव्य देषि होइ निजरि। कवन असा सिध साधन ॥
चित्त चन्नी साधक्क। विषम जोवन वै मांही ॥
कामी कलह विछन्न। वहुत पचि हारो कांही ॥
पुंडीर कुंअरि सों रस रमत। दाहिम्मी चित्तह लगी ॥
सुभ लगन जोग दाहिंम्म वर। दीहिम्मी राजन मगी ॥ छं० ॥ ११ ॥

विवाह का वर्णन।

द्रुअन ढार उद्दार। भार फन पति भर भग्गे ॥
गढ बयांन सुभ थांन। सोभ कैलासह लग्गे ॥
होइ सहस दाहर दिवांन। पुत्र तीनह परिमानं ॥
दोइ पुत्री सुविसाल। रूप रति अंग सुजानं ॥
दाहिम सुराज कायम्म कछि। षल केवा सेवा करन ॥
प्रचंड वाह मच्छि उप्पियच्छि। लष्ष एक लष्षन भिरन ॥ छं० ॥ १२ ॥
काल खान कैमास। षलक चामंड षग षड्डिय ॥
सूर नूर सम सथ्थ। सक्क पूजा सुर सिड्डिय।

घन घुंमि घुघघर हेम। कवि कहो ओपम एक ॥
मनो कमल सौरंभ काज। प्रति प्रीत भमर विराज ॥
कह कहों अंग सुरंग। रति भूलि देषि अनंग ॥
लषि लच्छि पूर रुहज्ज। चित हत्त मांनो रज्ज ॥ छं० ॥ १५७ ॥
सो सलष राज कुंआर। न्टप लघी ब्रह्म सवार ॥
इन लच्छि इच्छनिय रूप। कुल वधू लच्छिन भूप ॥
रति रूप रमनिय रज्जि। छवि सरल दुति तन सज्जि ॥
रसि रसित रंगह राज। तिह रमन हुअ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवित्त ॥ *नयन सुकज्जल रेप। तप्पि तिप्पन छबि कारिय ॥*
श्रवनन सहज कटाछ। चित्त कर्पन नर नारिय ॥
भुज म्टनाल वर कमल। उरज अंवुज कलिय कल ॥
जंघ रंभ कटि सिंघ। गमन दुति हंस करी छल ॥
देव अरु जप्पि नागिनि नरिय। गरहि गर्व दिप्पत नयन ॥
इंछिनी रूपि लज्जा सहज। कितक सक्ति कव्विय वयन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
दर्पन दल नप जोति। सुरग महदी रुचि रूरिय।
एडी इंगुर रंग। उपम ओपियै सु संचिय ॥
सो तिन सकल सुहाग। भाग जावक तल वंधिय ॥
विकसित अँग अँग अंग। चारु मुसकनि वै संधिय ॥
दिपंत नैंन दंपति कजहि। रूप सोभ वर्पंत अकल ॥
रति कांम कांम गहि गछनिय। और उप्पम लुट्टिय सकल ॥ छं० ॥ १६० ॥
जेहरि-नूपुर नद्द। सद्द घूघर कोतूहल ॥
विछिय निसद्द निशाल। सद्द झिंगुर कल कूहल ॥
अगुठनि जटित अनोट। पोंट कुंदन नग मंडित ॥
निरषत द्रप्पन नैनं। वदन वीरी रद पंडित ॥
हाव अरु भाव संभ्रम विभ्रम। वड पुन्य करि प्रभु पिथ्थ लहि ॥
इंछनिय इक अक्कर अवनि। सुनिय सोभ ससि कव्वि कहि ॥ छं० ॥ १६१ ॥
जरकस घुघर घमंड। जांनु रवि किन्न कदली ग्रह ॥
कसुँभ लरे नोमार। रंग छवि छंडि हंड हर ॥

मेवाती मुग्गल सुतथ्थ। पुचि दक्कह परनाइय ॥
त्रिय पुत्री सिर ताज। सुनौ प्रथिराजह व्याहिय ॥
दोजांन मान चहुआंन दल। प्रथम कनक संभर धनिय ॥
उच्छाह वहुत मंगल करहि। गीत गांन अलि सुर बनिय ॥ छं० ॥ १३ ॥

विवाह का फेरा फिरना।

॥ करि तोरंन प्रकार। सार भारह पन संकिय ॥
चौविंदी चौसाल। पिट्ठ पच्छिम दिसि पंकिय ॥
कमला सन मुप कमल। वेद धुनि द्विज किय सज्जिय ॥
चैत सुकल पप तीज। लगन गोधूलक रज्जिय ॥
लता सुजोग जमघंट तजि। लगन सुद्ध मम सुद्द यति ॥
मंगलाचार फेरा सुफिरि। अचल राज अजमेर पति ॥ छं०.१४॥

दहेज में आठ सखी, तिरसठ दासी, वहुत से घोड़े हाथी देना।

सपी अट्ठ सिर ताज। अंग स्रृंगारि सुरँग वर।
सट्ठि तीन दासी सुचंग। वरप सत अट्ठ सरभ्भर ॥
एक सत्त सुभ तुरँग। दोइ पपें औराकिय ॥
दोवथ्थी दस ढाल। रचे छचरिति मद छाकिय ॥
सुप पात्र रजत सोभा सुधनि। सत पुत्तलि सेवा करै ॥
डाइ चोदिश्च दाहिम दुघन। भुज भुजंग कीरति करै ॥ छं० ॥ १५ ॥
सात गज्ज सु विसाल। सित्त साहन सुभ्र चंगल ॥
जर जरकस सिर पाव। सद्धि माला नग त्रिमल ॥
सहस एक सो ग्रंन। हुन्न दीनो चौहानं ॥
जिन मंग्यौ तिन दियौ। करी कीरति सुप्रमानं ॥
उच्छाह कियौ दाहिम प्रथ। गढ उप्पर थंभह कह्यौ ॥
प्रति पुच्छि चंद दाहिंम वर। परचि वित्त जल घर भह्यौ छं० ॥ १६ ॥
दूहा ॥ अति आतुर राजन मिलन। दाहिंमी मुप दिट्ठ ॥
ज्यों वद्दल में कुमुदिनी। चंद चमयौ निट्ठ ॥ छं० ॥ १७ ॥

पीत कंच की संचि। षंडि कस अंग उपट्टिय ॥
कंकस कर वर वरत। गंध हरदीय उपट्टिय ॥
आलोल नैंन गति बचन बहु। सषिन सोभ मंडिय तनह ॥
फुलिय सांभ कवि चंद कहि। मनहु बीज थर की घनह ॥छं०॥ १९२ ॥

शोभा कहते कहते रात बीत गई।

दूहा ॥ सुनत कथा अक्षि वत्तरी। गइ रत्तरी विहाइ ॥
दुज्ज कही दुजि संभरिय। जिहि सुष श्रवन सुहाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
आरिजु आरि जस लषहीं। सो इंछिनि इक्का पूर ॥
भुव मंडल मंडित दिनह। सिर दधि अक्कित जूर ॥ छं० ॥ १९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इंछिनि व्याह बर्णनं नाम चतुर्दश प्रस्ताव संपूरणम् ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज और पुंडीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ बर समुद्र चहुआंन। रतन सों रतन उपज्जै ॥
दाहिम्मी उर अभ्भ। किति आभूषन रज्जै ॥
इह सुबंध बंधनह। जुगति बंधन बर राजिय ॥
इह अमोल मोलंन। बहमोल ग्रह फिरि साजिय ॥
इह परषयौ कविन किती चसम। वह चसम परष्यन परषयौ ॥
इह सोभ राज राजंन महि। वह घर कंचन थरकयौ ॥ छं० ॥ १८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पुंडीरनी दाहिमी विवाह वर्णनं नाम षष्ठदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १६ ॥

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांकव्यय
लक मुहम्मद की अखरावट	।≈)	)॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	≈)	)॥
गद्यकाव्यमीमांसा-(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	≈)	)॥
समालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	≡)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र-(पण्डित नारायणपांडे रचित)	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)॥
हरिश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	≈)	)॥
भगवद्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	।-)	)॥
ओथेलो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ९ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
मदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	≈)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।≈)	)॥
प्राचीन-लेखमणिमाला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दरदास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित) ...	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग	४)	।)
कुमारसम्भवसार-(पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के पुस्तकालय की सूची	≈)	)॥

कुंडलिया ॥ मंनै संभरि वार सुनि । इह अपुव्व गति इच्छ ॥
मभ्भ क्रदन घरि इक्क मैं । आवै भूमि रु लच्छि ॥
आवै भूमि रु लच्छि । पंपि माता इह सारी ॥
दल जित्ते पुरसांन । कित्ति जग ज्यों विसतारी ॥
इन सगुननि चहुआंन । तुच्छ दुंप अतिहि अभन्नौ ॥
विन जुद्धइ इह लग्न । द्रव्य निकसै आभन्नौ ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ कुटिल दिष्ट तिन चिन्त करि । कही मद्दर इक बात ॥
सो ब्रह्मा नन जांनई । बात भविष्यत घात ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है ।

कवित्त ॥ संभलि पिथ्थ कुमार । व्योम दिष्षौ सप सारिय ॥
अद्धौ वंबी मध्य । अद्ध उँचौ अधिकारिय ॥
ता फनि ऊपर मनि प्रमांन । देवि चावद्दिसि नंचै ॥
ढिष्यो इक मन मंडि । राज दिसि सगुनह संचै ॥
आवै न पच्छ तथ्थह निजरि । न्रपति हियं अचंत सुष ॥
जंपयौ मद्दर धावर धनू । सगुन वीर जांनै सरुप ॥ छं० ॥ ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ।

दूहा ॥ इतें देवि उडि वैठि अँब । चंच गिराइय साग ॥
दौरि मद्दिर तव चष्य लिय । चौहुनरिंद तुअ भाग ॥ छं० ॥ ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़जाना ।

सर्प आंनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनौ तिन पाइ ॥
निय आसन थल छंडि कै । अन्न स्थल उड़ि जाई ॥ छं० ॥ ४१ ॥
इह अचिज्ज पिष्षिय सकल । चाचिग पुछि फिरि वत्त ॥
तुम जांनो सव फल सगुन । मद्दर कद्दर मन तत्त ॥ छं० ॥ ४२ ॥

मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित) ...	॥)	-)
चन्द्रशेष का हम्मीर हठ	॥)	)॥
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (भौगोलिक परिभाषा)	≡)॥	)॥
,, ,, (ज्यौतिषिक परिभाषा)	।)	)॥
,, ,, (अर्थशास्त्र की ,,)	।≡)	)॥
,, ,, (रासायनिक ,,)	॥)	)॥
,, ,, (गणितशास्त्र की ,,)	।-)	)॥
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरुगीता	।)	)॥

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ९ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं ।

इस शुभ शकुन का फल वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ तत वत्त मद्धर तिन कही वत्त। या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ। ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तुम जैत होइ भग्गो पलांन। धन जुद्ध लाभ लभ्भै वलांन ॥
इह लग्न महूरत इसो देव। पल भूमि अप्पि तो करै सेव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
संसार कित्ति चहु चक्क होइ। वंदै सुवाह वल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्व। प्रमुदित्त मन चहुआंन तब्व ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जिम मेह मोर आनंद होइ। राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल। जिम सिद्ध सेव हिय हरत सूल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जिम मंत्र सक्ति साधक लहंत। रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराध वंत। प्रमदा मुहित जिम आइ कंति ॥ छं० ॥ ४७ ॥
तिम भयौ सुष्य प्रथिराज अंग। वजि पंच सब्द वाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना।

दूहा ॥ पंच सबद बाजिच वजि। तजि म्रगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय। किन्नौ कुअर मिलांन ॥ छं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वी-राज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी।

छंद नाराचा ॥ कह्यौ मिलांन राजयं। वरंनि कव्वि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी। जरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुवंन वंस राज्जतं। उभे सुमभ्भ मभ्भतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं। अजव्व जेव जग्गतं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
गिरिह डोरि रेसमं। सुपंच रंगयं भ्रमं।
तने तानव तंबुअं। करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
विछाइ कैदुली चयं। धरे प्रजंक वीचयं ॥
सवारि सेज पथ्थरं। सुगंध फूल विथ्थरं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
गरम्म रूम तोसयं। ढके पलंग पोसयं ॥
कनंक मे सिंघासनं। अछादितं सुवासनं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

Nagari-Pracharini Granthmala Series N. 4-6.

THE PRITHVIRÁJ RAŚO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha-Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XVII. TO XXIV.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व-१७ से २४ तक।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य १)]   Issued 16th March 1906.   [Price Re. 1.

धरे सुपिठु तक्किए। अतछ संन ढक्किए॥
अगें अवन्नि अंगनं। सिका करै छिरक्कनं॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंमकुमा गुलाबयं। सुनेक छंटि आवयं॥
तहां सु वैठि पिथ्थयं। करै अपेट कथ्थयं॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं। पढै विरद्द छंदयं॥
सामंत सब्ब नम्मियं। मिलांन अप्प क्रम्मियं॥ छं० ॥ ५७ ॥
से हथ्थ चाहुआनयं। दए कपूर पानयं॥
पवास पास वानयं। हज़ूर उभ्भ आनयं॥ छं० ॥ ५८ ॥
विरष्प वट्ट जंवुअं। पिरन्न जट्ट अंवुअं॥
गयंद वंधि अंदुअं। झरंत मद्द विंदुअं॥ छं० ॥ ५९ ॥
करंत केलि सारसी। मलप्प ते महारसी॥
विरद्द नेंक बोलते। पलक्क चष्प पोलतें॥ छं० ॥ ६० ॥
महावतं पुकारतें। हठं न वै अधारतें॥
पियंत नीर यों गरें। गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें॥ छं० ॥ ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते। चवेल सुंड झल्लते॥
गिलोल चोट लग्गतें। विरष्प ओट भग्गतें॥ छं० ॥ ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं। पहार पंति कज्जलं॥
दुरद्द हट्ट वेसके। दियें गनेस भेस के॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं। चरष्पि गड्ड पुभ्भयं॥
करे तुरंग काइजं। भरें अमंन बाइजं॥ छं० ॥ ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं। पलान दूरि कीनयं॥
न्हवाइ नष्प सिष्पयं। अछादि कंध रष्पयं॥ छं० ॥ ६५ ॥
रतब्ब दै ब्रहासयं। करे चपत्त घासयं॥
ता पच्छ जाइ साहनी। अरांम पंड वाभनीं॥ छं० ॥ ६६ ॥
कहूं करं भलारयं। भरी रपत्त भारयं॥
अनूचरं उतारयं। संभारि ढार ढारयं॥ छं० ॥ ६७ ॥
छुलास सेन उप्पजै। भोज्जंन भष्प निप्पजैं॥ छं० ॥ ६८ ॥

सूचीपत्र ।

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना।

दूहा ॥ करि मिलांन मध्यांन हुअ। न्रिपति भोज छह भंति ॥
एकत मिलि आहार हुअ। रही न मन कछु पंति ॥ छं० ॥ ६८ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे।

मादक में नउ दीप किय। वह्नि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे अहन। जित तित भूपन भार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना।

चढि करि संभरि वार चलि। ग्रेह सपन्नौ जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा। भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत वसन आरुहिय। रत्त तिलकावलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल। अलक गुँथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध। पास नग सेत रत्त बिच ॥
मनों कनक साषा प्रचंड। गहे काली उप्पंम रुच ॥
मनो सोम सहायक राह होइ। कोटि भांन सोभा गही ॥
अदभून द्रव्य ससि अहि गस्यौ। साष सुरंग भनावही ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यों आई हो।

दूहा० ॥ सुरंग चिया सोसो नृपति। वचन सुपन कहि लाल ॥
का तूं सुंदरि किन बरन। क्यों अभी इहि काल ॥ छं० ॥ ७३ ॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस अवती हूं।

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती। बीर भोगी वर चाहों ॥
हाई भाइ कटाच्छ। बीर बीरां तन साहों ॥

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ॥

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुँअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त ॥ कुंअरप्पन प्रथिराज । राजं आपेटक पिल्लहि ॥
जोव्वने मभ्फ रवन । म्लेच्छ पच्छिम दिसि मिल्लहि ॥
भग्गि वीर वाराह । चक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
मुक्कि थान पंचांन । मिले सूर संब्रह धसि ॥
लोहांन वीर आजान भुग्र । लोहा लंगर धाइया ॥
हुह थांन चुक्कि अपथांन मुकि । पंचां नन रस छाइया ॥ छं० ॥ १ ॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

दूहा ॥ एंय सबद गुंजत सुगज । हे हींसत सद् स्वानं ॥
गिर गुंजत परसद्द बहु । सद्द न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त ॥ सद्दपति संभरिय । कांन मंडे रष संभलि ॥
ज्यों पल्ल सयन ग्रसंत । विप्र षेजै निगंम मिल्लि ॥
गुन अवगुन कुल वधू । सती पति हता मानि मन ॥
नाग अंग चंपयौ । किसार अग्गै फुल्यौ मन ॥
पिष्षयौ षम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुल्लिय ॥
द्रिग पेल्लि द्रिष्ट म्रगया सकल । तेज अंग कायर चल्लिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ कांनन सद्दन संभरत । कूह कलह आपेट ।
थह सूतो वर जग्गयौ । सिसु दंपति घटि पेट ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट राज अंमरिय । सरित संभरिय सँपत्ते ।

वीरां थी पद्धरी। विना वीरां वर वंकिय॥
हुं दिव्य नारी एह। सुरां असुरांनह संकिय॥
मिष्टांन पांन बहु भोग रस। रस सुगंध बीरन द्रश्रें॥
अनभंग वीर जोचित्त वरि। रस अनेक निहचै अश्रें॥ छं०॥ ७४॥

गाथा॥ पंक जनय नीवामं। सुपनंतर राज दिट्ठायं॥
जानिज्जै रति अंगं। कामं उक्काह दीपयं मालं॥ छं०॥ ७५॥

राजा का विचार में मग्न होना।

कवित्त॥ मन लगौ विसमित विचार। राज चिंता उप्पंनिय॥
भोमि वयन मन मझ्झ। सु कर वर गहि कर लिन्निय॥
सुभ लच्छिन उत्तंग। अंग अंग गुन पिन्निय॥
ता समांन छवि वांम। आंन करतार न किन्निय॥
मानीक वंस दानव कुलह। भोमि चरन्न निवास करि॥
जै जया सबद सुरपुर भयौ। करै केलि कलि इंद्र सर॥ छं०॥ ७६॥

पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि पट्टू वन में अगनित धन है।

दूहा०॥ कहै भूमि प्रथिराज सों। स्तुति दै करि मन सुद्धि॥
वसै द्रव्य अगनित सगुन। पट्टू पुर वन मद्धि॥ छं०॥ ७७॥

अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा है॥

कवित्त॥ अजैपाल चक्कवै। द्रुग्ग अजमेर द्वापरह॥
तिहि वानिक पुर सिद्ध। लिपिय संजीत अपारह॥
हेम कोटि दस हून। इन देवर धर मंझह॥
घरी आइ इक पहर। देव देवी तत सुझ्झह॥
असांन काल पूजादि वह। तहं पत्तौ दुज राज बर॥
अप्पी असीस मंगी लछिय। कांम कह्यौ दुजराज नर॥ छं०॥ ७८॥
इक्क सहस अपि द्रव्य। फेरि विप्रह अप्रमानं॥
सुनी सलक्कि वर विप्प। दई सुमहा वर थांनं॥
फिरि पत्तौ तहां राज। दियौ तब आप दुज्जवर॥

के हंके हक्काह। केक चावद्दिसि धत्ते ॥
के पाइल्ल बर वान। मूल धारी उठि नट्ठे ॥
के असवार करार। हीन काइर ह्वै नट्ठे ॥
के गए मुक्कि पाइल्ल म्रगय। पीर छूंटि नक्कर परत ॥
दिष्षयौ संग लंगावल्ली। बियौ न कोइ धीरज धरत ॥ छं ॥ ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना।

सुनिव सूर बर हक्क। धक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
नरन सद्द कानन प्रसद्द। सिंघ किन्नो सु क्रोध असि ॥
बीरा रसु बिद्दुरिय। पुंछि सिर झारि झपट्टिय ॥
दीप नयन प्रज्जरिय। संग दिसि लगें लपट्टिय ॥
बल अतुल तोल तोलंत पय। वुल्यौ मन सद्दह गुहिर ॥
फटिय धरकि मानहु गगन। सिस सनेह संगन वहन ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ आषेटक दरसे सकल। सिसु सिंघनी बिच सिंघ ॥
स्वान देषि मुहु रव करत। ओलंषे नरसिंघ ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना।

कवित्त ॥ सबै सेन अवसांन। मुक्कि लग्यौ बर तामस ॥
तब पंचानन हक्कि। धक्कि चहुआनां पामिस ॥
लै कमांन बिय बांन। षंचि नंष्यौ बिय चुक्यौ ॥
समर सिंघ सब सथ्थ। नथ्थ चावद्दिसि हंक्यौ ॥
डंमरिय डहकि विज्जुल लहकि। षग कढ्ढौ सोमेसजा ॥
चंप्यौ नरिंद अवसांन तकि। षंडो डारिय हथ्थना ॥ छं० ॥ ८ ॥
चंपि स्वामि विद्दुरिय। लोह संजुरि नग मुक्यौ ॥
लोहा लंगर राइ। बीर अवसान न चुक्यौ ॥
स्वांमि सथ्थ परिवथ्थ। दंड धर वर उथ्थारे ॥
रुहिर अंग झंझरिय। सिंघ पारिय अध्धारे ॥
बन राय बीर बन हित्त रुष। सूर स्वांमि अंमं सुरसि ॥

अप्प भयौ सुद्द राज। रहै धन रष्षि गड्यौ धर ॥
सो मति द्रव्य तिहि थांन रहि। तास मोह राजन करै ॥
षायौ न कोइ षेहै न को। यों अरत्त अर्जुन फिरै ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ को गड्डै षायौनि को। को विलसै करि भेव ॥
माया छाया मध्य दिन। ज्यों विषया बल देव ॥ छं० ॥ ८० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १७ ॥

घर नंग बीर तल बज्जय । सबर जोर जम दठ्ठकसि ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ लंगे. लोह उचाइ करि । अरु चावद्दिसि चाहि ॥

हथ्थ आइ कर तोन द्रढ । बर कमान बर साहि ॥ छं० ॥ १० ॥

कबित्त ॥ द्रढ कमान मुठ्ठिय प्रमान । गह्यौ तकि तोन जोर कर ॥

बरक्कि बरकि बंगाल । चित्तन चंचल सु बोलि गुर ॥

गुंजि गरज भूभांन । जंग देवत्त रत्त जुअ ॥

नचि निवेस तजि बाल । सिंघ सम बीर इक्क हुअ ॥

आखेट तजिय चक्किय सुभर । बिबिध सिंघ दिष्षन दिसा ॥

सम बीर बीर एकत भए । तहां दिष्यौ सोमेस जा ॥ छं० ॥ ११ ॥

षेघं लग्गि कुटि बीर । सुबर दिषि बीर अष्ट क्रम ॥

सोमेसुर सुअ सूर । लयौ पंर तोजिम रबिनम ॥

मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिले पँचानन सूरं ॥

पिता जात बेबंध । द्रव्य अषो अध पूरं ॥

चय भाग तक्किय सिंघह सुचय । मुना मल्ल लंगी चढ्यौ ॥

उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यों । सुबर बीर देषी दढ्यौ ॥ छं ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना ।

छंद पद्धरी ॥ आषेट रमत प्रथिराज रंग । गिरवर उतंग उद्यांन ढंग ॥

उत्तंग तरुन छाया अकास । अनेक पंषि क्रीडहिं हुलास ॥

सुब्बा सरास कुट्टे सुगंध । तहां भ्रमत भोर बहु बास अंध ॥

फल फूल भार नमि लगी साष । नासा सुगंध रस जिह्व चाष ॥ छं० ॥ १३ ॥

पन्नग प्रचंड फूंकर फिरंत । देषंत नरह ते करत अंत ॥

अनेक जीव तहां करत केलि । बट बिटपि छांह अवलंबि बेलि ॥

इक घाट बिकट जंगल दुअर । तहां बीर मल्ल पिथ्थल कुंआर ॥

बामंग अंग चामंड राय । चूकै न मूंठि सो काल घाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

दाहिनि दिसा कन्दा सुजोध । सम ब्रह्म सस्त्र सम नाहि क्रोध ॥

लोहांन ठिठ्ठ बैठो प्रचंड । जंनार जोर जम देन दंड ॥

अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा ॥ दिय पत्री कैमास कर । अनँगपाल कहि दूत ॥
वर वंची सामंत सत । विंमत अप्पर नूत ॥ छं० ॥ १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥
पुत्री पुत्र पवित्र पथ्थ अधनो । पित्री सर्वं तावनं ॥
मा वृद्धा द्रष विद्ध तप्प सरनं । बद्री निवर्तं तनं ॥
आभूमं पुर ग्रांम हय गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ छं० ॥ २ ॥

पत्र पढ़कर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा ॥ वंचि पत्र कैमास कर । न्टप सामंत समंत ॥
आइ दूत दिल्ली पुरह । सुवर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुंआरि का व्याह रावल समरसिंह के साथ करना चाहिए ।

चौपाई ॥ इक कहै दिल्लिय चल्लि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥
इक्क कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चित्रंग सुराइय ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर नरिंद । चित्र चित्रंग देव दुति ॥
तिन सगपन संमुहै । राज जानंत राज गति ॥
कै दिल्ली दिसि चलहि । बाल सेंवर अधिकारिय ॥
सोमेसर पितु सतें । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

ढिग कन्ह बैठि पुंडीर धीर। आजान बाहु बज्री सरीर॥
चामंड अंग कैमास काल। जीवार जोध पसु घरनि घाल॥
तिन अग्ग आइ पज्जन राइ। सब षेल निपुन पसुदाइ घाइ॥ छं०॥ १५॥
दुअ ओर ओर सामंत जूह। षेदानि जोर करि करी कूह॥
कर जोरि मेन सात सहस सथ्थ। उड्डंत पंषि गहि लेंइ हथ्थ॥
जुर बाज कुही तुर मती धारि। उड्डंत जोव ते लेहि पार॥
सच लैंहि स्वांन ते रोभ भुम्मि। पिष्षियै जु करंक बिन मंस भूम्मि॥ छं०॥१६॥
सकल अनेक उठ्ठे बराह। बट बंटि मंसनह तुहि थाह॥
सो मरन सूर परि बथ्थ लेहि। ते बंटि बंटि सब सथ्थ देहिं॥
षरगोस स्वांन नह लहत बांटि। फिरि चढ़े जीव ते ओठ चांटि॥
म्रगमाल पवन उठि चले भागि। तिन परसु तीर सरवसि आगि॥ छं०॥ १७॥
अनजीव जीव वष्षांन कोंन। सिकार लग्गि इन हाल होंन॥
सब सथ्थ तथ्थ हुअ एक जुहि। गज्ज्यौ सु सिंघ जनु गगन फुहि॥
धपि चल्यौ बीर प्रथिराज धीर। लंगरिय लोह तह इक्क तीर॥
दिष्षौ सुजाइ सिंघनिय बाल। अवतार धरिय जनु पुहमि काल॥ छं०॥ १८॥
गरु राइ गुंग गज्यौ गरूर। उचाइ पुक्क मनु पुहमि चूर।
हथवांन हथ्थ हाकंत ष्याल। दहुरनि दौरि मनोद बटि व्याल॥
आराम सीस हढ़े प्रचंड। जम रूप जीव ताडंत तुंड॥
हक्यौ सुराइ संजम कुंआर। कुट्यौ सु तेज जनु तीर तार॥ छं०॥ १९॥
भए लथ्थ बथ्थ नर जीव जोध। न्रप अग्ग केलि जनु मल्ल क्रोध॥
गल वांह घल्लि दव्यौ सुसूर। फाख्यौ सु उदर जम दढ्ढ पूर॥
हथवाह एक केहरिय कीन। पय हथ्थि अंष्षि करि कंन हीन॥
आये सु दौरि सब सथ्थ जांम। लंगा सधन्नि इम कहिय स्वांम॥ छं०॥ २०॥

संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना।

दूहा॥ संजम राइ कुमार बल। करि संजम न्रप ध्रंम॥
इक्क मिक्क एकत भए। अप्प चम्म पसु चम्म॥ छं०॥ २१॥
गजनि कुंभ जिसि हथ्थ हनि। फारि चीर धर डार॥

आवै न मंत विय बंध हत। अनँगपाल संमुह चल्लिय ॥
ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रथ। देवमत्त व्याहं पुल्लिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतो को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए।

सित सामंत रु न्टप्प। वैठि सब सध्थय मंतर ॥
कैमासह चामंड। राय रामह वड गुज्जर ॥
हाहुलि राय हमीर। सलष पांमार जैत सम ॥
कह्यौ राज हम मात। तात अप्पी दिल्ली तम ॥
पुंडीर राइ इम उच्चरै। करौ सकल आदर सुधर ॥
उप्पाइ अनँत महि लिज्जियै। आदि अंम अंमर असुर ॥ छं० ॥ ६ ॥

चंद बरदाई का मत पूछना।

चौपाई ॥ सब भट पूछि पूछि कवि चंदह। तुम बरदाइ लहौ वुधि कंदह ॥
किम अप्पै पितमात धरंनिय। सब विरतंत कहौ मन करनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

चंद ने ध्यान कर के देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा।

तब बरदाइ सुद्ध मन कीनौ। सुमरिय सकति ध्यांन मन लीनैन ॥
देवी आइ कह्यौ वर तंतं। सो अप्पै प्रथिराज सुमंतं ॥ छं० ॥ ८ ॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा।

कवित्त ॥ पुव्व कथा वरतंत। कहो व्यासह ज्यों चंदह ॥
सहौ भविष्यित बात। सुनी सो होइ नरिंदह ॥
तोंअर बद्री जाइ। पथ समप्पै चहुआंनं ॥
तपें तेज रवि जेम। कहों सरसें परवानं ॥
इह मत्त सत्त मन्नौ मनह। अरु पुव्वह मंची सपुन ॥
सामंत सित्त धर अंम रत। सों पुव्वहु सच्चहु अपुन ॥ छं० ॥ ९ ॥

संजम राइ कुमार सौ । वथ्थन मारि पक्कारि ॥ छं० ॥ २२ ॥
रीछ रोझ घाराह घनि । दठ्ठन बळे कोरि ॥
तिते जीव उर मझ्झत । कढि जम दठ्ठे फोरि ॥ छं० ॥ २३ ॥
गिरि परबत नद पोह सर । लंगत लगी न बार ॥
लंगा इक्कन लंघयौ । अनी धार धर धार ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना ।

कवित्त ॥ भौ प्रसन्न प्रथिराज । बोल बुल्ल्यौ सुलंगग्यि ॥
दुत्तौ देऊं प्रचंड । पंच जो मद्दि मोघि जिय ॥
अद्धा राज सु अद्ध । पाट अद्धा तंबूलं ॥
अद्धा बेस सुदेस । करौ आदर संमूलं ॥
बोलंत बैन प्रथिराज सुनि । जीव लज्जि नीची नजरि ॥
लगाइ कंठ ठुकि पिठ्ठ कर । भलौ भलौ सब सथ्थ करि ॥ छं० ॥ २५ ॥
दूहा ॥ जब दैवत्त दिषाइहै । तब सचा मुझ्झ बैन ॥
म्रिग तिस्ना ज्यों देषियै । प्यास न बुझ्झै नैन ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुपनंतर की प्यास ज्यों । भजै मही किहि भंति ॥
जब देषौं तब पूजिहै । जो मन मझ्झह पंति ॥ छं० ॥ २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना ।

इह कहि करि अग्गें चले । मिले सूर सब संग ॥
तब दिष्यौ इक सगुन बन । भए सबन मन पंग ॥ छं० ॥ २८ ॥

शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना ।

वत्त कहत प्रथिराज ने । पिष्यौ सगुन न्रपत्ति ॥
सकल साथ अचरिज भयौ । देषत इहै चरित्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना ।

कवित्त ॥ अहि सुरंग मनि दुत्ति । देवि मंडै तंडव गति ॥
वालमीक बिल अग्र । इक्क फनि कुटिल क्रोध मति ॥
इक्क हथ्थ बिच बिहथ । थांन उंचौ रवि संमौ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ ।

दूहा ॥ दूत हजूर बुलाइ करि । पुच्छत पिथ्थ कुंआर ॥
क्यों मातुल हुअ धर अरत । सो कहो सत्त विचार ॥ छं० ॥ १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ।

गाथा ॥ दिल्ली अनंग नरिंदं । इंदं दहन दुज्जनं दलनायं ॥
चिगुन तेज सुअंगं । पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ छं० ॥ ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन ।

दूहा ॥ बंक न्टपति इक अंक लौ । मिटत करभ्भर पांन ॥
इम इच्छै अवनी अटल । सषु न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ गज गज्जत दरबार । घुरत दमंम वह धुअ ॥
वज्जत हय पुर तार । गाल गुज्जत सु डंट मव ॥
तंत तान झंझार । भमर गुंजार वास रस ॥
मुकट वंध राजान । लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अवनि इंद्र तूअर तपै । कंपै रोर मैाजन मनह ॥
चव वरन सरन सुष्पह रसहि । दुष्पन[1] किहिं दिष्षिय तनह ॥ छं० ॥ १३ ॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन ।

अनंगपाल तोंअर सुढाल । सोज वासंत दिल्लीय वर ॥
धर सुढार कालिंद पार । अठ्ठार व्रंन थर ॥
वर विहार प्रकार । विपन वाटिका विराजिय ॥
ग्रिह उतांन वतांन । गोप जाली उच साजिय ॥
सव लोक असोक अनंद में । अप्प अप्प रह उह्लरिय ॥
जाजंन जाप अद्धा परवि । होम धोम धू विथ्थुरिय ॥ छं० ॥ १४ ॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं ।

अति तोंअर परिवार । वृद्ध वहु रिद्ध अनूपं ॥
ध्रंम क्रंम वहु रीति । चलै सव लोक सु कूपं ॥

(१)-मो०-दुवन ।

बर संमल उर चंपि। तेज जाज्जुलि सुचिन्हौ।
आचिज्ज देषि प्रथिराज रब। चक्कास्यौ पामर सद्दर॥
धावर सु कन्ह चहुआंन कौ। बोलि बीर चच्चिग मद्दर॥ छं०॥ ३०॥
मद्दर कद्दर करिवार। भार जिन जुड्ड कन्ह वर॥
नरनाहां बर गढ। गाह गिर दीह दुअन धर॥
मति जोतिग सहदेव। सगुन आगम गम जांनै॥
प्रवल मैंषासन मारि। उथपि थप्प थिर थांनै।
बिर दैत दमित आजांन भुअ। उर किंवार वर वज्ज जुअ॥
कुट्ट न किमद्द जै क्रोध तजि। दुअ मह्हिष निवारै भुजनि दुअ॥ छं०॥ ३१॥

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना।

छंदपद्धरी॥ आयौ सुमद्दर मद्दरन नरेस। जिहि सुनत चढि भगि जात देस॥
उन्निद अंग उत्तंग कंध। वर बाहु वज्ज अरि धर असंध॥
बेहथ कलाइय हथ्थ जाहि। पग दौरि त्रियन वर रह्यौ गाहि॥
मह्हिषी सु उभय पय टांसि जाइ। कलहंत क्रोध दिष्षय वलाइ॥ छं०॥ ३२॥
रष्षत सु निजरि सव अग्ग पच्छ। चुक्कवै चोट हनि तुच्छ तच्छ॥
छल छेद भेद तस करन राव। पर भूमि अप्प उस धरै दाव॥
दुअ सहस मद्दर जिन संग जोध। कमनैत काल अनमी अबोध॥
बहु व्रषभ गाय मह्हिषीन तुंग। छेली छयल्ल गडरन्न पुंग॥ छं०॥ ३३॥
घुंमत मथांन जिन घरन घोर। आगम अषाढ जनु घटा सोर॥
बेपार दुग्ध जिन घरन षर्च। अनभंग बुद्धि जिन समर चर्च॥
बिरदैत एक वांने न धार। चमरैत एक हूक तवल तार॥
सिर वहै बिदर पग पच्छ देन। द्रिग समर देषि सिर लगत गैन॥ छं०॥ ३४॥
गुज्जर अहीर असि जाति दोइ। तिन लीह लोपि सक्कै न कोइ॥
चाचिग हजूर कुंम्मार आइ। करियै हुकंम सिर ल्यौं चढाइ
बुल्ले सुवैन चहुआंन राउ। कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ॥ छं०॥ ३५॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा।

दूहा॥ मद्दर कद्दर गति वैन कहि। ज्यों बुल्लै दुजबैन॥
घरी एक सम्हौ रहै। तौ लब्भै न्रप चैन॥ छं०॥ ३६॥

वीर सेन सुत वीर। पाल बहु काल धरंनिय ॥
मन लग्गौ वैराग। करन क्रत ऊंच करंनिय ॥
निसि मध्य सुपन पिष्षियै दुरय। सब तूंअर दक्षिन चलै ॥
आरत्त माल कंठह कुसुम। दूरि मग्ग षोनी मिलै ॥ छं० ॥ १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना।

अनँगपाल पहु सुपन। देषि अप्पन चल चित्तह ॥
हरि हरि हरि हरि चवै। इष्ट फुनि भूत विदत्तह ॥
निसा जांम इक सेष। अप्प सुपनं फुनि पिष्षिय ॥
अप्प तरुनि सम उड्डि। तिथ्थ थानक तप दिष्षिय ॥
इह लष्षि चित्त चंमक्कि न्टपति। पांनी पाय अँदोलि अप ॥
नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक। सुत पुन नहीं पवित्त वप ॥ छं० ॥ १६ ॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया।

घटिय उभै निसि सेष। ताम सुपनौ फुनि पिष्षंहि ॥
तट कालिंदी तीर। सिंघ क्रीडत दिव दिष्षहि ॥
ताम समै इक सिंघ। पार उत्तरि जल आयौ ॥
उभै स्यंघ सो मिल्या। नेह क्रीड़ा दरसायौ ॥
वैठा सुसिंघ हथ मंडि करि। वैठि सनंमुष सिंघ दुअ ॥
जग्गायौ बीर सिंघह सुतन। ताम सुपिष्षौ प्रात हुअ ॥ छं० ॥ १७ ॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति के बुला कर स्वप्न का प्रश्न करना।

तब तूंअर चित चक्कत। उठ्ठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिह जग जोति। बोलि दैवग्य तथ्य दुअ ॥
दिय आसंन तमोर। बचन आभासि भाव दिय ॥
कहो सुपन विरतंत। आदि अंत कारंन तिय।
संभलें सुपन मन दुज दुमन। देषि राज बुल्यौ न हसि ॥

क्रित कहौं सब छंडौं दुमय । सब न्रिम्मान सुकाल बसि ॥ छं० ॥ १८ ॥

व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चैाहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ।

तब दैवग्य विचारि । एक एकान मुप लोकिय ॥
सब गंठी न्रिम्मान । एक कारन चित दो किय ॥
कहैं सुनौ सुत बीर । दिल्लि चहुआंन निवासं ॥
ज्यों दिष्यौ तुम सिंघ । मिल्लै तूंअर सम तासं ॥
तप सद्धि तुमह सद्धौ सरग । जो द्रष्यौ उङ्कुन अपन ॥
तूंअर बिनास अगगह अतुल । सम भविस्य कारन सुपन ॥ छं० ॥ १९ ॥

इस भविष्यवानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चैाहान को देना चाहिए ।

दूहा ॥ सवें भविस्य बिचार मन । पुच्छि पुच चहुआंन ।
तिहि अप्पों दिल्लिय सुदन । पसरै कित्ति प्रमांन ॥ छं० ॥ २० ॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय करलेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर वनवास करना चाहिए ।

कवित्त ॥ बालप्पन पन ज्यांन । गनह विद्धप्पन आयौ ।
एक समै एकांत । चित्त परब्रह्म लगायौ ॥
पुच छोड़ संसार । भूमि रष्यै पल पंडै ॥
बढै वंस बिसतार । कित्ति दसहूं दिसि चंडै ॥
अब करौं जोग जंगम जुगति । भुगति मुगति मंगो हरिय ॥
पुत्तीय पुत्त अप्पों पुहमि । इम चिंतन मन में धरिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना ।

छं० पद्धरी ॥ बोलेति मंत मंती प्रमांन । स्वामित भ्रम जे अंग जांनि ॥
रामह सुराज चिंतै सदाय । धुर धंम्म रूप बांनी बदाइ ॥ छं० ॥ २२ ॥
एकांत महल राजन बयठ्ठ । गुदराइ बोलि दरबांन नठ्ठ ॥

अथ माधो भाट कथा लिष्यते ॥

(उन्नीसवां समय।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना।

कवित्त ॥ किय निवास प्रथिराज। आइ चहुआंन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन। बलि दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस मषिप। किन्न[1] सहु नयर दीन बलि ॥
अवर देव पुज्जै सु सेव[2]। नैवेद धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ। अथ पंषि दीय चंडरस ॥
कंपै सुसीम तहां राषि भट। जस जु प्रगग्यौ दिसि विदिस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कमी कब्बिचंदं सुमाधौ नरिंदं। सुरंतान भट्टं मधू माद इंदं ॥
कवी एक भंडी भिडिंभी प्रमानं। किते तार झंकार विद्या सुजानं ॥छं०॥२॥
विधं मंच पची पढ़ै वेद बानी। तिनं भट्ट कोनं जु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसठ्ठि विद्या। तिनं रूप के भेद चौरास सद्या ॥ छं०॥३॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडस प्रमानं। इते छंद विच्छंद छंदे कलानं ॥
मषा रूप रंगंति गंगा प्रकारं। तिनं षाइकं भट्ट बोलंत सारं ॥ छं० ॥ ४ ॥

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना।

छंद चोटक ॥ दिषि भट्ट सुथांनक दिल्लि घरं। जमना जल राजत पापहरं ॥
तिह ध्रंम सुतं न्रिप ध्रित्त दई[3]। सोइ दिल्लिय राजस राज भई[4] ॥छं०॥५॥
इंद पथ्थ सु पूरब नाम धरं। इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
चव पंथ पती पति पाप हरै। रवि की तनया तन तेज दुरै ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो–किल।

(२) मो–पुज्जेति सेव।

(३) मो–दिष्यतई।

(४) मो–गई।

संसार विरत मन दिष्षि राज। चौकट्ट कुंभ जल बूंद भाज ॥ छं० ॥ २३ ॥
अग्यांन चित्त ज्यों दिठ्ठ ग्यांन। लोभीय चित्त ज्यों हरि न ध्यांन ॥
कुलटा सुनेंन नहिं लज्ज जेम। कपटीय मनह नहि प्रेंम नेम ॥ छं० ॥ २४ ॥
बांनिक बनिज नहि प्रीति अंग। दिष्यौ सराज इन परि बिरंग ॥
बुल्ले सु बिनय करि बैंन एव। कछु दुचित अज्ज मन लगत देव ॥ छं० ॥ २५ ॥
प्रति वात कहिय अब हमहिं ईस। बिन पुच सचु संसार दीस ॥
नृप वंस अंस जो पुच होइ। अवनीय अप्प रष्येति सोइ ॥ छं० ॥ २६ ॥
पुची सपुच चहुआंन पिष्य। तिन देउं राज मो सरन तिष्य ॥
मंचीन मंत तब कहिय राज। चव जुगनि जुगति जे भूमि काज ॥ छं० ॥ २७ ॥
जिहि जियत जीय धर रमै ओर। तिहि नृप नहीं कहि लोक ठौर ॥
जनमंत पुब्ब जिन तप्प होय। करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
धर पाइ राइ धर भ्रंम वढ्ढि। धर भ्रंम क्रम सुरलोक चढ्ढि ॥
जो गंग जुगति कल कठिन कांम। कहु षंगधार विश्रांम ठांम ॥ छं० ॥ २९ ॥
हम सीष मांनि अनंगेस राइ। भूमिय सु तजै सुष कित्त जाइ ॥
मंचीन राज तब कहीय वत्त। मानों कि वैर गहि गुंग गत्त ॥ छं० ॥ ३० ॥

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए।

अरिल्ल ॥ ते मंची जंपिय नृप वत्ते। किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते ॥
गत्ति प्रगृत्ति जिन धर पर अष्षी। तिहि धरपति धर कबहु न रष्षी ॥ छं० ॥ ३१ ॥
कवित्त ॥ जो धरपति धर छंडि। भम्यौ नल राय हेत चिय ॥
जो धरपति धर छंडि। तौ राम रष्षी न सीयनिय ॥
जो धरपति छंडि। भमिय सुत पंड षंड बन ॥
धर कारन विक्रंम। कियौ कग्गामिष भष्षन ॥
धर मंडि न छंडि अनंग नृप। तिश्थ भमन राजिंद नन ॥
धर काज राज धर षंडियै।। चिंत न दिष्षहि राज मन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना।

अरिल्ल ॥ कहिय मंच नह मनिय राय। लिषि कागद अजमेर पठाय ॥

इतनी विधि देषत थान गयौ। अग लोक समान सु तेज तयौ॥ छं०॥ ७॥

दूहा॥ इहि विधि दिष्षिय सकल द्रिग। पुर ढिल्ली उनमांन॥
थांन वीर चहुआंन कौ। प्रति कैलास समांन॥ छं०॥ ८॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन।

इंद रूप ढिल्लिय नृपति। इंद्रासन पुरि ढिल्ल॥
सचीवा इंछिनि सुव्रत। सुद्रत इत्त गुन किल्ल॥ ९॥
सुरपति सम सामंतपति। अति अनूप मति सार॥
कनिष्ट आंन हिंदुवांन सब। इह गरु अत्तें भार॥ छं०॥ १०॥
इह चरित्त दिष्षित नयन। गयौ भट्ट न्रप थांन॥
मय[1] मनु सुमन सुरष्षि कै। रच्यौ प्रथी पर आंन॥ छं०॥ ११॥

माधो भाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना।

कवित्त॥ दिषि भट्ट माधौ नरिंद। राजधांनी चहुआंनी॥
दूत भेद अनुसरै। दूत लग्यौ परिमानी॥
हिंदु भाष षट रस। मेछ पारसी उचारै॥
जहां अछिर कोइ कहै। वांन तैसीं विधि मारै॥
भाषा कवित्त नाटिक सकल। गीत छंद गुन उच्चरै॥
जानंत तर्क वितर्क सब। राग बिरागह अनुसरै॥ छं०॥ १२॥

गाथा॥ हिंदू हिंदू अवचने। रचने मेछायं मेछयौ बयनं॥
जं जं जेम समुझ्झै। तं तं समुझायं माधवं भट्टं॥ छं०॥ १३॥

ध्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना।

कवित्तं॥ ध्रंमाइन कायथ सुरंग। मिल्यौ बर भट्ट प्रमानं॥
जू कछु भेद चहुआंन। दियौ निहचै सुरतानं॥
विभ्रम सुभ्रम विसाल। कहो निभ्रम परिमानं॥
कग्गद मंत चलाइ। मंत मग्गी चहुआनं॥
दै लेइ दांन संभरि धनी। रोर सतम करभांन बर॥
मय मंत मंत चिंतान करि। दयौ दांन इत्तोति नर॥ छं०॥ १४॥

(१) मो-बह।

सुनि बत्ती नृप भर किल कानं । राका चंद उदधि परमानं ॥ छं० ॥३३॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना ।

दूहा ॥ सुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनंद अपार ॥
पित मातुल मिट्टन नृपति । कियो सुगवन विचार ॥ छं० ॥ ३४ ॥

कैमास का भी यही मत होना ।

थपिय मत्त कैमास सोइ । धरनि धरत्तिय तथ्थ ॥
चढ़ि चहुआन सुसंचरिग । पुर दिल्लीय सँपत्त ॥ छं० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ सुनहि राज तूअर नरेस । एक वर बुद्धि विचारिय ॥
एक बनिक पाचार । सु नय अंगह तिह सारिय ॥
नाहि बाल वय नन्द । सील हत दुल्लभ लीनो ॥
क्रंम काल मन हुल्यौ । चित्त मति संत उपन्नो ॥
अंनगेस राज तोंअर प्रगट । उह सुमत्ति जिन लेइ उर ॥
मम भूमि मुक्कि राज्यंद सुनि । भ्रंम धुरा रघ्घै न धर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना ।

दूहा ॥ कही दूत सारी विवरि । आदि अन्त जो बत्त ॥
चढि चहुआंन सु संचरिय । जुगिनि पुर लै वत्त ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चैापाई ॥ जै सम सूर चढ्यौ चहुआंनं । जगत सूर देव प्रति मांनं ॥
सगुन सकल संमुह बनि आए । गयैा राज दिल्ली समचाए ॥ छं० ॥ ३८ ॥
गयैा राज दिल्ली परिमानं । मिले सूर अनंगेस निधानं ॥
देषि भूमि दिसि थांन प्रामानं । राजा मुष बढ्यौ चहुआंनं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

अनंगपाल ने दैाहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा ॥ मातुल पित भिंट्यो सु पहु । मिलि अति उच्छव कीन ॥
बासुर सुर रवि इंद बल । लिपि दिल्ली पुर दीन ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना।

दूहा ॥ दस हथ्थी मै मत्त करि। भर मंडन सुष अग्ग ॥
　　अरि षंडन मंडन फवज। लेइ षीर वहु बग्ग ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ दस हथ्थी सत एक। एक कंजी कंमानं ॥
　　कंजी तीनति पंच। वांन सोहै परिमानं ॥
　　दियौ साह सुरतांन। भट्ट दीने परधानिय ॥
　　छह मोती वर माल। कनक टूक तोल सुजानिय ॥
　　दिय प्रथिराज सुराज वलि। द्रव्य सुवर चतुरंग विधि ॥
　　माधव सुभट्ट रंजे न्रपति। चंद कही असतुति समधि ॥ छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ हेमह है गै अंबरह। सरसैं बुद्धि गंभीर ॥
　　सत्त सुमति आमित्त गति। माधौ भट्ट सुवीर ॥ छं० ॥ १७ ॥

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना।

कवित्त ॥ दियौ दान वर भट्ट। मास रष्यै दिल्लीधर ॥
　　वहु भोजन प्रति स्वाद। इंद इंद्रास देव गुर ॥
　　मन लीनौ न्रप हथ्थ[1]। भट्ट न्रप[2] इंद प्रमान्यौ ॥
　　गए दरिद्द जनमंत। चिंत्य चिंता घट भान्यौ[3] ॥
　　अप्पै सु दांन सामंत सब। सुहत मत्त हत्तह सुधरि ॥
　　मै पूर पूर पूरन करी। जा चंग्या भग्गी सुउरि ॥ छं० ॥ १८ ॥

दूहा ॥ जात जात जो जात है। गए गवन किन कीन्ह ॥
　　इत्तय वन पूरन नहीं। मत्ति गहन तन चीन्ह ॥ छं० ॥ १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का ग़ज़नी लौट आना।

अरिल्ल ॥ जै सुदांन गज्जन पुर आयौ। इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥
　　महादांन विद्या परकारं। दियौ राज[4] चौहांन विचारं ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) मो-वरभट्ट।　　(२) मो-न्रप वर।
(३) मो-जान्यौ।　　(४) मो-दान।

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन।

छंद उधोर ॥ पयो हर पाइ पाइह अंत। दह जुग मत रत्त गुरंत ॥
भाषंत चंद छंद उधोर। प्रति षग कही पन्नग जोर ॥ छं० ॥ ४१ ॥
लिषि वर घटी महूरत मत्त। दुज घन वेद विद्यव सत्त ॥
आसन हेम पट्ट सुढार। मांनिक मुत्ति दुत्ति उजार ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मंडिन कलस विप्र विनोद। राजन अनिहि मानिय[1] मोद ॥
धुनि वर विप्र मंडन वेउ। माननी सकल साजन तेउ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
बज्जहि बहुल बज्जन भार। गांनहि मांन ग्रांम सुतार ॥
नच्चि चिय पाच भरह सुभाव। गांनहि सिंघ विक्रम साव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
सज्जित सघन सिंदुर दंति। छत्र सु पुहप सोभत पंति ॥
धवलें चढिय निरषति नारि। गौषन रंध्र सुराजकुं आरि ॥ छं० ॥ ४५ ॥
दमकत दसन हंस विराज। मानहु तडित अभ्भ अग्राज ॥
वसनह रसमि रज्जित कोर। सजि सित सघन वासव जोर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
राजत श्रवन रवनि ताटंक। राका मनहु सोभ मयंक ॥
सोभत लाल कुंडल कंति। मनु बधू इंद इंद मिलंत ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढि सु पहु सोहत दंति। मनों इंद्र ऐरापंति ॥
मांडन विप्र वेद सुवेद। जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ छं० ॥ ४८ ॥
पट्टहि पुत्ति पुत्त अरोहि। विंजत न्टप्प चामर सोह ॥
मांडन मुकुट उत्त सुमंग। रचि बहु धात मौल सुरंग ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दुति कलस करिय तास। मारिच कोटि इंद उहास ॥
धुम्र सम मंडि छच अजेर। मनों हरि बाल बिंब सुमेर ॥ छं० ॥ ५० ॥
तिलकह जटित रंजित भाल[2]। झल हल करहि दीप उजाल ॥
चरचहि मुत्ति कुंदन थाल। पूरति सुपहु पूजति बाल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
चरचति सुकर अनंगपाल। सोहति कंठ मोतिन माल ॥
दुज वर चवै असिष बेद। मांननि गांन तन सु अषेद ॥ छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो०--मानत।
(२) मो०--भाल।

माधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ गरु अत्त मत्त कविराज राज। शृंगार हास्य अदभुत विराज ॥
तिहि जाइ कीन न्रप किति बैन। तिम तिम सुहाय सुरतान चैंन॥ छं०॥२१॥
संभरिय वत्त उभ्भरि उरत्त। सुरतान बेन गोरी बिरत्त ॥
मातुलह वंस चहुआंन राज। दै गयौ सकल दिल्लीस काज ॥छं०॥२२॥
है गै भँडार विन किति भूमि। क्री बाज मार आहुति कूमि ॥
दैवत्त करै इह मनुक लोइ। क्री बाज जनम आहुत सोइ ॥छं०॥२३॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर वर मिले आइ ॥
अजहूंति सेन इक मनी नथ्थ[1]। गोरी सहाब इह घात तथ्थ ॥ छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ फुट्टिय वत्त प्रहास सब। वसि दिल्लिय चहुआंन ॥
वंदिन माधौ आय कहि। सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ २५ ॥
है गै दिल्लिय देस सब। अरु जु अवर द्रब अप्प ॥
सो सब दै चहुआंन को[2]। अनँगपाल गय तप्प ॥ छं० ॥ २६ ॥

अनंगपाल के बनबास का वर्णन।

लै चल्यौ संग निज तरुनि। दै दिल्लिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बद्री चल्यौ। साधन जोग जोगेस ॥ छं० ॥ २७ ॥

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना।

सुनत सटप्पट लग्गि मन। उर गोरी वर बीर ॥
पल पल षिन जुग जात जिय। बढिय विषम षल पीर ॥ छं० ॥२८॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज़ की शोभा वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ चढ्यौ मंगि सुरतांन साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी ॥
वरं बासनं रत्तहेमं हमेलं। मनी मुत्तिमाला बनी लष्प जेलं[3] ॥छं०॥ २९॥

---

(१) मो–सथ्थ। (२) क्रु–सो समपय प्रिथराज कूं।
(३) मो–सेलं।

हय गय हथ दिख्खिय देस। समप्पहि पुत्ती पुत नरेस॥
षोडस दांन पूरन मांन। अप्पे विप्र धेन सुभ्रांन॥ छं०॥ ५३॥
थप्प विप्र गेष सुग्यांन। अघन सुतप्प तप्पिय थांन॥
बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन। ....॥ छं०॥ ५४॥
तजि अघ मोह माया जाल। सज्जिय जोग वंचिय काल॥
रच्चिय बांन प्रस्थह रूप। क्रमि रह तप्प तप्पित भूप॥ छं०॥ ५५॥
हय गय तरुनि द्रव्य सुदेस। तिन वर तजिय राज नरेस॥
संवत ईस तीस रु अठ्ठ। चलि न्टप हेम गहि कर कठ्ठ॥ छं०॥ ५६॥

कवित्त॥ एकादस संवतह। अठ्ठ अग्ग हति तीस भनि॥
प्रथि सुरति नहां हेम। सुद्ध मगसिर सुमास गनि॥
सेत पष्य पंचमीय। सकल वासर गुर पूरन॥
सुदि म्टगसिर सम इंद। जोग सद्धहि सिध चूरन॥
पहु अनँगपाल अप्पिय पहुमि। पुत्तिय पुत्त पवित्त मन॥
छंड्यौ सुमोह सुष तन तरुनि। पति बद्री सज्जे सरन॥ छं०॥ ५७॥

शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना।

छंद पद्धरी॥ सुभ लगन दीन दिख्खिय नरिंद। तुम करहु राज जनु पहुमि इंद॥
सुनि श्रवन सह आनंद अंग[1]। राका रयन जनु दधि तरंग॥छं०॥५८॥
बुल्लाइ फेरि दुज वर प्रमांन। थपि लगन मगन अम्रत समांन॥
जिन वचन व्यास मिट्टै न कोइ। स पजह कहंत सुष सिद्ध होइ॥छं०॥५९॥
मंडप्प मंडि सुतधार बांनि। रचि व्याह लग्न रुकमनि मानि॥
उच्छव अनंत बाजंत्र वाज। जिन घुमर घोर रव गयन लाज॥छं०॥६०॥
न्टत्यंत न्टत्य पातर प्रवीन। तिन रष्प अंग मुनि मन अधीन॥
सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत। कैलास विपन बांनिक बसंत॥छं०॥६१॥
आरास सुबन बनिकाच छोह। देषंत नैंन मुनि मगन मोह॥
बहुरंग ब्रंन चित्रित अवास। साला सुरंग गौषन उजास॥ छं०॥६२॥

(१) मो–कंद।

जरं हेम छत्रं सुभं सोभ सीसं। उवं लाल थंभं सिरं सूर दीसं॥
अगे लक्करी लाल दो सहस सोहं। जिनं आइ जक्की सहं कोइ कोहं॥छं०॥३०॥
अगें साहि गोरी निसूरत्ति षानं। लग्यौ वंदि माधौ पढै त्रिद्दवानं॥
दिसा दाहिनी षांन तत्तार गोरी। दिसं षां पुरासांन रजि वांम जोरी॥ छं०॥ ३१॥
उभै पुट्ठि मम रेज मुलतांन षानं। सुतं साहि महम्मंद सोहित्त षानं॥
मुषं अग्ग वेतं उसे रत्न साहं। सितं चैार वांने सितं गज्ज गाहं॥ छं०॥ ३२॥
कही वत्त गोरी तिनं सों सवाही। कहैं जेत्र जव्वाव पुछंत सांही॥
अपं सेन सथ्थं सहं सूर सथ्थें। तिनं जानि वांने कहै कोन कथ्थें॥छं०३३॥
चले आइ सो सेषची मग्ग थानं। षयं छंडि दरवार साहाव तानं॥
दरं रष्पि दरवन अप मझ्झि आयं। सवै वोलि उमराति सब अप्प भायं॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा॥ ओर रोकि अप मभ्भ गय। नमि पय सेष चिमंन॥
अप्प प्रसंसिय विवह परि। वैठि पयंधरि पंन॥ छं०॥ ३५॥
सीप सु पुच्छिय सेस पहुं। वोलि पंचदस षांन॥
आसन छंडिय अप्प तिन। दिय आदर सनमांन॥ छं०॥ ३६॥

शहाबुद्दीन का तातारखां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना।

छंद पद्धरी॥ गोरी ततार गुरलज्ज भार। पुरसांन षांन मति सिंधुसार॥
निसुरत्ति षांन जेषांन मीर। ममरेज षांन वल लाज नीर॥ छं०॥ ३७॥
आजांन षांन सेरन वितंड। मुलतांन षांन मुहवत्ति वंड॥
मारुत्त मीर जमुनह सुमीर। साहाव षांन गहअन गंभीर॥ छं०॥ ३८॥
रुस्तंम षांन षल संक जास। गज्जनी षांन रिन साहि आस॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज। महमुंद मीर अरि तेज भंज॥ छं०॥ ३९॥
गोरीय त्रंन काली बलाइ। मृगराज जेम मृग अरि पलाइ॥
साहव सलाम सब करी आइ। चीमंन सेष नमि परसि पाइ॥छं०॥ ४०॥
बट्ठे सु संव कर कर समुट्ठि। षिन एक वैठि साहाब उट्ठि॥
गयौ सेष वाग तह चंप नूप। वैठक्क तथ्थ चैारा अनूप॥ छं०॥ ४१॥

अंगन अनंग दिषि रहत भूलि। त्रिगुन निवास सुरवास फूलि॥
जाजिम पट्ट जरकस जराव। अवनीस दिष्पि जकि धरत पाव॥ छं०॥ ६३॥
कुंहंत तार सहजह सुरंग। भंगीन अंग भय भ्रमत अंध॥
नव ग्रही वास सुर वास साज। तहां वैठि आंनि अनगेस राज॥ छं०॥ ६४॥
बुल्लाय सब्ब अप भर समान। द्रिगपाल जोर तन तेज भान॥
लघु वेस तरुन के वृद्ध वीर। कक्क वाच साच वज्जंग श्रीर॥ छं०॥ ६५॥
इंद्रीन मोह जिन अंग भंग। संग्राम रंग जनु कप्पि पंग॥
मच्छर हुलास जिन अंग सोह। चित जरत उठ्ठि सिर समय कोह॥ छं०॥ ६६॥
नव रस विलास निय नारि रंग। अनिवरन रंग भीषम प्रसंग॥
षग दान मान परिमान जोइ। कवि कहै व्रंन जो आंनि होइ॥ छं०॥ ६७॥
कुल रीति नीति हिंदून राह। दारुन्न दुसह दुभ्भर दुवाह॥
अस वैठि भूप सब सभा आंनि। सुर इंद्र कोटि तेतीस जांनि॥ छं०॥ ६८॥
तहां धरिय सिंघासन कनक कंति। जिन हीर लाल पीरोज पंति॥
मानिक्क चूनि मनिमुत्ति भंति। चक्रचोंध दिष्ट बुधि भूलि जंति॥ छं०॥ ६९॥
नृमान लषित पुष्पह उपाइ। तहां वैठि भूप कुल सुद्ध आइ॥
आसन्न अस्सु तहां धीरय आंन। सुरजंपि तथ्थ जै जया बांन॥ छं०॥ ७०॥
प्रथिराज बोलि वैठाय पाठ। धुनि करन वेद तहां विप्र ठाठ॥
बिय कंध पच्छ बिय चमर ढार। रजि रूप जांनि अस्विनि कुमार॥ छं०॥ ७१॥
धरि कनक दंड सिर छत्र सीस। सिर चंद कंति कैलास ईस॥
गायंत गांन कामिनि उतुंग। कलयंठ कंठ सुर करत भंग॥ छं०॥ ७२॥
मुसकत हसंत अैंडन अलोल। सहजन कटाच्छ कंडत सलोल॥
रस भरिय एक आलस्य भंग। मुनि देषि अंग मति होत पंग॥ छं०॥ ७३॥
इक अलसि फेरि अैंठति अलोल। कंडंत असित सित श्रवन कोर॥
अंगन अवास सालानि चूरि। जालीन गौष भरि रहौ पूरि॥ छं०॥ ७४॥
बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत। नव रस विलास रसना तुलंत॥
सधि लग्न मुहूरत दुज प्रवीन। अनगेस राज तब तिलक कीन॥ छं०॥ ७५॥
बजि सबद पंच बाजे बजंत। तिन सोर घोर दरिया लजंत॥
जित तित्त अत्ति उच्छव रजंत। बरषाह पाइ जनु जग गजंत॥ छं०॥ ७६॥

आसंन मंडि बैठो सु साहि। बैठक्क दई उमराव ताहि ॥
उच्चस्यौ बीर गोरी सु लंच। पुच्छिय जु सब मंचह प्रपंच ॥ छं० ॥ ४२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना।

कवित्त ॥ कहिय साहि साहाब। षांन तत्तार सुनौ सब ॥
बसि दिल्लिय चहुआंन। कही माधौ जु चंड कब ॥
अनगपाल गय तप्प। देस है गै सु द्रव्य सह ॥
सो समप्पि चहुआंन। अप्प सज्यौ सुबंन रह ॥
अरि मत्त अग्ग बर जोर हुअ। अरु लंभी चतुरंग श्रिया ॥
सधिये बेगरन षेत षल। जौ लौं जोर न बंधिया ॥ छं० ॥ ४३ ॥

तातारखां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षांन तत्तार। साह साहाब चित्त धरि ॥
अरि अनंत बर जोर। याहि सधिये सनद्ध करि ॥
तब दिष्यौ दल जोर। सूर सामंत समथ्यं ॥
अन्त तेज मन अनंत। बेग रन बहै सुहथ्थं ॥
दल जोर जोर भंडार घन। करि सुचित्त भर एक मन ॥
भरहथ्थ जीव दिल्लिय सहर। सम करि अरि सड्डन सयन ॥ छं० ॥ ४४ ॥

तातारखां की बात का सब लोगों का स्वीकारना, रुस्तमखां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवै।

छंद पद्धरी ॥ षुरसांन षांन कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपै सुढार ॥
दल मेलि बेग सहौ सुमंत। बंधीय बंधान अरि करिय अंत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जेहांन बीर जंपे तसंकि। तुम उरौ मीच कुहौ न अंक ॥
सड्डियै दौरि करि रुचु रुथ्थ। नन होइ कांम दष्यौ सुहथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जंपी सु षांन निसु रत्ति तब्ब। बिन बंध बत्त डिंभ रु गब्ब ॥
चचरन देषि चहुआंन तुम्ह। जंपौ सबत्त मंतह गुरम्म ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना।

छं० भुजंगी ॥ तहां बैठयं राज दिल्ली प्रमानं। सिरं आतपत्रं सु दीनो निषानं ॥
बजै दुंदुभी भीत[१] आकास थानं। .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥
मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं। जिनै आदरं राइ दीनौ सरीरं ॥
झनक्केति ताजी किनक्कै करीनं। महामत्त दीसै सुमत्ती सुभीनं॥ छं० ॥ ७८ ॥
दूहा ॥ करि जुहार भट सुभट थट[२]। प्रजा महाजन आइ ॥
सब काहू मन यौं भयौ। ज्यों जलचर जल पाइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना।

सत हथ्थी दस सित हुअस। मानक मुत्तिय लाल ॥
सवा लष्य सोवन महुर। गनै और को माल ॥ छं० ॥ ८० ॥
चढन जोग हथ्थी तवैं। मंगवायौ मदमंत ॥
जनु घन वद्दल पवन बसि। बग पंकति ता दंत ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जो रावर जंजीर वसि। पवन न पावै जांन ॥
अग्ग मंडि डारै प्रवल। सायर अजा समांन ॥ छं० ॥ ८२ ॥
छंद पद्धरी॥ आरुढ इंद्र सम गज गरुर। ज्वालाति जोति जनु किरन सूर ॥
जरकस जराव औछार मंडि। सुरराज विपन सोभात पंडि ॥ छं॥ ८३॥
रेसम रास नारी बनाइ। घुघ्घर घमंक कंचन जराइ ॥
आरुढ राज आसन अनंद। सुर पुफ्फ विष्टि दुअ दीन वंदि॥ छं०॥ ८४॥
लंगरी राव पच्छैं अरोह। कर कनक दंड सिर छत्र सोह ॥
विय बांह चमर दर गाह धारि। रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि॥ छं०॥ ८५॥
तिन पच्छ पंति दंतीन साजि। सामंत सूर सब चढ़े गाजि ॥
तिन पच्छ तुरी तत्ते निवानि। वर पवन रुढ मन भए जानि ॥छं०॥ ८६॥
छत्तीस वज्ज वज्जे सु बाज। विरदैत विरदै चंद राज ॥
अवधारि मध्य बाजार बीच। केसरि कपूर तहँ अगर कीच ॥ छं०॥ ८७॥
जित तित गिरंत जारीन फूल। छबि छत्ते छैल नवला अभूल ॥
मन मगन मुक्त अष्यित उछार। जलजात मनौं बसि ओस भार ॥छं०॥८८॥

१) मो०–घोस।
(२) कृ० को० ए०–भर सुभट सब।

उच्चरिय पांन साहाब सक्क । वै हद्द भयं भय बुद्ध जक्क ॥
भंषिये जुद्ध पावक्क पाइ । बंध्यौ विराम ना निजरि आइ ॥ छं० ॥ ४८ ॥
बल तुच्छ अरिय सद्दौ सु साहि । पल दुंद जोर बंध्यौ न जाइ ॥
मुलतांन पांन हसि कहिय वत्त । मम रेज पांन दावौ विगत्त ॥ छं० ॥ ४९ ॥
पंजाब गरुव छंड्यो गुमांन । धन मद्द संत वयची प्रमांन ॥
कालिंग पुत्ते जिम जुध पुलाइ । गत अत्त साहि साहाब जाइ ॥ छं० ॥ ५० ॥
उक्कसे पांन खेरन वितंड । विक्कसे कहिय कार पग्ग मंड ॥
गोरिय अवनि तुम गनौ गत्ति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति ॥ छं० ॥ ५१ ॥
विनसंत काज क्यों पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
जंपयौ वत्त काली वलाइ । मो विना सेन गोरी पलाइ ॥ छं० ॥ ५२ ॥
काल अर्हंत मन आइ मुभ्भक । मंडयौ जुद्ध मो विन अबुझ्झ ॥
तमस्से मीर तब फते जंग । पुज्जेन सेन पंषी पुलंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
सम वरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दष्षै अभंग ॥
अरि सार जैत जानौ न भेव । उच्चरौ मंत गुन सुवर गेव ॥ छं० ॥ ५४ ॥
तब मीर जमन गज्जनी पांन । महमुद्द मीर मारुफ्त पांन ॥
उठे सुच्यार तम तेग झारि । बुल्ले विहंसि मत्ते विचारि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
थिर जुद्ध मंत रच्चौ सु सब्ब । वैठनह सूर नहि भ्रंम अब्ब ॥
कीयौ हुकंम साहाब जब्ब । ग्रहि तेग हनै प्रथिराज तब्ब ॥ छं० ॥ ५६ ॥
हस्तंम कही साहाब अज्ज । मुक्कलौ दूत जुध करौ कज्ज ॥
लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त । तब लग्गि सेन सज्जौ सुरत्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥
मंन्यौ सुमंत सब चित्त सार । मंझौ सुमंत वर चरन चार ॥
हस्तंम बाह धरि चवत दीठ । बुल्लाइ रिंघ वर चर गरीठ ॥ छं० ॥ ५८ ॥

छंद भुजंगी ॥ स्वयं भेद प्रकार भेदं प्रमानं । सुनौ पांन तत्तार पांनं सुमानं ॥
स्वयं साहि साहाब साहाब सूरं । मनो भेद वंभान कुब्या करूरं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
घानं तेज तेजं प्रकारंत न्यारे । कही कब्बि चंदं उपम्मा उचारे ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ कहत चंद वर भट्ट फुनि । सकल कथा परिमांन ॥
जु कछू भट माधौ कही । सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ ६१ ॥

सब परज अरज प्रभु करत एह। इक भूमि ग्रेह थिर राज देह॥
नर नारि निरषि मनु मुदित मोह। लगि चंद सूर चिरजीव होह ॥छं०॥८८॥
षट दरस दरसि आसिष्य देत। प्रथिराज बंदि सिर भेलि लेत॥
फिरि राज आइ अंदर अवास। जहं रहत मुग्ध मध्या सुवास ॥छं०॥९०॥
सनमान कीन रनिवास राइ। जस मन्नि सत्त सत सिद्ध पाइ॥ छं०॥ ९१॥

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना।

दूहा ॥अन्य न्रपति गन सुंदरिन। मधि अंगन रनिवास॥
दिष्षत कबि कक्की सकल। मिल त्यंजन[1] दिन तास॥ छं० ॥ ९२ ॥
कनक किउ कुंदेरनह। भरत कि भरिता अंग॥
जलज नैन मुष कर चरन। जनु धरि अंग अनंग॥ छं० ॥ ९३ ॥
मधुर कंति मुष मधु मुदित। उदित अर्क आकार॥
तोरि चंन तरुनिय कहत। धरनि सहै तुम भार॥ छं० ॥ ९४ ॥
गाथा ॥ बनिता बिनय सुकरियं। धरियं प्रेम केन अंगायं॥
के कवि ककित कलीयं। भइयं ववसि पिष्षि पिथ्थायं॥ छं० ॥ ९५ ॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना।

दूहा ॥ जुग्गिनिपुर चहुआंन दिय। पुत्तीपुत्त नरेस॥
अनँगपाल तोंअर तिनिय। किय तीरथ परवेस॥ छं० ॥ ९६ ॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना।

कवित्त ॥ सुनि सोमेसर सूर। हियै बढिय आनंद सुष॥
अति अनंद न्निमलय। धनि मो पुत्त दीह रुष॥
बर बांने बंधियै। मिले सामंत सूर सब॥
सरित समुद्द प्रमांन। मिलिय आहत्त वीर सब॥
गोधूर लगन चहुन न्रपति। बाल चंद कल न्रपति हुअ॥
मांननिय मांन जानै सकल। न्रप परतीत समत्त धुअ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) क्ष-सुम सभ्यंजन।

छंद पद्धरी ॥ उच्चस्यौ चंद बरदाइ मंडि । सुरतांन षांन आरज्ज छंडि ॥
बर बीर धीर तत्तार षंडि । काली बलाइ सेरन वितंडि ॥ छं० ॥ ६२ ॥
हबसी हुजाब षुरसांन बंध । पीरोज षांन निज बंध सिंघ ॥
पर दार पौरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर सुभ्भि थांन ॥ छं०॥६३॥
तिन व्यंटि सभा दिष्षी नरिंद । मनों जामिनी तेज रवि सबर दुंद ॥
बंदै न चंद तत्तार षांन । पीरोज बंध हबसी समांन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
षुरसांन षांन जल्लाल बीर । सेरन वितंड माधौ सरीर ॥
हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साहै जु साहि ज्यौं चंद सार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
बैरंम षांन जमनेस जोर । जमजोर बद्दै तिन बल सुथोर ॥
पीरोज षांन माहो मरद्द । सोभंत तेज ससि बर सरद्द ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उन्नेग षांन गाभरू मीर । वेधंत सत्त धातह सु तीर ॥
तुम तेज षांन ममरेज मीर । षुरसांन लज्ज निज मुष्ष नीर ॥छं० ॥६७॥
फतूच मीर तुंगी तुरांन । पुज्जै न तास तम तेग पांन ॥
नव नेह षांन मैदांन मीर । रुम्मी रुहिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
ढिल्ली बढाल ढाहन प्रकार । संभरे मुष्ष भए रत्त भार ॥
पारष्षि रष्ष पावंग जांन । जानहि जु स्वांमि भ्रम प्रमांन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
फिरि पूछि जाइ दूत सवनि कट्ट । उच्चरै बत्त चहुआंन थट्ट ॥
भय भीत रीत माधव सुभट्ट । हों देषि आइ इह तथ्य घट्ट ॥ छं० ॥ ७० ॥
सोमेस सूर तस पुत्तमांन । मारन हमीर जाने गियान ॥
दातार और पोहचे न दान । दै गयौ अनंग दिल्ली निषांन ॥ छं० ॥७१॥
बर राज अनँग तिथ्थह जु जाइ । हैगै सु लच्छि दोहित्त पाइ ॥ छं०॥७२॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना।

दूहा ॥ साह बदी सुरतांन तब । माधौ कह्यो न मांन ॥
भट्ट जाति जीहं गुनौ । दूत सु पठय प्रमांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन।

कवित्त ॥ कं जांनी कंम्मांन । अंक रेसम प्रति भासै ॥
दस औराक तिय तोन । साहि गोरी मुकि जासै ॥

पद्धरी ॥ बंदहि विवेक अविवेक पाइ । विंभहि मुकुट सों मुकट वाइ[1] ॥
नग नगन जरहि किरनी जराइ । जाने कि आगनि अनहित्त वाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

चोटक ॥ भयभीत सुनंत चढंत कला । जनिये गुरदेव सुमंग मला ॥
बरवज्जि निसान दिमान धुअं । नृप राज सुकाज ज्यौं ध्रंम सुअं ॥ छं० ॥ ९९ ॥
प्रगटी जनु कांमय कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुमंत मला ॥
बिसरे द्रगपाल दसों दिसयं । प्रगटी जनु काम कला ससियं ॥ छं० ॥ १०० ॥
रन नंकिय पाइ कमल्ल भुअं । छिति मित्त छिपाधिप चित्त धुअं ॥
प्रगटे प्रथुपालक पंच कलं । तिनमें प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० ॥ १०१ ॥
परधाननि भीम कुंआर तिनं । नृप सेवन जास सुपाइ गनं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

दूहा ॥ अत हत्तिय नृपराज तपि । ढिल्ली द्वै घन साज ॥
जानिज्जै जंगल नृपति । मन उदद्धि गुन पाज ॥ छं० ॥ १०३ ॥

आशीर्वाद ।

सित छ अग्ग सामंत सजि । बजि त्रिघोप सुनंद ॥
सोमेसर नंदन अटल । ढिल्ली सुबसि नरिंद ॥ छं० ॥ १०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल दिल्ली दान नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥

(१) मो—चाइ ।

दूत भेद अनुसरै । लषि हिंदवांन चरित्तं ॥
सो मत्तह सुरतांन । थांन सो कलि दस रत्तं ॥
दूत के दुत मंत्रह सुपन । सब सु चरित अंषिन लषै ॥
उच्चरै बत्त सांची सुव्रत । सुविधि विधि अम्रत भषै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ दून मुक्कलि उन सथ्थ वर । दिसि ढिल्ली परिमांन ॥
माधौ भट्ट सु तथ्य कहि । दूत पठय सुरतांन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाहुआंन सुरतांन वर । करन जुद्ध परिमांन ॥
मिलन पुब्ब पछिम स्रुतं । बीरा रस उत्तांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ सें बुझ्झें सुरतांन । अप्प गज्जन बलषानं ॥
आषेटक स्रम करहिं । दूत मुक्के अगिवानं ॥
जु कछू भेद अनुसरै । तत्तथ्थानं परिजानिय ॥
भय भयंक भ्रम षंड । कान कलई गुन ठानिय ॥
जं कहौ जाइ मधम्मंद षां । सेरन षांन वितंड बर ॥
चवसी हुजाब मुक्कलि न्टपति । सुवर बीर मत्ते गष्षर ॥ छं० ॥ ७७ ॥
भेद दुग्ग भंजियै । भेद दुरजन घरि छिज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि लिज्जै ॥
भेद पप्प मत नथ्थ । भेद विन कंक न छोडै ।
भेद गुरुअ गुरु ग्यांन । भेद विन तात न जोडै ॥
अहत्त भेद वर रंजियै । गुन सज्जन सज्जन वरन ॥
सुरतांन दीन साचाब दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गाथा ॥ षुरसांनं प्रति षांनं । पीलं नथ नथियं षानं ॥
षंगी नथ्थ प्रमानं । वरषं नथ्थ सत्तयो वलयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
श्री गजनी नरिंदं । वुलल्यौ वीराइ बीर साषसं ॥
विन जग्गत जग्गायं । तौ जितै निस्चयं पलयं ॥ ८० ॥

दूहा ॥ विन जग्गत जो जग्गियै । पाग साह विन हाथ ॥
मेछ पिच्छ किर सान गुर । विवरि गुरज्जन साथ ॥ छं० ॥ ८१ ॥
पातसाहि पिची सुछिति । मति रष्षन परिमांन ॥
जौ भंजै चौहान तूं । कहै दूत सोइ ठांन ॥ छं ॥ ८२ ॥

अरिल्ल ॥ माधौ बत्त सुसत्त प्रमानिय। तज दूत मुक्कल्लि गुन टानिय ॥
नव नव नव घन मध्य प्रमांनं। कह्यो मंत गोरी सुविद्दानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना।

छंद पद्धरी ॥ करि मंत साह गोरी अचंभ। आरंभ चक्क भुज दंड थंभ ॥
जल थल तिथ्थल्लत करि प्रमांन। उनम्यो[1] मेरु जनु मध्य भांन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
गगन मगन षुर षेह छाय। सुझ्झै न भांन मिटि पंथ वाय ॥
अरुझ्झे सुकमल[2] संकुचि सकोर। रुट्ठी सु बदन अलि किसल थोर ॥छं०॥८५॥
चक्कवी चक्क चक चक्री भूमि। रस ताल विनल तल कह्नि तूमि ॥
तिन बनिन[3] तुट्टि छर छरत नीर। प्रज्जरै पंथ साइर गंभीर ॥ छं० ॥ ८६ ॥
तन[4] करै पवन गवनं प्रकार। उरझंत धजा गज चलत लार ॥
बाजत टमंक तबलं कटोर। नाचंत ईस जनु गंग सोर ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सुझ्झै न नैन दिसि विदिसि थांन। मन क्रंम सुद्धि नट्ठी प्रमांन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

दूहा ॥ चाहुआंन चतुरंग दिसि। सजि सुमंत साधव्व ॥
जुक्कु मंत गुन उच्चरिय। बर कोविद माधव्व ॥ छं० ॥ ८९ ॥
मति माधव कोविद सुबर। कही बत्त गुन जुत्त ॥
तज साहि गोरी नृपति। फेरि मुक्कले[5] दुत्त ॥ छं० ९० ॥
बोलि दूत चव[6] अग्ग लिय। दिय कग्गर धूमांन ॥
सुद्धि सिंध अरु सोब बर[7]। दिय दूनाम अव्वांन ॥ छं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना।

चल्यौ दूत दिल्ली दिसा। लिए साह फुरमांन[8] ॥
षेष सुसोफिय तन्न सजि। चित्त अचिंतिय मांन ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) को–उभस्यौ। (२) मो–ततकमल।
(३) मो–बनह। (४) छ–नन।
(५) मो–मुकहिय। (६) मो–बचन।
(७) मो–सब्ब।
(८) मो. में यह तुक नहीं है।

दूत को दिल्ली पहुंचकर अनंगपाल के वनवास और पृथ्वीराज के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा ॥ दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देषंत न्याव न्रप नेरं ॥
यह धूंमांन सुग्रेहं[1] । दिन्नं वर पत्र हय धूंमानं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
ष्वरि हूय धूंमानं । दिन्नं न्रप आदि सूर सामंतं ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ९४ ॥

ध्रमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत को बतलाना ।

कवित्त ॥ विवरि ष्वरि ध्रूमांन । कही चहुआंन सेन वर ॥
पय्य[2] सत्त राजांन । सुवास कीन विथ्थपुर ॥
पष्य पंच कैमास । राव चावंड पष्य चव ॥
बसि दिसे दिन अठ्ठ । पष्य लोहांन रसे सव ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । वसिय वास दिन पंच हुअ[3] ॥
सामंत अवर आगम इक्कै । रयन[4] वास चहुआंन रय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

ध्रमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

दूहा ॥ लषि कारि इह बंधी विवरि । राज ध्रम्म चहुआंन ॥
दिय कग्गर तसु दूत कर । धर कागर ध्रम्मान ॥ छं० ५६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।

षवरि सवै लीनी नृपति । चल्लिय दूत निज मग्ग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सौंपी वे सह जग्ग ॥ छं० ॥ ९७ ॥
अरिल्ल ॥ दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजधान जुग्गिनि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यौ चहुआंनं । रहे षट दीह फिरे तिन थानं ॥ छं० ९८ ॥

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाईं ।

दूहा ॥ रहे दूत षट दीह वर । लषि चरित्त षट मास ॥
जु कछु चरित षट मास कै । कहै विवरि,सुद[5]भास ॥ छं० ॥ ९९ ॥

---

(१) मो-गेहं। (२) मो--परक। (३) मो-भय। (४) मो-रवन। (५) मो-सुधि।

सुनै साहि सुरतान। साहि जीवन सुरतानं ॥
सुबर वीर हिंदवान। कलह चंपे हिंदवानं ॥
दीजै न दान दुर्जन घरह। दह दुवाह ऊभौ न्रपति ॥
मुरि भग्यौ साहि सुरतांन कौं। साल रहै जीवत सुपति ॥ छं० ॥ १९१ ॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय।

तब कह्यौ पांन तत्तार। साह मंनी परिमानं ॥
रुष्यौ साहि नरिंद। साहि पुरसांन खवानं ॥
घरी एक आवद्ध। वीर वीरह रस सथ्या ॥
षेत परे तत्तार। साह गोरी गई सत्था ॥
मुह मेल साह चहुआंन हुअ। षैथप्परि दौरे असुर ॥
चामंड राइ दाहर तनय। जै सबद उचरंत उर ॥ छं० ॥ १९२ ॥

दूहा ॥ दंतिपत्ति षल्लिय विहर। जलद कि पब्बय पाइ ॥
वाइ सहाई कै अनल। कै ग्रीपम लगि लाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥

छंद माधुर्य ॥ दव दवरि दवरित सैन डंमरित गज्ज गहरित सद्दयं।
विरहंत भद्दव जलद हद्दव कीच मचित भद्दयं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
गिरि पंपि उल्लसि उडय दस दिसि बाय वेग करि करें।
देषंत मन गति होत पंगुर दांन वरषत गिरि झरें ॥ छं० ॥ १९५ ॥
गज पंति दंतिन कंति उज्जल वग्ग पंति कि राजए।
रवि किरन बद्दल मध्य मानहु अन्य सोभ सु साजए ॥ छं० ॥ १९६ ॥
बर करत अनतह पग्ग पुल्लत उडत किरच सुपंडि कै।
इल चंद मानहु कोपि उडगन अद्ध रयनीय छंडि कै ॥ छं० ॥ १९७ ॥
हल मल्लिय है दल दलित पैदल सैल सिषरह फट्टियं।
गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उचट्टियं ॥ छं० ॥ १९८ ॥

दूहा ॥ गज्जन समवर रोस रस। वज्जिग मार अपार ॥
षेलि पग्ग संभरि वलिय। जनुपाइक पुंनार ॥ छं ॥ १९९ ॥

छंद रसावला ॥ करी मत्त भारी बहै सार धारी। दुहथ्थं करारी। तुटै दंत जारी ॥
छं० ॥ २०० ॥

क्रम ढिल्ली ढिल्ली वयर। ढिल्ली नृप चहुआंन ॥
गौ तीरथ वन सज्जिकैं। प्रगटि दिसांन दसनां ॥ छं० ॥ १०० ॥
प्रथीराज चहुआंन वर। ह्वै ढिल्लीपति म्रृंद ॥
जानत सकल जिहनां वर। वजि निर्घोष सुदंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावों की तयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ साह वदीं सुरतनां। आद गज जुद्ध निरष्षिय ॥
अगड मध्य चौगांन। वीस गजमत्त [1]सज्जकिय ॥
सहस एक गज झुंड। मंडि मंडल अविधानिय ॥
तहां गोरी वर वीर। दंति हक्कै दिन मांनिय ॥
गज एक सेत निज रोहि वर। चढिय पिठ्ठ तत्तार षां ॥
सुरतांन षांन निसुरत्ति षां। चढि सुगज्ज वांई रुषां ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दिसि दष्षिन साहाव। साहिजादा चढि दंतिय ॥
ऊवर सब्ब उमराव। चढे गज वंधि सुपंतिय ॥
लाल झंड सम सिंघ। हेम रज्जंत साहि सिर ॥
चैदल पैदल अवर। गनिक को गनै गहव्वर ॥
महमंदचंद महावत्त सों। वोलि साह पुर मांन दिय ॥
गज भूत सिंघ गज मुष्ष है। आंनि सुअगडह अड्डु किय ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दूहा ॥ इहा कहत तिन चर चवन। दिय दुवाह सुरतान ॥
निरषि साह उची निजरि। वे बुल्ले षुरसान ॥ छं० ॥ १०४ ॥
बाहन वर बानै विविधि। असु औनप आलोल ॥
ठाढा कोतूहल कवल। करत दांन नव[2] लोल ॥ छं० ॥ १०५ ॥
छंद उधौर ॥ मंडित उतंग उत्तिम छंद। म्रूरध सोभा सोमह नंद ॥
छच विसाल वर दुति सीस। बाल विसाल उडगन ईस ॥ छं० ॥ १०६ ॥
आसन सिंघ मंझौ राज। सामंत सूर भर करि साज ॥
राज चहुआन प्रथी नरेस। मंडिय चंद देव सुरेस ॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) को-कृ० ए-गमंत। (२) मो-करवानन।

रदं क्रिच भारी । मानो मच्छ वारी ॥ लगें बांन भारी । गिरं टिड्डि चारी ॥
छं० ॥ २०१ ॥

लगें संग भारी । मनों ब्रज्ज तारी ॥ उठें छंद धारी । मनों धूम भारी ॥
छं० ॥ २०२ ॥

लगें केक टारी । धनुं चंद्र धारी ॥ लगी दंति अंती । म्रिनाली सुहंती ॥ छं० ॥ २०३ ॥

भरंके उक्कारैं । बकें मार मारैं ॥ ढहै गज्ज जारी । गिरं श्रंग सारी ॥ छं० ॥ २०४ ॥

दूहा ॥ गज्जन गज गज्जै सुभट । रहै रोकि रन रंग ॥
क्रिति कज्जै क्रिची इसे । जिसे भीम अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

छंद पद्धरी ॥ अति उद्ध जुद्ध अनवद्ध सूर । बलवंत मंत दीसै कहूर ॥
झलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ ॥ छं० ॥ २०६ ॥
दल स्यांम हृदय सोभै प्रमांन । मानों कि पंचमो भाग भांन ॥
बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमांन । क्रर स्यांम राह सुभ्भै समांन ॥ छं० ॥ २०७ ॥
मानों कि राह ग्रहि ससिय आइ । कुट्टी कि किरन बद्दल नचाइ ॥
किरवांन बंक बड्ढी बिसाल । ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सिप्पर सुस्यांम हेमह सुहंत । मांनो कि चक्र हरि धरिय संत ॥
लै संगि अंग है हनि उठाइ । उप्पमा चंद जंपै सुभाइ ॥ छं० ॥ २०९ ॥
मांनो कि हथ्थ हथिनापुरेस । षंचै सु बलिय बलिभद्र भेस ॥
प्रथिराज करिय करि संग सुद्ध । लांगत भेस दीसंत उद्ध ॥ छं० ॥ २१० ॥
मांनों कि रांम कांमह प्रमान । षंचैति द्रोन हनमंत जांन ॥
ढहि पस्यो गज्ज वर षेत भूमि । मांनो सुअ सुरनिय अंत झूमि ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ चक्र रूप दोइ दीन दल । बल अभूत बलवंत ॥
जांनि जुगंतह जम लरैं । करन प्रथीपुर अंत ॥ छं० ॥ २१२ ॥

छंद विअष्षरी ॥ पूरन सखि सुरतांन नरिंदं । भारथ राह भिरैं भर दंदं ॥
हींदू सेन चढे रिन षेतं । जित्तन दल षुरसान सुहेतं ॥ छं० ॥ २१३ ॥
डोंरु हथ्थ डवै कर डावै । सींधू राग अबै सुर गावै ॥
नंचै बर बेताल चिघाइ । नारद नद्द करै किलकाई ॥ छं० ॥ २१४ ॥
सुर रत्तं सुर बीर प्रमानं । उडै उक्कंग अरिन निद्दानं ॥
दाहिंम्मौ दाहिर अधिकारी । गहन साह गोरी षग रारी ॥ छं० ॥ २१५ ॥

मास बिलिय मंडी रेर। नद्द निसांन थांनह भेर ॥
है गैगुंजि नाना भंति। छच विराज छचनि मंति॥ छं० ॥ १०८ ॥
मिलिभर जयां तयां भरि भीर। सूर समथ्थ जुद्द सधीर ॥
जित नित दिष्पि रंग सरंत। आगम जांनि फूलि वसंत ॥छं०॥१०९॥
वसन विराजि दसन कुआरि। लोल कलोल सुंदर नारि ॥
गावति हसति अलि अलि रासि। हग दुति कमुद किरनि प्रकासि ॥छं०॥११०॥
जब लगि पढै बीर जराइ। तब लगि गहिन साहि बधाइ ॥
जब लगि पढत वर जर जांम। तब लगि करन मत्तन कांम ॥ छं०॥ १११ ॥
सुनि उर लगिग अगिग उदार। परति न पिनक चैन दुवार ॥
बहु चर चवत चारु विचार। सिर दह वार नंमि उदार ॥ छं०॥ ११२॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना।

दूहा ॥ सुनत बत्त सुरतांन[1] वर। बोलें दूत हजूर ॥
पुछै साहि सुचित्त करि। बिवरि षबरि संम्भर ॥ छं० ॥ ११३ ॥

वचनिका ॥ सुरतांन सु विहांन सुलतान साहाब दीन ॥
करि करतार कि जोर। जासु कित्त जै अस दल की जोरि जोरि॥
जनु दरियाव की हिलोर। मिलते सों मुह जोरै ॥
अन मिलत सों पल पंचि कठोरै[2]। सुरतांन सुचिर हूमांन ॥
आंनि कही कायथ धूमांन। दिल्ली की षबरि बिवरि लिपि दीनी ॥
अनंगपाल तूंअर बन वास लीनी ॥
देस है गै कोस पुत्री पुत्र प्रिथीराज कौ दीनी ॥
पथ्य सत हुए वास कीनें। तहनि पुत्र परिवार सुष चैन ॥
पथ्य पञ्च कैमास कों भए आएं। मास दून दिन अठ्ठ भए चावंड बसाएं ॥
तीन मास लोहांन बीतें। बीस रोज कन्ह चहुआंन छूतें ॥
और सब सामंतकी वसही आंनी। कितेकों आंनने मांनी ॥
चौहांन वास की आग्या दीनी। सब सामंत सीस नांमि लीनी ॥
रोज बाईस तिस पर हमकों राह लगे। पडि पतंग जगिग सानंगे ॥

(१) मो०—सुरतांन। (२) मो०—पंचि के तोरैं।

जंपै मेछ कुसाद कुसादे । पारसीय मीरं रसवादे ॥
षां ततार षुरसांन षपानं । गहें सूर संमुह रन वानं ॥ छं० ॥ २१६ ॥
पंच वांन वह ते अधकोसं । सद्धो नाह नरिंद सरोसं ॥
रुद्धौ दिप्पि साहि सब पानं । गहिय तेग अनमित्त जुवानं ॥" छं० ॥ २१७ ॥

दूहा ॥ मिले खेत रन रंग रस । षां ततार कैमास ॥
विषम रुद्र रत्तौ विहसि । मनों तेग रस रास ॥ छं० ॥ २१८ ॥

छंद मोतीदाम ॥ मनों रस रासय तेगय तार । करकर वज्जिय रीठ करार ॥
चलंतह वांन सुभांन कवान । निरष्पत अच्छरि व्योम विमांन ॥ छं० ॥ २१९ ॥
छुटै गज वाज अनंदिय जात । मनों लगि गोम उदोत उदात ॥
भिरैं भय घोम सु धूंधय भार । लपै न को सूरति एक दुरार ॥ छं० ॥ २२० ॥
फिरैं धर वज्जिय भार करार । ठिलैं नठिलाइ न मन्निय हार ॥
नटं भति जोगिनि नंचिय वीर । मिटी सिर मालह संकर पीर ॥ छं० ॥ २२१
मिले कयमास ततार सुअंग । हन्यो कयमासह जांनुय संग ॥
फुटी जुग जंग तुरंग समेत । पस्यौ हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ छं० ॥ २२२ ॥
विना सिर नंचिय सट्ठि कमंध । चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध्र ॥
विलै विक मंध कमंध सुबीर । सहस्सह पंच परे रन मीर ॥ छं० ॥ २२३ ॥
भगी रन फौज सु चंडह साहि । जिते रन हिंदुअ ठट्ठ सुठाहि ॥ छं० ॥ २२४ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना ।

दूहा ॥ भगी अनी तत्तार लपि । दल परमारह चंप ॥
घप्यौ राज प्रथिराज तब । लेहु लेहु मुप जंप ॥ छं ॥ २२५ ॥

छंद पद्धरी ॥ घप्यौ सुराज प्रथिराज हक्कि । उर रोहि सेन उप्परैं धक्कि ॥
मिलि फौज अठ्ठकिय एक ठांम । आघात रीठ मत्ती उरांम ॥ छं० ॥ २२६ ॥
किलकार हक्क वज्जी करार । आवद्ध तुट्ट मुष धार धार ॥
चंप्यौ पटाटि चामुंड राव । हल हल हूक मते हलाव ॥ छं० ॥ २२७ ॥
बीभच्छ मंत विय भर अहुर । आवद्ध जांम मच्यौ कहुर ॥
संगें सुसंग असि असी घाइ । पट्टा सुपट्ट वज्जे निघाइ ॥ छं० ॥ २२८ ॥
जम दढ्ढ दढ्ढ जुटें विरांम । कुलिका सुधाव जुट्टे सुजांम ॥

जबलगि न गैरी जराइ। तब लगि साह मारि करि आइ॥ छं० ॥ ११४॥

छंद पद्धरी॥ उच्चर्यौ दूत प्रति गज्जनेस। चहुआन तेज दिष्यो असेस॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर सब मिले आइ॥ छं० ॥११५॥
संकुरे सकल भुम्मिया भयांन। सेवंत आन दरसांन थांन॥
इक भजत भोमि तजि गहन गेह। निय नारि रंभ सक्के न नेह॥ छं०॥११६॥
इक मिलत आंनि तजि एंड अंग। पल पग्ग पंडि पेसें सु अंग॥
अजहूं सुसेन इक मनी नथ्थ। गोरी सहाय इह घत्त तथ्थ॥ छं० ॥ ११७॥

संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना॥

दूहा॥ ग्यारह सें अडतीस भनि। भौ ढिल्ली प्रथिराज॥
सुन्यौ साहि सुरतान बर। बज्जे बज्जि सु बाज॥ छं० ॥ ११८॥

अरिल्ल॥ ग्यारह से अडतीसा मानं। भो ढिल्ली न्रपरा चहुआनं॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं। तपे राज प्रथिराज करूरं॥ छं० ॥ ११९॥
कलिजुग अरु द्वापर की संधी। साको भ्रंम्म सुतह बल बंधी॥
ता पच्छै विक्रम बर राजा। ता पच्छै दिल्ली न्रप साजा॥ छं० ॥ १२०॥
कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय। सब गुन साह बिवेकत जानिय॥
सबै चरित्त कहे प्रति भट्टं। सोइ दूत अप्पै[1] प्रति घट्टं॥ छं० ॥ १२१

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासान खां आदि से मत पूछना।

छंद हेमक्खरी॥ दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं। हेम सु है गै मुद्रित मानं॥
तपै राज दिल्ली चहुआनं। नाकरषू नागेंद्र प्रमानं॥ छं० ॥ १२२॥
एक बराह थिरं बेराईं। सकल छत्य सुरराज समाईं॥
को अग्या भंजै न[2] विराजं। अप्प लज्ज सम सामँत लाजं॥ छं० ॥ १२३
सुष कुहै जो बैन प्रमानं। तो घल्लै अग्गि जुलित नथानं॥
सुनौ साहि गोरी सुरतानं। एक अंग एकं मन ठानं॥ छं० ॥ १२४॥
पुब्ब लोइ दालिद्री नासं। सबै सुक्ख तब टंक बिलासं॥
दंड हथ्थ जोगिंद सुदिष्यौ। नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिष्यौ॥ छं० ॥ १२५॥

(१) मो-अगें। (२) मो-नह राजं।

पाटू सुढीक परद्दार पार। मिले लथ्थ बथ्थ झुंझे झुझार ॥ छं० ॥ २२९ ॥
कर केस केस एकह अलुझ्झ। छुरिका सत्रंनि वाहिं सुलझ्झ ॥
तुट्टंत अंत चंपंत पाइ। तुट्टंत सीस जनु विषम वाइ ॥ छं० ॥ १३० ॥
छिन नतं परत दंती सभार। द्वै परें विहँड पंडै सधार ॥
है गै परंत धर पूरि पारि। घन श्रोन अंब पूस्यौ सवारि ॥ छं० ॥ २३१ ॥
लग्गे ससंग नेजा सुढाल। सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
कच्छपह सीस गजराज नूप। धर परे हय गय मगर रूप ॥ छं० ॥ २३२ ॥
तुट्टे सुबांह मनुं मीन पांन। सोहंत मीन वर विविध जांन ॥
सोहंत सीस अंबुजह सूर। से वाल चिकुर रज्जे विरूर ॥ छं० ॥ २३३ ॥
विगसंत नेंन सुरंगी न दिट्ट। अंबुज निसांनि मधुकर वयट्ट ॥
षप्पर सुभरै कालिका वारि। विन हंस सूर उड्डै उझ्झारि ॥ छं० ॥ १३४ ॥
पट्टाटि पस्यौ चामंड धाइ। विहरंत विषम वज्यौ सुघाइ ॥
दिष्यौ सुघाइ साहाब दिट्ठ। आवद्ध मंत मत्ती सुरिट्ठ ॥ छं० ॥ २३५ ॥
मिल्ल्यौ सुघाइ चामंड राइ। हय हये उंन उन्नं उनाइ ॥
हय परै बथ्थ लग्गेव सूर। थल घाव रिट्ठ मत्ती करूर ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चंपे सुमीर उप्परह धक्कि। सामंत सूर लग्गे विहक्कि ॥
धर परे षेत तहां दस्स मीर। सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं० ॥ २३७ ॥
धरि लियो साहि चामंड राइ। नव सहस मीर तुट्टे सुघाइ ॥
चामंड राव हय दिय षवास। सादूल नाम पावार तास ॥ छं० ॥ २३८ ॥
भग्गौ सुषेत सुरतान सेन। जै जया सद्द सुर सद्द गेंन ॥
जे परे मीर सामंत षेत। वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ पस्यौ भीम चहुआंन। बंध भाषरह महाभर ॥
सांमदास चय बंध। सुतन चहुआंन नाह नर ॥
पस्यौ षेत जस धवल। सुअन लोहान समथ्थं ॥
केसर केहरि रुप। बंध लोहांन सुतथ्थं ॥
रन परे पंच सामंत वर। षेत रीठ मत्ती भरन ॥
चामंड राइ दाहर तनय। गहत साहि पष्पल सुरन ॥ छं० ॥ २४० ॥

दुज उचिष्ट नच उष्टं अक्षी । कौन लंक कोइ कीन न भक्षी ॥
कठिन कक्कुच तिया प्रकारं । कोइ न काठिन दुअन अधिकारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
कसी हेम सोनार सुधीरं । कोइ न कसी दरिद्र सरीरं ॥
भै निरभै संसार सुजानं । सुनि सुनि राज हत्त सुरतानं ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सोहन अहत सुहन गुन जांनी । कहै दून बिधि विधि परिमांनी ॥
सोहै माफ अहत्त अभिलापं । सोज प्रयाह सुभंन चैसाषं ॥ छं० ॥ १२८ ॥
यों अावै चढ्ढे कवि गन्नं । इतो राज अप्पै प्रति दिन्नं ॥
सेन सुमंत सुमंतह सारी । भो मुप मंद मंद अभिसारी ॥ छं० ॥ १२९ ॥
यों जंपिय चहुआंन सुमंतं । त्यों अभिलाप गई मति तंतं ॥
बोल्लि षांन तत्तार प्रकारं । कहो मंत सो किज्ञ सारं ॥ छं० ॥ १३० ॥
अनंगपाल गैा तिथ्य सुनिज्जै । चाहुआंन दिल्ली प्रति रज्जै ॥ छं० ॥ १३१

तातार खां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना ।

दूहा ॥ कहै षांन तत्तार वर । अहत चरित्त सुनंत ॥
जे चरित्त दिल्लिय न्टपति । कहि गोरी गुनमंत ॥ छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त ॥ कहै षांन तत्तार । सुनहि गोरी सुरतांनं ॥
सोहि भत्त जो किजियै । सजियै सेन परमानं ॥
कहो बत्त माधै सुभट । सोइ लिपि कायथ कग्गर ॥
सोइ दूत कहि षत्त । सुत बोल्लैं न भट्ट बर ॥
धरमांन नाम कायथ सुघर । तेनु चरित लिष्षे सवैं ॥
अप्पै सुचष्य वंदीन ने । सुहन धीर वीरह तवै ॥ छं० ॥ १३३ ॥

तातारखां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना ।

दूहा ॥ मानि मंत तत्तार वर । मति गोरी सुरतान ॥
लिपि धरमानह कग्गरह । सुविधि विद्धि परिमान ॥ छं० ॥ १३४ ॥

गाथा ॥ माधवं कोविदं भट्टं । गीतं काव्यं रसं गुनं ॥
नट्टं चित्रं मषा विद्या । पिंगलं भरहं तथं ॥ छं० ॥ १३५ ॥

छंद मोतीदाम ॥ निरंजन भट्ट सुमाधव वीर । कहो तिन बत्त सुसत्ति सधीर ॥
इहै कहि मत्त सुमत्त प्रमांन । सजी चतुरंगिनि सेन निधांन ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पस्यो षांन षेरंन्न। वितंड मुलतांन षांन धर॥
माहू मीर सुमीर। मीर जेहांन महाभर॥
मीर जमुन गजनीय। षांन महमुंद मीर वर॥
फतेजंग मीरह सुमीर। हासंन रु अंनर॥
काली वलाइ विरदैत बर। मीर ष्ववन्न सुजुझ्झ मन॥
दस परें षेत वानैत तब। गहत साहि पप्पल सुरन॥ छं०॥ २४१॥
ष्ववर अनी सांमत। परे रन मीर महाभर॥
सोलंकी रन वीर। सुतन वीभाह सुराज वर॥
षीची राव प्रसंग। सुतन सागरह समथ्थं॥
मडंन वंध षसंग। हीर पामार सु हथ्थं॥
पामार नीरध्वज सिंधु सुअ। सुत प्रसंग सागर सुअन॥
वग्घेल भीम लष्पन सुवन। राम वाम दहय डरन॥ छं०॥ २४२॥

दूहा॥ सहस एक हिंदू ष्ववर। परे चाइ रिन षेत॥
सहस आठरह असुर दल। परे सुवंधन नेत॥ छं०॥ २४३॥
सहस सात हय षेत रहि। परे पंच से दंति॥
लुथ्थि कोस पंचह प्रचर। परे सुपाइल अंति॥ छं०॥ २४४॥
षेचर भूचर हंसचर। पलचर रुधिचर चार॥
न्रप आनंदिय राजकहुं। चलि जै जंपि उचार॥ छं०॥ २४५॥
सूरन सीस जु ईस जुरि। सुर रज्जे वर रथ्थ॥
रंजि अच्छरि आसिष्प दिय। वर लद्दे वर हथ्थ॥ छं०॥ २४६॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना।

कवित्त॥ वंधि साह चामंड। दियौ प्रथिराज सुहथ्थह॥
राज मांनि पतिसाह। आनि मुष्यासन नथ्थह॥
कियौ दंड पतिसाह। सहस ऋठह हय सुब्बर॥
सोइ अह प्रथिराज। दियौ चामंड महाभर॥

कवित्त ॥ सेन साजि चतुरंग। लिषे कग्गर परिमानं ॥
थांन थांन प्रति जांन। साहि कढ्ढ फुरमानं ॥
आइ सेन सजि थट्ट। सक्क सबै उमरावं ॥
चढिहै कंधै झपटि। जांनि उलट्यौ दरियावं ॥
विधि रूप दैव गोरी न्रपति। गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥
ततार षांन षुरसांन षां। करै मत्त सच्चे बयन ॥ छं० ॥ १३७ ॥
गाथा ॥ सुनि स्रवनं चर बत्तं। बज्जानं घाव नीसानं ॥
निज है वर आरोहं। चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं० ॥ १३८ ॥
कहि ततार गहि बग्गं। बसो करोज अजर हो ग्रेहं ॥
रोज पंच मिलि सयनं। करि सुबसि सिंघ चहुआनं ॥ छं० ॥ १३९ ॥
कहिब साहि बर बत्तं। सुनि ततार सह तुम साजं[1] ॥
अरि आघात समथ्थं। सहि सुसिद्धि निद्ध कज्जायं ॥ छं० ॥ १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना।

छंद पद्धरी ॥ चढि तमकि चल्यौ गोरी सहाव। उलट्यौ जांनि सायरन आव ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन। विधि विधि प्रवाह सर भरि जलेन ॥ छं० ॥ १४१ ॥
द्वादसह कोस किन्नौ मुकांम। डेरा सुदीन नारोल गांम ॥
मिलि पुट्ठि आइ सब सेन भार। है लष्ष मीर गरुअत्त गार ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बाजिच बीर बज्जत बिसाल। नारद्द नंचि तिन भ्रकुटि ताल ॥
बित्ती चियाम उग्गयो सूर। दल चल्यौ सत्त जनु सिंधु पूर ॥ छं० ॥ १४३ ॥
संक्रमन सेन हूओ हुलास। चलि विषम सुषम बैराह भास ॥
षुर धूरि पूरि धूंधरिय भांन। गहवर सुबत्त सुनियै न कांन ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दर कूच कूच उत्तरिय सिंध। दल विषम हत्त उर साहि विद्ध ॥
किन्नौ मुकांम आचार आर। डेरा सुदीन दल उंच ठार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
झंडे अनंत गडि विविध रंग। फुलल्यौ बसंत वनराइ चंग ॥
चर चले धरनि दिल्ली सुथांन। दल कहै चरित षुरसान षांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
दूहा ॥ कहै चरित सुरतांन सों। जे देषे तिन दूत ॥
धुरि निसांन भद्दव भरिय। इम दिष्षिय अदभूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥

(१) मो-सारं।

मुक्यौ सुराज सुरतांन गहि। रोहि सुवासन पटय घर ॥
जित्यौ सुराज प्रथिराज रिन। जय जै सद्दय सुर अमर ॥ छं०॥ २४७ ॥

सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना ॥

वंधि साह सुरतांन। राज ढिल्लीपुर पत्तौ ॥
दंड मंडि सुविहान। राज जस जस गुन रत्तौ ॥
चामर छत्र रपत्त। सकल लुट्टे सुरतानं ॥
मास एक वर वीर। रष्षि मुक्यौ सुविहानं ॥
जय जय सुमत्त कित्तिय कवित। डोला राज नरिंद वर ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। भयौ न को रवि चक्र तर ॥ छं० ॥ २४८॥

दूहा ॥ माधौ भट्ट सुमंत कथ। सुमत चित्त परमांन ॥
सुवर साहि गोरी न्टपति। वंधि छंडि उनमांन ॥ छं० ॥ २४९ ॥

इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना।

वँटि वधाय दिल्ली सहर। जीते आवत राज ॥
द्रव्य पटंवर विविध दिय। वज्जा जीत सु वाज ॥ छं० ॥ २५० ॥
दुजिय सुवद्दिय प्रति दुजह। प्रिथ्या व्याह विगत्ति ॥
किमि फिर वंध्यौ साह रिन। किम धन लद्ध सुमत्ति ॥ छं० ॥ २५१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधौ भाट कथा पातिसाह ग्रहन राजाविजय नांम उनविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १९ ॥

छंद भुजंगी ॥ घुरे नद्द नीसांन उग्गंत सूरं। वरं बीर वाजिच बज्जे करूरं ॥
घमं पष्वरे बाज दंती सहस्सं। दलं सज्जि सस्साषयं अव्वयन्नं ॥छं०॥१४८॥
रहियं पैाज भरं हो छठु साईं। तहां बीर भीरं गुरं गज्ज गाईं ॥
तहां चिट्टियं दंति उमत्त मत्तं। तहां कच रंगं चियंगी ढरंतं ॥छं०॥१४९॥
तहां बीर माही उमाही सुरानी। तहां ढाल बहु रंग रंगी ढुरानी ॥
दिसा बांम तत्तार गोरी सु अन्नी। दिसा दाहिनी पांन पुरसांन रन्नी॥छं०॥१५०
मुषं अग्ग बेतंड सेरंन षांनं। रतं बैरषं रत्त गज गाह ठानं ॥
तिनैं रत्त चच्चारि कारत्त ढारं। रजं रत्त झंडं तरं तान चालं ॥छं०॥१५१॥
अनी साहि पुट्ठें विचें साहि साजं। अगें अग्ग बाजी रथं नारि साजं ॥
अगें बांन गीरं सजे जुद्ध सारं। ....मुषे मारमारं ॥छं०॥१५२॥
सुरं दीन दीनं कलिं कूक फुट्टी। भरं आइ कालं भरी जुद्ध घट्टी ॥
उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं। वरं बाज आघात वज्जे करूरं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना।

दूहा ॥ गज्जनेस सब सेन जुरि। आयौ सिंधु उलंघि ॥
कूच कूच आतुर परिग। दोइ लष्प दल संघि ॥ छं० ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना

कवित्त ॥ सुनिय बत्त पृथिराज। बोलि कैमास मंच वर ॥
कंन्ह काइ[1] चहुआंन। विरदि बज्जेति[2] नाह नर ॥
रा पज्जून पवित्त। सलप पमार जैत सम ॥
जांम देव जद्दों जुवान। पर संग राव प्रम ॥
पुंडीर सेन चंदह सुमति। लोहांनौ आजांन भुअ ॥
मिलि सकल मंत पूछिय प्रथुक। सनमांनिय सोमेस सुअ ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोकें।

कहिय मंत कयमास। सुनौ सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयौ सु सज्जि। सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उभ्भार। सुन्यौ उत्तार सिंधु नद ॥
सिंध मंत सुभ रच्यौ। फौज चंपी न छोड़ हद ॥

(१) मो-कह्न। (२) मो-छज्जेति।

अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वदिशा में समुद्रशिषर गढ़ के यादवराजा विजय-पाल का वर्णन ।

दूहा ॥ पूरब दिस गढ गढनपति । समुद सिषर अति द्रुग्ग ।
तहँ सु विजय सुर राज पति । जादू कुलह अभग्ग ॥ छं० ॥ १ ॥
हसम हयग्गय देस अति । पति सायर म्रज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिँ सकल । धुनि निसाँन बहु साद ॥ छं० ॥ २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन ।

कवित्त ॥ धुनि[1] निसान बहु साद । नाद सुरपंच वजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंष गजपतिय । मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्षह ॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर डमर[2] ॥
भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर ॥ छं० ॥ ३ ॥

कुँअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा ॥ पदम सेन कूंवर सुघर । ता घर नारि सुजांन ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट । मनहुँ कला ससिभांन ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ मनहुँ कला ससिभांन । कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल वेस ससिता समीप । अंम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल स्रिग भमर । बैन षंजन म्रग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
छत्रपति गयंद हरि हंस गति । बिह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पदमावतिय । मनहु कांम कामिनि रचिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) छ—घन । (२) को—भमर ।

एक पंष निठुर नरिंद। सथ्थ कैमास राम भर॥
दुतिय पंष अत ताइ। बलिय बलिभद्र सार भर॥
पिंड पाइ नष राज हुअ। रषइ पुंछ पज्जून भर॥
पुंडीर चंच कीनौ नृपति। मध्य रंभ मच्चौ सुथर॥ छं०॥ १७१॥
दछिन दिसि कैमास। वाम दिसि कन्हति सज्जिय॥
च्यार सहस सेना सजंत। नील फर हर ढल रज्जिय॥
सकट व्यूह सजि सुभर। कग्ग चामंड अग्ग करि॥
मंच राज ढंढरिय। ठंठ मारू मद्दंन धरि॥
चंदेल माल भौंहा सुभर। उभय चक्र सज्जे उभय॥
प्रथिराज अनी दछिन दिसा। विषम बीर सज्जौ सुरय॥ छं०॥ १७२॥
अवर अनी सामंत। षरे नव बीय महाभर॥
सोलंकी रन बीर। सुतन विंझष सुराज बर॥
षीची राव प्रसंग। हीर पम्मार सहथ्थं॥
सुवर बीर अवसांन। करन प्राक्रंम अकथ्थं॥
पंम्मार दोइ सिंघष सुअन। सुअ प्रसंग सागर बरन॥
बघ्घेल भीम लष्षन सुअन। राम वांम दय हम्मकरन॥ छं०॥ १७३॥
बांई दिसि चहुआंन। कंन्ह सज्ज्यौ दल बद्दल॥
सहस तीस सजि सेन। मध्य सामंत अठुबल॥
हर सिंघह बर सिंघ। हम्म हंमीर गंभीरह॥
मंडली कमल नाल। भांन भट्टी बर नीरह॥
उदिग पगार बिरदैत बर। सोलंकी सारंग उर॥
सिर कन्ह कच सज्यो नृपति। भार सयंनह जुद्ध भर॥ छं०॥ १७४॥
मुष अग्गौं पम्मार। सलष सम जैत सु सज्जिय॥
लोहांनौ आजान। तिन मद्धि विरज्जिय॥
सहस पंच सेना समथ्थ। पंम्मार सिंघ सम॥
मध्य सूर सामलौ। भीम चालुक्क पर जम॥
ठंठरी टांक चाटा चपल। धवल जसह लोहांन सुअ॥
लोहांन बंध केसरि समथ। अग्र भाग सब सूर हुअ॥ छं०॥ १७५॥

दूहा ॥ मनहु काम कामिनि रचिय। रचिय रूप की रास ॥
पसु पंक्षी सब[१] मोहनी। सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ॥ ६ ॥
सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजांन ॥
जानि चतुर दस अंग षट। रति बसंत परमांन ॥ छं० ॥ ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे में रक्खा।

सखियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास ॥
कीर इक्क दिष्षिय नयन। तब मन भयौ हुलास ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ मन अति भयौ हुलास। बिगसि जनु कोक किरन रवि ॥
अरुन अधर तिय सधर। बिंब फल जानि कीर छवि ॥
यह चाहत चष चकित। उहजु तक्किय झरपि झर ॥
चंच चहुट्टिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर ॥
हरषत अनंद मन मद्धि हुलस। लै जु महल भीतर गई ॥
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्षत भई ॥ छं० ॥ ९ ॥

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती।

दूहा ॥ तिही महल रष्षत भइय। गइय खेल सब भुल्ल ॥
चित्त चहुट्टयौ कीर सों। रांम पढ़ावत फुल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥

पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है।

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि। नष सिष लौं यह रूप ॥
करता करी बनाय कै। यह पदमिनी सरूप ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कुटिल केस सुदेस। पोह परचियत पिक्क सद ॥
कमल गंध वय संध। हंस गति चलत मंद मद ॥
सेत वस्त्र सोहै सरीर। नष स्वाति बुंद जस ॥

(१) छ-मृग।

मध्य भाग प्रथिराज। सहस सेना सु च्यारि सजि ॥
चंद्र सेन पुंडीर। राइ पर सिंघ सिंघ गजि ॥
विंझ राज लष्यन बघेल। राइ रामह कनकू सम ॥
कूरंभह पज्जून। भीम चहुआन भीम क्रम ॥
भावरह दास मंधे समथ। चाहुआंन नृप कन्ह सुअ ॥
गोइंद राव भुज हथ्थ न्टप। जुद्ध पथ्थ जै वज्र भुअ ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जांम देव जद्दों जुवांन। न्टप पुठ्ठि सु रज्जिय ॥
स्याम चमर पष्परह। स्यांम गज ढाल सु सज्जिय ॥
लंगी लंगर राव। अल्ह परिहार सूर वर ॥
अचल अटल चहुआंन। सिंह वारड अभंग भर ॥
जंघाल राइ भीमह सुवर। सागर गुर रिन भूरि वल ॥
सामंत सकल सज्जे समय। कज्ज राज प्रथिराज दल ॥ छं० ॥ १७७ ॥
उत गोरी सुरतांन। सज्यौ सेन अध चंद्रं ॥
अर्द्धचंद्र तत्तार। पांन पुरसान सु द्वंदं ॥
अर्द्धचंद्र वर सार। पान पीरोज स द्वंदं ॥
मधि कलंक जल्लाल। बीर रस बीर समंदं ॥
उज्जल निसंक दोउ कोर वर। तेज ताप सुरतांन डर ॥
चहुआंन राह लग्गन फिर्यौ। पूरन पुनिमासी सगुर ॥ छं० ॥ १७८ ॥
छंद भुजंगी ॥ इसी लीन जो गिंद जो गिंद भासै। उड़ी गिद्ध पच्छै मनों मोन भासै ॥
कढ़ै नद्द नंदीं सुनारद्द बीरं। मनों जोग जोगाधि को अंत नीरं ॥छं०॥१७९॥
कारक्कंत बानं धरक्कंति वेनं। गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं ॥
मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै। तिनं देषने इंद के चित्त लोभै ॥छं०॥१८०॥
झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं। वलाकंति पंती बगं मेघ सारं ॥
झरं डंमरं रेन रुकि भूर नभ्भं। कलापंत पंतीन की सत्त सभ्भं ॥छं०॥१८१॥
दूहा ॥ दिषिय रेंन डंमर डहर। चढ्यौ चाय चहुआंन ॥
सूर अनंद अनंद किय। कायर कंपि परान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
सज्यौ सेन जंगल सु पहु। जिम बद्दल आकास ॥
ढलकि ढाल ढिल्ली मिली। बिषम बीर रस रास ॥ छं० ॥ १८३ ॥

भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव । मकरंद वास रस ॥
नैन निरषि सुष पाय सुक । यह सदिन म्रति रचिय ॥
उमा प्रसाद हर हेरियत । मिलहि राज प्रथिराज जिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है ।

दूहा ॥ सुक समीप मन कुँवरि कौ । लग्यो वचन कै हेत ॥
अति विचित्र पंडित सुआ । कथत जु कथा अमेत ॥ छं० ॥ १३ ॥
गाथा ॥ पुच्छत वयन सुवाले । उच्चरिय कीर सच्च सचाये ॥
कवन नाम तुम देस । कवन थंद करै परवेस ॥ छं० ॥ १४ ॥

सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूं वहां का राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है ।

उच्चरिय कीर सुनि वयनं । हिंदवान दिल्ली गढ अयनं ॥
तहां इंद अवतार चहुवानं । तहं प्रथिराजह सूर सुभारं ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना ।

छंद पद्धरी ॥ पद्मावतिहि कुँवरी सँघत्त । दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त ॥
हिंदवांन थान उत्तम सुदेस । तहँ उदत द्रुग्ग दिल्ली सुदेस ॥ छं० ॥ १६ ॥
संभरि नरेस चहुआंन थांन । प्रथिराज तहां राजंत भांन ॥
वैसह बरीस षोडस नरिंद । आजानबाहु भुअ लोक यंद ॥ छं० ॥ १७ ॥
*संभरि नरेस सोमेस पूत । देवंत रूप अवतार धूत ॥
सामंत सूर सब्बैं अपार । भूजांन भीम जिम सार भार ॥ छं० ॥ १८ ॥
जिहि पकरि साह साहाब लीन । तिहुं वेर करिय पानीप हीन ॥
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जंजीर । चुक्कै न सबद बेधंत तीर ॥ छं० ॥ १९ ॥
बल बैन करन जिम दांन पान । सत सहस सील हरिचंद समान ॥
साहस सुकंम विक्रम जुवीर । दांनव सुमत्त अवतार धीर ॥ छं० ॥ २० ॥
दिस च्यार जांनि सब कला भूप । कंद्रप्प जांनि अवतार रूप ॥ छं० ॥ २१ ॥
दूहा ॥ कामदेव अवतार हुअ । सुअ सोमेसर नंद ॥
सहस किरन झल हल कमल । रिति समीप वर विंद[1] ॥ छं० ॥ २२ ॥

---

* को० कृ-में यह तुक नहीं है ।　　　　(१) को-चिंद ।

घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना ॥

छंद भुजंगी ॥ ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसेनं। चढे देव देषै रचै रथ्थ गैनं ॥
हकै हक्क बज्जी गजै तार[1] नारं। महा जुद्ध लग्गौ उट्यौ धोम
धारं ॥ छं० ॥ १८४ ॥

छुटै बांन हवाइ[2] अप्पार भारं। जगी दामिनी इंद्र भादों सुढारं ॥
मिली कन्ह अन्नी षुरासान अन्नी। महा षेत मत्तौ गजं गाह रन्नी ॥
छं० ॥ १८५ ॥

छुटै बांन कम्मान रुक्यौ सुगैनं। उवं जुद्ध दिट्ठं न प्राचार नैनं ॥
उभै जुद्ध मंड्यौ महा भार भारं। भरं टून भग्गे धरं धार धारं ॥
छं० ॥ १८६ ॥

गिरैं उत्तमंगं धरं सूर नंचै। भरं सीस कंमालियं माल संचै ॥
करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं। पियें श्रोन धारं अपारं सुधीरं ॥
छं० ॥ १८७ ॥

मिले षेत षुरसांन षां कन्ह धायौ। उरं झारि सींगी अपुट्ठं गिरायौ ॥
पर्यौ झूंमि षुरसांन षांनं सुघाए। अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए ॥
छं० ॥ १८८ ॥

परे सहस दो षांन कढि षेत साजं। बजी जैत देषी प्रथीराज राजं ॥
भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं। कुप्यो साहि षुरसांन किय नैंन लालं ॥
छं० ॥ १८९ ॥

फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना।

दूहा ॥ भगी फौज सुरतांन दिषि। कोप्यौ साहि सहाव ॥
वहुरि मिलत जनु मेघ घुरि। सावन वद्दल आव ॥ छं० ॥ १९० ॥

सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना।

कवित्त ॥ हक्कि सूर सुरतान। साहि बंध्यौ बल भारी ॥
अग्गैई चौरंग। राज रष्षन अधिकारी ॥

(१) मो॰—नारि।
(२) मो—हवाय।

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुन कर पद्मावती का मोहित हो जाना।

सुनत श्रवन प्रथिराज जस। उमग बाल बिधि अंग ॥
तन मन चित चहुवाँन पर। बस्यौ सु रत्तह रंग ॥ छं० ॥ २३ ॥

कुँवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना।

वेस बिती ससिता सकल। आगम कियौ बसंत ॥
मात पिता चिंता भई। सोधि जुगति कौ कंत ॥ छं० ॥ २४ ॥

राजा का बर ढूँढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना।

कवित्त ॥ सोधि जुगति कौ कंत। कियौ तब चित्त चहौं दिस ॥
लयौ विप्र गुर बोल। कही समझाय बात तस ॥
नर नरिंद नर पती। बड़े गढ़ द्रुग्ग असेसह ॥
सीलवंत कुल सुद्ध। देहु कन्या सुनरेसह ॥
तब चलन देहु दुज्जह लगन। सगुन बंद दिय अप्प तन ॥
आनँद उछाह समुद्दह सिषर। बजत नद्द नीसाँन घन ॥ छं० ॥ २५ ॥

पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना।

दूहा ॥ सवालष्य उत्तर सयल। कमऊँ गढ दूरंग ॥
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग ॥ छं० ॥ २६ ॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया।

नारिकेल फल परठि दुज। चौक पूरि मनि मुत्ति ॥
दई जु कन्या बचन बर। अति अनँद करि जुत्ति ॥ छं० ॥ २७ ॥

कुमोदमनि का बड़ी धूम से व्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना।

छंद भुजंगी॥ विद्दिसितवरं लगन लिन्नौ नरिंदं। बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंदं॥
गढंनं गढं पत्ति सब बोलि नुंत्ते। आइयं भूप सब कटु बंस जुत्ते॥छं०॥२८॥

चले दस सहस्सं असव्वार जानं । पूरियं पैदलं तेतीसु थानं ॥
मंत मद गलित तैं पंच दंती । मनों साँम पाहार बुग पंति पंती ॥ छं० ॥ २९ ॥
चलै अग्गि तेजी जु तत्ते तुषारं । चैावरं चैारासी जु साकत्ति भारं ॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं । रँगं पंच रंगं ढलकंत ढालं ॥ छं० ॥ ३० ॥
पंच सुर सावद्द वाजिच बाजं । सहस सहनाय श्रिग मोहि राजं ॥
समुद सिर सिषर उच्छाह छाहं । रचित मंडपं तोरनं श्रीयगाहं ॥ छं० ॥ ३१ ॥
पदमावती विलषि वर बाल वेली । कही कीर सों बात तब होइ केली ॥
भटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेसं । वरं चाहुवानं जु आनैा नरेसं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

सुग्गे से संदेसा कहलाना औरऔर चिट्ठी देना कि रुक्मिनी की तरह मेरा उद्धार कीजिए ।

दूहा ॥ आनो तुम्ह चहुवांन वर । अरु कहि इहै सँदेस ॥
सांस सरीरहि जो रहै । प्रिय प्रथिराज नरेस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ प्रिय प्रिथिराज नरेस । जोग लिषि कग्गर दिन्नौ ॥
लगु नव रग रचि सरब । दिन द्वादस ससि लिन्नौ ॥
सें अरुग्यारह तीस[1] । साष संवत परमानह ॥
जोषिची कुल सुद्ध । बरनि वर रष्यहु प्रानह ॥
दिष्यंत दिष्ट उच्चरिय[2] वर । इक पलक विलंब न करिय ॥
अलगार रयन दिन पंच महि । ज्यों रुकमनि कन्हर वरिय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ।

दूहा ॥ ज्यों रुकमनि कन्हर वरी । ज्यों वरि संभरि कांत ॥
शिव मंडप पच्छिम दिसा । पूजि समय स प्रांत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुँचना ।

लै पची सुक यों चल्यौ । उड्यौ गगनि गहि वाव ॥
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर । अट्ठ जाम में जाव ॥ छं० ॥ ३६ ॥

---

(१) को-अनुतीस ।

(२) को-यह घरिय ।

फल अप्प हथ्य सो दीन न्टप। लच्छि सहज लच्छी सुतन ॥
दुज राज राम ग्रह लगन लिषि। सद्धि महूरत चिंति मन ॥ छं० ॥११॥
इंद्र जोग पंचमी। सुवर पंचमि अधिकारी ॥
भोम बीय न्टप थान। सूर ग्रह केत उचारी ॥
हेम सुमंत ग्रह लगन। व्याह दंपति दंपति गन ॥
और सबै सुभ जोग। होइ सुष जात धान घन ॥
इक मास लगन बर थप्पि कै। दिल्ली वै दिल्ली गयौ ॥
सुरतांन दंड लीनौ सुकर। सुकर अंम कारज ठयौ ॥ छं० ॥ १२ ॥

लग्न का शोधा जाना।

दूहा ॥ थप्पि सु लगनह राज ग्रह। सोधि पुरान उरान ॥
वाजपेय सुष उद्धरे। मिथा व्याह उनमान ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनेगा उठा न रक्खूंगा।

बहुत मोहि कहत न बनै। बरनत कविन कठोर ॥
गुन मैं घोरिन अप्पि हौं। कछु बरनिहौं सुथोर ॥ छं० ॥ १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन।

कवित्त विधानजाति ॥ अहि ससि सन उतंग। पिक्क उर केहरि करिवर ॥
अलक बयन चष चंच। जीह कटि जघन बराबर ॥
किस्न सकल चल अचल। अदिठ अलसंत चलंतह ॥
चंदन नभ वन भवन। अंब गिरि व्यंझ बसंतह ॥
सुमनि सरद भय भीत निसि। रति पति लंघत मंदगति ॥
अबला सुअंग ओपम इतिय। कही चंद इन परि बिगति ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ को कवि ओपम बाल की। कहिवे कों समरथ्थ ॥
सब संयोग बनाइ कै। काम चढ्यौ मनुरथ्थ ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथा कुँअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन।

छंद मोतीदाम ॥ बरनों ससि जुब्बन की वय संधि। तिनं उपमा बरनो बल बंधि ॥
मिली सिसरं रिति राजह जोर। चंप्यौ न ननं विपनं नह कोर ॥ छं० ॥१७॥

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना ।

दिय कग्गर न्रप राज कर । पुनि वंचिय प्रथिराज ॥
सुक देखत मन में हँसे । कियो चल्लन कौ साज ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना ।

कवित्त ॥ उद्दै घरी उद्दि पल्लनि । उद्दै दिन वेर उद्दै सजि ॥
सकल सूर सामंत । लिये सब वोलि वंव वजि ॥
अरु कविचंद अनूंप । रूप सरसै वर कद्द वहु ॥
और सेन सब पच्छ । सहस सेना तिय सप्पहु ॥
चामंड राय दिल्ली धरह । गढपति करि गढ़ भार दिय ॥
अलगार राज प्रथिराज तब । पूरव दिस तब गमन किय ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला ।

जा दिन सिषर बरात गय । ता दिन गय प्रथिराज ॥
ताही दिन पतिसाह कौं । भइ गज्जनै अवाज ॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी ।

कवित्त ॥ सुनि गज्जनै अवाज । चढ्यौ साहाब दीन वर ॥
षुरासाँन सुलतान । कास काविलिय मीर धुर ॥
जंग जुरन जालिम जुझार । भुज सार भार भुअ ॥
धर धमंकि भजि सेस । गगन रवि लुप्पि रैन हुअ ॥
उलटि प्रवाह मनौं सिंधु सर । रुक्कि राह अड्डौ रहिय ॥
तिहि घरिय राज प्रथिराज सौं । चंद वचन इहि विधि कहिय ॥ छं० ॥ ४० ॥

कवै चलि चंचलता चलि जाइ। धरै कबहूं धन धीरज पाइ॥
तिनं उपमा बरनी कबिचाई। पढ़ावत कांम नई गत ताई॥ छं०॥ १८॥
करं सिर ठंकि सँवारत बार। सिषावत कांम मनों चट सार॥
दुती उपमा बरनै कबि चंद। चले घट रूप दिषावत दूंद॥ छं०॥१९॥
चती उपमा बरनी कवि चाह। लरै दुअ कोर मनों ससि राह॥
उठे थन थोर विराजत वाम। धरैं मनु चाटक सालिग राम॥ छं०॥२०॥
किधों फल तिंदुअ कंचन जान। धरे मनु अंग सुधा रस पान॥
तुछ्छं रूम राजिय राजत वाम। पपीलकि सोवन षंभ विश्राम॥ छं०॥ २१॥
जु वंकिय भोंह न तुच्छ गहर। उठे मनु मच्छ धनंक अँकूर॥
सुवालय उष्टत मोर सुदीस। मिले जनु मंगल दै ससि रीस॥ छं०॥२२॥
कहूं उठि लागित मोर सुसीर। उठे मनु अंकुर कांम सरीर॥
तुछं द्रग सोभत कज्जल तास। चढ़े जनु वाहन वल्लिय काम॥ छं०॥ २३॥
दुहूं कुच बीच सरोमय तह। लगी मृग मद्दय छीन सुघट्ट॥
तिनं उपमा बरनी कवि रंग। पिये जनु कालिय के सुतअंग॥ छं०॥२४॥
कवै मिलि श्रोंन द्रिगस्सुतु लेहि। मनों सिसु जुव्वन तारिय देहि॥
स विभ्रम चाइ उभारित चक्र। इमं द्रिग इष्प कटाच्छ सुवक्र॥ छं०॥२५॥
इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल। करी मनों काम सिरी रति माल॥
भई जब बाल चढंतय बेस। दई तब पिथ्थ नरिंद गिरेस॥ छं०॥ २६॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन।

दूहा॥ नर नरिंद जोगिंद पति। मुंजी ढाल विरद्द॥
उडगन निकट नरिंद विय। सेवत रहत गिरद्द॥ छं०॥ २७॥*

कवित्त॥ सिंगी रा अवधूत। वीर चिचंग नरिंदं॥
कमल पानि सारथ्य। अरुन तेज कहि चंदं॥
बर कप्पन कालकं। विरद साहन सुरतानं॥
बर प्रब्बत वैराज। भोग जोगह बड़ दानं॥
सो महन रंभ आरंभवै। एक रंग रत्तौ रहै॥
कलिकाल घाम छिप्पै नहीं। झलहलंत दुज्जन दहै॥ छं०॥ २८॥

* यह दोहा मो. में नहीं है।

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गोप आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना।

निकट नगर जब जांनि। जाय वर विंद उभय भय॥
समुद सिषर घन नद्द। वृंद दुहुँ ओर घोर गय॥
अगिवानिय अगिवान। कुँअर बनि बनि हय सज्जति॥
दिष्षन को चिय सवनि। चढ़ि गोप छाजन रज्जति॥
बिलषि अवास कुँवरि वदन। मनों राह छाया सुरन॥
झंपति गवष्षि पल पल पलकि। दिषत पंथ दिल्ली सुपति॥ छं०॥ ४१॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीरान के साथ घोर युद्ध होना।

छं० पद्धरी॥ दिपत पंथ दिल्ली दिसांन। सूप भयो सुक जब मिल्यैा आंन॥
संदेस सुनत आनंद नैंन। उमगिय बाल मन मध्य मैन॥ छं०॥ ४२॥
तन चिकट चीर डारयो उतारि। मज्जन[1] मयंक नव सत सिंगार॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप। सजि सेन मनों मनमथ्य भूप॥ छं०॥ ४३॥
सोवन्न थार मोतिन भराय। झल[2] हल करंत दीपक जराय॥
संगह सषिय त्रिय सहस बाल[3]। रुकमनिय जेम मज्जत मराल॥ छं०॥ ४४॥
पूजिय गवरि शंकर मनाय। दच्छिनै अंग कर लगिय पाय॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज। हस मुद्द मुद्द चर पट्ट लाज॥ छं०॥ ४५॥
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय। कै चल्यैा न्रपति दिल्ली सुराय॥
भद्द पवरि नगर बाहिर सुनाय। पदमावतीय हरि लीय जाय॥ छं०॥ ४६॥

(१) ए० छ–मंडान। (२) कें–फल। (३) कें–यव रस चाल। (४) छ–दुरि।

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस संबन्ध से अपने को बड़ भागी मानना।

दूहा ॥ फल श्रीफल दुज हथ्थ कै। जाइ सँपतौ देव ॥
आज हनंदे पाप हम। मिलि चित्रंगी सेव ॥ छं० ॥ २९ ॥
भोजन भाव अनंत किय। दिसि उत्तर ग्रह रष्षि ॥
पाप जन्म चहुआन कौ। गय दुज राज सु इष्षि ॥ छं० ॥ ३० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुंचकर बसंत पंचमी को तिलक देना।

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप। समर संमुह ग्रह भग्गे ॥
षय अक्रंम मन नट्टए[1]। क्रंम सुक्षत[2] फल जग्गे ॥
पंच दिवस रहि थांन। जंपि दुज राज सु आइय ॥
बर बसंत वैसाष। लगन पंचमि थिर पाइय ॥
चतुरंग लच्छि चित्रंग दिय। कुयन राम विप्रह सुतह ॥
जाने कि अग्गि समसान की। देषि सुतन लग्गे सु जह ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन।

वाजपेय राज सू। होइ कलजुग्ग भ्रंम गुर ॥
और जगनि ना होइ। व्याह संझो सुभ्रंम धुर ॥
रथ चौसट्ठि प्रमान। रथ वर जोग प्रमानं ॥
वार वार पर वाज। वीर सज्जे उनमानं ॥
सा इक्क इक्क कर ना किरनि। सत्त सत्त सो बेद[3] विधि ॥
चित्रंग राव रावर सुभ्रम। करन मतौ प्रिथिराज सिधि ॥ छं० ॥ ३२ ॥
हेम हयं गय जुगति। सचे मिष्टान पान बर ॥
वर कुबेर लभ्भैन। पार प्रथिराज राज नर ॥
चाव दिसि वर गांन। दांन चाव दिसि अप्पे ॥
ब्रह्म बेद क्रम छेद। सूर नचि सोरथ थप्पै ॥
जे जोग भोग जोगिंद नव। सो उग्गत मचि भुल्लई ॥
प्रथिराज राज राजन वली। वलिन जग्ग सम तुल्लई ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) क्ष. मो.—अक्रंम नट्टए। (२) को. क्ष. ए.—अक्षत। (३) मो.—देव।

बाजी सुबंब हय गय पलांन। हैरे सुसज्जि दिसह दिसांन ॥
तुम्ह लेहु लेहु मुष जंपि जोध। हन्नाह सूर सब पहरि क्रोध॥ छं० ॥ ४७॥
आगैं जु राज प्रिथिराज भूप। पच्छै सु भयौ सब सेन रूप॥
पहुंचे सुजाय तत्ते तुरंग। भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग॥ छं० ॥ ४८॥
उलटी जु राज प्रथिराज वाग। थकि सूर गगन धर धसत नाग॥
सामंत सूर सब काल रूप। गहि लोह क्रोह वाहै सु भूप॥ छं० ॥ ४९॥
कम्मांन बाँन छुट्टहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार॥
घमसान घान सब बीर षेत। घन श्रोन बहत अरु रुकत रेत॥ छं० ॥ ५०॥
मारे बरात के जोध जोह। परि रुंड मुंड अरि षेत सोह॥ छं० ॥ ५१॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना।

दूहा ॥ परे रहत रिन षेत अरि। करि दिल्लिय मुष रुष्प॥
जीति चल्यौ प्रथिराज रिन। सकल सूर भय सुष्प॥ छं० ५२॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना।

पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज॥
एतैं परि पतिसाह की। भइ जु आनि अवाज॥ छं० ॥ ५३॥

अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना।

कवित्त ॥ भई जु आँनि अवाज। आय सहाबदीन सुर॥
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर॥
क्रोध जोध जोधा अनंत। करिय पंती अनि गज्जिय॥
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह अब सज्जिय॥
पवै पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल॥
आये हकारि हंकार करि। षुरासान सुलतान दल॥ छं० ॥ ५४॥

दूहा ॥ धरम सुथिर राजन बली। देव दैव दुति चाव ॥
चाव दिसि सो देषिये। लच्छि मोल लषि भाव ॥ छं० ॥ ३४ ॥

छंद मोतीदाम ॥ जयं जय छंद जयं गुन रूप। कटावत हेम सु बारह भूप ॥
दिसं दिसि पूरि न्टपं न्टप थांन। मनों विधि जग्ग कि देवन थांन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
रसं रस तोरन बंधत बार। मनो नट वत्त कला गुन चार ॥
सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम। मनों वर मेर बिराजत तेम ॥ छं० ॥ ३६ ॥
सबै बर बीर फिरै जिहि पास। मनो बर भांन कलान प्रकास ॥
कढ़ै गर सुंदरि नान प्रकार। मनों ससि भांन उगे इक बार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
बिराजत मुत्तिन बंदरवार। मनों भुम्र आंन मयूष प्रचार ॥
अहं अह उंच सु पंति बिसाल। मनों कयलास्य सोभति चाल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कथा कविचंद सु उप्पम थोर। बिराजत पंतिय कंतिय चैार ॥
धरैं धर अंम्रत पंच प्रकार। जचें तिन देत सँतोष अहार ॥ छं० ॥ ३९ ॥
टगें टग लग्गिय दिष्ट प्रकार। दिषे चहुआंन कलाधर सार ॥
भली विधि रूप प्रकार प्रकार। सुभै जनु इंद्र सु जानिह द्वार ॥ छं० ॥ ४० ॥

कवित्त ॥ नहिन हेम पर भास। लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥
थांन थांन नवनिद्व। देव जंपे सुदेव मन ॥
अनिम महिम गरिमास। लभि देवात मद्विधिय ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि। राज द्वारह वर बंधिय ॥
जीतिय जितीक सुरतांन निधि। प्रिथा व्याह न्त्रिमत करै ॥
धंनि धंनि धंन नव षंड हुअ। लंक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की माने इन्द्रपूरी है।

साटक ॥ हैंम हेमय द्वार दारुन गनं[1]। दीसंत लच्छी वरं ॥
एंच हून सु च्यारि रत्न गुन ए। सिद्धांत सारं गुरं ॥
संभया वारुन तारु नेव तनयं। धन पोर संधं गुनं ॥
जानिज्जै सुर लोक इंद्र उदितं। धामं सचीवं वरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) छ. मो.—नग।

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज के चारों ओर से घेर लेना।

छं० पद्धरी॥ पुरासान मुलतान पंधार मीरं। बलक स्यो बलं तेग अचूक तीरं॥
रुहंगी फिरंगी हलब्बी समानी। ठटी ठट्ट बल्लोच ढालं निसानी॥ छं०॥ ५५॥
मँजारी चषी मुष्ष जंबक्क लारी। हजारी हजारी हुकैं जोध भारी॥
तिमं पष्परं पीठ हय जीन सालं। फिरंगी कती पास सुकलात लालं॥ छं०॥ ५६॥
तहाँ बाघ बाघं मढ़री रिछोरी। घनं सारसंमूह अरु चौंर झोरी॥
पराकी अरब्बी पटी तेज ताजी। तुरक्की महाबांन कम्मांन बाजी॥ छं०॥ ५७॥
ऐसे असिव असवार अग्गेल गोलं। भिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं॥
तिनं मद्धि सुलतांन साहाब आपं। इसे रूप सों फौज बरनाय जापं॥ छं०॥ ५८॥
तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर नीसांन वाजं॥ छं०॥ ५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना।

कवित्त॥ वज्जिय घोर निसाँन। राँन चौहाँन चिहौ दिस॥
सकल सूर सामंत। समरि बल जंच मंच तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज। बाग मनों लग वीर नट॥
कढ़त तेग मनों बेग। लगत मनों वीज झट्ट घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन। रगन मगन भइ श्रोन धर॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस। हुरव रंगि नव रत्त वर॥ छं०॥ ६०॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई।

दूहा॥ हुरव रंग नव रंत वर। भयौ जुद्ध अति चित्त॥
निस वासुर समुझि न परत। न को हार नह जित्त॥ छं०॥ ६१॥

युद्ध का वर्णन्।

कवित्त॥ न को हार नह जित्त। रहेइ न रहहि सूरवर॥
धर उप्पर भर परत। करत अति जुद्ध महाभर॥
कहौं कमध कहौं मथ्य। कहौ कर चरन अंत हरि[1]॥
कहौं कंध वहि तेग। कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर॥

(१) छ-हुरि।

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना।

तूफान॥ धनि भ्रंम धनि प्रथिराज। गुन दच्छि लच्छि विराज॥
मधि जमुन में यों धांम। सुर नाक सुर विश्रांम॥ छं० ॥ ४३ ॥
धज ऊंच फरहर रूप। सुरतान पठय भूप॥
त्रैलोक न्योतें काज। मनो देव व्याह विराज॥ छं० ॥ ४४ ॥
विधि वरन वरन सु धाम। कुब्बेर वरषिय काम॥
वर भ्रंम जग्गि प्रकार। सम दांन विनयह सार॥ छं० ॥ ४५ ॥
फिरि राज राजन चाल। लछि देव एवति पाल॥
षट पाल कै प्रथु पाल। .... ॥ छं० ॥ ४६ ॥
मति भ्रंम भूपति साज। आनंद उछव विराज॥
जगि जोग जुग्गनि नैर। उच्छाह घर घर कैर॥ छं० ॥ ४७ ॥
विधि भांन सुरपति भांन। चहुआंन तिन सम मांन॥
नव नेह ग्रह ग्रह दांन। कवि करैं कौन वषान॥ छं० ॥ ४८ ॥
वर जीह फनपति होइ। चहुआन व्याहक जोइ॥ छं० ॥ ४९ ॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन।

छंद वृद्धनाराच॥ परठि सेन सज्जि वीर वज्जए निसानयं॥
नाराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं।
गजं गजं हिलं मलं चला चलं गरिठ्ठयं॥
कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिठ्ठ उठ्ठयं॥ छं० ॥ ५० ॥
पञ्चौ सुभोम भार सो वराह कंध उन्नयं॥
चले सयन्न वंधि भूप चंद जंपि वोलयं॥
मनों दसंति काज सेन मेछि इंद्र तोलयं॥
ढुरंत चोंर गज्ज सीसना सिंदूर राजयं॥ छं० ॥ ५१ ॥
मनों चिजाम कंठ सूर चंद वंधि लाजयं॥
....
फिरंत डोरि कुंडली सुवाज राज दिप्पयं॥

कहौं दंत मंत हय पुर षुपरि। कुंभ असुंडह रुंड सब ॥
हिंदवान रान भयभांन मुष। गहिय तेग चहुवांन जब ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना।

छंद भुजंगी ॥ गही तेन चहुवाँन हिंदवाँन रानं। गजं जूथ परि कोप केषरि समानं ॥
करे रुंड मुंडं करी कुंभ फारे। बरं सूर सामंत झुकि गर्ज भारे ॥ छं० ॥ ६३ ॥
करी चीह चिक्कार करि कलप भग्गे। मदं तंजियं लाज[1] उमंग मग्गे ॥
दौरि गज अंध चहुआँन केरो। घेरियं[2] गिरद्दं चिहौ चक्क फेरो ॥ छं० ॥ ६४ ॥
गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सुझ्झै नर्षौ मझ्झि नैनं ॥
सिरं[3] नाय कम्मांन प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगवाजं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
लै चल्यौ सिताबी करी फारि फौजं[4]। परे मीर सै पंच तहँ षेत चौजं ॥
रजंपुत्त पंचास झुझ्झे अमीरं। बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना।

दूहा ॥ जीति भई प्रथिराज की। पकरि साह लै संग ॥
दिल्ली दिसि मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ॥

बर गोरी पद्मावती। गहि गोरी सुरताँन ॥
निकट नगर दिल्ली गये। चभुजा चहुआँन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना।

कवित्त ॥ बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुध घरी परट्ठिय ॥
हर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय ॥
ब्रह्म वेद उच्चरहिँ। होम चौरी जु प्रत्ति वर ॥
पद्मावति दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर ॥

(१) क्ट०–जाल। (२) क्ट०–करीयं।
(३) को०–तब। (४) को०–में "ले चल्यौ निकसि सब फारि फौजं" लिखा है।

कै हथ्थ भोर चंद कब्बि ता समंत पिष्पहीं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सु नष्पई सुरंग धाप बाज ताज उट्ठहीं ॥
मनों कि डोरि चक्करी सुहथ्थ हथ्थि नष्पहीं ॥
सुवीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रहई ॥
मनोकि तार नभ्भतेय काल तेज तुट्टई ॥ छं० ॥ ५३ ॥
लजै भजै मनं गतीय पुब्बता[1] कबी कहै ॥
सु अंषिका कुरंग गत्ति भांन देषिता रहै ॥
रजं रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥
उपम्म चंद कब्बिता कही तहां उतावलं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ पंच राइ पंचाल । लिम्न वैराट बद्ध बर ॥
जैत सींह भोंहा भुआल । का कन्ह नाह नर ॥
रा पज्जून नरिंद[2] । पांन ठंठरिय सिंघनग ॥
दह रावत आजांन । बाह बंधव सुबन्न अग ॥
बंधन सुमीर मेवार पति । अति उछाह आनंद धरि ॥
संजुरिय[3] जांन छचन सहस । सहस अद्ध बज्जन सुघरि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ जस वेली वर हथ्थ लै । फल पुच्छै चित रंग ॥
बर सोमेसर हथ्थ दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ छं० ॥ ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन ।

आयो बर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥
बाल वेस बनिता बनी । मनों संग रति मार ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सूर रूप रावर समर । वेस बाल सत पच ॥
प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित[4] रत्त ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) कृ. मो.–पुब्बका ।
(२) कृ. ए.–रा पजून पूरंन ।
(३) मो.–संमिलिय ।
(४) मो.–हिततच ।

मंडयौ[1] साह साहाबदी । अट्ठ सहस है वर सुवर ॥
दै दाँन माँन पट भेष कौ । चढ़े राज दुग्गा हुजर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना ।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज । छाड़ि साहाबदीन सुर ॥
त्रिपत सूर सामंत । बजत नीसॉन गजत धुर ॥
चंद्र वदनि मृग नयनि । कल ले सिर सनमुष्य जुष ॥
कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुष ॥
मंडल मयंक वर नार सब । आनँद कंठह गोइयव ॥
ढोरंत चवर किंकर करहि । मुकट सीस तिक जु दियव ॥ छं० ॥ ७० ॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

दूहा ॥ चढ़े राज दुग्गह त्रिपति । सुमत राज प्रथिराज ॥
अति अनंद आनंद सैं । हिंदवान सिर ताज ॥ छं० ॥ ७१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रिथीराज समुद सिषर गढ़ पद्मावती पाँणि ग्रहणं जुद्ध पश्चात पातिसाह प्रिथीराज जुद्धं श्री प्रिथीराज जुद्ध विजय पातिसाह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव संपूर्णम् ॥

(१) क-मंडयौ ।

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का वर्णन।

छंद मोतीदाम॥ चढ़ी घर जाहिन बाल[1] बिसाल। रची लघुवेस लगी चित्रसाल॥
तनं सुष चालय अंचल लेहिं। चपं चपला कुलटा गति केहिं॥छं०॥५९
चलावत चंचल अंचल नारि। मनों विधि देंहि कटाच्छन गारि॥
बंधे सुर नारि कयं सुर रंग। उरिं निरखें घन विद्युत अंग[2]॥छं०॥ ६०॥
भ्रमं भ्रम होइ सुहेम किरन्न। ससी पर होड़ मयूष अरुन्न[3]॥
मची वर बीरन पीकह[4] कीच। बरप्प कि मंगल सूर सु बीच॥छं०॥६१॥
भ्रमं भ्रम होत करं नप पान। परी छवि होड़ रवी ससि जानि॥
तिनं मुप यों नप में झलकाइ। न दिप्पहि उंच रहै ललचाय॥छं०॥६२॥
दिपै नग चीर चिराकन वांम। रचै जनु दीपक कामय स्यांम॥
सु उज्जल भेंन चिराकनि जोति। फिरै तहां बाल जराइन कोति॥छं०॥६३॥
उदै जनु लिच्छमी कंति [5]बिगास। किधों नप तेज किराज विलास॥
कहै कवि चंद उपम्म प्रकास। बन्यौ जनु प्रप्पन[6] तेज विलास॥छं०॥ ६४॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना।

कवित्त॥ वर कलस्स बर बंदि। बंदि तहनिय सर लिन्नौ॥
ग्रह सुरंग कवि चंद। तहां उप्पम बर दिन्नौ॥
घन चंदन बर पट्ठ। सिढ़िय सोभा सुफटिक मनि॥
घन प्रवाल पुंभिय विलास[7]। सिर सोभ सुरंग फुनि॥
उत्तरिय बीर रावर समर। बर जोगिंद नरिंद गति॥
स्रृंगार बाल भूपन कहौं। जु कछु चंद बरदाइ मति॥ छं०॥ ६५॥
दूहा॥ स्यांम वेस तन बालभय। घटि न कछूव किसोर॥
दोप बाल बरनत कविय। भयौ भेंर घर चोर॥ छं०॥ ६६॥
बर सुवस्त्र तजि बाल नें। सैसव[8] मिस सुंडारि॥
अब भूपन अब ग्रह करहि। जोवन चढत सवारि॥ छं० ॥६७॥

---

(१) मो०–घाम।　　(२) ए० कृ० को०–दुरि देखत मेघ तड़ित्त सु अंग।
(३) मो०–अरंग।　　(४) मो०–बीरह पीकन।
(५) ए०–बिगास।　　(६) मो०–दर्प्पन।
(७) मो०–विसाल।　　(८) मो०–शैशव।

शृंगार का वर्णन।

छंद चोटक ॥ तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली। प्रगटी जनु कंद्रप जोति कली ॥
जुसँवारिय केस सुरंग सुगंध। तिनं बर गुंथि प्रसून सु बंधि ॥ ६८ ॥
तिनं उपमा सु कहै कवि सुद्ध। लग्यौ ससि राहु अधंमय[1] जुद्ध ॥
चलें अलकें अलि चंचल घट्ट। लगी जुनु कालिय नागिनि पट्ट ॥ छं० ॥ ६९ ॥
जस्यौ ससि फूल धर्यौ मनिबद्ध। उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध ॥
त्रियं उपमा कबरी सु अलप्प। चढे मनु[2] मेर ससी लय अप्प ॥ छं० ॥ ७० ॥
रची मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि। तिनं उपमा बरनी सु विचारि ॥
परी रवि छोड मयूषन तार। भए जनु सिद्ध उधातम धार ॥ छं० ॥ ७१ ॥
बनी कबरी बर पुत्तरि बांम। अध्यातम पाठि पढावत कांम ॥
धस्यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ। मनों ससि रोहिनि आनि मिलाइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥
मनों ससि बीयक तीय समान। तिनं सिरसाइ लिलाट सुजांन[3] ॥
दुती दुतियं बरनो कवि चंद। दुत्यौ छबि देखि सरद्द कौ इंद ॥ छं० ॥ ७३ ॥
बनी बर भोंह सु बंकिय एह। मनों धनु कांम धरं विन जेह ॥
कहौं बर नासिक ओपम एह। सु काम भवन्न कि दीपक तेह ॥ छं० ॥ ७४ ॥
द्रगं उपमा दुति यों दमकै। सु मनों सुत षंजन के चमकै ॥
जु दिषै वर भाइ दुलोचन कोर। मुचावत कांम कमान के जोर ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाटंकन की उपमा इतनी। जु कही कवि चंद सुरंग घनी ॥
जु सुन्यौ रवि राहु ग्रह्यौ ससि है। सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै ॥ छं० ७६ ॥
उपमा सु कपोलन की चिलकै। जु मनों ससि ह्वै रवि में झलकै ॥
जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की। तिनकी उपमा कवि नै मनकी ॥ छं० ॥ ७७ ॥
दुअ पास कपोलन तेज कुर्यौ। मनों तारक लै ससि उग्गि उर्यौ ॥
जु चिबुकन की उपमा छिलज्यौं। मनों अंग सुता सितपच्च तज्यौं ॥
छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) मो०—अधर्म्मय।
(२) मो०—मनौं।
(३) ए० कृ०—सुजानि।

अथ प्रिथा व्याह वर्णनं लिष्यते ॥

(एक्कीसवां समय।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के बिबाह की सूचना।

कवित्त ॥ चित्र कोट रावर नरिंद। सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेसर संभरिय। राव मानिक सुभग्ग कुल ॥
मुष मंत्री कैमास। पांन अवलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि। ऐन उत्तर दिसि हिंडिय ॥
सुक्रवार सुकल तेरसि घरह। धर लिन्नौ तिन वर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर। समर सिंघ रावर वरह ॥ छं० ॥ १ ॥

सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना।

दूहा ॥ उत्तर दिसि आहुट्ठ कौं। दे कागद लिषि वत्त ॥
सोमेसर कीनौ मतौ। भगिनि दिये प्रथु पुत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

समरसिंह के गुणों का वर्णन।

चौपाई ॥ प्रवत्तवै[1] पहुमी बल राजं। अरु जोगिंद सबन सिरताजं ॥
समर सिंघ रावर चिंतिज्जै। पुचि प्रिथा चित्रंग सुदिज्जै ॥ छं० ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ वर प्रव्वत वैराज। नरन उत्तिम चित्रंगी ॥
वर आहुट्ठ नरेस। समर साहस अनभंगी ॥
वर मालव गुज्जर नरिंद। सार बंधौ वर अड्डौ ॥
उंच सगपन किये। पुत्त आवै घन अड्डौ ॥
बर बीर धीर जाजुलति नप[2]। शिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रिथकज्ज अज्ज मन संभरौ। सुनि संमर कीजै बरह ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ सोमेसर नंदन मतौ। पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि ध्रंम घर पंथ ए। हिंदवान कुल भान ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) मो०—पव्वयपति। (२) को०—ए०—पत।

कल ग्रीव विवछिय रेष वनं। सु अद्धौ मनु कन्दर पंच जनं ॥
विय षाल सुमालन लाल सजै। सुधसी जनु भारति नभ्भ तजै ॥छं०॥७९॥
गुंथी पट स्यांम सु मत्तिय माल। भयौ जनु तीरथ राज विसाल[१] ॥
उठी पट कुट्टिय कंचुकि वाम। कि जीयन को चिपुरं चलि काम॥
छं० ॥ ८० ॥
कछू छवि छत्तिय-की वरनं। सु रद्धौ मनों काम तिनं सरनं ॥
वर लंकिय लंकय सिंघ किनै। वर मुंट्ठिय मांचि समाइ तिनै॥ छं०॥ ८१॥
* पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै। * म्रगतिस्रह देषि मनों सु चुकै ॥
कटि मेषल उप्पमं एह धरं। मनों नौग्रह सिंघ सहाइ वरं॥ छं० ॥ ८२ ॥
सुभंत समुपिन अंगुरि तच्च। मिले गुरु मंगल हस्तनि पच्च ॥
वनी कर पौंचिय पहय स्यांम। तिनं उपमा वरनी वर ताम[२]॥ छं०॥ ८३ ॥
लटके वर अंग सु फुंदन लाप। झुलें मनु नागिनि चंदन साप ॥
वरनों मनि वट्ठि वढंत नितंब। सुभै जनु उज्जल द्वै रवि विंब ॥ छं० ॥ ८४ ॥
सकोमल जंघ सु रंग सुढार। भ्रमी मन चित पराद्दिय मार ॥
सजे बहु वार सिंगार सुरत्ति। चली तब हंस उथप्पन गत्ति॥ छं० ॥ ८५ ॥
सु एडिय उप्पमता कवि एह। रची जनु कोरिय कुंद नरेह ॥
वरने नख की उपमा कविता। सुजरे मनु कुंदन मुत्तियता॥ छं० ॥ ८६ ॥
†जल बूंद पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति। †कि तारकि तेज कि हीर प्रभत्ति ॥
वर गोप्प सुगंध सुजांनियनं। प्रगटे वर वास सदेव घनं ॥ छं० ॥ ८७ ॥
पट दून चवग्गुन से वरनं। सिनगार अभूषन ए कहनं ॥
नव सज्जिय बालत मोर मुपं। उपमा कविचंद कही सुरुपं॥ छं० ॥ ८८॥
इन भाइ सुमुत्तिय गुंज[३] वहोइ। द्रिगं अधरं प्रतिबिंब सजोइ ॥
करैं रंगरत्त दुकूल सु ओर। झुल्ले मुप ऊरध पाइ झकोर ॥ छं० ॥ ८९ ॥
बन्यो मनवंक मनोरथ जंम। करे जह चंद जु धूरिक क्रम्म ॥
मिले कि कंछू अधरा रस पांन। कहे कविचंद सु जीरन जांनि ॥छं०॥९०॥

(१) को०--प्रयाग।
* ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं है।
(२) मो --अभिराम।
† ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं है।
(३) मो०--गर्क।

कवित्त ॥ हिंदवान कुल भान। भ्रंम रष्षन सुवेद बर ॥
लै मुंजांनी ढाल। जुभ्भ्क संग्राम सार गुर ॥
सो चित्रंग नरिंद। प्रिथा दीनी प्रथिराजं ॥
हैम हयं गय अथ्थि। देन दिल्लीय सब साजं ॥
गढ अत्त बत्त गहिजैात गुर। सिंगी नाद निसांन बर ॥
कालंक राह कुप्पन बिरद। मछन रंभ चाहंत धर ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ सो भगिनी दीनी प्रिथा। सकल रूप गुन लच्छि ॥
चित्रंगी रावर समर। अंगन अट्टल सु अच्छि ॥ छं० ॥ ७ ॥

पत्र लेकर गुरूराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना।

कुंडलिया ॥ बाल वेस भगिनी प्रिथा। वरु समर केलि चित्रंग ॥
राज गुरू गुरराम सम। ताजी तेरह तुंग ॥
ताजी तेरह तुंग। मुत्ति नग माल सुरंगी ॥
बर दाहिम कैमास। वीर बंधव मुकि रंगी ॥
न्टप कग्गद गहि हथ्थ। कन्ह अग्गा बर एसं ॥
नर उत्तिम चित्रंग। दई बर बाल सुवेसं ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथा कुँअरि के रूप का वर्णन।

दूहा ॥ बर बरनत भगिनी प्रिथा। कहि न परै कवि चंद ॥
मानौं रति कौ रूप लै। धरि आई मुष इंद ॥ छं० ॥ ९ ॥

चौपाई ॥ सुफल दियौ फल लह्यौ नांहि। इंद्र सुबल बलि नवला वांहि ॥
सीस सूर मुष अगनि कुबेर। इन समांनह सुंदर हेर ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथा कुँअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन।

कवित्त ॥ स्वाहा ज्यों ग्रह अगनि। सीय ग्रह राम काम रति ॥
नल दमयंत संयोग। द्रुपद कन्या अरजुनपति ॥
इंद्र सची वा जोग। जोग गवरिय अरु संकर ॥
भांनर नाल्तिनि कन्ह। सोम रोहिनी नारि घर ॥

सु देषि कह्यौ कविरूप अभ्यास। मनों उठई मकरंद सुवास॥
सजे षट दून अभूषन वाल। मनों करि कांम करी रति माल॥ छं०॥९१॥
सु लज्ज सु संकर सों मन अंध। मनों अरनांमद अग्ग सुवंध॥
धस्यो तन कौरव वस्त्र कुंआरि। मंडी जनु संभ मनंमथ रारि॥छं०॥९२॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समरसिंह का मंडप में आना।

कवित्त॥ सय सुपंच वर विप्र। वेद मंचं अधिकारिय॥
उभय सहस कोविद्द। छंद तक्कह[1] अनुसारिय॥
सहस एक मागध सु। सित्त पौरांन पविचिय[2]॥
सहस अठ्ठ डाहालगत। गाइन सुर जित्तिय॥
उडिरेन धेन गोधूल कह। सहस दोष कट्टन घरिय॥
संभरिय ग्रेह[3] आहुठ्ठ पति। मिलि विधान[4] मंडप भरिय॥ छं०॥ ९३॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन।

छंद नाराच॥ विधांन धान मंडपं। जवांन जग्ग[5] पन्नयं॥
विपष्य चारि कित्तनं। समर्थ दैव रत्तनं[6]॥ ९४॥
धुनद्द धुंम्म सालियं। अषंड लंन वालियं॥
प्रजान पुन्य पानयं। सु पंच कोटि दानयं॥
सभूत भेम लच्छिनं। अभूत दांन दच्छिनं॥ छं०॥ ९५॥
दमित्त काम लंवरं। कलंक कित्ति रावरं॥ छं०॥ ९६॥
भ्रमेंन भूमि भारियं। अछंत पांनि धारियं॥
कुसंभ चीर गंठियं। प्रथा प्रसंग पट्ठियं॥ छं०॥ ९७॥
सु सद्दियं जयं जयं। सु सद्द विप्रयं लयं॥

(१) ए० को० कृ०—तर्क।
(२) मो०—पवित्तिय।
(३) मो०—एह।
(४) ए०—विवान।
(५) मो०—जग।
(६) यह तुक मो० में नहीं है।

अरुन्नयौ सु उदयं । सिकार सद्दयं सयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥
अविज्ज सिद्ध चारनं । विचार बार बारनं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ परनि बीर रावर समर । बहुत कहूं रस जोइ ॥
कवि वर वरनत ना बनत । और सुभय बहु होइ ॥ छं० ॥ १०० ॥
करे चंद बरदाइ दुहुं । बार बार मनुहार ॥
राज राज ढिग ढिग फिरै । मनों समहु रविनार ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मंडप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है।

कवित्त ॥ चौहानन के ग्रेह । इंद्र जचि[1] होय अग्नि वर ॥
अष्ट देव सत सील । नाम[2] संतोष मंच वर ॥
सहस गयन वर राज । धीर ढिल्ली अधिकारिय ॥
जच्छ देव गंध्रव्व । जयति जै जै उच्चारिय ॥
दिव देव लगन आवै घरी । तिम तिम बाढै पेम रस ॥
ज्यों चढे समुद हिल्लोर वर । तिम सु बीर वड्ढति जस ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दान सकल सामंत । न्यांत अग्गै अधिकारिय ॥
इंद्र साज कुब्बेर । इंद्र वासम न विचारिय[3] ॥
वचन रचन सचि कहहि । देव सचि कहै ग्यान सधि ॥
अष्ट जोग भुल्लै सभोग । निरपंत सकल सिाध ॥
जे जे नरिंद संभरि धनी । संभरि विधि सभरि चरित ॥
भूपाल बीर दरबार वर । तिहित देव लागे सुगत ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सांमतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ प्रथमं सुकन्हं निवंत्यौ सु राजं । कहौ उप्पमा चंद कव्वीति साजं
शतं[4] एक बाजी करी पंच दूनं । दियौ राज कन्हं निवंतौ स ऊनं ॥ छं० १०

(१) मो०--जच । (२) ए०--नास ।
(३) मो०--प्रति में "दान बरपत जलधारिय" पाठ है ।
(४) को० कृ० ए०--सितं ।

हयति कंति कंतियति। हथ्य पंतिय रवि राजै॥
सु कवि चंद वर दाइ। देषि देवाधि सु लाजै॥
बदि राज धांम संभरि धनी। किहि विधि लछी लछैं गुनैा॥
वेंढ सुगंग उड़गनति नभ। पत्त तरोवर गिर घनैां॥ छं०॥ १८४॥

दूहा॥ दांन मांन निरमांन गुन। भगति रत्ति नृप जोर॥
कहा दिष्षि कोइ लेइ निधि। भयो भरे[2] घर चोर॥ छं०॥ १८५॥

दूहा॥ तन अग्गै मन चल्लत है। मन अग्गे तन जाइ॥
जिहि विधि दांन सु उच्चरै। तिहि विधि पाप सु जाइ॥ छं०॥ १८६॥

दूहा॥ क्रम्मसु अति विधिनां रषी। अंग रोर सिर पान॥
तिन भंजन सोमेस सुअ। धनि संभरि चहुआन॥ छं०॥ १८७॥

चैापाई॥ दिसि दिसि पूरिय हय गय राज। प्रिथीराज सुरपुर सम साज॥
बाजै पंच सबद बनि रंग। रहबनि द्वादस सूर अभंग॥ छं०॥ १८८॥

कवित्त॥ एक दीह निड्डरह। राज रष्यो चिचंगी॥
* दुतिय दीह सामंत। गरुअ गोविन्द अभंगी॥
त्रितिय दीह पज्जून। बलि कूरंभ सुधारी॥
चतुर दीह नर नाह। कन्ह कीनी कित्ति भारी॥
पंचमैं दिवस कैमास बलि। बलि सुराइ सम जग्य किय॥
छट्टें सु दीह पुंडीर धनि। धीर रष्पि कीरत्ति लिय॥ छं०॥ १८९॥

कवित्त॥ सत्तम दिन रघुवंस। राम करनी कर मेरं॥
जिहि नंदी पुर भंजि। समर मनुहारि सुवेरं॥
अट्टम दिन अचलेस। अचल कीरति जिन रष्षी॥
नवम दिवस पाहार। जगत दारिद्द सु नंषी॥
दसमें पँवार धाराधि पति। सलष सु लषि पूरन्न विधि॥
दिन एक एक रष्पे सवन। पंच च्यार लुहाय निधि॥ छं०॥ १९०॥

(१) ए॰ क॰ को॰--उड़नति। (२) मो॰--भस्यो।
* एं॰ को॰ क॰ प्रति में "दुतिय गोविन्द सु दीह। गरुअ सामंत अभंगी" पाठ है।

रुक्की वस्त्र हेमं नगं पारि पारं। तिनं देषते देव गत्ती विचारं॥
दियं निड्डुरं राइ रट्ठौर राजं। भुजंगादि भुम्मै करै सब्ब साजं॥ छं०॥१०५॥
दियं बंध राजं सलष्षं पवारं। धनं राइ कुब्बेर लभ्भै न पारं॥
महा दंत दंतीन की पंति बंधी। दरब्बार मानो नगं जोति संधी॥ छं०॥१०६॥
दियौ जाम जद्दो सु जद्दो जुवानं। सहस्रं दसं हेम गज एक पानं॥
दियौ राज षीची प्रसंगंति बीरं[1]। उभै दून हथ्थी हयं सत्त सूरं॥ छं०॥१०७॥
रजक्की सु वस्त्रं अनेकं प्रकारं। दिषै वीर वीरं महा वीर सारं॥
दियौ राज गौइंद आहुट्ठ राजं। दियं तीस हथ्थी महातेज साजं॥ छं०॥१०८॥
इकं माल मुत्ती उतंगं सरूपं। तिनं देखतें भान झंनं न भूपं॥
अतताइ दीयौ लियौ नाचि राजं। छुतौ ईस भक्तं उदै देव साजं॥ छं०॥१०९॥
त्रिया रूप आगें महा पाप लष्षी। तिनं राज राजं निरष्षी अनक्की॥
दियौ राम राजं रघुब्बंस बीरं। तिनें पार कुब्बेर लभ्भ न तीरं॥ छं०॥११०॥
उभै सत्त बाजी उभै सत्त हथ्थी। तिनं सथ्थ एकं किरन्नी विरथ्थी॥
उऐ एक राजं दियौ एक भानं। दसं तेज राकी धराकी प्रमानं॥ छं०॥१११॥
दियं सत्त बंधं कनक्कं बिराजं। उभै सहस हेमं इकं बाज राजं॥
कियौ राज न्यौंतै अजम्मेर बीरं। सदा सागरं गौरयं लाज नीरं॥ छं०॥११२॥
दिए पंच बाजी सुरंगं तुरक्की। जिने धावतें बाइ की गत्ति थक्की॥
दियौ राज चंदं पुंडीरं सु बीरं। महा हेम सहसं उभै बाज तीरं॥ छं०॥११३॥
दियौ राज कैमास न्यौतौ नरिंदं। घरं पंचमौ भाग लच्छी स व्यंदं।
जितौ राज राजं दरब्बार हेमं। तितौ पंचमौ भाग अप्पौ सु तेमं॥ छं०॥११४॥
दियौ चाइ चामंड लष्षि प्रकारं। नवं निद्धि सिद्धं सुलभ्भै न पारं॥
रष्यो एक वस्त्रं उभै पंच बाजी। दियौ राजराजिंद राजिंद साजी॥ छं०॥११५॥
दियौ अल्हनं अंग इत्तौ प्रकारं। तिए तात के नग्ग लिन्ने सुधारं॥
हयं हेम रूपं गयदं सु लच्छी[2]। जिनं देषतें इंद्र दै ग्रब्ब गच्छी॥ छं०॥११६॥
दियौ दान सूक्ष्म[3] साहस्स कोरी। इकं बाज बीरं रजं पंच कोरी॥
दियौ राज चंदेल भोंहा विचारं। तिनं न्यौंत कौ कोइ लभ्भै न पारं॥ छं०॥११७॥

---

(१) को०—चीरं। (२) ए० को० कृ०—में "तिनं अंग अंगं विरष्षं सुलक्की" पाठ है।
(३) ए० को० कृ०—सूक्ष्म।

रावल का बारह दिन तक बारह सामतों ने अपने अपने यहां नेवता किया।

कुंडलिया ॥ रष्षि उभय षट[1] बीर बर। बर जंघारो भीम ॥
जिहि ओलें प्रथिराज की। को अरि चंपे सीम ॥
को अरि चंप्प सीम। देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यौ चिचंग। समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधांन न्रिम्मान। द्रव्य अर्चन करि चष्यौ ॥
रावर समर नरिंद। ज्योति द्वादस दिन रष्यौ ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना।

दूहा ॥ षट बीय द्यौस रषौ सु नृप। भर सु भांति बहु राज ॥
दिन बारह चिचंग पति। बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥

कवित्त। बजि बाजन अनुराग। सबर उच्छव बर धारिय ॥
नूर धूप तें अक्क। पंड हथिनापुर सारिय ॥
हुअ उक्काह दिल्लीस। बंधि गुड्डिय ग्रह[2] धारं ॥
मनौ सोम कल कोट[3]। करिय कल बल बिस्तारं ॥
धन ग्रहति ग्रेह उच्छाह हुअ। चाहुआन रवि बट्टयौ ॥
वेनिय[4] सुजस्स पुरषातनह। बल अनंत घट चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ १९४ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन।

छं० मोतीदाम ॥ इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार। सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन हार। इसो गुन पिंगल नाम उचार ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दसों दिहि पूरि न्रपत्तिय सेन। बिराजय राज अनंद सु अैन ॥
सुधिं सुधि बीर प्रकार प्रकार। चलें संग दंपति ज्यों रति मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥
ठनंकिय घंटनि हथ्थिय पूर। झिनं किय बाजिय साजिय सूर ॥
इकं इक हथ्थिय दासिय पंच। इसी सरसं गुन रच्चिय संच ॥ छं० ॥ १९७ ॥

---

(१) ए०--कृ०--वर। (२) मो०--घर द्वारं।
(३) मो०--कोटि। (४) ए० कृ०--विलिय।

नगं पंच मुत्ती इसी अट्ठ माला। जिनें द्रव्य कौ छेह आवै न पाला॥
बँधे साहि गोरी लघी तस्सबीरं। दई राज चौहान न्योतें सरीरं छं०॥११८॥
सतं पंच वाजी सतं अट्ठ हथ्थी। तिनं देखतें तेज कुब्बेर नथ्थी॥
दियौ राज जंघार जहां नरिंदं। तिनें नाम भीमं महातेज कंदं॥छं०॥११९॥
दसं बाज पंचं इकं[1] मुत्ति मालं। तिनं तेज आरत्त रवि किरन झालं[2]॥
वसं नीति व्यारं सयं समरकंदी। गुरं राम दीयौ मनौ राज इंदी॥
छं०॥१२०॥
लियौ ना सुराजं कछू नाहिं रष्यौ। पछै धम्म राजं सु राजं विसष्यौ॥
दियौ बीर चालुक्क बाहार बीरं[3]। सिरं काज राजं सुभारथ्थ भीरं॥
छं०॥१२१॥
न्रपं हथ्थ देतं सु सेवक्क मंडै। महा छत्र छत्री न छत्रीन पंडै॥
हथ्यौ राज प्रथिराज दै हथ्थ तारी। तिनं भारती कौन आवै प्रकारी॥
छं०॥१२२॥
दियौ टांक चाटा चपत्त प्रकारं। इकं बाज तेजं मनौ अग्नि सारं॥
दियौ बग्गरी देव देवाधि दानं। सहस्सन बाजी दियं बाह पानं॥छं०॥१२३॥
दियं अंबरं छाव सै पंच दूनं[4]। तिनं तेज आवन्न देषंत भूनं॥
हुल्यौ सर्व सामंत कौ गर्भ भारी। पछें दोन सीसं दियं हथ्थतारी॥
छं०॥१२४॥
दियौ राज हम्मीर चाहुत्ति इंदं। तवौ कब्बि चंदं उपम्मा सु छंदं॥
म्रगं नाभि कप्पूरयं गुंट बाजी। दियौ मुद्द[5] मुट्ठं तनं तेज ताजी॥
छं०॥१२५॥
इकं कास मीरं पची संती वंभं। इकं भद्र जातो सु हथ्थी अचंभं॥
सवं सट्ठ हज्जार भारं प्रमानं। दियौ चारके कष्ट सोभिनं दानं॥छं०॥१२६॥
दइ एक मालं सुमुत्ती सुरंगं। दिनं एक कौ मोल आवै सुभंगं॥
दियौ नीति रायं सुप्रिथीय दानं। पिथ्यौ राज चहुआन मथ्यौ न पानं॥
छं०॥१२७॥

(१) मो०—नगं। (२) को०—झालं। (३) ए० कृ०—बीसं।
(४) ए०—पूनं।
(५) मो०—प्रमीव।

विधिं विधि पूरन पत्तिय सोम। तिनं किय उज्जल सज्जल व्योम ॥
रहं रह राजन साजन सेन। मनों दिव देव दिवाधिय नेन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
तुरंगनि तुंगनि की प्रति घींस। लगै तिन मंद सुमंदह ईस ॥ छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ईस मंद संकर उदित। ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥
संभरि घर चित्रंगपति। के सन मानन जान ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ वर सु बुद्धि साधन सरीर। जोगह अधिकारी ॥
कार अदग्ग जग दग्ग। सरन रष्पन जुगचारी ॥
माया सों नहिं लिपत। नीर नीरज समान वर ॥
यें चित्रंग नरिंद। चतुर विद्या कोविद नर ॥
गोरी सु वंध सुरतान रन। जस लेयन जे जैति वर ॥
सा लच्छि रूप भगनी प्रिथा। परनि राज पत्तौ सुघर ॥ छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ जहां परनि चित्रंगपति। करी उलटि विपरीति ॥
सिर अप्पौ जुग्गिनि नृपत। देव लोक दिवजीति ॥ छं० ॥ २०२ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना।

कवित्त ॥ वाजे वीर सु वाजि। राज वज्जा सो वज्जा ॥
जस वज्जा वज्जासु। सम्म क्रंमं चित रज्जा ॥
सम न कोई चित्रंग। गहँअ गहिलोत गरुअ मति ॥
धनि सुध्रम्म अरु दान। दियो दिल्लीस बहु भँति ॥
भर मंडि वीर वुट्ट दिवस। सत्त अट्ट अरु पंच भति ॥
अग्गरें वांन वर काम छत्त। इक्क वार घट्टइ सुगति ॥ छं० ॥ २०३ ॥

रोला[1] ॥ जो दिन रची ढिल्ली प्रति मांनिय देव गति ॥
रति संपति सुख ग्रेह भार आर अति ॥
दुहुं तन सुमन निरप्पिय लोइ वर ॥
मानों सची सँजोग सुरपति आपु धर ॥ छं० ॥ २०४ ॥

दूहा ॥ कनक कीड सुप्पे जयति। रतिन कहै कवि चंद ॥
वर जानै कै दंपती। कै[2] दीपक कै चंद ॥ छं० ॥ २०५ ॥

(१) ए॰—कृ॰—को॰—चैापाई। (२) ए॰ को॰—के।

दई भान भट्टी निधी ताप कारं । उभै एक बाजी तुक्कं द्रव्य धारं ॥
दियौ बीर पाहार न्यौंतौ प्रमानं । तिनं दांन कैमास कों आच थानं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

मुरं दोइ बाजी सु तत्तं प्रकारं । दई लष्ष दूनं अधं तानि तारं ॥
दियं अल्हनं दानयं मत्ति घट्टी । इक्कं बाज रूपं अधं सहस पट्टी ॥ छं० ॥ १२९ ॥
इतौ अव्व सामंत दीनौ प्रमानं । सगा रष्यदानं करै को वषानं ॥ छं० ॥ १३० ॥

कवित्त ॥ जालंधर वर बाइ । बीर थट्टा मुलतानी ॥
बंग तिलंगी तुच्छ । कारनई निद्धानी ॥
वर गोतम दिसि गंग पार । परवत दिसि राजं ॥
मारू मालव राज । बीर बीरह गति राजं ॥
कुंकुन सकुंच कालिंग दिसि । कंदलेस कछ अच्छु गति ॥
न्टपराज राज राजन बली । सुबर बीर जा बीर मति ॥ छं० ॥ १३१ ॥

पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ वलिय राज प्रथिराज । सुअत सगपन सु द्रष्ट[1] गति ॥
न्रब्बल कौ बल राह । सबर बीरह सुबीर मति ॥
सुत्त सत्त रजपूत । फिरै चाव दिसि धारं ॥
अंग अंग तनु छुटै । क्रम्म सा क्रम्मय सारं ॥
मति गरुव राज राजन बली । धरैं अंभ लभ्भ सुधर ॥
चित्रंग राव रावर बली । उंच सग्गपन तत्त वर ॥ छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त । अति उद्दार पहु पंग । सुनिय जग बत्त श्रवन्नं ॥
बलिय भाव आद्दरन । पर्व सम पवित समन्नं ॥
बहुरि गरुअ तोंअर चिलेत । मानव मातुल गुर ॥
तिहित राज चिंतयौ । भ्रंम ब्रूरति बिवाह धुर ॥
इक मात पुच आनंग वर । दै भगनी दै पुच जनि ॥
संसार संभरिय राज गुर । भए सलष या परि सुभनि ॥ छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो.—द्रष्ठ ।

कवित्त। मति मध्या भय बाल। विनौ प्रौढा अधिकारी ॥
लच्छी सोज सहज्ज। रूप रति बरन सु सारी ॥
धीरं तन सिय सार। विरह मंदोदरि नारी ॥
पति लु हता रुक्कमनी। गिनी[1] कुँर्धिनि अधिकारी ॥
सा प्रथीराज भगनी प्रिथा। देव जंग्य सम जग्य किय ॥
आनंद रूप आनंद कथ। सोम नंद जस बंद लिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥

कवित्त ॥ अरुन तरुन उदयंत। सिद्ध सिक्कर फिक्कारिय ॥
दिसि उत्तर ईसान। दिसा दस दरुन उच्चारिय ॥
बिमल नाग वक्षिय विनोद। केलिय अविलंबिय ॥
बागवान दरिमीय। रवन राजन कर संभिय ॥
संचार सुमन सौरभ्भ वर। भ्रमर रोरि रंगिय करिय ॥
आगम अरंभ बर बरष फल। जगति जोति व्यासह धरिय ॥ छं० ॥ २०७ ॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी।

कहत व्यास जगजोति। नयर नागोर वसंतह ॥
जोइ नंदै सोइ नंद। हसै सो रहै हसंतह ॥
इंद्रपथ्थ पुर आदि। राज राजन बहु आनह ॥
अमर बेलि कीरति। अछेह साधन सुरतानह ॥
आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक। हमल हेल हल्लै भुअन ॥
प्रथमंग पुब्ब पच्छिम पथिर। होन बत्त गंध्रव सुअन ॥ छं० ॥ २०८ ॥

कवित्त ॥ रुधिर अकन्नित न्हान। कुच पुब्बह पच्छिम पर ॥
कोलाहल कमिनिय। कज्ज हारम्य देव हरि ॥
समर सून्य[2] मँडलीय। अमर विचार बार[3] किय ॥
द्रुपद राय पंचाल। दुसह द्रोपदिय चीर लिय ॥
* सोइ समय वरष इकईस मय। हरषवंत जुग्गनि कहिय ॥
बंचै विचार हिंदू तुरक। इक्क अचल कीरति रहिय ॥ छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए॰—को॰ कृ॰—गिनि।
(२) ए॰—सुन्य। (३) मो॰—सार।
* मो॰ प्रति में "सोई समय अमय पठ विय वरष" पाठ है।

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन।

अनग पाल तोंअर सु। ध्रम्म धारन उद्धारन॥
वंस वीय मातुलह। भए द्वै वीर सुभारन॥
कलि तारन अरि देह। जुगनि कित्ती विस्तारन॥
चाहुआंन कमधज्ज। वंस मातुल गुर पारन॥
प्रथीराज दिल्ली न्टपति। चित्रंगी वर चिंतयौ॥
पंचमि विवाह पंचमि घरिय। भलै मुहूरत में भयौ॥ छं०॥ १२४॥

कवित्त॥ व्याह मद्धि करनेस। जग्य मधें चित डोलै॥
दूतौ पाप कविबंध। देव देवासुर बोलै॥
ज्यौं चारन घर[1] निंद। जाइ भुक्तै अनुधारी॥
सा सुरिंद संग्रहै। दोष लग्गै जुग भारी॥
ग्यार सें अंन भषह सुहत। महा दोष अति ही सुवर॥
बडबंध होइ निग्रह घरन। लघु बंधव हुअ नरक पर॥ छं०॥ १२५॥

विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दान दहेज देना।

छंद पद्धरी॥ तिन मध्य विराजत राज राज। निर्मलिय कला रवि तेज साज।
ज्यूं जुगनि जूववर करन भोग। आए सु राज राजन सभोग॥ छं०॥ १२६॥
आए सुराज तिस्सुन नरिंद। हाडाल क्रंन कन्नह सुभ्यंद॥
पंचाल देस सोमेस सूर। झलकंत मुष्य न्रमल सनूर॥ छं०॥ १२७॥
आए सु वीर किन्नाट कर्न। धूंमह सुदेव धूम्मह सुपंन॥
एलची देस भांडेर वीर। आए सु कोटि मुष तिनह नीर॥ छं०॥ १२८॥
देवत्य व्याह चहुआंन कीन। दंघ्यं सु व्याह सम बरह चीन्ह॥
अप्पी सु पुत्रि सिवरह सु ग्रेह। कल वढी कला जिन लीन देह॥ छं०॥ १२९॥
अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमांन। आवन्न व्याह द्रुग्गह निधान॥
मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन। सिंगार सार सत सहस दीन॥ छं०॥ १४०॥
हुअ व्याह जनक सीता प्रकार। मिलि जग्य राज राजन सुभार॥
संभरि नरेस सोमेस पुत्त। रस मांनि वीर अव धूत धुत्त॥ छं०॥ १४१॥

(१) मो०–धर।

सभों का अपने अपने घर लौटना।

कवित्त। * "अप अप ग्रेह गुरंम्य" । राज राजन संपत्ते ॥
भोरा राव भिमंग । वत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
पामारिय प्रारंभ । भोर संभरि[1] आदानह ॥
सा दंडे सोमेस । पुत्त बंधन सुरतानह ॥
हेला हमीर हम्मीर सों । विजय राज कमधज्ज किय ॥
अच्छर अचम्भ[2]गल्हां गहअ । धरनि पंच चहुआन लिय ॥ छं० ॥ २१० ॥

कवित्त ॥ धरनि पंच चहुआनि । आनि फेरिय कर जित्तौ ॥
ता पक्ष हिंदू तुरक । सबै[3] बीनक ज्यों वित्यौ ॥
धीर मीर संग्रहिग । भीर भंजिय भिरि राजन[4] ॥
जै जै तन चहुवान । देव दुंदुभि घन वाजन ॥
जिहि ग्रहन पानि रावर समर । इम्र आगम जोतिग कहै ॥
अप अप्प कंम केलिय कहन । लिप लिलाट नित्तौ लहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग करि । रज रज अप्प प्रवास ॥
लीन सगोरी दंड धपि । पह सित्त पंचास ॥ छं० ॥ २१२ ॥

शाह गोरी का रावल को दहेज देना।

कवित्त ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग । बीर गज राज सु अप्पिय ॥
ते लीनों सुरतान । साहि गोरी गोरी किय ॥
पंच सित्त पंचास । एक सो तुंग तुरंगम ॥
सो दासी चतुरंग । सत्त ढोलिय अचंभम ॥
चतुरंग लच्छि चिचंग दे । घर सोमेसर थप्पियै ॥
बुलाइ[5] सजन रावर समर । पंच कोस मिलि जंपियै ॥ छं० ॥ २१३ ॥

---

* मो० प्रति में यह पंक्ति नहीं है।
(१) ए० को० क्ष—सभि।
(२) ए०—प्रबंध।
(३) ए० को० क्ष० प्रति में नहीं है।
(४) ए० को० क्ष०—रावन।
(५) क्ष०—बोलाई।

साटक ॥ ऐ सोमेस सुतंन संभरि जयं। तारंग सूरं बरं ॥
सा दुज्जं दुज भंम्म देवति धरा। आर्ष अर्षजं पलं ॥
तामध्यं न्रप अंस सोम न्रपयं। नामं नरिंदं धुरं ॥
प्रिथ्थू नाथ सनाथ जग्य करनं। राज्यंद राजं गुरं ॥ छं० ॥ १४२ ॥

ब्याह के पीछे दर्बार में आना।

कवित्त ॥ दलन मंभ सब राज। आइ दरबार सु इंदं ॥
ज्यों नछित्र विंटयौ। सरद सोहै अति इंदं ॥
कनक पंति नग व्यंट। भांन विंट्यौ सुमेर बर ॥
जस विंट्यौ मल सोई। ईस विंट्यौ सु जटबर ॥
यों विंट्यौ राइ सोमेस सुप्र। सबल राज राजन गरुअ ॥
आरत्ति बीर देषति न्रपति। भांन चंद लग्गै लहुअ ॥ ॥ छं० ॥ १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ गरुअ सु लग्ग सु अर गिरि। गरुअ लगै प्रथिराज ॥
चावद्दिसि लक्खी सु जन। काजन मुक्किय काज ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा ॥ लयौ जनम या कज्ज न्रप। धर धर धरपति कांम ॥
चाव द्दिसि भूपति सुभे। जु कछु भूमि पर धांम ॥ छं० ॥ १४५ ॥
छन्द पद्धरी ॥ जो कछू राज राजन नरिंद। सो भये कांम प्रथमीस इंद ॥
नर वर न्रपत्ति दीसै प्रमांन। उज्जले गंग ज्यों भंम ध्यांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
बर सुबर बीर पग मुक्कि धीर। बहु द्रव्य इंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि अंग अग्ग अग्ग प्रमांन। उच्छास लोइ मंडे निधान ॥ छं० ॥ १४७ ॥
कनबज्ज बीर मुक्की सु लच्छि। तिहि देषि इंद्र कौ अब्ब गच्छि ॥
कुब्बेर कोपि अंतर निरष्षि। सो अंन धार अग्ग अग्ग बरष्षि ॥ छं० ॥ १४८ ॥
बहु बंधि संधि मनु देव काज। मंगल सु जोर नीसांन बाज ॥ छं० ॥ १४९ ॥

रावल का रनिवास में जाना।

दूहा। बर बंदे सुंदरि सकल। चावद्दिसि फिरि पंति ॥
मनु अंग अंग अनंगनर। रति बर राजति कंति ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो०--प्रलं।

पृथा व्याह की फल स्तुति ।

सुनै ग्रहै उग्रहै । बत्त बिय सम उच्चारै ॥
लिषै दिषै अरु सुनै । सुद्ध मंची सुद्धारै ॥
प्रथा व्याह संभरै । पंच भै। अंचन लग्गै ॥
सेस फनंमित सुभट । काल पंसी नन लग्गै ॥
साधवी सीय भगनी प्रिथा । प्रथा वरन चित्रंग पर ॥
इन सम न कोइ भुवनह भयौ । नन ह्वैहै रवि चक्क तर ॥ छं० ॥ २१४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिथा विवाह वर्णनं नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २१ ॥

कवित्त ॥ वरनि चारु उप्पर । उतंग अच्छित मुत्ताहल ॥
सस्रि उप्पर ससि किरनि । धीर सुषे गुन चाहल ॥
चावद्दिसि अंगना । अंगनं मित गुन मंडहि ॥
एक एक कों मिलत । एक लज्जा तन छंडहि ॥
प्रिथा दिष्षि झंपि चिषंगपति । अच्छित मंगल विक्रति ॥
छोछंन छोट छोटन कियें । अनयं नारि नंषे सुहत ॥ छं० ॥ १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना ।

छंद भुजंगी ॥ दियं अंग अंगंति अंगं तिरंगं । बुले बेद बेदं सुजं सचं भंगं ॥
कला की अनेकं प्रकारंत व्याहं । टरे लग्न लाहं मई मंत राहं ॥छं०॥१५२॥
दियं दस्त थालं तिलक्कंति राजं । तहां चंद कव्वी उपम्माति साजं ॥
मनों ककमोदंत ज्यों वृंद साजं[1] । मिल्यौ जाइ चंदं सु मुत्तीनि पाजं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
दिसा देव मंचं असंषंति धारें । न्टपं भ्रंम सोधे विधी देव टारें ॥
बुले विप्र अंगं सु विद्दी सुवेदं । मनो देवता अग्ग बूले सवेदं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
नृपं राव दिट्ठं कव्वरंति टारे । फिरें भावरी भांन सुम्मेर सारे ॥ छं० ॥ १५५ ॥

हृषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे ।

कवित्त ॥ श्री पति साह सुजांन । देस थंभव सँग दिन्नो ॥
अरु प्रोहित गुर रांम । ताहि अग्गया नृप किन्नो ॥
रिषिकेस दिय ब्रह्म । ताहि धनंतर पद सोहे ॥
चंद सुतन कवि जल्ह । असुर सुर नर मन मोहे ॥
कवि चंद कहे वर दाय वर । फिरि सुराज अग्गया करिय ॥
करि जोरि कह्यो पीथल नृपति । रावर सत भावरि फिरिय ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दोहा ॥ निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जेहि दिल्ली थांन ॥
दास भगवती नांम दे । प्रिथीराज चहुवांन ॥ छं० ॥ १५७ ॥
रिषीकेस अरु राम रिष । बहु विध देकर मांन ॥
प्रिथा कुंवरि परनाय कै । संगि चलाये जांन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

(१) मो०—छाजं ।

अथ होली कथा[1] लिष्यते ॥

[बाइसवां समय ।]

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ इक दिन प्रिथु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्या गई । फागुन मास मझार ॥ छं० ॥ १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष । बुल्लैं बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं । निकसैं टोला टोल ॥ छं० ॥ २ ॥
च्यार बरन इक्कत्त मिल । कलह रूप कलहंत ॥
पाधि अपाधि न जानहीं । ज्यों मन[2] नहिं विलसंत ॥ छं० ॥ ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं । हिय हरष्य सुपदाय ॥
जु कछु भयौ सु कहौ तुम । तुम बानी बरदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥

चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी वहिन ढुंढिका थी ।

ढुंढा नाम रायस हुतौ । चहुवाना कुल मज्झि ॥
तस लघु भगिनी ढुंढिका । जोंवन रै सुप संझि ॥ ५ ॥

ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका वैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते वीता ।

ढुंढि गयौ वानारसी । सत्त वरस तप किन्न ॥
तब ढुंढी सुनकैं गई । रची ध्यान सुप चिन्ह ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) मो० और को० प्रति में यह (होली) समय नहीं है । (२) ए०--माहि ।

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना।

कवित॥ एक फिरत भांवरी। साठि मेवात गांम दिय॥
दुतीय फिरत भांवरी। दुरद दस एक अग्गरिय॥
त्रितिय फिरत भांवरी। दयौ संभरि उदक्क कर॥
चौथी भांवरि फिरत। द्रव्य दीनौ अनंत वर॥
चहुवांन चतुठ चावद्दिसा। हिंदवान वर भांन विधि॥
गुन रूप सहज लच्छी सुघर। सहज वीर बंधी जु सिधि॥ छं०॥ १५८॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन।

छंद भुजंगी॥ अनेकं अनेकं प्रकारंन सव्वी। करै राज ध्रम्मं इतं ध्रम्म कव्वी॥
मिले सर्व छिची इते व्याह राजं। तिलभ्भै नहीं नेक राजं सुसाजं॥ छं०॥ १६०॥
महं भाजनं रंग रामं प्रकारं। कला अट्ठ मांनों सु हथ्थं पसारं॥
रतं नील रेनं किते स्याम सेतं। तहां ओपमा चंद वरनै सहेतं॥ छं०॥ १६१॥
गुरं भांन चंदं अरी राह राजै। मनों एक नपित्र सज्जे त्रिसाजै॥
उडंतं अवीरं घनं सार रंगं। तिनं देवता वास भूलंन भ्रंगं॥ छं०॥ १६२॥
किते भेद भेदंन मिष्टांन रूपं। तिनं वास देवं लगै सोम भूपं॥
विधं कुंड मंडप्प मंडे उतंगं। तिनं वास भ्मौरं अली भूलि संगं॥ छं०॥ १६३॥
जिनी विह चित्रंग गावै अपारं। दियै विप्र गारी सवं सक्ति सारं॥
तुमं महि छिची न जानंत तत्तं। तिनं वंस कोनं सु पुच्छे अभीतं॥ छं०॥ १६४॥
रसं रचि छच्छी वडी पग्ग उट्ठी। तिनं ढुंढि ढंढान नीके निपट्टी॥
वडे राज देवत्त वीसल्ल नारी। सराधार भारं वली सचु भारी॥ छं०॥ १६५॥
तुमें चित्त चित्रंग चित्तं विचारं। तुमं ब्रह्म वंसं हरें सचु भारं॥
दियौ राज हारीत रिषं प्रमानं। कह्यौ तप्प एकं गए कंग पानं॥ छं०॥ १६६॥
सिवं लिंग विक्के तुथ्यो सो अघाटं। तिनं ठांम नामं धर्यो मेद पाटं॥
रमै विप्र साथं सु हारीत रिष्षं। करै सेव वालं स आहत्त सिष्षं॥ छं०॥ १६७॥
किते छंद भेदं किते गान गावै। किते देवता सेव पुष्पं चढ़ावै॥
करै रष्षि तप्पं दिनं गंग न्हावै। तहां उज्जलं गंगषं नीर धावै॥ छं०॥ १६८॥
करै अंग कष्टं सधै पंच अग्गी। महा तेज कीनं तनं पंच नग्गी॥
कियं पूरनं तप्प तथ्थं स अग्गं। लियं लष्य हारी अहारी सु मग्गं॥ छं०॥ १६९॥

ढुंढै तन मन जग्य मैं। बाल कियौ भसमंत॥
प्रिथीराज चहुवान भय। भए सूर सामंत॥ छं०॥ ७॥
तब ढुंढी वैठी रही। सत्त बरष जग जान॥
पवन खाय सेवा करै। ताको सुनौ वषान॥ छं०॥ ८॥

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय। मँगि ढुंढी वरदान॥
हम सहै तब सह करनि। भष्षि करै नर जान॥ छं०॥ ९॥

ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं।

बाल वृद्ध भष्षन करौं। हम को दे महमाय॥
यह बानी सुनि सामुही। रष्या करनी राय॥ छं०॥ १०॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके।

तब गिरिजा पति सौं कह्यौ। ढुंढी रष्पसु वत्त॥
ढुंढी नर भष्षन करै। सोय विचारौ मत्त॥ छं०॥ ११॥
गिरिजा सिव मिलि यौं कहै। एक अपूरब वत्त॥
जोगी जंगम बाहुरैं। से राषे नित नित्त॥ छं०॥ १२॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकें, गदहे पर चढ़ैं, तरह तरह के स्वांग बनावें उनको छोड़ और जिसको पावे वह भक्षण करै।

विहल विकल बानी असुर। बोलहिं बोल अनन्त॥
एता नर मारीत जवि। अवरनि कौ करि अंत॥ छं०॥ १३॥
सिव अग्या पवनह दई। प्रिथमी घर सहु अंग॥
फागुन मासह तीन दिन। करौ अनेरौ रंग॥ छं०॥ १४॥
रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहिं। सूप सीस धर लेहु॥
गोसा बंधे गलि फिरै। हो हो सबद करेहु॥ छं०॥ १५॥

जिती काल वेसं वढे वाल पत्या । तिनं देपिकैं सद्द जाजुल्य गत्या ॥
रिपं उंच तेनं दिनं मोल पायं । नहीं मुष्य मंझौ लियौ भोलि पायं ॥छं०॥१७०॥
चल्यौ अद्ध सीसं किये उद्ध पायं । महा तेज दुःष्यं दिष्यौ रिष्य रायं ॥
नमो मंच मंत्री नमो चौसपालं । दियौ राज वंसं जमं कौ विसालं ॥छं०॥१७१॥
रयं मंच प्रम्मान दिष्यौ सुरिष्यं । दई भूमि जुग्गं जुगंतं विसष्यं ॥
तिनं वंस चिचंग चिचं सु राजं । परं नीति वीरं प्रिथा वाल व्राजं ॥छं०॥१७२॥

छंद गीता मालची ॥ ढलकंत वेंनिय वाल सेंनिय म्रग्ग नेनिय गावईं ।
मधुरं सबद्दं रहसि वद्दं चइ चद्दं भावईं ॥
वै स्याम सोरं गुनति गोरं चिच सोरं सोचईं ।
गुञ्जंत[1] थोरं उठे कोरं वेस भोरं मोचईं ॥ छं० ॥ १७३ ॥

विवाह की शोभा का वर्णन ।

कवित्त ॥ विधि शृंगार रस वीर । हास करुना तन धारिय ॥
रुद्र भयानक मंत । करी करुना ता वारिय ॥
करुना तजि रस अट्ठ । भयौ नृप राज विवाहं ॥
सुप सनेह धन अेह । राज जोगिंदति साहं ॥
सुप व्याह सजन सम हत रवन । गई नट्ठि चय जांम निशि ॥
सहदेव देव देपन चलह । भुगति मुगति धन राज वशि ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ सा सुंदरि सुंदरि सुकथ । रस[2] दरसन परिमांन ॥
मनों देव देवाल वजि । वर दुंदभी निसांन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

छंद भुजंगी । वजे दुंदभी भेरि देवाल थानं । करे युत्ति रुपं अनेकं प्रमानं ॥
न्रिपं भीर औसीं दरव्वार थानं । मिले पंड पंडं सुराजान जानं ॥ छं० ॥ १७६ ॥
प्रिथा रूप आगैं प्रथी कौन औसी । जनक्कं सुदारं सिया रूप कैसी ॥
भुगत्ती मुगत्ती हितं ताइ कारं । सबै दिष्यियं राज राजं दुआरं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
महा भोजनं ते प्रकारं विलासं । तिनं स्वाद तें देव छंडे न पासं ॥
रचै अग्नि स्वाहा सुदेपत्ति होज । महा जग्य जापं अहंतं सोज ॥
छं० ॥ १७८ ॥

(१) क्ष०--उजंत । (२) को० क्ष०--सर ।

ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया।

ढुंढी आइ जहां तहां। दिष्षे लोग अजान ॥
हो हो करि रासभ चढ़ैं। ए कवि कहै बषान ॥ छं० ॥ १६ ॥
चटक चटक दिन प्रति भये। मद मादक अप्रमान ॥
नर नारी सब मति गई। ए पन मन अनुमान ॥ छं० ॥ १७ ॥
सिंधू राग बजावहीं। गावहिं नवला गीत ॥
हो हो करि हा हा करैं। ए मंडी विपरीत ॥ छं० ॥ १८ ॥
घरि घरि अगनि प्रजारहीं। उभिक्क धूर अरु राष ॥
नाचैं गावैं परस्पर। चिया दिषावत काष ॥ छं० ॥ १९ ॥
इहि विधि वाउ जषावित। फगुन मास सों भाव ॥
लज्ज भज्ज विहघन गई। भावै पात सुपाव ॥ छं० ॥ २० ॥

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया।

इहि विधि दुरित निवारियौ। मिट्यौ सबी उर दंद ॥
आयौ चैत सुहामनो। ग्रह ग्रह भयो अनंद ॥ छं० ॥ २१ ॥

जाड़ा बीतने और वसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिया की स्तुति करते हैं।

श्लोक ॥ गतेनु पार समये। वसंते च समागमे ॥
होलिका प्रव्व पूज्यंते। ढुंढा देवी नमोस्तु ते ॥ छं० ॥ २२ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नांम वावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्।

छिन छिन्न लंका सपत्तौ विराजै। दिनं अष्ट ग्रेहं रचै द्वार सांजै॥
सुई राज लच्छी न पूजै सुकंती। जये देवता जग्य सें जीमवंती॥ छं०॥१७९॥

कवित्त॥ बहुत संसधन सार। असन बलमीन समंक्रत॥
अनँग जोग फल अनत। पान मिष्टान असंक्रत॥
छिति छिची विधि सजहि। देहू लजी लछि रुपं॥
रंक रंक गति क्रंति। होइ राजिंद सुभूपं॥
नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु। चाहुआन रंजे सुभर॥
जानिये राज राजन कै। सुरा थान माया सुधर॥ छं०॥ १८०॥
अग्र दीप धनसार। बंटि म्रगमद्द पान रस॥
बहुत सरस रस राज। दिष्षि प्रतिब्यंब अप्प जस॥
अरति ब्यंद अरबिंद। कमल कैरव ससि सागर॥
भुगति सुगति संग्रहै। मुक्ति संजै अति आगर॥
मय मंत कूअ[1] अष्षा अषम। लषिन बतीस सुवंधि गुन॥
तिहि काज भोज राजन करत। उच्छाहं प्रथिराज मन॥ छं०॥ १८१॥

दूहा॥ माया सोष[2] सु देषि कैं। गति भूखे चालाहि[3]॥
मानैं मंच सुमंति[4] गति। बर ब्रह्मा बस मांहि॥ छं०॥ १८२॥

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन।

कवित्त॥ एक एक रन जोग। गरुअ दहरूत्त चित्त बिधि॥
सांम दांन लघुसंति। कंति सग्गीति संति सिधि॥
अबलि बाज गज एक। उभै अप्पै नर बस्त्रं॥
हेम हीर रजकीय। पार पावै ना मंतं[5]॥
गरुअत्त गरुअ भय अत्त हैं। सत हथ्थिय करनिय जुगति॥
प्रथिराज राज राजन वलिय। देव दांन राजन भुगति॥ छं०॥ १८३॥

कवित्त॥ राज दांन बिधि देत। लग्गि आचिज्ज थांन चिय॥
नाग लोक सुर लोक। रवी मंडल नर नर चिय॥

(१) मो०-कुआ। (२) मो०-सोभ। को०-सोख।
(३) मो० क्र० को०-चलाहिः।
(४) ए०-को०-क्र०-मंत। (५) मो०-मत्रं।

अथ दीपमालिका कथा लिष्यते ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथिराज नृप । कहो चंद कवि सव्व ॥
होतु सुकातिक मास महिं । दीप मालिका प्रव्व ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उतिपत्ति सव । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतव्रत राजसय । प्रलय दिषायो देव ॥
तासुत सोमेसर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ छं० ॥ ३ ॥
बहुत पुष्प पालै प्रजा । रिद्ध दिद्ध मंडान ॥
च्यार वर्न चंहु आश्रमहि । दान मान परिथान ॥ छं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक बैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रह तहि ॥
बारी वाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घहि ॥ छं० ॥ ५ ॥
तहां वसे सतश्रंम द्विज । वेदवंत वल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी । ताछर नाहीं रिद्धि ॥ छं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रष्प सम । व्रिथा जीव तुम कंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
विथ्या जीवन मनुष कौ । जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[1] उपचार कर । करै रहै वन वास ॥ छं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।

तव सतिश्रम आदर करिय । ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम विथा गयो । पाप उदय तन देखि ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ सपनो अथ्थ विहूनौ । सेवेरने न भापयौ दीनौ ॥
मंगह मरन मह गोन । वीक्रि नेम न मानि कित ॥ छं० ॥ १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है ।

दोहा ॥ सत्ति सरम सत वरष लो । सेये विष्णु नरंत ।
विष्णु वतायौ ब्रह्म कौं । ताको पार न अंत ॥ छं० ॥ ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय । रुद्र बतायौ ताम ॥
रुद्र कह्यौ माया वरहु । करै हमारौ काम ॥ छं० ॥ १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ॥

त्रियन बरस त्रिय मास दिन । त्रीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी । दिय चौदहौ रतन्न ॥ छं० ॥ १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है ।

तव सतिश्रम ऐसी कही । कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवै नरपति नाह कों । एह बातएहु तिद्ध ॥ छं० ॥ १४ ॥
दिन पद्धर बुधि उप्पजी । दिन विहसि बुधि जाइ ॥

(१) क्र·–का ।

कवित्त ॥ अग्गैइ रावर समर । करन साहस चहुवानिय ॥
हलहल अग्ग प्रचंड । संभ सोभै गर बानिय ॥
*अग्गौं अग्ग जुगिंद । अग्गि लग्गै विरुझांनिय ॥
अग्ग सिंध निड्डुर नरिंद । उड्ढ चंपै परवांनिय ॥
अग्गे व काल सुनिये दुसह । सह पिच्छै फिरि ठड्डयौ[1] ॥
चित्रंग राव रावर समर । संभरि वै दिसि चड्डयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन ।

रिंग्यो सबर[2] नरिंद । सज्जि हे गै चतुरंगिय ॥
हय गय दल चतुरंग । जंपि माहा भर जंगिय ॥
महा सुभर गज्जंत । ष्षूंदि षुरधर आहुट्टिय ॥
सेस सहस फन फट्टि । सकिलि[3] सल मलि साहुट्टिय ॥
फट्यौ सु सेस फन चंद कहि । तब फूंकर करि जग्गयौ ॥
फन किन्न उद्ध कुंडल करिय । तब सु सेस बल भग्गयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥ वरं बिंटियं समर साहस नरिंदं । मनौं बिंटियं उड़गनं अभ्भ चंदं ॥
किधो इंद्र पासं सबं देव राजै । किधौं मेर तीरं सु पव्वै विराजै ॥ छं० ॥ २८ ॥
उयौ छत्र सीसं विराजै कला की । मनों इंद्र इंदी वरं चंद[4] जाकी ॥
दुतीता उपम्मा कवी का बषानं । मनों हेम के दंड पर चंद जानं ॥ छं० ॥ २९ ॥
ककू स्यांम पाटं विराजै करारी । मनो कहइ सोम कालंक कारी ॥
मयंमद गज्जं सबद्दं सु उट्ठै । बरष्षंत दानं मनो मेघ वुट्ठै ॥ छं० ॥ ३० ॥
बजै ता जंजीरं अनेकं सबद्दं । मनौं बुल्लियं झिंगुरं मास भद्दं ॥
धजं धज्ज हालै विराजै फिरंती । मनौं मंडियं बग्ग घन मझ्झि पंती ॥ छं० ॥ ३१ ॥
गजं उप्परं ढाल सोहै ढलक्कैं[5] । मनौं कोलि उग्गी गिरं कज्जलक्कैं[6] ॥

---

* यह पंक्ति मो०--प्रति में नहीं है ।

(१) मो०--उट्टयो । (२) मो०--समर ।
(३) मो०--सफल । (४) मो०--बन्द ।
(५) मो०--ठलक्कं । (६) मो०--कज्जलक्कं ।

दीप दिपायो बुद्धि वर। बुझै दीप लछि जाइ ॥ छं० ॥ १५ ॥

गाहा। को कौन पथीयो। को कौन जचीं ॥

कह कहन नामियं सीस। दुभर[1] गम्रर चक्र श्रे किन्नयं किन कायवं ॥ छं० ॥ १६ ॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है।

दोहा ॥ बंभन बुद्धि विनास हुइ। तहं दिप्पै लछिवास ॥

कार्तिक मावस सोम दिन। लछि आवहि तिहि पास ॥ छं० ॥ १७ ॥

लच्छी जल निधि हो वसी। निकसि तिहू दिन दिन्न ॥

अगर कपूर सुदीप दर। जहां पान उर पिन्न ॥ छं० ॥ १८ ॥

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग।

बंभन राजा सेवनौ। वरस भये दुश्र च्यार ॥

तव राजा वरदान दिय। मंगौ मन्नि विचार ॥ छं० ॥ १९ ॥

ब्राह्मण ने दीपदान वर माँगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले।

तब बंभन ऐसो मँगो। दीपहु दान विचारि ॥

कार्तिक मास समुद्द दिन। दीप नवै संसारि ॥ छं० ॥ २० ॥

अच्छे लोयन अछि तहां। अच्छे लोयन निपान ॥

नर नारी उद्दिम रहै। पीक परी तिहिपान ॥ छं० ॥ २१ ॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या माँगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ।

कहा मँगी तुम देवता। पच्छिम बुद्धी विप्र ॥

अन धन गांव गंमार मगि। घर जाओ तुम विप्र ॥ छं० ॥ २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई।

(१) ए.–उभर।

सितं अट्ठ हज्जार विंध्यौ नरिंदं। तिनं उप्पमा दिप्पि जंपी सु चंदं ॥छं० ३२॥
सबै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं। मनों पारसं भांन ग्रह एक एकं॥ छं० ॥ ३३॥

परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागोर को चले।

दूहा ॥ करि मत्ता चढ्ढे न्रपति। समर राव चहूवांन ॥
नागोरह आए धराँ। मद्धि कढ्ढि मेलांन ॥ छं० ॥ ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शाहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चितैारपति धन निकालने नागोर आए हैं।

भ्रंमादन कायथ लभे। परठि दूत पतसाह ॥
ढिल्लि वै चित्तारँपति। धन कढ्ढै धरमाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना।

कवित्त ॥ जाइ सपत्तौ समर। चंपि ढिल्ली धरवानं ॥
चहुआना रै हथ्थ। दूत दीनैा फुरमानं ॥
असम विषम साहसी। रत्त माया अनुरत्तं ॥
कमल पत्त जल जत्त। मध्य अरु न्यारैा जत्तं ॥
छिप्पै न कलक काटन कलक। राज बंध बंध्यौ नहीं ॥
दस कोस कोस ढिल्लीय तैं। राज मुक्कि राजन तहीं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर अगवानी करना।

कवित्त ॥ राजं है दरबार। सुबर आनंद उपन्नौ ॥
पुब्ब पाप कट्टनह। समर जिन समर संपन्नौ ॥
सुबर वीर जोगिंद। चंद बिरदावलि दिन्नौ ॥
दिल्ली तें अधकोस। राज अग्गे होइ लिन्नौ ॥

* छंद ३४-३५ मो०—प्रति में नहीं है और को० प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं।

अंपने घर तव आय करि । तेज लियै मन एक ॥
रुई सेर सवा लई । इह तन की जु विवेक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए ।

कार्तिक आयो कलपतरु । विप्रह भयो उछाह ॥
मंग्यो हतो सु देउ प्रभु । पठ्ह बाज वहु नाय ॥ छं ॥ २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न वाले।

तव आयस नरपति कियो । कोय न वाले दीप ॥
आज्ञा भंग जो को करै । ताहि वँधाऊं चीप ॥ छं० ॥ २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए ।

लच्छि समंदं निस्सरी । आई नगरह तथ्य ॥
अंधारौ अहि पूरजे । सु दीपक दिठ्ठौ जथ्थ ॥ छं० ॥ २६ ॥
वंभन कै घरि दिष्षि करि । आइ सही दरवार ॥
अह निसि वासै हम वसै । लच्छी कहै विचार ॥ छं० २७ ॥
लच्छी वच्छी क्या करै । दारिद दहि मुहि मत्त ॥
तू पाला घर थान रहि । सदा दुचित्तै चित्त ॥ छं० ॥ २८ ॥
मो संगि सथ्यि जु निरवहै । नदी पवनि गिर दंद ॥
रात दिठ्ठ वासो वसों । सं छंडौ मति दंद ॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म में तेरे घर वसूंगी ।

तव लच्छी सु प्रसन्न हुइ । कटे रोर करंक ॥
सात जनम तुरि घर वसैां । एक वसत अकलंक ॥ छं० ॥ ३० ॥

तव दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा।

तव दारिद्र जु भजि चल्यौ । वंभन पकर्यौ धाय ॥

मंडरी मंडि देषै सु कवि । मति डंमरि लभ्भै न दुद्द ॥
समरद्द सु ग्रेह्द अरु समर अति । समर सुवय अरु समर जुद्द[1] ॥ छं० ॥ ३७ ॥

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए।

कवित्त ॥ अनँगपाल ग्रह जा विसाल । समर उत्तरिय प्रिथा पति ॥
विधि अनेक भोजन सु व्रत । राज उत्तर सु सार भति ॥
उभय दिवस बित्तीय । सब्ब सामंत सु पुच्छिय ॥
सांम दांन अरु भेद । कंक भजि कढ्ढौ लच्छिय ॥
कं कहन बंक तुम अनुसरहु । समरसिंघ रावर सुमन ॥
उप्पाइ मिट्टि सामंत करि । सु वर बीर कढ्ढौ सुधन ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन निकाल लिया जाय।

कवित्त ॥ मति सुचारु कयमास । द्रव्य कढ्ढन उच्चारिय ॥
सेन मुष्प सुरतांन । राज दिज्जै प्रथुभारिय ॥
चालुक्कां चंपै न सीम । रावल मुष दिज्जै ॥
अप्प अप्प मुष रष्षि । कढ्ढि लच्छी बर लिज्जै ॥
आलाभ जुच्छ[2] पय लाभ तुछ । सु कज्ज कांम किज्जै नहीं ॥
गोइंदराज षीची सुमति । मिलि विभूति कढ्ढ गही ॥ छं० ॥ ३९ ॥

रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ तब चित्रंग नरिंद । चंदपुंडीर बरज्जिय ॥
तुम कुमंत बल मंत । भंन जानो न सरज्जिय ॥

(१) मो.–जुग्र ।
(२) मो.–यच्छ ।

इक छोरी तुम पुब्ब सों। लच्छिक देव न जाय ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा।

तब दरिद्द वाचा दई। मो कूं तूं दे जान।

बहुरि न आऊँ इह पुरी। असो कहैां बषान ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली।

घरि लच्छी आनंद मन। हय गय मान मदंत ॥

दीपमालिका तदिन तैं। एह चली महि वंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है। यह कथा कवि चन्द ने कह सुनाई ॥

पुब्ब पच्छिम उत्तर दच्छिन। दीपमालिका मान ॥

षान पान परिमान मन। काम मनोरथ थान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

कही चंद आनंद सों। पुच्छी न्टप प्रिथीराज ॥

दीपमालिका प्रगट हुइ। घरि घरि मंगल साज ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथीराज रासके दीपमालिका पर्ब्ब कथा समय नाम तेवीसमों प्रस्ताव संपूरणम् ॥

ते मंत्रो मंत्रंग । निगम आगम सब बुझ्झैं ॥
अंगन कै कुट्टंत । घरह सुझ्झैं मन बुझ्झैं ॥
अरि अरिन मुष्य रुक्कहि सुभर । तब सु द्रव्य मिलि कढ्ढिये ॥
सुरतान मीर भंजै समर । सुमन मंत करि चढ्ढिये ॥ छं० ॥ ४० ॥

नागौर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के रुख पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना ।

कवित्त ॥ जाइ संपतौ उमर । मध्य नागौर प्रमानह ॥
सुरताना रै मुष्य । कोट अड्डो चहुआनह ॥
धन असंष कढ़ तहां । साह चर वर पगधारय ॥
चरचि चित्त सब सरित । वित्त करि हथ्य दिपारय ॥
साहाब सुकर फुरमांन दिय । गांमी छल बल लगाया ॥
कढ्ढी सुलच्छि आहुट्ट पति । सुप चहुआन विलगगया ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना ।

कवित्त ॥ उभय दूत नागौर । दूत चहुआन पास हुअ ॥
सब चरित्त धरि वित्त । लपन लष्यौ सुसेन सुअ ॥
है कोसां चहुआंन । कोस चित्रंगराज हुअ ॥
अवन गवन जानहु सुवत्त । अनुसरहु पंथ जुअ ॥
मन मध्य कथ्य जानहु सकल । चल्लहु कागर राज लै ॥
धन अंम अर्थ कढ्ढइ चरित । कहौं वत्त दिष्यै सु लै ॥ छं० ॥ ४२ ॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए ।

दूहा ॥ कलि चरित्त नागौर पहु । दूत सपत्ते आइ ॥
दिल्ली वै कढ्ढै सुधन । वज्जा वज्जन वाइ ॥ छं० ॥ ४३ ॥

नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा ख़ां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना ।

अथ धन कथा लिष्यते ।

(चौवीसवां समय ।)

खट्टू वन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ।

दूहा ॥ पट्ट आपेटक रमै । मधिम मुरस्थल[1] थांन ॥
नागौरै गोरी ग्रहन । सथ न्रिमल परधांन ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त ॥ मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥
तू मंची मंचंग । मंच जानहि सुभ लच्छन ॥
सांम दांन अरु भेद । डंड निरनै करि लष्पै ॥
वहु मंचह उप्पाइ । राज मंचह करि रष्पै ॥
मंचह सुमंच मन अनुसरै । अरु मंच भेद जानै सकल ॥
अद्भुत चरित्त पापांन लिपि । वंचिन किन आवै अकल ॥ छं० ॥ २ ॥
तू मंची कयमास । मंच पय पय उप्पावहि ॥
तू मंची मंचंग । मंच मंचीन दिपावहि ॥
तू मंची सामंत । *स्वांम ध्रम्मं विचारै ॥
धर सम्रह संग्रहै । मंच करि अरिन विडारै ॥
तुम जोग मंच मंची न कोइ । सह वत्तन उच्चार कैं ॥
संसार सार मंचह प्रवल । कहौ मंच विचारि कैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाव के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो ।

(१) मो०—मरुस्थल क०—मुरस्थल ।
* मो प्रति में "सांमि ध्रम्मं सुविचारै" पाठ है ।

कवित्त ॥ वज्जा बज्जन वाइ। देषि दैवान दुसंकह ॥
चित्रकोट रावर नरिंद। कट्टन भुज अंकह ॥
संभरि वै आहुट्ठ। लच्छि कढ्ढन बत्तीसह ॥
गज्जन वै सुरतांन। दूत लै आइ चरीतह ॥
सुनि सच्छ नच्छ नीसान किय। बोलि उम्मरा षांन सह ॥
सज्जौ सुसज्ज संभरि दिसा। चाहुआन किज्जै बसह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन।

कवित्त। साह बदो[1] सुरतांन। चक्का व्यूहं रचि चल्लिय ॥
एक एक असवार। बिच्च पाइक तिह मिल्लिय ॥
ता पच्छै गज पंति। पंति असवार सम्हूहं ॥
जमर जंग औराक। गौर जंबूरति जूहं ॥
ता पच्छ पंति षुरसांन षां। ता पच्छै बंधी अनिय ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां। हांसिमह्ल षोषर पनिय ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला, शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा।

कवित्त ॥ वाम कोह प्रथिराज। भुक्कि सुरतान सुचल्लय ॥
सज्जि सेन चतुरंग। समर दिसि समर सुहल्लय ॥
भूमि धसिय धस मसिय। सेस कसमस्सि उकस्सिय ॥
कमठ विमठ हुअ पिट्ठ। दट्ठ कूरंभ करस्सिय ॥
रिंगयौ सबल षुरसान दल। करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
तुर अद्ध कोस नागौर तें। सज्जि बाज चंप्यौ सु जोइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रखकर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना।

(१) मो॰ ए॰--साहावदी।

कवित्त ॥ सलिल सुवर पाषांन । मध्य पूतली अचंभं ॥
सलिल मत्त तन जा विसाल । उप्पम रिस रंभं ॥
ता उप्पर विय नाम । प्रगट प्राकार उचारै ॥
भूलि भूलि भ्रमि लोइ । मुझ्झ मनसा करि डारै ॥
वंचौ सु वीर कैमास तुम । वियो वंच नाही वनिय ॥
भूतह भविष्य अरु व्रत्तमन । इह अपुव्व में कथ सुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिले सिर रहने से धन जाय"।

दूहा ॥ सिर कट्टै धन संग्रहै । सिर सज्जै धन जाइ ॥
सो मंत्री कैमास तूं । मंतहि करै उपाइ ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना।

कवित्त ॥ अवन राज दृग रत्त[1] । अवन जानहि परिमानन[2] ॥
वेद दिष्ट देषै सु । भेद अभेद सु ग्यानन ॥
पसुत्र नयन आचरहि । धनह परिमांन सु लष्पइ[3] ॥
विपति लोइ संसार । सार द्रिग इक्कय दिष्पइ ॥
मंत्रीन दिष्ट मंत्रं तनी । मंत्र भेद अनुसर सरति ॥
ब्रमांन[4] वीर जांने सकल । ब्रूढ ग्यांन प्रौढ़ह सुमति ॥ छं० ६ ॥

कवित्त ॥ तिष्ण तरंगन पर्यो[5] । मंत्र तारक हरि सुद्धरि ॥
बद्दरि[6] अंध कलार । राज दंडह लिय उद्धरि ॥
सारथंष जक जीव । नयन त्रिघात घात जुरि ॥
अचित्त अषेटक भूल्लि । डुल्लि जव चित्त मित्त परि ॥
भुल्लहि सुदान त्रिम्मान गति । मरन मंत्र[7] नहि लिष्पवै ॥
मंत्री न मंत्र भुल्लै तवैं । विधि विचार विधि दिष्पवै ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो०--रस ।
(२) मो०--की प्रति में "अव जानन परि मानन" पाठहै (३) मो०--लखहि ।
(४) ए०--वमांन । (५)-मो--पर्यो । (६) मो० क०--वंदरि ।
(७) मो०--मनं ।

कवित्त ॥ समर सिंघ सुनि श्रवन । वीर नीसान दिवंदे ॥
सज्जि सेन चतुरंग । तरकि[१] तोपार चढंदे ॥
थिर थप्पौ कैमास । लच्छि उप्पर गहि रष्पिय ॥
तरकि तोन सजि द्रोन । वलिय पारथ सम दिष्पिय ॥
भारथ्थ कथ्थ कवि चंद कहि । समर सार वर चल्लवै ॥
उक्कारि सेन सुरतान कौ । हय अठुनि करि हल्लवै ॥ छं० ॥ ४७ ॥

जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया ।

*दूहा ॥ साहस कर पत्तिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
उतरि सेन सुरतांन तँह । सह आई समरंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सवेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर वढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।

प्रात उदित रवि रत्त रँग । समर समर दिसि जग्गि ॥
तव लगि दल सुलतान के । पेह सु उडुन लग्गि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धूल उड़ने से सव दिशा धूंधरी हो गई, दोनों दलों का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त ॥ पह सुपेह डंमरिय । दिसा धुंधरी सुराजै ॥
अग्ग मग्ग उक्करै । चित्त उक्करै पराजै ॥
पवन वेग संजुरै । श्रवन लग्गा असि मंचं ॥
रथ कुवेर चठ्ठये । वांन वठ्ठये सुमंतं ॥
दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह सज्जे सु वर ॥
चंप्यौ नरिंद आहुठ्ठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ॥ ५० ॥

लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त ॥ धन नरिंद सुरतान । पांन दोइ वीच समाहिय ॥
दोइ मुष्प अरि हक्कि । सिंघ वन की गति साहिय ॥

(१) ए को० कृ०—तरिक ।
* यह दूहा (छन्द) मो० प्रति में नहीं है ।

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर वाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्वंश मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है।

छंद पद्धरी॥ अब कहौं मंच तुम पुच्छ सोइ। मनि ग्रहौं नेम जिन करौ सोइ॥
पाषान अंक में लिषे राइ। वृत्तंत सोइ सब कँहु सुनाइ॥ छं०॥ ८॥
बाहन सुबीर कोइ भयौ राइ। तिहि पाप कंम लीनी उपाइ॥
संसार सकल तिहि दुष्प दीन। सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन॥ छं०॥ ९॥
प्रज पीड़ माल संग्रह्यौ कोरि। भरि जनम म्रढ़ भंडार जोरि॥
संसार सकल तिन दुष्प पाइ। सब श्राप दीन हुह अगति जाइ॥ छं०॥ १०॥
बिन बंस हंस हुह तजे देह। इम प्रजा सकल कहि अप्पग्रेह॥
कितनेक दिवस तिन तज्यौ श्रीर। भंडार पाहि वह सुनौ बीर॥ छं०॥ ११॥

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं।

अप पास कढ़न नहिं जाइ राइ। चित्रंग राव लिज्जे बुलाइ॥
मिलि सुभट तास कढ्ढौ भँडार। तिन बिना दंद मचै अपार॥ छं०॥ १२॥
कनवज्ज राव जैचंद देव। नर असी लष्प तिन करत सेव॥
गज्जन नरेस साहाब साह। दस लष्प मेच्छ सेवंत ताह॥ छं०॥ १३॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव। तिन अप्प अब्ब[1] परिकंक केव॥
ढिल्लीस तेज तूंअर नरिंद। तस बढ्यो वैर उपजै[2] सु दंद॥ छं०॥ १४॥
अप तुच्छ सेन हुह मत्त मानि। मिलि समर सथ्थ पुच्छि लच्छवानि॥ छं०॥ १५॥

पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना।

चौपाई॥ राजा ढिग कैमास बुलाइय। पहराइय सुउच्च सिरपाइय॥
वगसि अप्प आरोहन वाजन। करी सुपारस सुसर कि राजन॥ छं०॥ १६॥

(१) ए.-अच्छ। (२) मो.-उपज्यौ।

धार धार बज्जै प्रचार। नद्द लग्गे[1] नीसानं ॥
संभरि वै सुरतान। मीर उट्ठे झुकि पानं ॥
घरि च्यारि लग्गि तरवार झार। बहु उभार लग्गिय फरन[2] ॥
दोउ दीन भीन घट घुम्मि घन। उक्करि सेन लग्गे लरन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

युद्ध का वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ बलवंत सबल पाहार पुंज। कर धरे षग्ग धायौ सु नंज ॥
लै पच्च चली कालिका नारि। पर वत्त गहै गय दंत भार ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सिर तीर बुंद बरषंत वारि। सिर नषै इंद अप्पित अपार ॥
षग्ग सों षग्ग वज्जै करार। घन टहै घाइ जनु मत्त वार ॥ छं० ॥ ५३ ॥
रुस्संद मीर महुवत्त षांन। ढाहनह धीर धायौ परांन ॥
प्राहार कुंत किय पुंज राज। समसेल चल्लै हनि षग्ग गाज ॥ छं० ॥ ५४ ॥
तुझ्यौ सु सीस संमेत पांनि। ढाहे कमंध महुवत्ति षांन ॥
लघु बंधु रुस्तमा हनिय सूर। वर माल वरैं ले चलीं हूर ॥ छं० ॥ ५५ ॥
जै जैत सवद जंपे जगत्त। पाहार करी अविगत्त वत्त ॥
पाहार पुंज रुस्तम्म षांन। मुह जुरे मरद हूये उतांन ॥ छं० ॥ ५६ ॥
है हयौ षग्ग रुस्तम मरद्द। वाहयौं षग्ग पुंजा दरद्द ॥
तुट्टयौ सीस सा पुंज राज। अच्छरी वरै करि उद्ध काज ॥ छं० ॥ ५७ ॥
नारद्द नद्द ग्रह इंद मद्द। पलचरी कालिका करै नद्द ॥
प्राक्रम सूर देषै पहार। धनि धन्नि कहै भर सकल सार ॥ ५८ ॥
ब्रह्म पूरि भेदि गय सूर सार। अति उंच क्रंम पामेव वार ॥ छं० ॥ ५९ ॥
कवित्त ॥ बलिय फौज पाहार। दुतिय भारथ जिन मंड्यौ ॥
अरि अक्करि वर लीन। धार धारहु तन षंड्यौ ॥
ईश सीस संग्रह्यौ। ढुक्क तें हथ्थ न मुक्यौ ॥
सुर सुरीय कँह जांनि। सरस सिंगारहु चुक्यौ ॥
जानयौ गवरि कह मानि किय। कहा जानि नंदी हस्यौ ॥
जांनयै चंद ब्रय कव्व करि। चंद लिलाटहतें घस्यौ ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए० कृ० को०–भग्गे।
(२) मो० प्रति में "बल उभ्भारिय पग झरन" पाठ है।

नयन रंभ आरंभ । जोग पारंभ सिंभ मति ॥
मुंजीत्र ढाल जीपन विरद । नाग मुषी सिल्लार बनि ॥
सा चित्त कोट ओटह न्टपति । मद्दन रंभ मंडहि सुमनि ॥ छं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है।

दूहा ॥ वंचि वीर कग्गद न्तपति । हसिय चित्त वर वंक ॥
कछु लज्जा सगपन सु चित । रष्य पुंडीरां संक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवित्त ॥ हसि जोगिंद नरिंद । वत्त सें मुष उच्चारिय ॥
*एक ग्रध्र संम्रुह । मंस लद्दौ पल धारिय ॥
अव्व ग्रिद्ध विंटयौ । मंस चष्यौ जै कारिय ॥
तव सुमंत उप्पनौ । मंस लद्दौ गहि डारिय ॥
भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ । कोइक पढ़ कोइ लभ्भवै ॥
दैवान दुसंकह दैवगति । जो न्निम्मान सु न्निम्मवै ॥ छं० २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए।

कवित्त ॥ सुनि सुवत्त पुंडीर । वत्त जंपी सुतत्त जोइ ॥
तुम जोगिंद नरिंद । मत्त जंपौ सुतत्त होइ ॥
सुअ सोमेस नरिंद । सुवत सगपन मिस पुच्छिय ॥
तुन चहुआना[1] गरुअ । मुष्य कट्ठौ किम ओछिय ॥
सामंत नाथ सामंत वल । मेर ठेलि दच्छिन धरहि ॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर । दूंद फुनिंद न सो डरहि ॥ छं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए।

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।
(१) मो० को०—लहुआना।

कवित्त ॥ मुत्ति लष्वन सामंत । सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
चुकि समाधि जगि सिंभ । वंभ आराधन भग्गा ॥
* आपुतुचा तजि सूर । तुचा म्रग्गन आराधी ॥
तन तुट्टिग अधि[1] धार । मग्ग नहि अक्कूरिवाधी ॥
अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुष[2] ॥
पंचेरि पान सुक्किय जगत । सुकर किति चल्लिय सुरुष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ षां ततार रुस्तम सुभर । अरु जे मीर समंद ॥
सोइ तत्ते गहि तेग परि । वर वीरा रस मंद ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ चंद वंध पुंडीर वर । लष्पन लष्पा सार ॥
मिले मीर मरदान मुष । धरि कर पग्ग करार ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवित्त ॥ षां ततार रुस्तम हुजाव । मुस्तफा महंमद ॥
† चै सज्जे वर सार । तथ्य आए मीरंवद ॥
मार मार कहि धीर । मिले लष्पन लष्पेसर ॥
सार धार वज्जंत । भिच्यो मुष चम्मीर गुर ॥
पुण्डीर सुवर साहस वरह । करिव पुह पद्दे सुपल ॥
कौतिग्ग देव देषंत सिर । अरिय भूत नंचे अकल ॥ छं० ॥ ६४ ॥

छंद चनूफाल ॥ आए सुमीर मसंद । वर पग्ग धारिव इंद ॥
चक्कंत चक्क करार । वज्जंत कर करतार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
चिघ्घाय पग्ग चिकूट । वहि सार सामत जूट ॥
पुंडीर लष्पन जोइ । भर मीर आए दोइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
वाहैं दुसार करार । लरि लष्प लष्पन सार ॥
भंडे सु पग्ग उभ्भहि । तुट्टे सु भ्भल्लर तहि ॥
उकि उक्कि ईस रनद्द[3] । नारद नंचि उमद्द ॥
भगि मीर पुर पुर तार । जुरवंत मीर जुझार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

* "पिति संपुट पलभल्यो । तुवा म्रगाव आराधी" मो०—प्रति में ऐसा पाठ है ।
(१) मो०—असि । (२) मो०—निमष ।
† मो०—प्रति में छन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "खां ततार रुस्तम उजाव, खान मुस्तफा महांभर, है सज्जे वर सार, तथ्य आए सुर सरवर" है ।
(३) मो०—सुनद्द । ए०—नरद्द ।

दूहा ॥ हरषि राज प्रथिराज कहि। मति कैमास दै नाम ॥
मति कैमास[1] कैमास तुम। सकल सुमति के धाम ॥ छं० ॥ १७ ॥

दूहा ॥ जां मंचह पूछत न्टपति। सांई अंग सु कांम ॥
समर सिंघ रावर मिले। धन काढ़ै अभिरांम ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना।

मांनि मंच चहुआंन हह। बोलिय चंद पुँडीर ॥
समर सिंघ रावर दिसा। दै कग्गद मति धीर ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना।

दूहा ॥ दस हैवर इक बग्ग बर। अरु दिय सिंगिनि पांनि ॥
कहि जुहार विधि जंपियौ। न्टप पुच्छिय कुसलांनि ॥ छं० ॥ २० ॥

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं।

कवित्त ॥ लै कग्गद प्रथिराज। बीर पुंडीर सँपन्नौ ॥
सुबर जोर साहाब। मंडि गोरी धर थन्नौ ॥
बर भोरा भीमंग। चंपि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिंद। सेन लष्षां असि दग्गा ॥
आषंड द्रव्य दिल्ली धरां। सुनि चढ्ढ द्रिगपाल सजि ॥
कढ्ढिये मंच मंची अपुन। बर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० ॥ २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर नरिंद। समर सह संभर जित्तन ॥
अरु जोगिंद नरिंद। चित्त जोगिंद समत्तन ॥
कमल माल सो भत्ति। चंद लिल्लाट बीय दुति ॥

(१) मो०—कैवास।

भज्जंत सेन सुचाव। गज्जंत लष्षन गाव ॥
नत्तार नूरि फुजाव। हस्तम मचतुद आव ॥ छं० ॥ ६९ ॥
बाहै सुलष्षन सार। चिसि टोप किप्पर तार ॥
चौदनी लष्षन धार। परसंसि मीर झुझार ॥ छं० ॥ ७० ॥
गय सूर मंडल भेदि। भल कहत अच्छर वेद ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ चंद वंध पुंडीर। नाम लष्षन लष्षे सुर ॥
ढुंढ देवि पचार। दियौ हुंकार चक्कि गुर ॥
ईस सीस आनंद। पिंड गिद्धिन मन भाइय ॥
हूर सूर अच्छरि विमांन। चढ़ि देवन आइय ॥
आनंम सोई उतपति चल्यौ। देव थांन विश्रांम भय ॥
जम लोक लोपि वसि ब्रह्म पुर। जंपि सेन दोउ सद जय ॥ छं० ॥ ७२ ॥

छंद दुमिला ॥ कच गुर लहु पायं अक्खिर दायं विचि विचि रायं इंदोई ॥
दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिंदं कहि कविचंदं गुनगोई ॥
वज्जै रन तालं असि वर झालं भर भर हालं भंभीरं ॥
पारस सुविहानं कुट्टिय थांनं चढ़ि मध्यानं कुटि तीरं ॥ छं० ॥ ७३ ॥
गंजी जननं जरि भंगे दिक्करि लरि रज उच्छरि गगनेदं ॥
धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोरं जरि मेदं ॥
किरवांन करक्कै विज्ज तरक्कै छिच्छ उछक्कै इन भेसं ॥
दो उप्पम भासं माधव मासं अति उल्हासं दुति केसं ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उडि सकै न गिद्धं सरवहि विद्धं हसयति सिद्धं दै तारी ॥
षप्पर अधिकारी षंड उकारी जै जै कारी किलकारी ॥
गज दंत न वट्ठै दै पग चट्ठै कुंत सु कट्ठै सिर चट्ठै ॥
कंदल परि उट्ठै सीस विकुट्ठै हनहि न रट्ठै भर वट्ठै ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ सस्तन सस्त्र न उव्वरिय। मन बर कुट्टिय नांहि ॥
ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि। सेरो सहर समांहि ॥ ७६ ॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला ॥ रोस राजं भरी। चित्रकोटे सुरी[1] ॥

(१) मो०-सरी।

नयन रंभ आरंभ । जोग पारंभ सिंभ मति ॥
मुंजीत्र ढाल जीपन विरद । नाग सुपी सिखार बनि ॥
सा चित्र कोट ओटह न्टपति । मदन रंभ मंडचि सुमनि ॥ छं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है ।

दूहा ॥ वंचि वीर कग्गद न्वपति । हसिय चित्त वर वंक ॥
कछु लज्जा सगपन सु चित । रप्प पुंडीरां संक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवित्त ॥ हसि जोगिंद नरिंद । वत्त सें सुप उच्चारिय ॥
*एक ग्रध्र संम्रह । मंस लद्धौ पल्ल हारिय ॥
अव्व ग्रिद्ध विंटयौ । मंस चप्पौ जै कारिय ॥
तव सुमंत उप्पनौ । मंस लद्धौ गचि डारिय ॥
भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ । कोइक पढ़ कोइ लभवै ॥
दैवान दुसंकह दैवगति । जो न्विम्मान सु न्विम्मवै ॥ छं० २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए ।

कवित्त ॥ सुनि रुवत्त पुंडीर । वत्त जंपी सुतत्त जोइ ॥
तुम जोगिंद नरिंद । मत्त जंपौ सुतत्त होइ ॥
सुअ सोमेस नरिंद । सुवत सगपन मिस पुच्छिय ॥
तुन चहुआना[1] गेहअ । सुप्प कड्डौ किम ओछिय ॥
सामंत नाथ सामंत वल । मेर ठेलि दच्छिन धरचि ॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर । इंद फुनिंद न सो डरचि ॥ छं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए ।

---

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।
(१) मो० को०—लहुआना ।

हथ्य बथ्यं जुरी । जुद्दि सोहै पुरी[1] ॥ छं० ॥ ७७ ॥
नीच दीनं परी । मीर हक्कै उरी ॥
कुंत कड्ढै छुरी । हथ्य बथ्यं करी ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दंद कड्ढै हरी । कंध सोभै धरी ॥
लुथि आलुथ्थरी[2] । जंम्मता विक्कुरी ॥ छं० ॥ ७९ ॥
देवता संभरी । ढिल्ल राजं भरी ॥
जोग मत्ते जुरी । रंभ ढूंढै वरी ॥ छं० ॥ ८० ॥
वीर जा संभरी । कुद्दि कुक्कै करी ॥
मात पित्तं उरी । पत्त कन्है नरी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
स्वामिता सुद्दरी । पुप्फ नंषे सुरी ॥
... ... । कित्ति जुग्गं करी ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ कित्ति जोग करनह समथ । मिले सक्क सासेन ॥
आए मीर सुकूह करि । परिय सिंह सिर जेन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

अरिल्ल ॥ कोप्यो रावल राज महाभर । सेना साह सहावह लिय पर ॥
हिंदुअ सेन चक्कि भर उट्ठे । पंच पांन सिर सारह छुट्ठे ॥ छं० ॥ ८४ ॥

छंद भुजंगी ॥ उठे पंच पांनं वरं आसुरानं । वजे भेरि नफेरि चंवे[3] निसानं ॥
धमक्कै धरा नाग गज्जै सुगेनं । चढ़े देव कौतिग्ग देषंत नैनं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
मिली अक्कुरी रथ्थ अप्पार रंजै । नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्ज ॥
करै कूह दौरै भरं आसुरानं । जुटे सूर सामंत लग्गे भरानं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
पगं हूअ बाहै झरै टोप मथ्थै । मनों झल्लरं देवलं कूटि हथ्थै ॥
जुरै पांन सामंत दोसार सारं । कहै दीन रामं जपै दृष्ट हारं[4] ॥ छं० ॥ ८७ ॥
पडे आइयं अप्प आकूब मीरं । कुटै भ्रंम धीरज्ज कंपै अधीरं ॥
तवै आइ चामंड दाहिंम रायं । हयौ सेल मीरं गहक्कै गुरायं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
समं सेल पानं वहै पग्गभाई । पस्यौ अश्व चामंड भग्गै सुघाई ॥
उठे चोंड रायं गहै पांन सारं । तुटै मंडलं तुट्टिहै भाग पारं ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) मो०--हरी ।   (२) मो०--लोथि लोथ परी ।
(३) ए०--को०--श्रवे ।
(४) मो०--चारं ।

ढह्यौ षांन हथ्थें सु चामंड रायं। इनै देषि मीरं निकट्टं सु तायं॥
वहै षग्ग ढाहै चढ्यौ अप्प सायं। चली फौज साहं चंपे असुरायं॥छं०॥९०॥
तवै केलियं षान षानां कुलाहं। दुअं धारि षग्गं तुट्टैं हिंदु थाहं॥
तवै आइ अड्डो भरं अत्तताई। लिए सिप्परं घाव तिच्छे सुनाई॥ छं० ॥९१॥
वहै दूअ षग्गं करै मार झट्टं। मनों रंभथंभं दुअं सीस कट्टं॥
गुरं गज्जते अत्तताई अभंगं। भरक्कै सुसेना सवै मीर भग्गं॥ छं० ॥९२॥
इकं सेर नंमीर साहब्ब षानं। दुअं वंध पुत्तं सु आरब्ब जानं॥
दुअं ध्रंम धारी उरं जागियानं। उभै दौरि वंधं लगे आसमानं॥ छं० ॥ ९३॥
चपे मीर मुष्पं चवै मार वानं। लगे दाव घावं करै षग्ग पानं॥
इयं जुद्ध आनुद्ध देष्यौ अपारं। भरं निड्डुरं देषि धायौ सुभारं॥ छं० ॥ ९४॥
हए निड्डुरं संगि हय वंध मीरं। मनों सीर[1] इक्कं वरे दो सरीरं॥
हने तेग तुरियं सुकमधज्जरामं। ढह्यौ अंस ओहंस उड्यौ तिसायं॥ छं॥ ९५॥
उठे निड्डुरं हक्कि रठ्ठौर[2] रानं। सिता[3] वीस चौंडं सुषं मानि भानं॥
इते आइ दीनो तुरंगं अपानं। चाढ्यौ राव हयमीर कमधज्ज मानं॥ छं० ॥ ९६॥
धये आइ तत्ते करै अप्प पानं। भगे सेन मीरं ढहै पंच षांनं॥
बढी जैत देषी वरं हिंदुआंनं। ... ... ॥ ९७॥
रिझैं नार छंअच्छरी गिद्ध सिद्धं। मनं वांछि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते। करी कित्ति चंदं गयं गेतं पत्ते॥ छं० ॥ ९८॥

पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना।

कवित्त॥ घरिय अद्ध दिन रह्यौ। साह साहन बल भग्गिय॥
गात षंभ निरघात। हथ्थ सामंतन लग्गिय॥
पर्‍यौ षांन आकूब। जेन सेना ढंढोरिय॥
केलीषां कुंजर कुलाह। तुट्टि तिन संग[4] विछोरिय॥
चहुआंन सेन चव दंत चढ़ि। तनु तिन रव रनंषयौ॥
सुरतांन भीच पंचौ परत। जलधि मध्य पत्तगंयौ॥ छं० ॥ ९९॥

---

(१) मो०--शीश। (२) मो०--रठोरे।
(३) मो०--लक्के।
(४) मो०--तंग।

सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित) ...	॥)	-)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (भौगोलिक परिभाषा)	=)॥	)॥
,, ,, (ज्योतिषिक परिभाषा)	।)	)॥
,, ,, (अर्थशास्त्र की ,,)	।=)	)॥
,, ,, (रासायनिक ,,)	॥)	)॥
,, ,, (गणितशास्त्र की ,,)	।-)	)॥
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)।
योगदर्शन	२)	-)
गुरुगीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की १० पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

सूर्यास्त होना ।

गाथा ॥ अथ वत दीह सुधीरं । साहित्र सेरंन हंति निठुरयं ॥
करि प्राक्रंम अपारं । जलनिधि मझि गत पतंगं ॥ छं० ॥ १०० ॥

रात होना । सेना का डेरे में आना ।

कवित्त ॥ जल निधि मध्य पतंग । पत्त[1] दिप्पिय तम ग्रासिय ॥
काथर पंकज मुदिग । कुमुद उघघरि अलि वासिय ॥
नर को चितव विहंग । वाम विरहनि दुप वढ्ढिय ॥
संजोगिनि स्रंगार । चित्त कामह रथ चढ्ढिय ॥
चक्रवाक चित चकित हुअ । चोर विटप मन उल्लसिय ॥
औसरे सेन विय उत्तरिय । स्वांमि ध्रंम मन में वसिय ॥ छं० ॥ १०१ ॥

गाथा ॥ निसचर वरचित चित्तं । चितं जाग्रत उभय सयनेयं ॥
जामं सर सरि हितं । वामीयं काम सपनायं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

अरिल्ल ॥ पतत पतंग सुदिप्पिय ग्रंवं । मानहु सीय सुद्ध प्रति व्यंवं ॥
नप मयूप कोदह उप्पारै । मानो तिमिर जोग जंभारै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना ।

कवित्त ॥ जबहि राज प्रथिराज । सेन उत्तरिय रयन गत ॥
तबहि सुराजन कज्ज । रहे सामंत सु जग्गत ॥
राचां मंड निडुरकमंध । अत ताइय ईस वर ॥
सु गुरु जैत पामार । अरिय भंजन अलष्प भर ॥
अवरें सु सब्ब सामंत भर । चढ़े राज चौकी समथ ॥
गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि । है पष्पर चवरार हथ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अरिल्ल ॥ डेरा करि वर राज महाभर । तुरु अंतर मिलि रहे सिंघ गुर ॥
चौकी सेन चढ़े भर सिंघं । एक एक सक सूर अभंगं ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ राम रैंन पावार भर । अरु सु कन्ह भत्तीज ॥
फुनि रघुवंसी राज घर । सब चौकी सजि नीज ॥ छं० ॥ १०६ ॥

(१) मो०--पतत ।

Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4-7.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIV and XXV.
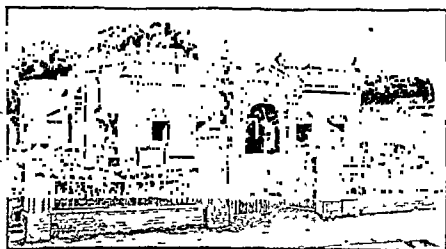
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

से

सम्पादित किया।

पर्व्व २४ और २५

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य १)] Issued 31st. October 1906. [Price Re. 1.

अरिल्ल ॥ सजि चौकी अप सथ्थ सकल मिलि। चढ़त सूर भर न्रप वरज्जि[1] बलि ॥
गुरु सामंत अयति अप्प गढ़ि। रचै सुच्यारि दुअं चौकी चढ़ि ॥ छं० ॥ १०७॥
इक चौकी वर सिंघ राज सज। भर दुअ चढ़े अप्प अप्पन कज ॥
थांन थांन जकि रहे सूर वर। सज्जि सनाह रहे जु हंस नर ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना।

छंद भुजंगी ॥ चढ़ी साह चौकी सुरत्तान षानं। दोई दीन वज्जै निसानं रिसानं ॥
चमक्कै सनाहं उपंमा सु चंडी। मनो चंदनी रैंन प्रति व्यंब मंडी॥छं०॥१०९॥
फिरै पंति दंती नकी कंति एमं। मनों कज्जलं कूट कंगूर हेमं ॥
फिरै पष्षरी पंति कूदंत वाजी। तिनं देखतें वंदरं द्रोन लाजी॥ छं० ॥ ११०॥
लगे पारसी बोलनं सेक्ष सथ्थं। मनो प्रब्बतं वंदरं केलि कथ्थं ॥
इकं एक चित्ते दुअं चित्त नांही। तिनं पंचिये[2] सार स्वामि धंम सांही॥छं०॥१११॥
षिल्लै मुष्ष बोल्लै सुरत्तान दोही। करै भूमि दुज्जन पुरं काल कोही ॥
इसी खेन जोरी सु गोरी नरिंदं। मनों वंटियं पारसं नभ्भ चंदं ॥छं०॥११२॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन।

अरिल्ल ॥ सिलह सज्जि प्रिथिराज महाभर सेन सह।
मनों प्रप्पन प्रति व्यंब प्रगट्टिय जानि ग्रह ॥
सापर ओपम और विचार लो अष्षियै।
ज्यों बद्दर में चंद दुरै कछु दिष्षियै ॥ छं० ॥ ११३ ॥
घुरि निसांन घन सद्द स्रवंन न संभरै।
हय गय साजिय साज हक्कतें उब्भरै[3] ॥
भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नद्दयं।
*एक तवे उत दिष्षि दल बल बद्दयं ॥ छं० ॥ ११४ ॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ षां रुस्तम तत्तार। षांन चौकी वे लग्गा ॥
षां नूरी हुजाब षां। महमद असि जग्गा ॥

(१) मो०–बररजि। (२) मो०–पंचियं।
(३) मो०–प्रति में "है गै बाजिय गाज फूकतें उब्भरै" पाठ है।
* मो०–प्रति में ए 'इन वे उन दिष्ष' पाठ है।

सूचीपत्र।

—:0:—

—:0:—

विशेष सूचना।

इस ग्रंथ का सारांश गद्य में लिखा जा रहा है, वह आगामी संख्या से इस ग्रन्थ के साथ में छापकर प्रकाशित किया जायगा।

———

केली षां भष्षरी। रोम षेषर षां षन्नी॥
वर भट्टी मच्छ नंग। स्वामि मंध्यौ सा अन्नी॥
बीरंग वीर वज्जर विरज। वर चरित्त चिहुं दिसि लगे॥
सुरतांन कांम अरि भंजनैा। सुवर वीर बीरच पगे॥ छं०॥ ११५॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन।

कवित्त॥ अग्गिवांन उजवक्क। धाइ धावड़ सुरतांनी॥
ता पाछे साहाव। षांन वंध्यौ तुल सानी॥
ता पाछे नूरी। हूजाव सेई सचारी॥
केलीषां कुंजर कुलाह। किन्नी कुट वारी॥
बांनिक्क विराह दुल्लाह वर। भाई षा भट्टी सु सिर॥
प्रिथिराज राज आहुट्ठ तें। वर निसान वज्जै दुसर॥ छं०॥ ११६॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना।

कवित्त॥ सुलतानां रै मुष्ष। समर उत्तरौ नरिंदं॥
मनों विद्धि विहान। मांड म्रजाद समुद्दं॥
दोऊ सेन उत्तरिय। भंम्म अप्प अप्पन उच्चारिय[1]॥
अरि सम्रह कारि प्रांन। जुद्ध वर मंडि उक्कारिय॥
पहु फट्टि निसा पह फट्टि कर। यरिय वज्जि घरियार घन॥
प्राची सुमंत दिसि वर झिलिय[2]। अमर किंत्ति चिंते सुमन॥ छं०॥ ११७॥

प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन।

छंद गीतामालची॥ नव नवय प्रानय विरह प्रावय[3] संष दिव धुनि वज्जियं।
झलकंत पवनह मधुर गवनह श्रैसु अम्ब हरज्जियं॥
विकुरंत चंद सुमंत दंदं दिवस ता गम जानयं॥
पह फट्टि चीरं परिग पीरं तोरि भूवन नायं॥ छं०॥ ११८॥
नव मिलहिं अलिनी हस्रै नलिनी सद मंद प्रकासयं।

---

(१) मो०—विच्चारिय।
(२) क०—सिलिय। ए०—मिलिय।　　(३) मो०—पाटय।

कवित्त ॥ चढ़त भांन मध्यांन । बीर गष्षर उग्गरि घर ॥
सुमरि सेन सामंत । ओट तत्तार षान भर ॥
बज्ज घात आरिष्ट । बीरता रिष्ट गरिष्ठिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि । लुथ्थि लुथ्थन पर जुट्टिय ॥
धारंग कुट्टि अन कुट्टिचे । डंक वज्जि वज्जी विपच्छ ॥
चहुवांन देखि उभ्भै चसव । उघरि सिंभ दिष्षे सुपच्छ ॥ छंद ॥ १५० ॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना ।

पच्छ उघघरि दिषि सिंभु । ब्रह्म दिष्यौ ब्रह्मासन ॥
प्रकृति पुरुष दिष्षीन । प्रकृति दिष्यौ गुरु पासन ॥
थान थान जम पुक्कि । रंभ पुच्छै पच्छ ग्रच फिरि ॥
भौ अचंभ कविचंद । लोक मंगै सु लोग सुरि ॥
लभ्भी सु सुगति पग मग्ग करि । जोग मग्ग जिन मुक्कयौ ॥
सामंत सूर मिलि सूर ग्रच । फिरि न तिनन तन चुक्कयौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥

गष्षर ख़ां और तातार ख़ां दोनों का मारा जाना ।

दूहा ॥ उभय सहस गष्षर परिग । यच्छ विंध्यौ सुरतान ॥
समरसिंघ रावर सिमुख । परिग वीर[1] विय षांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

याकूब ख़ां का घोर युद्ध वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ पर्यौ षांन आकूब मुष्षं समाई । वजे टोप टंकार के तार साई ॥
कटे कंध कामंध नंचे विभंगं । मनों अग्गि लग्गी समीपं न दंगं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
करै बीर भंगं सुभट्टं करं कं । मनो उच्छरै मीन जल मभ्भ पंकं ॥
करे दोह दोही समं चिच कोटं । परे वीर बीरं सुरत्तान जोटं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
मथी सेन दूनं भई थोर थोरी । मनों वारिजं पंति दंती झकोरी ॥
बजै घाइ अघघाइ निघघाइ घट्टं । पढ़ै वेद विप्रा वकै ज्ञान भट्टं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
परै ढाल माल विराजै कला की । मनों भीति गौपं भिदै नीर जाकी ॥
जिनैं नीर मुष्षं षगं नीर झल्लै । मनों माधवं मास वे वंक फुल्लै ॥ छं० ॥ १५६ ॥
किरव्वान कुंतं झरै पेसु कक्की । मनों बीज लट्टी कुलट्टा मनक्की ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो०—बीय ।

नय[1] मुदिय कुमुदिय अचित प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपत अजयं धरत सजयं चित्त मरन विचारयं।
सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय तारयं॥ छं० ॥ ११९ ॥

घरि अट्ठ भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं।
उभ्भारि बीरय बंधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवित्त ॥ अट्ठ सूर उग्गंत। ढ़ाल ढुक्की सुरतानिय।
ठांम ठांम मधगंध। सज्जि चल्लै अगवांनिय ॥
धर तर गिर धावत सम्हद। जूह चतुरंग जगाइय ॥
ढिल्ली वै सुरतान। धुक्कि नीसान बजाइय ॥
जा हथ्थ हथ्थ कविचंद कहि। अल्लह देइ सुपाइयै ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां। सुबर सेनरि गाइयै[2] ॥ छं० ॥ १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है और डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ प्रात समर रावर नरिंद। साहस गत पुच्छिय ॥
कहै सब्ब सामंत। मत्ति जंपौ मति अच्छिय ॥
कोन वीर को धीर। कोन साहस को कातर ॥
कवन दूत अवधूत। जोग कावंध समातर ॥
बंधनह कोन कौ बंधियै। अरु किन बंधन तन छुट्टयौ ॥
चिचंगराज राजंग गुर। रहसि मंत बर कुट्टयौ[3] ॥ छं० ॥ १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा बीर है।

छूटै वीर अवजोग। प्रांन पति सथ्थ न छुट्टै ॥
चुक्कै न बीर अवसर प्रमांन। जिहि जोग अछुट्टै ॥
इक बंधन बंधियै। छूटत तन बंधन अग्गै ॥

(१) मो०--नव।
(२) ए०--को०--क०--रंगाइए।
(३) मो०--जुट्टयौ।

जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत ख़ां और तातार ख़ां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया।

दूहा ॥ रहिग जांम तन अद्ध घटि। टरिन बीर जुध वार ॥
षां निसुरत्ति तत्तार षां। लयौ सैन सिर भार ॥ छं० ॥ १५८ ॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना।

छंद भ्रमरावली ॥ जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर। जु अच्छरि पुक्क उक्कारत दूर ॥
हहा हुहु गंध सुगंध्रव गान[1]। षच्यौ घरि एक उभै रथ भांन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल। अमीय उपावहि ढुंढहि लाल ॥
जु षिक्के चहुवांन कृपान कसी। सुमनो दुति दोम्भर सी निकसी ॥ छं० ॥ १६० ॥
तुटि पट्टन गौ उपमाहि लह्यौ। सुपस्यौ जनु मेर सुरंग कह्यौ ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्यौ। भमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
नव नंचिय रु'डति मुंड हस्यौ। तिन ठौर विभक्क्ष भयानक सौ ॥
परि लुथ्थिय लुथ्थिय तहां सरसं। सुभयौ रस शंकर रुद्र रसं[3] ॥ छं० ॥ १६२ ॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै। कवि चंद तहां उपमां उचरै ॥
छबि भो घन स्यांम हुरत्त परी। मनों बिंब बलै नदि है उतरी ॥ छं० ॥ १६३ ॥
उपमा दुसरी रंग देषि कहै। जमुना जल में सरसत्ति बहै ॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै। रस भेद शृंगार पनाह हरै ॥ छं० ॥ १६४ ॥
तिन जारन गाड़न को न बचै। रनसं[4] रस तीय सु सत्य नचै ॥
धरकै धर कादूर चित्त वियं। करुना रस केलि कुलान कियं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
बर बीरन जुद्ध इतौ सँपज्यौ। तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥

रावल की वीरता का वर्णन।

दूहा ॥ अति प्राक्रम रावर सुभर। कूरँभ नरसिँघ जग्गि ॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर। कथ्थ करन कलि लग्गि ॥ छं० ॥ १६७ ॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना।

गाहा ॥ जब मचि रीठ अपारं। किय अति क्रम्म जवनयं साहं ॥

(१) मो॰—जांन। (२) मो॰—भवो।
(३) मो॰—हसं। (४) को॰—कृ॰—संसर।

स्वांमि संकरें छांडि। स्वांमि हक्कारति भग्गै ॥
सोई वीर धीर साहस सुई। सुइ रन वीर सुवीर हुई ॥
चित्रंग राव रावल चवै। जल बुडतं रन कीर सोइ ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना।

दूहा ॥ उदित अर्क दिसि पुव्व पहु। जगे सेन दोइ जंग ॥
अस्व अप्प वल बढुए। वल वज्रंगी[1] अंग ॥ छं० ॥ १२४ ॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना।

कवित्त ॥ तब प्रथिराज नरिंद। समर उत्तरिय चढ़ाइय ॥
सज्जि सेन चतुरंग। वाम कोर[2] दाव लसाइय ॥
स्याम सेत धजबंधि। नेत निक्कारि निक्काइय ॥
बंदि वीर विभ्भूत। लुलिय लिल्लाट लगाइय ॥
नारद दइ तुंवर सुचिर। सिव समाधि जग्गाय वसि ॥
अदभुत जुद्ध दोउ दीन कौ। अप्प आन दिप्पै रहसि ॥ छं० ॥ १२५ ॥

सुलतान का रणसज्या से सजकर सवार होना।

दूहा ॥ सुनि रु षत्त सुरतांन चढ़ि। सजि नपसिप अपरिद्ध ॥
अरुभर सकल सनाह कसि। चढ़ि अवधूत सनद्ध ॥ छं० ॥ १२६ ॥

हिन्दुओं के तेज के आगे मीरों का धीर छूटना।

दूहा ॥ जब हिंदू दल जोर हुअ। छुट्टि मीर धर भ्रंम ॥
* असमय आर वषांन चलि। करन उद्धसा क्रंम ॥ छं० ॥ १२७ ॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह का शत्रुओं पर टूटना।

दूहा ॥ इत राजन उत समर वर। दुअ दल सज्जि असंप ॥
तन तुरंग तिन वर करन। नमिय तेज हय नंप ॥ छं० ॥ १२८ ॥

(१) मो०--बज्रंगिय।
(२) मो०--कोरं।
* मो० प्रति में "अमरस मय साह करि आखखां प्राक्रंम" पाठ है।

युद्ध की शोभा का वर्णन।

छंद चोटक॥ दोउ दीन सु दुंदुभि जोर मिले[1]। अँग अंग करक्कत[2] जंग पिले॥
सहनाइ नफेरिय नेंक वजं। सु मनों घट भद्दव मास गजं॥ छं०॥ १८२॥
घन टोप सु रंगिय तेज पुले। जनु पंतिय बग्ग घनेक मिले॥
घन पाइक पंति भनंकत यों। मनों मोर कला करि नाचत यों॥ छं०॥ १८३॥
धुँधुरी दिस दिस्स* सवंग दिसा। दिशि पीत सु पत्तिय अद्ध निसा॥
गज वंधि सनैन चमंकति यों। सुमनो लगि ऊक परव्वत ज्यों॥ छं०॥ १८४॥
किरवान कढंत कला दुसरी। सुमनों भर चौरिय सी पसरी॥
कटिकंध[3] कमंधन कुट्टि जुरी। मनों बीज कला कुय क्रूटि परी॥ छं०॥ १८५॥
असवार सु पष्पर कट्टि तवै। सुमनों घर वंटत[4] वंधव द्वै॥
करि फुट्टि बगत्तर रत्त रयो। मनु जावक मैं जल वंटत ज्यौं॥ छं०॥ १८६॥
भभकंत भसुंडन रुंड परी। वढि पावक ज्वाल मनों निकरी॥
दुहु बीच भसुंडन देव लसै। मनों बाल गनेस द्वि पूजि हंसै॥ छं०॥ १८७॥
सिर फूटत भेजिय उड्डि चली। सु मनों दधि मट्ट उपट्टि हली॥
तरफै घन घंटन घट्ट सुधं। सु फिरै जल सुक्काय मीन उधं॥ छं०॥ १८८॥
गज उप्पर ढाल गिरै वर तैं। सु गिरें गिरि केलि मनों जरतें॥
गिरि केलि कमंधन चंत परे। मनों भेष पिसाचन सांच करे॥ छं०॥ १८९॥
† वढ़ि वट्टि घनं घट सीस जरै। जनु वद्दल वद्दल वीज अरै॥
जु सनाहन घाइ सुभै तन में। भर छोरिका सी प्रगटी घन में॥ छं०॥ १९०॥
चवसट्ठियों तारिय दै किलकी। सु नचै जनु गोपिय पेम छकी॥
घन घाव सु बिद्दल[5] यों घुरकैं। मनों बोलि कवूतर द्वै सुरकैं॥ छं०॥ १९१॥
दुतियं उपमा कविता सुर कै। मनो पूर नदी हय ज्यों फुरकै॥
तरवारनि तेज परै तरसी। घन घुम्मर्राह मध्य मनों भरसी॥ छं०॥ १९२॥
तिन उप्पर पंषिय वंधिय पंति। मनो षह इंद्र धनंकिय पंति॥
पिलवान चलै करि पील गिरै। कलसा मनो देवल के विहरै॥ छं०॥ १९३॥

---

१ मो०—मिले। २ कृ०—अरक्कत।
* को०—ए०—प्रति में "दिशि जीतिय नीति" पाठ है।
३ कृ०—को०—ए०—कंध। ४ मो०—"वंधव वंटत"।
† ये दोनों पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं है। ५ ए०—वट्टिल।

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना ।

छंद भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सु वथ्थं हकारे । मनों वाहुनी मत्त मै गंध भारे ॥
दिठी दिठ्ठ दूनं भरं आसुरानं । पलं कूह कज्जै उभै सिंध जानं ॥छं०॥१२९॥
जपै दुष्ट मंचं मुषं राम नामं । कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुठ्ठि वामं ॥
छुटै तीर भारं द्रुमं कै निसानं । मनों भाद्वं गज्जियं मघ्घवानं ॥ छं० ॥ १३० ॥
वजै भेरि तूरं वजै संष नद्दं । मनों सज्जई वीर अनहद्द सद्दं ॥
भिरैं मेच्छ हिंदू लरैं लोह तत्ते । सचै ईस सीसं षहं देव पत्ते ॥ छं० ॥ १३१ ॥
हुए षंड षंडं भरं सो अलग्गं । मनों देव दानैं विहथ्थें बिलग्गं ॥
षिजै लोह आरब्ब वाहै करूरं । हली फौज चहुआंन गय सूर नूरं ॥छं०॥१३२॥
तबैं आइ ठढ्ढो भरं सिंघ सेनं । तनं आवरे वीर रुपं पथेनं ॥
दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षांन षानं । हयंती हयंती मुषं आसुरानं ॥ छं० ॥ १३३ ॥
तुरी छंडि राजं सहे संग पानं । हए सेल सथ्थं फटे षांन थानं ॥
जुटे सेल संम्हो वहै षग्ग झट्टं । परै टहरी[1] झट्ट लग्गै सुघट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भई भीर सिंघं अनुद्धं अपारं । कहै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
रह्यौ आइ अड्डो पतीधार स्यामं । हयो षग्ग षांनं सु पंमार रामं ॥ छं० ॥ १३५ ॥
ढह्यौ आरबं षांन दो दीन साषी । जिने दीन के ध्रंम की लाज राषी ॥छं०॥१३६॥

पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब ख़ां का मारा जाना ।

कवित्त ॥ पंच घटी दिन चढ्यौ । उमरि आरब्ब षांन लरि ॥
हिंदुअ सेन सम्मूह । छोह छंड्यौ सुकंक अरि ॥
असि प्रहार चढ़ि धार । मन तुट्यौ तन तुट्टिय ॥
अस्त्र वस्त्र बज्री कपाट । दद्धीचन जुट्टिय ॥
पग पगति सिंभ पग पग मुगति । भुगति भूमि कित्तिय चल्लिय ॥
धनि सेन साह सुरतांन दल । दरिय बीर मत्ती षुल्लिय ॥ छं० ॥ १३७ ॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने का आना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । उमड़ि आरब्ब षांन जुरि ॥

(१) मो०—टट्टरं ।

हूं जीवत रन रुक्किहैं। सो मति दूचै सुभाउ ॥
सो मति दूचै सुभाउ । ताहि निरषत बल एही ॥
कर तारी घन छांह । तून अग्गै जिम देही ॥
बीज छटा जिम प्रांन । नद्दं काया मिल ढंपै ॥
अह लोभी अह जाउ । सांहि आलम इम जंपै ॥ छं० ॥ १९९ ॥

सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना ।

कवित्त ॥ सुबर बीर गज्जनेस । अंग चैारंग बात सुनि ॥
राज रंक षिल्लै विचार । नर नाग देव मुनि ॥
तुम गज्जन वै साह । दाव दिज्जै नहिं दुज्जन ॥
जस अपजस भै मरन । जट्टु बंधै सज्जन इन ॥
दिसि अदिसि और दुष सुष्य गति । ए सरीर लग्गा रहै ॥
उच नीच चंपत चक्क गति । पति विपत्ति जिय सब सहै ॥ छं० ॥ २०० ॥

दूहा ॥ का काया मायातिका । का अप्पनी अह कैान ॥
अप्पन अंषिय मिहचतें । जो देषिये सुलोन ॥ छं० ॥ २०१ ॥

सुलतान का तातार ख़ां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ।

कवित्त ॥ सुनहि षांन तत्तार । अप्प स्वारथ सब लग्गे ॥
पसु पंषी बर जिते । तत्त सोइ तत मग्गे ॥
चियं बंध सेवक सुमंत । तन पें तन चाहै ॥
सुर नर गनधर और । जग्य जापह अवगाहै ॥
आचेत अवर परवसि परे । भूयन बिन मरदंग कह ॥
जम हथ्थ जीव पंजर परें । पंच सलाकह तुक्कह सह ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ जमर काल सो व्याल भ्रम । पंजर तुट्टत तेम ॥
षां ततार अरदास सुनि । सो आलम मति एम ॥ छं० ॥ २०३ ॥

शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े ।

कवित्त ॥ सो सेवक सुनि स्वामि । स्वामि संकटै छुड़ावै ॥

* बल घट्यौ पतिसाह। पवरि षुम्मान षांन सुनि॥
परि अरिष्ट सु बिहांन। भए सब सथ्थ उतारै॥
अप्प अप्प मुप छंडि। मंडि करि वार करारै॥
घरियार सघन समघाइ बजि। लरत लोह भए लल्लरिय॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय। करै बीर गुन गल्हरिय॥ छं०॥ १३८॥

युद्ध का वर्णन।

छंद मोतीदाम॥ सुअंत कमंत वढै अनदोस। परै घन षत्त सरोसिय रोस॥
लठै जनु सांड भयानक भंति। करै घन गज्जं घनं वन कंति॥ छं०॥ १३९॥
बचै असि अंक निसंक नि नारि। उतारत भाजन सूत कुंभार॥
तकै सिरहंन तकत्तिय घाउ। बचै करि वार मनो वचि बाउ॥ छं०॥ १४०॥
जहां तहां धुक्कत उठ्ठत एक। सरफै तरफै रत नच्चिय नेक॥
हलंमल होत षरभ्भर फीर। बचै असमांन अनुद्धिय तीर॥ छं०॥ १४१॥
बचै सर पष्पर निक्कारि जात। तकै तन घट्ट करंत निघात॥
परैं बर वज्र गुरज्ज सिरंन। बचै सिर रत्त कै पव्व झिरंन॥ छं०॥ १४२॥
अदभ्भुत आवध बज्जिय मार। ढचै जिमि हल सुनद्द किनार॥
हलंमिल है दल पैदल एक। भयं इम युद्ध घरी भर एक॥ छंद॥ १४३॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना। रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना।

कवित्त॥ एकादस दिन जुद्ध। सबर रुंघट[1] पंच घटि॥
बल घट्टिय पतिसाह। पग्ग परभरिय षांन जुरि॥
हाइ हाइ आरिष्ट। सकल हिंदून सेन करि॥
समर सिंघ मुप छंडि। जाइ भंज्यौ तिरछौ परि॥
घन घाइ बजाइ सु फौज फिरि। लरन लोह कट्ठै भिरन॥
दोउ दीन दीन उप्पम बिसल। मद मैगल छुट्टे लरन॥ छंद॥ १४४॥

---

* यह पंक्ति मो॰ प्रति में नहीं है।
(१) मो॰—सपट्ट।

कवित्त ॥ दूत सुषान षावास । उतह सामंत सिंघ भर ॥
रिस्स रिन मत्ती रीठ । तुट्टि ताइय मसंद घर ॥
गह गहंत उच्चार । कही राजेंद्र राज गुर ॥
तबह षांन रिस ग्रब्ब । हथ्थ बाहंत हंस धर ॥
जै जै सुसद्द जुग्गिनि करहि । कर षप्पर उनमंत मत ॥
दुअ लरै दीन वल स्वांम कें । घुरत चंब चंबान घत ॥ छं० ॥ २०८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ हिंदु मेक्कंभरी । ताल वज्जै हरी ॥
घाय घायं घुरी । मत्त छक्के परी ॥ छं० ॥ २०९ ॥
साहि साहाबरी । षान झुभ्भै षरी ॥
राज रावल्लरी । कंध कंधे धरी ॥ छं० ॥ २१० ॥
सीत तुट्टे तुरी । डक्क नहं करी ॥
ईस सीसं जुरी । नंचि नारद्दरी ॥ छं० ॥ २११ ॥
थेइ थेई धरी । गिद्व सिद्वं करी ॥
जस्स जंगल्लरीं । षांन षावासरी ॥ छं० ॥ २१२ ॥
जंग जुद्धं भरी । भीर राजं परी ॥
मार मारुच्चरी । हिंदु सामंतरी ॥ छं० ॥ २१३ ॥
हल्ल हल्लं धरी । मन्न दूहं[1] मुरी ॥
फौज पिक्की फिरी । राज राजंगरी ॥ छं० ॥ २१४ ॥
धीर कुट्टे धरी । बोलि रावल्लरी ॥
हनै मीरन्नरी । अस्व छंडे परी ॥ छं० ॥ २१५ ॥
हाय हायं सुरी । बढ्ढियं बंबरी ॥
काल दिट्ठं सुरी । मद्द घट्टं करी ॥ छं० ॥ २१६ ॥
दिष्षि राजंतरी । छंडि हंसं हरी ॥
कंक बंकं करी । मीरषांनू नरी ॥ छं० ॥ २१७ ॥
ढाल षांनं ढरी । अप्प हेरैं अरी ॥
कढ्ढि कीरं मरी । बाहि दूषां नरी ॥ छं ॥ २१८ ॥

युद्ध वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ मद मोष कि छुट्टं दो वर जुट्टं संकर तुट्टं आहुट्टं ।
भर भर भूआलं बूथर चालं कर बजि तालं तर तुट्टं ॥
करि कर बर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं ।
करि घन समानं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमित्रं बजि अनुरत्तं उत्तंगे ।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लुट्टे छवि बल पट्टे रग रंगे ॥
धर धरति फुरक्कं चलत न दिष्षं अंतर रुष्षं अवरुष्षं ॥
बग्गं अघ जानं को किरवानं गिल छित षानं जच भष्षं ॥ छं० ॥ १४६ ॥
है वै हिंदवानं तजै न थानं द्रोन समानं गुर पिंडं ॥
रितु राज बसंतं दीपति चिंतं संकुचि जंतं मिल षंडं ॥
नेजे बर षानं बलि लक्कि ध्यानं मीर धरानं भ्रमि दंदं ॥
सब सेन समाहं सुरपति छाहं को तिग राहं ज्यौ चंदं ॥ छं० ॥ १४७ ॥

खुरासान ख़ां का घोर युद्ध करना।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ढचाइ । षांन षुरसांन गचन पति ॥
सत्त दून भर समर । समर आहुन्ति मंडि छिति ॥
सेन नवत भ्रित नवत । नवत गजराज साज नव ॥
ते समस्त नव मंच । यंच तंच नव्वंत सब ॥
दिन अदित हंस इक सथ्थ उड़ि । रन आहुट्टिय बीर बर ॥
दिष्षहि सुजथ्थ गंध्रव गुननि । जुबर कित्त बित्ती सुभर ॥ छं० ॥ १४८ ॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन।

कवित्त ॥ पर्यौ समर षावास । समर जित्ते सुरतानी[1] ॥
परि भट्टी मद्द नंग । सस्त्र वाहे सुनिचानी ॥
पर्यौ गौर केहरी । रेह अजमेरां रष्षिय[2] ॥
स्वामि ध्रम जस रत्त । कित्ति भारथ भर भष्षिय ॥
रघुवंस पंच पंचौं मिले । बर पंचानन नाम क्रमि ॥
त्रिचंग बीर पंचो परत । चर्यौ भान मध्यान नमि ॥ छं० । १४९ ॥

(१) मो०—षुरसानी । (२) मो०—रष्यिय ।

खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज़ होना।

दूहा ॥ परे षेत षुरसान षां। ढहि घन घाय अचेत ॥
फिरि दल हिंदू जोर हुअ। बजि बरनाई षेन ॥ छं० ॥ २३२ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावे इसको पकड़ो। सब सरदारों का टूट पड़ना।

छंद मोतीदाम॥ मिले बर हिंदु तुरक्क सुनार। कटक्कट वज्जिय लोह करार ॥
उडै बर षग्ग न टूक निनार। मनो कुटि सूर किरन्न प्रचार॥ छं० ॥ २३३॥
कहै[1] बर कुट्टि सुबोल उचार। जपै उर राम कहै मुष मार ॥
भिरें भर मीर सु सामंत सुद्ध[2]। कहै कवि कथ्य सु अंषिन लुद्ध ॥छं०॥२३४॥
बहै स्वर[3] संग दोऊन अपार। ढहै बर मीर सुअंग अगार ॥
चंपे दल साहि जके चहुआंन। गहौ सुरतान हनौ षग पान॥ छं० ॥ २३५ ॥
फुले मनो साइप भ्रम्म सुरत्त। बढ्यौ मन सांहि गहंन सुवत्त ॥
चवै चहुआन अहो बर सूर। करौ सबमीर षरग्गय चूरि ॥ छं० ॥ २३६ ॥
तपे गहि राज सु संग विभाग। कुटे धर मीर सु धीरज नाग ॥
चवै मुष मार सुचावंड राइ। दलों सुरतान करों इक घाइ ॥ छं० ॥ २३७॥
सुने बलिभद्रय पीप सु अल्ह। नरां सिर[4] निडुर रष्षन गल्ह ॥
चंपे चव सामंत धाइ परेस। बहै बर सेल कियौ इह भेस ॥ छं० ॥ २३८ ॥
लगी बर सेल कमद्ध निसास। फुले मधु[5] माधुअ केसु पलास ॥
कटे बर षग्ग कमद्ध निसार। तुटै बर देवल अंड अधार॥ छं० ॥ २३९ ॥
हकै बर सामंत जुद्ध अनुद्ध। परे असि टेकत उठ्ठि कमंध ॥
चले बर नालय रुद्धि प्रनाल। नषै बर सूर अपच्छर माल ॥ छं० ॥ २४० ॥
कुथ्यौ धर धीरज मीर अभंग। बढ़ी बर जैत सु दिष्षिय जंग ॥
फटी बर फौज अनंधिय जात। अघाइय गिद्ध रु सिद्ध सुमात॥ छं० ॥ २४१॥
नचै बर नारद बीर निसान। थेई थेइ कहत वै थिरतान ॥

---

(१) मो॰—बहै। (२) मो॰—शुद्ध। (३) ए॰—कृ॰—को॰—वर।
(४) ए॰—कृ॰—को॰—ढहे वर। (५) मो॰—मनु माधव।

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

पुस्तक	मूल्य	डांकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।≈)	)॥
कविवर बिहारीलाल—(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	≈)	)॥
गद्यकाव्यमीमांसा—(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना—(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श—पद्य—(बाबू जगनाथ दास रचित)	।≡)	)॥
कर्त्तव्याकर्त्तव्यशास्त्र—(पण्डित नारायणपांडे रचित)	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)॥
हरिश्चन्द्र—पद्य—(बाबू जगनाथ दास रचित)	≈)	)॥
भगवद्गीता—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	।-)	)॥
उपेलो—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	।≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ९ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य—प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर—(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
प्राचीन—लेख-मणि-माला—१ भाग (बाबू श्यामसुन्दरदास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित) ...	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो—पहिला भाग (समय १—११)	४)	।)
,, समय १२-२४	२)	≈)
कुमारसम्भवसार—(पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित)	≡)	)।
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)

किरवान रुकंतं सजि मलवंतं भिरि भय अंतं कलमंतं ।
षप्पर अधिकारी चौसठ्ठि नारी दैदै तारी किलकारी ॥ छं० ॥ २४९ ॥
उक ईसर नहं नचि उन महं रजि रज रुहं जुरि जंगं ।
अदभुत रस अंगं षग्ग उनंगं सार सुभंगं परि रंगं ॥
सामंतं सूरं चढ़ि बिन्नूरं बजि रन तूरं असि चूरं ।
तुट्टै धर मीरं साह गुहीरं गजि गंभीरं भिरि बीरं ॥ छं० ॥ २५० ॥
नचि मीर कमंधं हसै तसिद्धं भिरि भिरि जुद्धं षग पद्धं ।
नंषै हय हंसं तेज तरंसं रुधिर सरंसं करिगंसं ॥
बुझिय सुविहानं हिंदुअ रानं कढ्ढि क्रपानं गहि पानं ॥
झारे षग झट्टं बिज्जल कुट्टं बाहि बिकट्टं नचि नट्टं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
हनि हनि सामंतं जानि जुगंतं भिरि भर जंतं अरि अंतं ।
षच्चर चहुआनं गह्व गह्व बानं साहि सुतानं बलपानं ॥
छंडे सिर छत्रं साहि सु तत्रं गोधीरत्रं मनमंतं ॥
षष्परी तजि बाजं रुहि गजराजं लरि षग साजं कह्व काजं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
तत्ते षरि राजं साहि सु साजं जै जुग काजं रस साजं ॥
आलम अरु राजं दुअ दे षाजं[१] हनि हनि बाजं भिर बाजं ॥
दिषत्री तषं राजं तजि गज राजं हैंवर साजं गुर गाजं ॥
गहि कर कम्मानं तीर सुतानं लगि असमानं बहि बानं ॥ छं० ॥ २५३ ॥
चिस झल्लर टोपं राजन धोपं असि वर जोपं वहु कोपं ॥
द्वै हनि सु बिहानं कर अप्पानं ग्रहि सुरतानं बलवानं ॥
उड़ि दिसि दिसि भाजं मीर अकाजं पष्षि सहाजं ग्रहि बाजं ॥
भग्गी बर फौजं साहि सु जौजं मन करि मौजं धरि धौजं ॥ छं० ॥ २५४ ॥

शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना ।

दूहा ॥ भगी अनी षुरसान षां । छुट्टि मीर धर भ्रंम ॥
गह्यो साह आलम कर । बिचलि सुभर तजि भ्रंम ॥ छं० ॥ २५५ ॥

सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कढै षानजादे ।

(१) मो०—राजं ।

जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत ख़ां और तातार ख़ां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया ।

दूहा ॥ रहिग जांम तन अद्व घटि । टरिन बीर जुध वार ॥
षां निसुरत्ति तत्तार षां । लयौ सैन सिर भार ॥ छं० ॥ १५८ ॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना ।

छंद भ्रमरावली ॥ जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर । जु अच्छरि पुक्क उक्कारत दूर ॥
हहा हुहु गंध सुगंध्रव गान[1] । षच्यौ घरि एक उभै रथ भांन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल । अमीय उपावहि ढुंढहि लाल ॥
जु षिझ्झै चहुवांन क्रपान कसी । सुमनो दुति दोझ्झर सी निकसी ॥ छं० ॥ १६० ॥
तुटि पट्टन गौ उपमाहि लह्यौ । सुपस्यौ जनु सेर सुरंग कह्यौ ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्यौ । भमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
नव नंचिय रुंडति मुंड हस्यौ । तिन ठौर विभक्क भयानक सौ ॥
परि लुथ्थिय लुथ्थिय तहां सरसं । सुभयौ रस शंकर रुद्र रसं[3] ॥ छं० ॥ १६२ ॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै । कवि चंद तहां उपमां उच्चरै ॥
छबि भो घन स्याम रुरत्त परी । मनों बिंब बलै नदि है उतरी ॥ छं० ॥ १६३ ॥
उपमा दुसरी रंग देषि कहै । जमुना जल में सरसत्ति बहै ॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै । रस भेद स्रृंगार पनाह हरै ॥ छं० ॥ १६४ ॥
तिन जारन गाड़न को न बचै । रनसं[4] रस तीय सु सत्य नचै ॥
धरकै धर काइर चित्त वियं । करुना रस केलि कुलान कियं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
बर बीरन जुद्ध इतो संपज्यौ । तिहि ठौर भयानक सो उपज्यौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥

रावल की वीरता का वर्णन ।

दूहा ॥ अति प्राक्रम रावर सुभर । कूरँभ नरसिंघ जग्गि ॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर । कथ्थ करन कलि लग्गि ॥ छं० ॥ १६७ ॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना । हिन्दू सेना का घबड़ाना ।

गाहा ॥ जब मचि रीठ अपारं । किय अति क्रम्म जवनयं साहं ॥

(१) मो०—जांन । (२) मो०—भवो ।
(३) मो०—हसं । (४) को०—कृ०—संसर ।

पस्यौ षांन आलूव संसार साषी ।
जिने दीन बंदेन की लाज राषी ॥ छं० ॥ २६३ ॥

रविवार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना ।

कवित्त ॥ गहि लीनौ सुरतान । समर लिन्नौ जसुभारी ॥
चामर छत्र रषत्त । वषत लुट्टे रन रारी[1] ॥
चित्र कोट चव रंग । साहि दिन्नौ चहुआनं ॥
चतुर दसी रवि वार । वीर वज्जे परवानं ॥
बुल्लयौ बीर कैमास तब । धन कढ्ढन चल्लो समुद्द ॥
आरब्ब राव भीरा सुबर । चंपि सु रष्यौ गंज उद्द[2] ॥ छं० ॥ २६४ ॥

पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना ।

दूहा ॥ परे सेन गोरी गरुअ । गहि लीनौ सुरतान ॥
सोमेसर नंदन सुकर । जै लिन्नौ जय पान ॥ छं० ॥ २६५ ॥

इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना ।

कवित्त ॥ गह्यौ साहि आलम्म । सुजस लीनौ चहुआनं ॥
षलक षांन भग्गिय विहाल[3] । परे द्वै गै धर थानं ॥
मीर मसंद मसंद । कटे सामंद हथ्थ भर ॥
दुअ राजन भर जुरे । सुवर लिन्नौ सु अप्पकर ॥
जै जै सबद्द जुग्गिनि करै । सीस गहै ईसन समथ ॥
कवि कहै चंद भारथ्थ वर । करिय राज्य प्रारंभ कथ ॥ छं० ॥ २६६ ॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा ।

दूहा ॥ करिय जैत राजन सु बर । चलिय लच्छि वर साज ॥
तब विचार राजंन गुर । कही राज सिरताज ॥ छं० ॥ २६७ ॥
तव रावर वर राज गुर । कहिय राज प्रथिराज ॥

(१) मो०--नारी ।
(२) मो०--वह ।
(३) ए० कृ० को--विहान ।

घन छिंछ उपंम करै सुरपै । मनो मेघ प्रवालनि कै वरपै ॥
घन नाद रची घन घुघघरियं । सु नचे मनों बालक विछुरियं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
इक सूरह की उपमा वरनों । दर मध्य गरज्जत सिघ मनों ॥
सुर तीन हजार सु छोह मिलें । तिन में दस तीन कमंध पिलें ॥ छं० ॥१९५॥
दस राउर हैं धर षेत चढ्यौ । टुक की टुकरा नव टूक वढ्यौ ॥
दोइ दीन रचे इतने उनमान । मनों तारक प्रात[1] विचंद समान ॥ छं० ॥ १९६॥

रावल का शत्रु सेना को इतना काटकर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घवड़ा जाना ।

कवित्त ॥ दसदै वर कटि समर । छोरि गज गाह हथ्य लिय ॥
छिंछ श्रोन सव अंग । पुहप जनु दृष्टि देव किय ॥
किल किंचित रस भष्यौ । लुध्यि पर लुध्यि अहुट्टिय ॥
सीस चक्कि धर जुट्टि । छुट्टि अरियन फिर जुट्टिय ॥
विछुर्यो देषि सुरतांन मन । सेन सब्ब मन विछुर्यौ ॥
अटि चार कोइ पुज्जै नहीं । वल अभूत आनम कर्यौ ॥ छं० ॥ १९७ ॥

पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ।

कवित्त ॥ तव पृथिराज नरिंद । साह सम्हौ गज साहिय ॥
पंच वान कम्मान । साहि गोरी झुकि वाहिय ॥
सरकि सेन सव धरकि । पक्कइ जंगल भए ठट्ठे ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । क्रष्ण सारथ सम[2] गट्ठे ॥
बर करकि करकि कंमान कर । पंच तेज कुर्यौ सवल ॥
नट डोरि जानि पट्टह चढ्यौ । रुधिर कोरि मंडी तिलक[3] ॥ छं० ॥ १९८॥

सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा ।

कुंडलिया ॥ तव जंपै सुरतान अप । जीवत जाइ सु जाउ ॥

१ ए०—को०—प्रान ।
(२) ए०—मन ।　　(३) मो०—तलक ।

रावल के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना ।

दूहा ॥ सकल सथ्थ रावर सुभर । अरु दाहिम गुर राज ॥
भट्ट चंद वर दाइ वर । आनि समंत सकाज ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ बड़ सामंत सु काज । अचल पुंडीर मंच गुर ॥
राम रैन पावार । चंद चाहुल्लि सेन वर ॥
रष्षि पास न्टप सिंघ । रहे थह लच्छि सुभट्टं ॥
और सकल सब सथ्थ । जुड़ जस लहन सुघट्टं ॥
ना मद्धि राज संबोधि थपि । सु गुर मंच बरदाइ थिर ॥
चढि चले राज दिल्ली दिसा । लै जद्दू पज्जून भर ॥ छं० ॥ २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले ।

दूहा ॥ जाम देव पज्जून नर । वलि भद्र जैत अरु सिंग ॥
कन्ह काय चहुआन वर । चले राज गुर संग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले ।

अरिय जीति ग्रह दिसि चले । आइ निकट हूतास ॥
चलत पंथ राजंन नें । पूजा करनह आस ॥ छं० ॥ २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले ।

कवित्त ॥ निकट सुदिन हूतास । पूजि इन भंति राज नर ॥
चंदन कुमकुम अगर । नंषि श्रीफल असंष फर ॥
फिरि परदष्षिन राज । मांनि बर विप्र बेद धुर ॥
घुरै नद्द नीसांन । गांन नर नर्क नचैं बर ॥
ज्वालनिय माल तृप्पय न्टपति । अति सुदेव नद्दवेद जुत ॥
दिन बीच चले जोगिन पुरह । ग्रहिय मेछ संग्रहनि भति ॥ छं० ॥ २७९ ॥

कुमार का पैदल आध कोस आगे बढ़कर मिलना ।

दूहा ॥ ग्रहिय साहि ग्रेहं गवन । आइ मिले सुकुमार ॥
मधूसाह अध कोस पर । छंडि तुरिय पै पारि ॥ छं० ॥ २८० ॥

*सो सु मित्त अप्पनौ । चित्त मित्तें न दुरावै ॥
*सो बंधव अप्पनौ । दसा अवदसा न कथ्थै ॥
सोइ त्रिया अप्पनी । आस मुक्कै अंसु सथ्थै ॥
मति सोइ जोइ पग उप्पजै । तत्त सोइ तत्तह मिलै ॥
चम परत भिरत सुरतान सुनि । गज्जन वै गज्जन चलै ॥ छं० ॥ २०४ ॥

सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना ।

कवित्त ॥ तमकि तेज गोरी । नरिंद चित डोल्लै बल[1] साह्यौ ॥
अधम भ्रत्त बिन अब्ब । पुट्ठि गोरी न समाह्यौ ॥
सुवर वीर सुरतान । सेन चहुआँन ढँढोरिय ॥
पगी जांनि पारथ्थ । जेम दरियाव बिलोरिय ॥
पक्खिलो बलन सुरतान दिपि । सिंघ लोक अविलरकयौ ॥
मुरि गयौ सेन सुरतान कौ । कच सीस तब नंषयौ ॥ छं० ॥ २०५ ॥

पांच ख़ाँ और पांच ख़वासों का घोर युद्ध मचाना ।

कवित्त ॥ पंच षान सुरतान । पंच षावास सु चढ्ढिय ॥
पासवान सुरतान । पास बाजू दोइ ठढ्ढिय ॥
रन रुंध्यौ सुरतान । सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
मनु पलट्यौ नट भेस । वीर करुना रस सज्जिय ॥
भर भीर तीर कुट्टिय दिषिय । तब सु ओट[2] आलम गच्चिय ॥
तत्तार षांन पुरसान षां । अंत मंडि सब दिषि कच्चिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥

कवित्त ॥ जब सुषान षावास । भरर लग्गिय भय तप्पन ॥
वच्चिय सार सुष मार । छंडि गोरिय बल अप्पन ॥
लाल डंड सिर छत्र । देषि सुरतान साह्यि पर ॥
तब दौरे भर सुभर । चलै चल चल्ल धराधर ॥
विचलिय सुफौज सुरतान लषि । तब कुट्टिय धर धीर संचि ॥
पानह सुपंच षावास भिरि । सिर पर आवध रीठ मचि ॥ छं० ॥ २०७ ॥

(१) मो०-मीचतं ।
(२) ए०-कृ०-ओल ।

एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार ख़ां को दिया।

डर जांनी अविगत्त जब। भजि आयौ भट मझ्झि ॥
कहर हक्कि पानीय चढि। कढि ततार अग गुझ्झ ॥ छं० २८९ ॥

ततार ख़ां ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए।

गाथा ॥ सुनिय ततार सु तब्बं। रहनं तुक्क दिल्लीपुर राजं ॥
षिची आतुर पटयं। बेगं साहि दंड कज्जेनं ॥ छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ तुम जाहु सु चहुआन प्रति। कहु सलाम सब सथ्य ॥
तुम सु बढे हिंदून में। छुटै साहि सुभ वत्त ॥ छं० ॥ २९१ ॥
तब ततार अरदास लिषि। प्रति पठई राजान ॥
तुम छंडो पतिसाह कौं। तुम सुं बडे चहुआन ॥ छं० ॥ २९२ ॥

खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना।

षिची चलि चहुआन पै। करिकै सबन सलाम ॥
पंच सत्त असवार लै। कोस सत्त मुक्काम ॥ छं० ॥ २९३ ॥

खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा।

छंद पद्धरी ॥ घर मग्ग चल्यौ षचीस हिंदु। अति चिंत सुरतान बंद ॥
द्वादसह कोस प्रति चलै मग्ग। निज मंच इष्ट चित वन सु लग्ग ॥ छं०॥ २९४॥
अपसगुन सगुन चितै विचार। दिषि बाम सिंघ दिष्षी दुवार ॥
उल्लूक सबद दिय गिरह सीस। दाहिन सुपत्त म्रग म्रगी ईस ॥छं०॥२९५॥
म्रतक रथी सनमुषह आइ। फुनि समुष ग्राम लग्गी स लाइ ॥
अति उअर षिचि आनंद जग्ग। आतुरह चल्यौ दिल्ली समग्ग॥ छं०॥२९६॥

खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना।

कवित्त ॥ तव षिची लोरक्क। चले दिल्ली पुर मग्गं ॥
पंच सत्त असवार। उर सु चिंता मन भग्गं ॥
बामी देव चवंत। तार उक्कव सिर उप्परि ॥
म्रग सम्रह दाहिने। चल्यौ पहु पिंगी निक्करि ॥

खेम विच्छेदरी। रंभ थंभं ढरी॥
देषि दार्हिम्मरी। पीप सा निठुरी॥ छं०॥ २१९॥
अल्ह सारी सरी। दूर राजं बरी॥
देषि लोहं जरी। पग्ग पग्गं भरी॥ छं०॥ २२०॥
जुद्ध सूतं करी। काम सामंतरी॥
भीर पक्खी परी। चक्रि हंसे सुरी॥ छं०॥ २२१॥
भाल भल्ले सुरी। राज कित्तं करी॥
अट्ठ पानं गिरी। दूअ रावल्लरी॥ छं०॥ २२२॥
और सच्चं सरी। पांन ढाहे धरी॥
कित्ति चंदं करी। नाम ले अच्छरी॥ छं०॥ २२३॥
दीष दस्सं वरी। खेप खेपं परी॥
संक सुक्कं सुरी। भान थानं परी॥ छं०॥ २२४॥
भेद चल्ले सुरी। सूर सें अंवरी॥
विंद ढुंढै फिरी। जैत राजंगिरी॥ छं॥ २२५॥
कित्ति देवं करी। फौज चल्ले धुरी॥
चल्ल विचल्लरी। कुस्स कुस्सं मरी॥ छं०॥ २२६॥
......................। देव नंचे परी॥ २२७॥

कन्ह का खुरासान खां को मारना।

छंद मोतीदाम॥ पच्यौ जवँा सेन सुरावर सार। मनों मदमत्त कँठीर गुँजार॥
नयौ सिर नाग सुमंडिय जंग। घुरैं सुर जोरय[1] चंबक संग॥ छं०॥२२८॥
बचे करि वार सु संगिय सूर। परे पर नार असूर पजूर॥
गयौ बर सिद्ध रु सूर समंत। भयौ जनु आंनि कै ईसर अंत॥छं०॥२२९॥
नचे दय तारिय चौसठि नारि। बरैं बर सूरय देय षमारि॥
मिले सम कन्ह अनी षुरसान। बकै दुहु ईसह षान समान॥छं०॥ २३०॥
दुअं बर धारिय संग गुमांन। चए चिय कन्ह सुपान उरांन॥
पयौ षुरसान सु बंधव नेत। वढी अति देषि प्रथी पति जेत॥ छं०॥२३१॥

(१) मो.—जोरसु।

सभा में बैठे सामंतों का वर्णन । राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर के बैठना ॥

कवित्त ॥ सभा विराजत राज । आइ बैठे सुब्बर भर ॥
कन्ह काइ चहुवांन । जैत बलिभद्र सिंह नर ॥
जांम देव पज्जून । बड़े सामंत लज्जभर ॥
और सकल भर राज । बैठि तहां मझुल रंग जुरि ॥
आए सुतांम लोरक्क तब । मिलि सलाम राजन करिय ॥
बैठन्न हुकुम राजांन किय । करि सलांम बैठा नरिय ॥ छं० ॥ ३०४ ॥

लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्ज़ी राजा को दी ।

दूहा ॥ तब षिची प्रथिराज कों । करि सलांम तिय वार ॥
लिषि अरदास ततारषां । समपी बीर विचार ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

मध्धु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो ।

मधू साह परधांन कर । दिय पत्री षचीस ॥
किय हुकम्म बर राज नें । बंचे साह जगीस[1] ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

तत्तार खां की अर्ज़ी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री राजंग राजन बरं धर्म्माधि धर्मं गुरं ॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्तते ॥
अरदासं तत्तार षांन लिषियं सुरतांन मोचं करं ॥
तुम बड्डे बड्डाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं ॥ छं० ॥ ३०७ ॥

राजा ने अर्ज़ी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया ।

दूहा ॥ तब षिची अरदास किय । बंचि सुनाइब[2] राज ॥
तब राजंन प्रसन्न हुअ । दई सीष थह काज ॥ छं० ॥ ३०८ ॥
उठि राजन दीने बहुरि । थह षिची गय अप्प ॥
मन चिंता लग्गी घनी । राजन देषत तप्प ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

(१) ए०–छ०–को०–गुहीर । (२) मो०–छ०–को०–ए०–वर ।

रिहै[१] अति ताइ तुतार सुढांन। मिलै मुहु जोर हुए मरदान॥ छं० ॥२४२॥
हुए चिय नेज ततार सुतंन। पछौ धर मुच्छि कछौ धनि धंनि॥
करै सुष किति नयै कुसमंन। खली वर फौजय साहि सुतंन॥ छं०॥ २४३॥
ढहै वर मीर सु साहिज मंन। ....॥ छं० ॥ २४४॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध।

दूहा॥ अति संकर वर जुद्ध हुअ। इत राजन उत साहि॥.
दोऊ नेंन अंकुरि परे। वजि बीरा रस ताहि॥ छं० ॥ २४५॥

शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना।

उत्र हय चाइ सुषावदी। इय हय आइय राज॥
इय कर षेले षग्ग वर। उत्र कमान कर साज॥ छं० ॥ २४६॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन।

कवित्त॥ जवहि साह आलम्म। भुक्कि[२] कम्मान अप्पगहि॥
तवहि राज प्रथिराज। तेग पक्करिय अप्प रहि॥
वह्व वरषत वर तीर। पंचि वरषंत सार ढहि॥
इचै तेज षग झमहि। करी तुट्टे कमंध वहि॥
आलम्म राज दुअ जुद्ध हुअ। नह दिष्यौ दानव सुर॥
वर दाय चंद इम उच्चरै। करत किति गैनह अमर॥ छं० ॥ २४७॥

घोर-युद्ध वर्णन। शाह की सेना का भागना।

छंद त्रिभंगी॥ पढ़ मंदह रतनं[३] अठुह रतनं[४] पुनि वसु षरनं रस रष्षनं।
त्रभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई।
अंतै गुर सोहै महि लय मोहै सिद्ध समोहै यह होई।
विज्जू वर षग्गं असि मर लग्गं भिरि भिरि जग्गं रजि रंगं॥ छं०॥ २४८॥
वज्जै रिन तालं माहो मालं षग्ग सु षालं भिरि चालं।
राजा प्रथिराजं असवर भाजं स हि सु साजं भिरि भाजं।

(१) मो०-रहै। (२) मो०-भुकिल। (३) ए०-कृ०-को०-हरणा।
(४) ए०-कृ०-को०-हरणं।

ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा।

प्रसंन निजांम सुसेष[1]। लेष सांइ इमलेषं॥
अहो साह जल्लाल। आनि तुम्म समय सदप्पं॥
मद्दा प्रबल तप तीन। दीन हिंदू दल[2] आलम॥
षरि करिहै निज पांन। जोर जुग्गिनि पुर जालम॥
अज्ञाव नारि तिहि पाप तें। असुध किति दुनियां रहै॥
दस दिसा दप्प असुरांन दल। लिषि लिलाट तिम्मो लहै॥ छं०॥ ३१५॥

शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें। एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया।

छंद विअष्षरी॥ आयो निज सुरतानह गेहं। वेन निजाम उवर दुष लेहं॥
जौं मुझ सुत ह्वैहै बल कारी। तौ मुझ मारि लेइ धर सारी॥ छं०॥ ३१६॥
तितें नारि इक ग्रभह धरयौ। दासी कांन साह अनुसरयौ॥
ततषिन साह सीस धनि नारी। समह गरभ धर मंड[3] सुधारी॥छं०॥ ३१७॥
वरष पंच अनि ऊपर वीतं। हुअं साह सुरतान सुअतं॥
सवै षांन मिलि मंच विचारं। कवन सीस अब छच सुधारं॥ छं०॥ ३१८॥
सेष एक मधि गोर निवासी। तिहि अद्भुत रस दिष्षि प्रकासी॥
अष्षिय आइ जहां मिलि षानं। कुदरति[4] कथा एक परमानं॥ छं०॥ ३१९॥
झूठी होइ तौ सजा लहीजे। सची हूऐ निवाजस कीजै॥
सवै षांन मिलि पूछे वत्तं। कहिवे सेष सु क्या कुदरत्तं॥ छं० ३२०॥

---

[१] मो०—प्रसनि ज्ञानि हंसेष। [२] ए०—कृ०—को०—अलि।
[३] मो०—मंडह। [४] ए०—कृ०—को०—कुदरति।

ग्रह्यौ हथ्य गोरी ग्रवें साचि बादे ॥
लग्यौ चित्त कोटी सुरत्तांन राह्यौ।
बजे वे निसानं सजित्यौ सराह्या ॥ छं० ॥ २५६ ॥
गयौ भग्गि कूरंभ मरवट्ठ वाली।
गयौ सत्त मुक्के न्रपं वे पँवाली ॥
सवें सेन वंधी रहे सेन मुक्के।
गयौ षव्वसी रोमसा ध्रंम चुक्के ॥ छं० ॥ २५७ ॥
परा रीन गौरं भगे रुंड मुंडं।
पस्यौ मभ्भ सामंत गोवाल कुंडं ॥
भग्यौ कंनरी हत्त ले हत्त वानं।
भग्यौ वेदरी वल्ल कदी कंढि पानं ॥ छं० ॥ २५८ ॥
बद्दं वे कुसादी पस्यौ कास्मीरं।
मुलत्तान पट्टू कुर्यौ हथ्य तीरं ॥
भग्यौ प्रब्बती पल्लवी झारषंडी।
जिने भुज्ज गोरी ग्रहे लाज मंडी ॥ छं० ॥ २५९ ॥
भग्यौ वे वंगाली करंनाट षाली।
भग्यो भागि सांद्रोल कूरंभ वाली ॥
पस्यौ भूम्मि सा वद्दरी वद्द तीनौ।
जिने ठेलि चहुआन सव सद्द दीनौ ॥ छं० ॥ २६० ॥
वयं विंद्द षाली भग्यौ सध्य सव्वं।
जिने लोहची लग्गि अंची[1] न कव्वं ॥
मयं मेछ बड्डे मयं मक्क राया।
जितें भागतें वार लागी न काया ॥ छं० ॥ २६१ ॥
भग्यौ ब्रह्म जा पुत्त अची कुचीरं।
जिनें भग्ग तें भग्गि सुरतान धीरं ॥
भग्यौ गज्ज पीरा उसा हत्त नायं।
भग्यौ अग्गिवानं सु मानं सु सायं ॥ छं० ॥ २६२ ॥

(१) मो०—अंचन।

अप्पौ सु मोहि वह डंड करि। तीस सहस हय नेक मल्ल॥
छुटै जु साहि साहाव तव। हम तुम रहै सु प्रेम भल्ल॥ छं०॥ ३२६॥

खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए।

दूहा॥ तव पिची हम उच्चरै। सुनौ राज प्रथुराज॥
जो मंगो सो देउ तुम। छुटै साहि वर आज॥ छं०॥ ३२७॥

पत्र लिखकर दूत को दिया कि जो इक़रार हुआ है वह भेजो।

थप्पि वत्त हुच पच लिपि। दियौ दूत कै हथ्थ॥
जो कछु कियौ करार कर। सो पठवो तुम अथ्थ॥ छं०॥ ३२८॥

पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो दस दिन में रात दिन चलकर पहुंचे।

तव ततार षां मुक्कि दिय। रजत हयग्गय नंग॥
अहि निस आतुर आहुचर। उभय सु दस दिन संग॥ छं०॥ ३२९॥

दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना।

कवित्त॥ दिय सु दंड सुरतांन। गय सु इक्कति पंचह हय॥
औराकी वर उंच। उभय पथ्थै सु निरम्मय॥
नाम पट्ट श्रृंगार। षट्ट रिति मद्द पट्ट भर॥
अलि गुंजत मकरंद। वास भज्जंत अवर डर॥
है सहस तीस अनि साज भल्ल। दिय सु दंड सुरतान तय॥
मुक्यौ सु राज प्रथिराज तव। चल्यौ साह गज्जन पुरय॥ छं०॥ ३३०॥

सुलतान का ग़ज़नी पहुंचकर अपने उमराओं से मिलना।

दूहा॥ चल्यौ मेच्छ गज्जन पुरय। दै सुदंड प्रति दिथ्थ॥
मिलिय उम्मरा अप्पने। करिय घेर सम सथ्थ॥ छं०॥ ३३१॥

शाह के महल में आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना।

गयौ साहि आलम महल। करी वैर वर अप्प॥
मिलि ततार षुरसांन षां। बड़ वषत्त मिलि तप्प॥ छं०॥ ३३२॥

ढिल्ली दिसि ग्रह चल्लियै। पिरि सु मुहूरत राज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हो इसका कारण कहो।

फिरि राजन इम उच्चरिय। सुनौ अखुट्ठ नरिंद ॥
का कारन पीछे फिरै। सो कारन कहि नंद ॥ छं० ॥ २६९ ॥

उनका उत्तर देना कि इस त्रिजय का उत्सव घर पर चलकर करना चाहिए।

तवै सिंघ फुनि उच्चरिय। अच्छो समंतन राज ॥
साद गह्यौ तुम्र जैत हुम्र। ग्रह करि मंगल काज ॥ छं० ॥ २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़कर शुभ काम कीजिए।

रखैं अप्प सेना सुसथ। अरु दाहिम्म सुराज ॥
भट्ट चंद सामंत सथ . करि सुभ मंगल काज[1] ॥ छं० ॥ २७१ ॥

वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए।

जतन लछि वर किज्जियै। रचौ सुभर अप्पानि ॥
जब रह फिर इरजिंद इत। तब कढ्ढै लछि आनि[2] ॥ छं० ॥ २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना।

गाथा ॥ कहि प्रथिराज नरिंदं। जु कछु कहै सिंघ दाहिमं ॥
सोइ थप्पिय द्रढ मंतं। चल्लि राजिंद ढिल्लि मग्गेयं[3] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना।

ढिल्ली मग्ग सु चलयं। फागुन सुदि त्रयोदसी दिवसं ॥
क्रमे सु दस दिन मग्गं। अवरं रष्पि सब्ब भार तथ्यं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

(१) मो०–करि चल दिल्ली साज।
(२) मो० प्रति में "जब आंक दिल्ली सुनै तब कढ्ढे लछिआंन"।
(३) ए० कृ० को–मग्गाइ।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नारिंद प्रति। कही सु अनुचर एक ॥
सुभ वराह एकल प्रबल। कही षबरि सु विवेक ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावै।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय। अरे सिकारी साज ॥
मति एकल बन जाइ भजि। करि रोकन को साज ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना।

कवित्त ॥ एक दिसा कूकरह। एक दिसि म्लह धारिय ॥
एक दिसा षेदा अनंत। एक दिसि और प्रचारिय ॥
एक दिसा राजंग। एक दिसि आनि अनुचारिय ॥
एक दिसा सामंत। एक वहु भांतिय तारिय ॥
यों व्योंत सब्ब राजन करिय। हक्कि सोर उक्कारि भर ॥
निक्सत सु सूकर अप्प रह। हने तीर षंचे सु कर ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

सूअर का मरना सरदारों का राजा की बड़ाई करना।

दूहा ॥ लग्यौ बांन वाराह उर। पस्यौ षेत धर मुच्छि ॥
मिले सकल सामंत तब। कही सबन धन[1] अच्छि ॥ छं० ॥ ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया।

घन अनँद राजन भरिय। चल्यौ राज चढ़ि बाज ॥
तब सु एक पारधि कही। नाहर घात सु राज ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलेंगे।

तब सुराज से मुष्य कहि। सुनौ सबै प्रति सूर ॥
विन सुघान अग्यार में। आन राज ढूंढ नूर ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको।

(१) मो०--परिकर।

राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना ।

चढन राज वर हुकुम दिय । रेत सुमंतहु साज ॥
जैत हुई आनंद करि । ग्रह जित्तन सुभ काज ॥ छं० ॥ २८१ ॥

चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे ।

गाथा ॥ ग्रहन जित्त अरि अचियं । चैच बदी सत्तमो दिवस ॥
गुरुवारं सुभ जोगं । राजा संपत्त धवल मभझोनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया ।

आये राज सुधामं । गए ग्रह मद्धि साल सुभ तथ्यं ॥
बोल्लि आइ सब वामं । निवछावरं करि गई ग्रेहं ॥ २८३ ॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं । राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए ।

गई ग्रेह ते चीयं । राजन सुख विस्समियं तथ्यं ॥
अति मादक उनमादं । करि सुष सेंन रमन रस क्रीडा ॥ छं ॥ २८४ ॥
दूहा ॥ कीड़ि धांम न्टप रंग करि । नेह संपूरन काज ॥
दीय वचन रष्षन सुजन । डोली साह सुराज ॥ छं० ॥ २८५ ॥

शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय ।

डोली साह सचार्न की । दोइ रकेव वर सथ्थ ॥
सो डोली कज दस असुर । करि हुकंम मर मथ्थ ॥ छं० २८६ ॥
दस आदम साहाब कज । रषि भोजन न्टप पास ॥
सुष सचाव तुम रष्यियौ । रहै राज सुभ भास[1] ॥ छं० ॥ २८७ ॥

शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना ।

सुनिय वत्त गज्जन पुरह । ग्रहत साह की घत्त ॥
अनुचर आतुर अति भयौ । उर जानी अविगत्त ॥ छं० ॥ २८८ ॥

(१) ए०—क्ट०—सास ।

सिंघ सु सम्हा चल्लिया गजराज संभारे।
तव राजन गज चंपिया डैंवर ठट टारे॥
तीर सनंमुष नंषिया कोइ लग्गै न्यारे।
नेरां आयां जैत राव सिंगनि उभ्भारे॥ छं०॥ ३४७॥
छोड़े मोह सु हल्लिया नाहर ललकारे।
पारधि एकें चंपिया हथ्थल पछ्कारे॥
राज कमान सु षंचि कर तरीन तिष्पारे।
फूटि दुवा सूवार पार गह्लन जिभ्भारे॥ छं०॥ ३४८॥
करि है तत्ता कूरंभ झुक्या असि झारे।
बाहे वब्बर बीचह्नै द्वै टूक निनारे॥
मनों सबन विच सुझ्झि थावहि तंतू सारे।
भल भल सब सेना कहै कूरंभ करारे॥ छं०॥ ३४९॥
धनि माता अरु धनि पिता पज्जून पचारे॥ छं०॥ ३५०॥

राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे।

दूहा॥ घन सिकार राजन करिय। हनि बराह अनि अट्ठ॥
बाजे बज्जन सुबर[1] बजि। करि राजन पहु पट्ठ॥ छं०॥ ३५१॥

सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया।

हनि सिकार वाराह बर। दीए सब सामंत॥
बंटि सु दीनौ अवर भर। करि उच्छाह अनंत॥ छं०॥ ३५२॥

राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना।

कवित्त॥ तब प्रथिराज नरिंद। आइ दिल्ली पुर मझ्झं॥
अप्प चिंत बर अवर। बैठि सिंघासन रज्जं॥
अवर सूर सामंत। सकल सभ्भा भर मंडे॥
तव सु चंद बरदाइ। आइ कुसुमावलि छंडे॥
बैठे सु सबनि उच्चार करि। सुनिय गान गायन सकल॥
दिल्लीय नैर दिल्लीय पति। करि अनंद दंडे सुषल॥ छं०॥ ३५३॥

(१) मो०-सुरस।

वेदेव चित्त मन मत्त हुअ । चल्यौ कूच पर कूच धरि ॥
आए निकट्ट दिल्ली सु नट । मन चिंता अंदेस हरि ॥ छं० ॥ २९७ ॥

लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाथा ॥ मन चिंता अंदेह । पिथी आइ दिल्ली मझेतं ॥
अदनि सिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्यं ॥ छं० ॥ २९८ ॥
तहां उतरि लोरष्यं । बाग निरष्यि उत्तिमं ठाइं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तष्याइं ॥ छं० ॥ २९९ ॥

दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा ॥ दोइ घरी दिन पछ्छ रहि । चल्यौ दिल्ली पुर मांहि ॥
अति उज्जल वस्तंग वर । प्रावर पिहि उछाह ॥ छं० ॥ ३०० ॥

नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली । यह शुभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेस सगुन्न हुअ । मालनि फूल उछंग ॥
लिए वंदि पिथी सुमन । मुक्कि महुर सुभ नंग ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।

चलि पिथी दरवार मग । जहां राज प्रथिराज ॥
अवर सूर सामंत सुभ । बैठे सभा विराज ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा वकील आया है । राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी । लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ।

कवित्त ॥ गय पिथी दरवार । द्वार पालक सम अष्पिय ॥
कूरम केहरि कहों । साहि उक्कील सुलष्यिय ॥
गय केहरि न्रप निकट । कह्यौ गज्जन पुर दूतं ॥
पठयौ पान ततार । साह कंडावन बत्तं ॥
न्रप बोलि कह्यौ हज्जूर तिहि । एक्का एकी मध्य लिय ॥
सनमुष्ष आइ चहुआंन को । सीस नाइ तसलीम किय ॥ ३०३ ॥

दीह निसा चहुआंन चलि। आइ अचानक राज ॥
तब जानी जब दिष्षि न्टप। मिलि सब सेन समाज ॥ छं० ॥ ३९१ ॥

सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना।

कवित्त ॥ मिले सुभर अप्पान। जांनि आतुर षडि राजं ॥
हाहुलि रा पुंडीर। अचल चौहान सु साजं ॥
राम रैंन पावार। सु गुर गुरराज समाजं ॥
अवर सुभर सामंत। बहुत परिकर सम राजं ॥
इत्तने आइ सब वैठि मिलि। तब जानी जब दिष्षि न्टप ॥
सुनि वेंनि षबरि आतुर तुरत। मन प्रमोद आनंद वप ॥ छं० ॥ ३९२ ॥

गाथा ॥ आतुर षडि[1] राजानं। मिलियं सेना सु अप्प भर मग्गं ॥
हुअ आनंद अपारं। मिलियं सिंघ राज सामंतं ॥ छं० ॥ ३९३ ॥

रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना।

कवित्त ॥ मिले राज वर सिंघ। प्रेम पूरन राजन भर ॥
घरी दोइ बैठे सुतथ। बत्त सिकार कहिय गुर ॥
अरु सु दंड पतिसाह। हत्य कारन कहि राजन ॥
सुनि दाहिम्मरु चंद। सुभट[2] सब कही सभा जन ॥
चल राज सिंघ प्रति सब कही। अरु कढ्ढन लच्छी गहिय ॥
आयौ सु राज थह अप्पनै। एक निसा राजन रहिय ॥ छं० ॥ ३९४ ॥

शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना।

कवित्त ॥ बजि नरिंद जय पत्त। बीय बज्जा घन बज्जै ॥
ताइप घर गजराज। राज दरबारन गज्जै ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत लीनौ सुरतानी ॥
उत्तर वै साहाव। गयौ सुलतानह पानी ॥
छंडयौ छत्र सुरतांन सिर। राज छत्र सिर मंडयौ ॥
बाजंत नद्द नीसान घन। बंधि साह दँडि छंडयौ ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

(१) ए० कृ० को०—षरि। (२) ए०—सुनि।

दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया।

बहुरि सु आए दिन अवर। मिल्लि राजन किय बत्त ॥
संमुष राजन उच्चरिय। मन सु अगोचर तत्त ॥ छं० ॥ ३१० ॥

लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह के छोड़ने की प्रार्थना करना। पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा ?

छंद पद्धरी॥ पचीस वेंन सम अप्पि राज। चहुवांन वंस तुम हिंदुराज ॥
चीतौर स्वांमि कै संभरेस। चालुक्क राज जिहि पग्ग पेस ॥ छं०॥ ३११ ॥
कमधज्ज संगि तिहि व्याहि अप्प। जैचंद उरहि[1] दिय अनुज नप्प[2] ॥
कइ वार साहि बंधयौ पांन। दीनौ केवार जिहि जीव दांन ॥ छं०॥ ३१२॥
तब लोरक सम[3] पुछै नरेस। गोरी सु नांम किहि विधि कहेस ॥
सम राज अप्पि पची निवार। न्टप राज एह अदभुत विचार॥छं०॥ ३१३ ॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था। पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निज़ाम की टहल करने लगा।

कवित्त ॥ बैठि पाट असुरांन। साह जल्लाल प्रमानं ॥
अनंत तेज पग ताप। अनंत दामार दिवानं ॥
पंच सत्त दस हरम। साह कामी तप भारी ॥
हमल हरम निज जांनि। *हनै कर असि वर नारी ॥
सुत ताप राज डरतें गहन। कांम पैर निसि साह मन ॥
सुरतांन पैर अग्गैं धरिग। सेष निजांम सु हुअ प्रसन ॥ छं० ॥ ३१४ ॥

शेख़ निज़ामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें

(१) को०--कृ०--ए०--सुअर। (२) कृ०--ए०--नाय।
(३) मो०--समह।
* मो०--प्रति में "हनै कर वर कर नारी" पाठ है।

उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी।

अति आदर आखेट न्टप। पति पुर पट्ट पास ॥
पाहन एक पयाल में। संपेष्यो कैमास ॥ छं० ॥ ३७० ॥

कवित्त ॥ संपेष्यौ कैमास। आस बंधी मन संती ॥
ज्यौं बाल चंद निसि करक। मकर दिन मास वसंती ॥
यों उद्दिम न्टप सेव। सेव न्रप सेव सुमंती ॥
ज्यां कन कलंक लगि अंक। सुबर वर वीर अलंती ॥
वच क्रम्म क्रोध अम्मर अरस। सुमन वास ज्यौं वायवर ॥
लच्छिनह लच्छि अरु बंचि विच। हुबर वीर तत्तह सुनर ॥ छं० ॥३७१॥

कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा।

दूहा ॥ मंची न्रप सामंत सम। परी सु पाहल पास ॥
रास थंभ जनु ग्वाल लिखि। लगि बंचन कैमास ॥ छं० ॥ ३७२ ॥
ऊरध अंगुल सठ चिसठ। तीर कहत चवसट्ठि ॥
तहां अक्कर ब्रिम्यौ सु द्रुम। सरमै द्रव्य अनिठ्ठ ॥ छं० ॥ ३७३ ॥
भरि प्रसंक अंगुल भरिग। तिय अंगुल सत[1] अंक ॥
अंगुल अंगुल अंक में। एकादसै प्रसंक ॥ छं० ॥ ३७४ ॥
भवतव्यह जो दुज लषै। घरी दीह पल मास ॥
हृदय क्रोध ज्यों द्रिग लषै। त्यों लष्यौ कैमास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया।

बंचि उचारि सुमंत तिहि। सरमय[2] मप्पिय बांह ॥
मंडि सु अंगुल विगुलह। द्रव्य निरत्तिय ताह ॥ छं० ॥ ३७६ ॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन। धन अरिष्ट न्टप जोइ ॥
सोइ पूजा क्रत चिच पति। तिन पर वज्जन होय ॥ छं० ॥ ३७७ ॥

(१) मो०-छह। (२) मो०-सरमें।

बीबी फतेसाह की घरनी । कुदरति गोर मद्धि एक धरनी ॥
गोरि मद्धि इक चेलक वासं । देष सरूप कोटि रवि भासं ॥ छं० ॥३२१॥
सबै षांन मधि गोर सिधाए । करि अंगुरी तिहि सेष दिषाए ॥ छं० ॥३२२॥

उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ।

दूहा ॥ गोरि दिखाई षांन तिहि । ततषिन भंजी पाज ॥
निकस्यौ सूरति सरस कौ । जोति भांन महराज ॥ छं० ॥ ३२३ ॥

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा । इस की जाति गोरी है । यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा ।

कवित्त ॥ जोति रूप महराज । साहतें प्रगट सवायौ ॥
षांना षांन जिहान । वेगि निज्जूमि वुलायौ ॥
लिषिय जनम तिय लेष । सेष तत षिन इम अष्षी ॥
नाम साह साहाब । जाति गोरी तिहि दष्षी ॥
बहुतेज तपत तप जग्गि है । धरा हिंद सम लग्गि है ॥
दस दिसा साह दौही फिरै । घन वीरा रस भुग्गि है ॥ छं० ॥ ३२४ ॥

लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई ।

दूहा ॥ जातें बहु रिन भग्गि है । फुनि तिहि गहि है पांनि ॥
पुब्ब कथा पिती कहै । सुनहु राज चहुआंन ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है । उसको और तीस हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटे ।

कवित्त ॥ तब सुराज प्रथिराज । कहै पिती सुनि वत्त ॥
हम आलम गति कहैं । सोइ मानै करि सत्तं ॥
गज सु एक सिंघली । नाम स्रृंगारहार गज ॥
अति पीय साह साहाब । लषै निसि दिन आलम सुज ॥

रैनि मध्य विन चंद । जगे सामंत स्वांमि तँत्त ॥
नीद सयल छुत्र सथ्य । षनिय सम द्रव्य राज थत्त ॥
षोदंत पुरष ढक्कत्त प्रगट । सिलत्त षत्त सत्तत्त सुमय ॥
नचि सकय अंक लिष्यौ सुपर । बंचि राज कैमास तथ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा ॥ सुनो सूर सामंत सब । सु ह्रदय सकल रजान ॥
जो न हसै मुष्हि सबर[1] कोइ । तौ दिष्षौ पाषान ॥ छं० ॥ ३८३ ॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे ।

न्याय नांम कैमास तुझ । दुज दीनौ सुबाइ ॥
ज्यों बेली फल भारतें । न्याइन मैं सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)

भयौ समय इमरत्तरी । ज्यों वय संधि सुवाल ॥
मध्य मुठ्ठि कंमांन की । रही रत्ति तिन ताल ॥ छं० ॥ ३८५ ॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे ।

तब दिष्षो षह थांन लिन । सस्त्र अनी छिति भंजि ॥
अप सु दिष्षो चव सुवल । रहे दूरि सब भज्जि ॥ छं० ॥ ३८६ ॥

विक्रम संवत ग्यारह सैा अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीरज ने असंख्य धन पाया ।

साक सुविक्रम इक्क दह । तीसरु अठ्ठ संपत्त ॥
चहुआनां न्रप सोम सुअ । लभ्भि वित्त अनमित्त ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे ।

(१) ए० कृ० को०—सकल ।

पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ वच सु पट्ट शृंगार। मत्त गज राज पटा झर ॥
रच्चै नरिंद मुष अग्ग। रास रेसंम फंद पर ॥
जव राजन चढ़ि चल्लै। तवहि मुष अग्ग निरष्षै ॥
जे अनंत गज प्रवल। ते सु प्रमल सह धष्षै ॥
जब चढ़ै राज टामंक करि। तव अजव्व सोभा लहै ॥
आतस चरित्त अदभूत लिपि। दुअ कपोल बूंदन वहै ॥ छं० ॥ ३३३ ॥

हाथी के रूप और गुणों का वर्णन।

कवित्त ॥ सत्त हथ्थ जरह। हथ्थ नव देह लंवाइय ॥
दस हथ्थां परिमांन। पीठ छत्ती गिर दाइय ॥
भद्र जात उतपंन। दुरह हद पाट शृंगारं ॥
जो रावर कहि चंद। कोट गढ़ ढाहन वारं ॥
च्यालीस कोस चालंत मग। लियें लोह च्यालीस मन ॥
दिन प्रति गुलाल थानं करज। पंभारें डारंत घन* ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

सब सामंतों को साथ ले एक दिन शिकार के लिये राजा का जाना। वहां कन्ह चौहान का आना।

एक सुदिन राजन्न। चढिव सिक्कार प्रपत्ते ॥
और सकल सामंत। जाइ सथ पच्छ मिलंते ॥
सत्त सहस असवार। मिले मुष राज सुरत्ते ॥
जांम देंव पज्जून। मान मरदन मरदत्ते ॥
सिंघह पवार सुभ सथ्थ तहँ। जैत राव वलिभद्र सम ॥
चहुआन कन्ह नर नाह वर। आतुर परि आयेव श्रम ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

गाथा ॥ परि कर सकल सिकारं। लीने सव राजनं राजं ॥
अवर सूर सामंतं। धरियं साज अप्प सा काजं ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना।

* छन्द ३३४ मो० प्रति में नहीं है।

सित तरनि चलंतत भम्म रहि। द्रव्य परष्षिय मध्य असि ॥
सामंत सूर झूम उच्चरै। भयौ बीर कैमास वसि ॥ छं० ॥ ३९३ ॥

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला।

सुनिय बत्त चहुआन। भयौ आचिज्ज सब्बघन ॥
भूमि किंत्ति संजुत्त। अहे आवै अभंग घन ॥
पुर सु तिष्य घर मध्य। क्रोध जाजुल्य नैन रत ॥
सुर संगर विच बंधि। ग्रीव[1] लीनो उछंग तन ॥
षोद्यो भूमि द्वादस सु हथ। हंकि बीर दानव गज्जिय ॥
कवि चंद दंद मन मद्धि बँध्यौ। चित्त चिंत ब्रह्मंड लगिय ॥ छं० ॥ ३९४ ॥

उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया।

छंद भुजंगप्रयात ॥ प्रकारे सुचारे भुजंगं प्रयातं। षगप्पत्ति गायं अहप्पत्ति गातं ॥
स्वयं वीर दानव्व हक्यो हकारं। बरं बंध रक्की षरक्के प्रहारं ॥ छं० ॥ ३९५ ॥
बरं व्योम अव्वं घर्ह पत्ति संक्यौ। करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्यौ ॥
पयं पाइ उट्ठे महा रोम[2] झुम्मी। मनों चक्र फेरै कुलालं स भुम्मी ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

षिनं रत्त दीसै षिनं मत्त माया। षिनं रत्त पीतं षिनं स्याम छाया ॥
षिनं मेघ रूपं षिनं अग्गि सीसं। षिनं कोटि रूपं षिनं एक दीसं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

षिनं बाल वृद्धं षिनं वै किसोरं। भयं भीम भीतं षिनं दिव्य गौरं ॥
षिनं मोह माया षिनं दष्ठ बज्जै। षिनं मोहनी मोह रूपंति सज्जै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

षिनं मै विडाली षिनं विप्र माया। षिनं मेरु रूपं षगं हथ्य धाया ॥
हयं ग्रीव रूपं षिनं मभ्भ दीसै। षिनं गज्जियं सिंघ आरत्त रीसै ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—ग्राव। (२) मो०—सोस।

कवित्त ॥ नदि सु एक जल किंदु । तहं सु एकह सुभ कोहर ॥
बहु तर वर जल छीन । थान सोभंत मनोहर ॥
ता नीचै केहरी । हनिव इक हषभ अहारै ॥
अति अरिष्ट अभूत । कोइन पग अग संचारै ॥
उच्चरै राज दिल्ली धनिय । पारद्धी हक्कौ तुमैं ॥
वड़ सुभट आंन सोमेस की । विन अग्या घातन रमै ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ तव सु राज प्रथिराज । पाट श्रृंगार संगि गज ॥
वड पष्पर[1] तन रज्जि । दंति कहारि वंधि सज ॥
उभय पष्प असवार । गिरद रष्पे करि राजन ॥
तीरंदाज अभूल । मूल रष्पे करि ताजन ॥
सें मुष्प राज यों उच्चरे । हक्कारो केहरि सकल ॥
सो वचन सुनत करि कूह भर । गज्ज सु केहरि अप्प वल ॥ छं० ॥३४४॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना । राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना । कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना । सब का प्रशंसा करना ।

निसांनी ॥ सुने गहव्वह केहरी उट्ठो हक्कारे ।
कंपि धरद्धर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥
कोहक काल अभूत कैं पचायन भारे ।
गात सु दीरघ हथ्य गुर जीहा जक झारे[2] ॥ छं० ॥ ३४५ ॥
नष तिष्पा गिर वज्र कै पुंछन तिष्पारे ।
कंध सु जड्डा केहरी नेनां ज्यों तारे ॥
दिष्षै मरद महावली कंधा उप्पारे ।
गज्जत गज्जत आइया अरियन कों थारे ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

(१) ए० कृ० को०—घत । (२) मो०—जीहा झक कारे ।

बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया।

कवित्त ॥ तब प्रथि राज नरिंद। बीर दानव चक्कारिय ॥
सबद द्रुग्ग संभर्यौ। पच्छ दीनौ हुंकारिय ॥
दिषत सथ्थ सब तथ्थ। कथ्थ कोइ बैन न मंडै ॥
भीन सीत भय अंग¹। रंग² रस रोस सु चंडै ॥
अरु नाइ प्रान सम अेव तिष। कज्जल कूट समान सुइ ॥
मन चिंत चंद प्रारथ्थनष। जबै देवि डर आन उइ ॥ छं० ॥ ४१० ॥
बल उत्तंग सुमेर। रुक्कि संकिन मग मुक्किन ॥
छिनक मंत निय संत। तेज आहुटि बल तक्किन ॥
सबर बीर कविचंद। मंच दुरगा तब पढ्यौ ॥
करी नवनि कर जोर। जाइ अग्गे भयौ ठढ्ढौ ॥
अस्तुति अनेक उच्चार मुष। चरन चंपि द्रढ कर गव्हिय ॥
धन जोग कथा पूछी सुदित। उचित चंद अप्पन कव्हियं ॥ छं० ॥४११॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी।

दूहा ॥ करि अस्तुति द्रढ चरन गव्हि। पूछी भट्ट विगत्ति ॥
जु कछु आदि पुच्छै सव्हिर। कव्हन सु बीर विमत्ति ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन।

कव्है बीर कविचंद तुअ। पूब कथा कहुं अंडि ॥
जिन लच्छी धर मुक्किये। धर रष्षै धन छंडि ॥ छं० ॥ ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है।

जुग सु आदि हुअ मंच गुर। चेता जुग हुअ सत्त ॥
द्वापर जुग पूजा प्रसिध। कलि जुग बीरं दत्त ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूं।

(१) ए० कृ० को०-आग। (२) ए०-सार।

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना।

दूहा ॥ एक सुदिन देवंग सों। बोलिय राज नरिंद ॥
देउ मुहूरत दुज सु गुर। तिहि हम करैं अनंद ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

राजगुरु का वैसाष सुदी तीज को मुहूर्त निकालना।

तब दुजराज सु उच्चरिय। सुनि सामंत सु नाथ ॥
सेत चतिय वैसाष दिन। सुभ दिन चढ़ौ समाथ ॥ छं० ॥ ३५५ ॥
सुभ सँजोग अंतर घरी। कहत बचन देवंगि ॥
सोइ सुदिन आनंद करि। चढ़ो सुराज गुनंगि ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा करना।

कवित्त ॥ चढिय राज सुभ जोग। करि सुमंगल अनंद गुर[1] ॥
दै सु विप्र धन चंड। दीन अनि दान लोक कर ॥
बढि सामंत ह सूर। करै उच्छव उमत्त पर ॥
वजत नद्द नीसांन। चवै जै जया देव नर ॥
सेनह सु सथ्य है पंच सय। नैर निकरि बाहिर चले ॥
मत्तह सुक्कं कुसाल घट। भरि वाहन मै मत मिले ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना।

दूहा ॥ नैरनाइका एक चलि। तन आभन्न अलंकि ॥
देखि न्रिपति रह सिर मिले। दुअ आनंद असंकि ॥ छं० ॥ ३५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना।

गज राजन द्वादस रहे। सुभ सँयोग सुभ साथ ॥
करिग कूह उतिम प्रचर। पडि लसकर प्रथि माथ ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
कूच कूच राजन चले। सथ सामंत अभंग ॥
पंच सत्त असवार संग। पडि मिलि सावँत संग ॥ छं० ॥ ३६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना।

(१) मो-वर।

आकास मध्य ता मध्यतें। फटिक बीर द्वै चीर हुअ॥
ते बीर बहुत दानव अतुल। भये काल थानय रष्य॥ छं०॥ ४१८॥

इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई।

बहु वित्ते बर काल। चंद बरदाइ थान षम॥
को जीवत देष्यो न। मरत देष्यौ न न जे षम॥
मान ग्रभ्भ जम निका। राम तामस करि नच्यौ॥
दूल षट्टे अंगने। कौन रूचै को रुच्यौ॥
जीरन सु जगा संसार भौ। लच्छि न जीरन भट्टय दृष॥
आयंत जात धंधौ सकल। ग्यानवंत जानहि सु इष॥ छं०॥ ४१९॥

तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे।

दूहा॥ तब प्रथिराज नरिंद बर। अरु सुमंचि कविचंद॥
इष्ट बत्त बर संमुचै। ज्यो दानव करै न दंद॥ छं०॥ ४२०॥

इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया।

छंद चोटक॥ कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन न्रपं। निज मंच बलं कल तच जपं॥
भुज भान सुरं भज भान दिसं। बर इष्टय चंद कविंद कसं॥
॥ छं०॥ ४२१॥

सब देव क्रमं क्रम दीन न्टपं। जय जग्यह जाप करंत तपं॥
घन गंध सुगंधन की षलितं। चलि सीत न तप्प सुभं महतं॥
॥ छं०॥ ४२२॥

घन सार म्रगम्मद होम जरैं। तिन उप्पर भौरन भौर परैं॥
उड़ि धूम चिहूं दिसि छाय घनं। करि मंच सुदेव बलि बलनं॥
॥ छं०॥ ४२३॥

देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा।

गाथा ॥ जित्ते वज्जन वज्जं। सज्जे सेन सव सुभट्टायं ॥
सुद्धे षेत सु सूरं।। उप्पारियं केक सुभट्टायं ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना।

कवित्त ॥ वर वंध्यौ सुरतान। लच्छि कड्ढन क्रम दिन्ना ॥
भई पवरि कै मास। राज अग्गै होय लिन्ना ॥
सत्त मंत जोतिगी[1]। सव्व जोतिग उच्चारै ॥
द्रिष्टि राह ग्रह दुष्ट। मंच जंतह वर टारै[2] ॥
पुछयो वीर चहुआंन तव। घन अरिष्ट गुन संभवै ॥
लछिन्न लच्छि अरु वंचि विधि। तव वद्दि मंतत सुन्नवै ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का वर है यह निश्चय जानिए। इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे।

कवित्त ॥ धन कड्ढन चहुआंन। वोलि कैमासह पुछिय ॥
वहु अदभुत जस सुन्यौ। आइ कड्ढन वर लच्छिय ॥
पुब्ब कथा चहुआंन। हों जु आगम सव जानो ॥
देवी सुर वरदाई। कहों सु उर अंतर आनो ॥
अदभूत वत्त धन निक्करत। होइ वीर दानव जगे ॥
सो सूर धीर धीरज्ज जिय। छँडिय सत्त काइर भगे ॥ छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू वन में चले वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया।

दूहा ॥ सो पट्ट रहे थांन वर। द्रव्य अजै जै राज ॥
ता देषन चहुआन फिरि। गौ आषेट विराज ॥ छं० ॥ ३६९ ॥

---

(१) मो०--जोतिषी। (२) मो०--वर दारै।

बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने साम्हने धन निकालने को कहना।

कवित्त ॥ हम सु भयंकर बल । भट्ट सुभटन हंकारहि ॥
हम प्रचंड प्रब्बत्त । कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥
सत्तों समुद प्रमान । सु तत छिन तिरि दिष्षहि ॥
सुनि न होइ देखी न । तोइ ब्रह्मंड सु लष्षहि ॥
दैवान दुसंकष दुष्ट गति । देव जोग को गद्दुवै ॥
आतम्म मनुच्छन जीव बल । मो देषत धन कढ्ढवै ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालैंगे।

अरिल्ल ॥ *बुल्लै चंद सुनौ बर वीरं । तुम त्रिकाल दरसी अति धीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं । कढ्ढै धन तुम बषन सु भूपं ॥ छं० ॥ ४३२ ॥

गाथा ॥ कहै वीर चंदं बर वंदं । हो देवाधि देव बलवंनं ॥
तुम देषत गत पापं । होइ प्रसंन देहु बर बचनं ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

चन्द की सुन्दर बानी सुनकर वीर ने प्रसन्न होकर धन निकालने की आज्ञा दी।

दूहा ॥ सुर बानी सुन भट्ट की । मन प्रमोद बरवीर ॥
दई बाच कढ्ढौ सु धन । प्रसन देव करि धीर ॥ छं० ४३४ ॥

बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो।

अरिल्ल ॥ बीर बचंनति चंद प्रकासिय । कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंच जप । सब प्रसंन हुअ लहैं धन्न न्टप ॥ छं० ॥ ४३५ ॥

चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करैं।

कवित्त ॥ तुम समान कोइ आन । पान पन दान मान मन ॥
कवन श्रवन रस राग । दैव परंग अंग नन ॥

* मो०-प्रति में "बुल्लै धन चन्द सुनों बर वीरं" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है।

चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नागौर बन के धन को पावैंगे।

पच्छिलै अप्पिय चंद बर। कच्चिय व्यास जग जोति॥
वीर सघन नागौर धन। * सुभ अरिष्ट प्रथु होत॥ छं०॥ ३७८॥

राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं।

कवित्त॥ पुच्छि राजा गुर सिंघ। सु गुरु देवगिन सत्ति पति॥
धन अरिष्ट गुन होइ। तास मेटत्र रचौ मति॥
सोइ सुभ काज सु राज। सुजस संग्रचौ सक्र भति॥
सुर सुकाज सुद्धरै। अप्प उद्धरत कज्ज गति॥
बुल्लिय सु राज सम चित्त पति। तुम कारन पुज्जौ सुग्रह॥
अरिष्ट सु गुन दूरी करन। या मंगल कज्जै सुग्रह॥ छं०॥ ३७९॥

तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है।

गाथा॥ बुल्लिय भट्ट सु चंदं। हो राजन लच्छि कड्डिज्जै॥
ज्यों बंध्यौ निरमांन। मेटन कवन सोइ विधि पचं॥ छं०॥ ३८०॥

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो।

दूहा॥ थांन निरप्पिय राज बदि। अच्छिर द्रव्य सु अक्ख॥
सुबर सूर सामंत मिलि। निसि सथ रप्पा अक्ख॥ छं०॥ ३८१॥

कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्त्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा।

कवित्त॥ सथ्थ तथ्थ निसि रप्पि। दीन वासन ग्रह थानह॥
अवर सब्ब सामंत। कीन पारस विश्रामह॥

* मो०—प्रति में "लभहि अरिष्ट होत" पाठ है।

तिन मंगिय होम प्रकार सयं। रचि जग्य अकार प्रकार मयं॥
मिटई[४] जिह दोष[५] सु होइ जयं। ... ... छं० ॥ ४४१ ॥
कढ़ि लच्छि दिसा क्रमि देवि न्रपं। कवि चंद अनंदिय मंच जपं॥
विधि भांन सुरंभिय भांन दिसं। सब देव क्रमं क्रम होइ रसं ॥ छं०॥४४२॥
जय जग्य रु जाप करै बलिता। धन गंध सुगंधन की छलिता॥
सु रची रचनीय सबै अवनी। धज छत्तन वेदिय मंडि फनी॥ छं० ॥ ४४३ ॥
भरि चंदन पाटक पाट करी। अनुराग सु कुंकम होम जरी॥
नव रत्त कला कल सान छुटे। मनुं द्वादस भान द्रसां प्रगटे॥
छं० ॥ ४४४ ॥
धुनि सुंनिय वेदन होत रुषं। प्रगट्यौ कमलानन तास मुषं॥
छं० ॥ ४४५ ॥

छः प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया।

कवित्त ॥ कढ्ढि बीर पाषान। राज षट रष्षि प्रधानं॥
चंद भट्ट गुरुराम। कन्ह रष्षिग चहुआनं॥
रष्षे अत्ता ताइ। ईस लद्धौ वर भारी॥
दैव बत्त संजोग। भोग लद्धौ रन रारी॥
रष्षिजै भीम रघुबंस बल। अरु रष्षै पुंडीर सह॥
अनवत्त अग्य लै स्यांम की। पंच दीह तिन थान रहि[१]॥ छं०॥ ४४६॥

वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देख कर आश्चर्य होने लगा।

षोदि थान पाषान। ग्रेह निकस्यौ अचंभम्॥
हेम हीर हिंडोल। हेम पुत्तरी सुरंभम्॥
हेम हथ्थ बाजिंच। न्रत्य पुत्तरि जरि जंचिय॥
इह अचंभ पुत्तरी। जानि सर जीवन मंचिय॥

(१) मो०--लहि।

अप्प मंच बंध्यौ, सु कवि। द्रव्य निरष्यौ जाइ ॥
चिहूं दिसा जौ देखियै। दिष्ट न आवै ठाइ ॥ छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ दिप्यौ जीयउ प्रमान। मध्य राजा रघुवंसिय ॥
बावन सोसत पुत्त। तात अग्यान न गंसिय ॥
दुष्ट देइ दिन मान। राज अग्या सुन मानै ॥
सोक अग्गि तन दझ्झ। गयौ सुरलोक निथानै ॥
रचि मंच जंच पुत्तलि करिय। होम दिष्ट दानव जलिय ॥
चिंतै सु चित्त कविचंद तह। करयि बात दुघ भ्रम भलिय ॥ ३८९ ॥

चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए।

गाथा ॥ गृह वरदाइय वत्तं। कहन लहि भयं क्रमयं ॥
तुझ अंतर भर सेनं। आए लहि ठाइयं राजं ॥ छं० ॥ ३९० ॥

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो।

दूहा ॥ थघ आए घर राज घर। दिय हुकम्म सिल कट्टि ॥
हुअ हुकम्म राजंन कौ। कट्ठै सिला सिर कट्टि ॥ छं० ॥ ३९१ ॥

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी।

कट्टि सीस सिल कढ्ढि करि। दियौ वचन पोदान ॥
तब सु कंपि भुअ भर धरिय। धांक सुनी न्रप कान ॥ छं० ॥ ३९२ ॥

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा तब ख़ज़ाने का मुंह खुल गया।

कवित्त ॥ सस्त्र अनी छिति पनी। सेन सुत्तौ चावद्दिसि ॥
सपत धात पार्षान। तीस अंगुल दल बल कसि ॥
द्वादस अंगुल उंच। निठ्ठ करि ग्रीवह[१] लाइय ॥
उघरि मुष्प घर द्रव्य। कवी कवि चंद न जाइय ॥

(१) ए० कृ० को०—ग्रावह।

सकते हो। यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा।

कवित्त ॥ इह सु छत्य बल रूप। देव देखहु सु मोह मत ॥
माया काया सु लच्छि। अनुरत्तै सु लच्छि रत ॥
इह लच्छी वर रूप। तेज जाजुल्य प्रमानं ॥
हम वचंन इह रिद्धि। तुमहु सुप्रसंन सुथानं ॥
भोगवन काज संभरि सुपहु[1]। इह विधिना अप कर गढ़िय[2] ॥
सुनि चंद वचन आनंद हुअ। राज गुरू संसय मिटिय ॥ छं० ॥ ४५३ ॥

इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए। राजा फिर धन निकालने लगे।

दूहा ॥ हिंडोलौ वर हेम करि। सिंघासन सुरराज ॥
वह प्रसंन होइ रष्यियौ। पूजन हरि गुर राज ॥ छं० ॥ ४५४ ॥
षिन धरि माया अप्प दुरि। गए सु अमर देव ॥
फिरि कढ्ढन लग्गे सु द्रव। लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

कुवेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरँग को देखना।

कबित्त ॥ कलस वंक चंवक्क। लोह संकर वर बंध्यौ ॥
रजत कलस अरु हीर। रत्त अंतर चित संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग। कंति दीपन जनु अग्गी ॥
सुद्दर कलस पाषान। मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय। ग्रह कुवेर करि लष्यौ[3] ॥
गुरराज राम भट्टह सहित। फिरि सुरंग सव दिष्ष्यौ ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना।

कवित्त ॥ ता पच्छैं कवि चंद। राज गुर संमुह दिष्यौ ॥

(१) मो·-सपहु।
(२) ए० कृ० को·-घटिय।
(३) मो·-लिष्यौ।

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति को कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले ।

कवित्त ॥ तोरि बीर संकर समुद्र । छंडि गजराज थान गय ॥
भयौ समुद्र अरिष्ट । ढुंढि लभ्भी न मत्ति चय ॥
सत्त मत्त कुहयौ । अप्प अप्पन संभारै ॥
भो चचिन्न सामंत । व्यास बचनं न बिचारै ॥
कविचंद मंच आरंभ बर । उमा उमा कहि बंचयौ ॥
अप्पियै बचन मुहि मात इह । तुम्र काली कलजचयौ ॥ छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ करि अस्तुति कविचंद वर । अहो मात बरदान ॥
इह माया मैं बहु तन । कढ़ै लच्छि तुम्र पान ॥ छं० ॥ ४०१ ॥

देवी की स्तुति ।

छंद बिराज ॥ सुनी देवि बानी । चढ़ी सिंघ रानी ॥
मयं मत्त माया । तुंही तू उपाया ॥ छं० ॥ ४०२ ॥
धरी शुद्ध भव्यं । प्रकत्ती पुरष्यं ॥
निराधार बंधी । निसंधे निसंधी ॥ छं० ॥ ४०३ ॥
चिहूं चक्र पंडी । इकं पाइ मंडी ॥
जपैं तोहि तोही । जगचन्न मोही ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
निसा पत्त मारै । दया बज्ज तारै ॥
तुही मंच मंची । तनं जा पविची ॥ छं० ॥ ४०५ ॥
तुही आसमानं । तुही भूमि थानं ॥
तुही वाग वानी । कला निद्धि रानी ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
कवी चंद चंदं । करै दूरि दंदं ॥
कलं पग्ग धारै । प्रनेता उचारै ॥ छं० ॥ ४०७ ॥
निसा बीर बढ्यौ । इहां आइ ठढ्यौ ॥ छं० ॥ ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया ।

दूहा ॥ मात प्रसंनन गुन गहिर । दियौ हुंकि हुंकार ॥
दियौ बर सु दानव मलन । कियौ देव जयकार ॥ छं० ॥ ४०९ ॥

एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए।

एक सुदिन संध्या समय। विंझासनि के थान॥
एक अचंभो देखिये। जो आये चहुआन॥ छं०॥ ४९१॥

उभय राज बर वत्त करि। चल्ले सुथानक देव॥
निकट देखि देवी सुमट। गए सिंघ बर सेव॥ छं०॥ ४९२॥

आए न्टप चित्रंग पति। अरु संभरी नरिंद॥
तब लगि राम सु विप्र ने। करिय अचिज्ज सु चंद॥ छं०॥ ४९३॥

पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन।

छंद भुजंगी। समं चल्लियं समर रावर नरिंदं। तिनं वाम भुज्जं समं सूर नदं॥
घनं सथ्थ मध्यं दोऊ वीर राजं। तिनं देषतें वामता काम लाजं॥ छं०॥ ४९४॥
उठी मुच्छ आनं धुनी लगिग गेनं। मनों चंद वीयं सियं[1] कीय छेनं॥
दोऊ राज राजन्नता राज सक्की। दोऊ भ्रंम षंडे जमं डंड चक्की॥ छं०॥ ४९५॥
दोऊ रत्त[2] माया ननं अंग लग्गै। मनों कंज[3] पत्तं जलं भिंटि भग्गै॥
उभै सूर नूरं विराजंत राजं। जिनै सोभियं कंठ रष्ष हिंदु लाजं॥ छं०॥ ४९६॥

वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

कवित्त। वेद मंत्र दुज राम। उभय कारन क्रित किन्नौ॥
समर समरसन कीन। राज उनहार सुछिन्नौ॥
दस महिष्ष बल भंजि। चंद मंत्रं प्रारंभे॥
नृप आज्ञा नन दीन्। सस्त्र मंगै[4] प्रारंभे॥
आरंभ मंत्र चवसट्ठि जगि। है हुंकारव सद्द हुअ॥
गत दंद चंद चंदाननह। मात प्रसंनन मत्त जुअ॥ छं०॥ ४९७॥

(१) ए.—सियंकी अ। (२) ए.—दत्त।
(३) ए. कृ. को.—कंप। (४) मो.—मगं।

गाथा ॥ हुअ आनंद सु बीरं। बुझिय सु प्रसंग चोह कल बानी ॥
सुनि उतपत्ति सु कव्वी। कहि अब रघुबंस आदि संकेतं ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था।

कवित्त ॥ *तिहि तजिय सु रघुबंस। पुत्र मारंत इह खिज्जि ॥
चित कीनौ चरचित्त। मरन अँग आगम लषिज्ज ॥
जो बरजै बहु वार। ध्रंम मानै न भयंकर ॥
सोक अग्नि तिन दभिझ। प्रान छंडौ रतियंकर[1] ॥
‡ सत वरस राज तय अंत करि। कित्ति ध्रंम संगह गहय ॥
अध्रंम कित्ति ज्यों मंडनह। सो उब्बरि बीरनि रचिय ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने श्राप दिया कि जा तू राक्षस हो जा।

कवित्त ॥ निहि बाहन बल सूर। धरम रष्यो रघुबंसी ॥
वेद ध्रंम उथ्थापि। काल कंटक पल कंसी ॥
सज्जि तेज जाजुल्य। जग्य बिध्वंसिय सव्वल ॥
कमल समह अरिष्ट। जीति दगपाल संम पल ॥
मारग चत्ति उथ्थापि करि। द्विव सराप सब रिष्यि मिलि ॥
जा वीर दांन दानव सु थरि। अमर सिंघ बल जीति इलि ॥ छं० ॥ ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा।

मिलि अयास आयास। आप मिलि आप अहुट्टिय ॥
मिलि समीर संमीर। धरा धर धार आहुट्टिय ॥
तेज जोति चहु पीर। सुवर मंगल फिरि आइय ॥
विहि अध्रंम जरि तास। मांहि सो कछु न समाइय ॥

---

* मो०—"तिहि तजिय डर रघुबंस पुत्र चारच पुच्छ खिज।" (१) मो०—अकर।

† मो० प्रति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिसमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—"सत्त वरस राजा ने सबल राजंत अंत कर, सब सोरव्य गिह मरि जत करि कित्त धर्म संग्रह गहिय।

हम सु तुम्म सगपंन[1]। जानि आप तुम सथ्थं॥
तुम लहुए लहुआंन। मुष्य कह्यो सु अरथ्थं॥
तुम कट्टिय बत्त अब जो हमैं। तुम समान नहिं प्रीति भत्ति॥
उच्चरौ बचन तुम राज बर। सो हम हृदय सुमत्ति गत्ति॥ छं० ॥ ४७२॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा।

दूहा॥ अति क्रोधित रावर समर। जब दिष्यौ प्रथिराज॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय। लेहु लच्छि धरि साज॥॥ छं०॥ ४७३॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना।

कवित्त॥ तबहि जुग्गवर समर। राज राजन प्रति बुल्लिय॥
हम सु सीष संभवैं। चलैं चित्रकोट सु थल्लिय॥
तब राजन उच्चरिय। रहो दस दिन सब मिल्लिय॥
रमें सरस आषेट। करैं क्रीड़ा धर दिल्लिय॥
तब कहत राज आहुट्ठपति। अहो राज राजंन[2] गुर॥
हम चलें राज काजंग गुर। भर सु सब्ब सम नेह उर॥ छं०॥ ४७४॥

प्रेमाश्रु भरकर रावल ने विदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले।

दूहा॥ भरे सु सकल सनेह करि। रावर मंगिय सीष॥
तब सुराज राजंन गुर। उठि मिलि सज्जन दीष॥ छं०॥ ४७५॥

पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा ऐसा ही स्नेह बनाए रहिएगा।

देत सीष प्रथिराज न्रप। इह बुल्लिय गुर राज॥
होत सगप्पन ग्रेह रह। रष्षत रहियौ[3] काज॥ छं०॥ ४७६॥

(१) ए. कृ. को.—सगपत्र। (२) मो.—राजंग।
(३) मो.—रहिऊं

कवित्त ॥ न्टप पूजी रघुवंस। नाम धृम्माधिराज सुश्र ॥
बिय बाह्न न्टप सूर। पुच आनंद चंद दुश्र ॥
सब जित्ते द्रगपाल। माल लिन्नौ अधृंम क्ति ॥
राज नीति सब मुक्कि। क्रंम बंध्यौ अक्रंम कत्ति ॥
अदभुत मरन छिन भंग गति। चित विस्त क्रम अनुसरिय ॥
तप भंग[1] गच्छता जांनि नह। न म बीर दानव धरिय ॥ छं० ॥ ४२४ ॥

बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहां रक्खा था। देवगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई।

दूहा ॥ कहै बीर सुनि चंद तुश्र। अप्प कथा कहौं मंडि ॥
जा मुक्की लच्छी धरनि। सो रष्यों उर संडि ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
हौं रष्यों इन भंति करि। अहो चंद बरदाइ ॥
रघुबंसी अति मोह मय। अवगति कोइ सुभाइ ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
माया छाया पुत्तरी। क्रोधवंत हम बीर ॥
रहे छंडि दै लच्छि यह। बम्मित तुम इह धीर ॥ छं० ॥ ४२७ ॥

बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ क्रोध लोभ जानी न। मोह माया न अलंछन ॥
मोह गीत अरु सीत। जग्गि जा जापय सुक्कृत ॥
बहु ब्रिबेक ब्रिमांन। राज बिसतरहि नीति बहु ॥
नव निवर्त धुनि वेद। कर्म छेदन अभेद लहि ॥
सो बहि सांइ सेसब सुन्टप। जोवन बै विष अलप मन ॥
रघुवंस हड्ड आवस्त चिय। जोग मग्ग सो छंडि[2] तन ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन।

स्लोक ॥ सत जुगे बंधयो देवो। चेतायां सोम जाधयो[3] ॥
द्वापरे माहनो सूरो। कलिजुगे बीर भीषम ॥ छं० ॥ ४२९ ॥
सतजुगे ब्रह्मपुचश्च। चेतायां बीर भचय[4] ॥
द्वापरे पिचि बंशस्य। कलिजुगे सूद्र ग्रहनिका ॥ छं० ॥ ४३० ॥

(१) मो०--भग। (२) मो०--यहि।
(३) मो०--जोधयो। (४) मो०--भविय।

अरिल्लाआर ॥ फिरि आये कैमास चंद बर । मिले राज सथं पूर्न प्रेम भर ॥
ढिल्ली पुर आवत चहुआनह । अति तोरन उच्छव संमानह ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया । राजा खट्टू बन में शिकार खेलता चला ।

कवित्त ॥ बंचि राज कैमास । सोइ अंतर सिल लीनह ॥
द्रव्य साम उभरीय । भरिय कर थासे तीनह ॥
एकादस गज पूर । पंथ संभरि पुर थानह ॥
घासुर सत संक्रमे । भरिय भंडार विधानह ॥
संचरिय राज मृगया बहुरि । पुर षट्टू पारस रवन ॥
कर पच रुद्र जहा[1] सुबह । आइ राज भेय्या सुजन ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग कर के सब सामंतों को बांट दिया । सरदारों का बांट का वर्णन ।

बंटि दियौ प्रथिराज । भाग किन्ने सब अब्बर ॥
एक भाग कैमास । तीय अप्पे नरसिंघ नर ॥
पंच भाग चावंड । भाग अद्दौ बर कन्हं ॥
द्वादस भाग नरिंद । दियौ परिगह सब दंनं ॥
प्रथिराज दिष्ट आयै नहीं । चिक्कट कुंभ ज्यों जल अभिद ॥
लग्गै न नीर पचह कमल । भिदै न मति हीवै उछिद ॥ छं० ॥ ४८४ ॥

दूहा ॥ एक भाग दिय विप्र कर । करै राज सुष कंद ॥
धन लद्धिय प्रथिराज धन । कथी कथ्य कवि चंद ॥ छं० ॥ ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया । बड़ा आनन्द उत्सव हुआ ।

कवित्त ॥ अति तोरन उच्छवह । आइ ढिल्लीय निकट बर ॥
रेंन कुमार सु आइ । सुबर सामंत मधुत्तर ॥
सत्त दूण असवार । कहत नामी अग्गै भर ॥
छोडि तुरिय पय लग्गि । दीय सा चढ़न सीष गुर ॥

(१) मो.— जटाजूट बह ।

राजस तामस सत्त। मत्त जोगिंद विराजहि ॥
जीह एक गुन कोटि। रत्ति सो बोलन लाजहि ॥
महदेव[2] सेव तुम चरन रत। पति पवित्र मन मोह धरि ॥
छिंड्यौ सु बीर उत्तर दिसा। इह पसाव चहुआंन करि॥ छं० ॥ ४३६ ॥

बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो।

दूहा ॥ कहै बीर कबिचंद सौं। होां सु प्रसन्नौं तोहि ॥
तीन लोक में जुगति बति। सुभलन नाचौं मोहि ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
पंडित बोलि स जप करौ। होम दान ग्रह मान ॥
महिष मोहि पूजा करौ। तौ कढ्ढौ पाषान ॥ छं० ४३८ ॥

दानव यह कहकर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो।

कवित्त ॥ सुरग गयौ दानव्व। बत्त वल महिष उचारिय ॥
मंत्र तंत्र वंधयौ। वलन अप्पन सम्हारिय ॥
वर गज्जनी नरिंद। वंधि कंढ्यौ चहुवानं ॥
धन कढ्ढन[2] तिन थांन। वज्जि निर्घोष निसानं ॥
आनंद मंचि कैमास वल। तिथ्थि घरी वल पुच्छिवर ॥
जै जया सिंह आहुट पति। मिलि विभूत कढ्ढौ सुभर ॥ छं० ॥ ४३९॥

राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाय, पंडित ने होम की सामिग्री मँगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया।

छंद चोटक ॥ तब बुल्लिय राजन राज गुरं। सु मनो गुर राजत देव दरं।
बुलि वेद सु पंडित जोतिगयं। जिन बुद्धि सु ब्रह्मय सुद्ध लयं ॥
छं० ॥ ४४० ॥

(१) मो०— सहदेव। (२) मो०—कढ्ढव।

गाथा ॥ जस रष्यौ कर अप्पं। मुत्तिय माल लालयं द्रव्वं ॥
आरोषी पुर दत्तं। कवि दीनौ सु अवर कर साइं ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

दूहा ॥ सकल दंड पतिसाह कौ। बंटि दियौ सब सूर ॥
तपत राज अति षचिवर। ग्रीषम विक्रिय पूर ॥ छं० ॥ ४९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पथिराज रासके षट्टू बन मध्ये आखेटक रमन धनसंग्रहन पातिसाहबंधनं धनकथा नाम चौबीसमो प्रस्तावः ॥ २४ ॥

आलिंग नयन करि सिथल गति । तिहि दिष्षत मन रुयन रुकि ॥
आचंभ चंद देखत भयौ । रंभ कि न्टत्यत तार चुकि ॥ छं० ॥ ४४७ ॥

पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य करना ।

दूहा ॥ सुर उद्योत गुरराज तिहि । पुत्तरि दिष्षि अचंभ ॥
रति पति मन संमुह धरै । घट सु घटिय आरंभ ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

चन्द का कहना कि यह मायारुपी है ।

कहै चंद गुर राज सुनि । यह माया बल रूप ॥
न करि मोह कर गहि सु दुज । मुर्छि[1] बहोरिय नृप ॥ छं० ॥ ४४९ ॥

रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है ?

राज गुरु कहि चंद सों । हो कविराज विचारि ॥
कोन रूप अवतार किय । क्यों लच्छिय पर नारि ॥ छं० ॥ ४५० ॥

चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा ।

कवित्त ॥ तत सु चंद बर दाइ । राज गुरु बचन अप्प हर ॥
छिन इक धरौ विलंब । कहौं बर वीर पुच्छि नर ॥
करि अस्तुति कवि बानि । बीर देवाधि देव सुनि ॥
हम मनुष्य मय मोह । तास नहिं लहै अंत पुनि[2] ॥
पुच्छइ सु देव आपुब्ब कथ । कोन रूप इह पुत्तरिय ॥
रह लच्छि थान सुर केम तत[3] । कौन काज बर सुद्धरिय ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है ।

गाथा ॥ सुर बांनीयं चंदं । सुप्रसन्नं देव मय कव्वी ॥
इह तेजं रिधि रांनी । संपेषे सु चंद गुरु कव्वी ॥ छं० ॥ ४५२ ॥

यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रुप है इसे तुम बे खटके भोग

(१) मो०—मुरछि ।　　(२) मो०—फुनि ।
(३) मो०—तन ।

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ इह संभरि न्रप उच्चरिय। अहो सु नट गुरराइ ॥
गुन उदार[1] कछु किज्जियै। ज्यों दिज्जै दाराइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं।

गाथा ॥ नाटक प्रमान कथयं[2]। सुनि राजन धी ढिल्लीसं ॥
पाचं घर के सब्वं। गुन सुनियै चितयं त्रायं ॥ छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ अवसर नत्त प्रगट्ट किय। जंघ मृदंग सुतान ॥
करिय राग श्री उंचकर। करन न्रत्य बहु गान ॥ छं० ॥ ८ ॥

देवी की बन्दना करके नृत्य आरम्भ करना।

आदि सकल अस्तुति करिय। पहुपंजलि पटिदेव ॥
कहि संगल[3] धरनी निरषि। करन नृत्य अति भेव ॥ छं० ॥ ९ ॥
चंद चारु मागध सुग्रह[4]। गीत प्रबंध प्रसन्न[5] ॥
उघटि चिघटि सब प्रमुष दै। देपि विगति सुर भिन्न[6] ॥ छं० ॥ १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना।

तब सुनट्ट इम उच्चरिय। हो राजन नर इंद ॥
बहु बिवेक संगीत कल। अष्टह नृत्य सुनंद ॥ छं० ॥ ११ ॥

आठों भेदों के नाम।

श्लोक ॥ मृदंगी दंडिका तान्ती। कहन्ती सुन धुर्द्धरी[7] ॥
नृत्य गीत प्रबंधं च। अष्टांगो[8] नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना।

दूहा ॥ कहिय नृपति अष्टंग सुधि। रंजि राज कल गान ॥
बहुरि हुकंम बैठन दिय। फिरि पुच्छिय यह न्यान ॥ छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए.—उबार। (२) मो—कथियं।
(३) मो.—धरती। (४) मो.—सुरुग्र। (५) मो.—प्रमान। (६) मो.—तान।
(७) मो. धधंरी। (८) ए.—कृ.—को.—अष्टागो।

ब्रह्म थांन शिव थान । थान पति नाक विसष्यौ ॥
नवति बीर अष्ट जोग । सिद्ध नव निद्ध सु अट्ठौ ॥
च्यारि अंग लक्षी प्रमान । धूम द्वादस अंग दिठ्ठा ॥
सा अंग वाल पुत्तलि अचंभ । चाइ भाइ विभ्रम वचे ॥
लावंनि चिंत उत्तर रचति । बंक कटाछन चित्त चै ॥ छं० ॥ ४५७ ॥

चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना । कुछ देर में सँभल कर उठना ।

कवित्त ॥ मुच्छि पस्यौ कवि चंद । मुच्छि दुजराज पस्यौ कल ॥
नाच भंग तन भंग । अंप भाल मलिय नैन जल ॥
उष्ट कंप तन स्वेद । भेद बल बिन [१]कवि किन्नौ ॥
चढ़िय अंग पिंडुरिय । गात सोभन जल भिन्नौ ॥
सिथल चरन गति भंग ह्वै । वे विलास अभिलाप गति ॥
जग्गेव मुच्छि दुजराज सब । देव एव चिचं सुभति ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है ।

दूहा ॥ मुक्कि उठ्यौ गुर राज तब । पुच्छ्यौ संभरि वार ।
जु कछु सुवर अग्या न्टपति । धन निकस्यौ अप्पार ॥ छं० ॥ ४५९ ॥

धन के कलश आदि का वर्णन । रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना ।

कवित्त ॥ सत्त[२] कलस चंवक्किय । सत्त[३] अध मंडि रजक्किय ॥
हेम कलस सत पंच । कलस पाषान सतक्किय ॥
सत्त अद्व बाजिच । सहस अघ पग्ग प्रमानं ॥
हेम चीर हिंडोल । एक आचंभ सु थानं ॥
जान्यो न देव देवाधि गति । दैव जोग सिंघासनह ॥
चिचंग राव रावर समर । सम सुराज प्रथु आसनह ॥ छं० ॥ ४६० ॥

(१) ए. कृ. को.--कठ ।
(२) ए. कृ. को.--सित्त ।　　　(३) ए. कृ. को.--सित ।

दूहा ॥ कै सगपन जद्दव नृपति। करै सु दिसि कमधज्ज ॥
कोई पुत्त अनूप है। तिन गुन व्याहन कज्ज ॥ छं० ॥ २० ॥
व्याहन मन कमधज्ज करि। सगपन राजद्दोरं[1] ॥
पंम्मारी दिय पुत्त पर। तिहि पुत्री बर ठौरं ॥ छं० ॥ २१ ॥
पुत्री वरी उजेंन दिसि। पहिलै पंग स पुत्त ॥
अषन गवन पुर आदि दै। पठि जद्दव ग्रह तत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है। पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया।

गाथा ॥ पठवन किय दुज जद्दो। पुत्री दीय पुरो[2] उज्जेनं ॥
तिहि पुत्री नारत्तं। व्याही पंग पुत्त अज इंदं ॥ छं० ॥ २३ ॥

नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना।

दूहा ॥ सुनि राजन क्यौं करि कहौं। जो शशिव्रत्ता रूप ॥
जीह एक ब्रन्नत न बनि। तिन गुन ब्रन्न अनूप ॥ छं० ॥ २४ ॥

सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना।

तब राजन ऊठी सभा। फिरि दीनी सब सीष ॥
अंदर नट्ट बुलाइ कैं। पुछिय बिगति बिसीष[3] ॥ छं० ॥ २५ ॥

नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना।

कवित्त ॥ कहै सु नट राजिंद। ब्रह्म आमोदक दिन ॥
चंद कला मुष कंज। लच्छि सद्दजँह सरूपतन ॥
नैंन सु मृग शुक नास। अधर बर बिंब पक्क मति ॥
कंठ कपोत मृनाल भुज्ज। नारंगि उरज सति ॥
कटि लंक सिंह जुग जंघ रँभ। चलत हंस गति गयँद लजि ॥
सा नृपति काज न्रंमिय नहनि। मनों मेनिका रूप सजि ॥ छं० ॥ २६ ॥

दोहा ॥ कह गुन बरनौं राज कहि। कुंआरी जद्दव नाथ ॥
बिधना रचि पचि कर करी। मनुं मेंनिका सनाथ ॥ छं० ॥ २७ ॥

(१) मो०—रजद्दोर। (२) ए०—कृ०—को०—पुरि।
(३) ए०—कृ०—को०—विदेष।

राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

दूहा ॥ सिंघासन प्रिथिराज ले। मात वरंनन कीन ॥
मात प्रसन चहुआन कौं। जै हुंकारव दीन ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

देवी पृथ्वीराज को आशिर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई।

कवित्त। हुअ प्रसाद चवउट्ठि। पथ्थ सिंघासन अप्पिय ॥
वर अप्पौ प्रथिराज। क्रित्ति कलसां लगि थप्पिय ॥
बिय सपत्त लभ्भै न। पुत्र लभ्भै सु थान तुत्र ॥
मन सु बंस जय लभै। सज्ज अनुहुन चित्त जुअ ॥
पूजनह थान रविवार कहि। आदिष्ट मात अंतर भइय ॥
सुभ लच्छि सुभग्रह आइ तँह। वर सुहेम चत्यां दइय ॥

पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है, तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुवँरि ससिव्रता की सगाई का बिचार ॥

कवित्त। मँगि सिंघासन राज। लच्छि चतुरंग सु अप्पिय ॥
समर सिंघ रावर नरिंद। अग्गैं धरि जप्पिय ॥
रंजि राज आहुट्ठ। राज दिल्लिय दिस आइय ॥
वर पट्टन जहां नरिंद। लिखि दूत पठाइय ॥
ओतान राग चहुआन हुअ। कथा जंपि ससिवृत्त क्रिय ॥
पावस प्रमान कहिय बिकट। सुवर राज यों मत्त क्रिय ॥ छं० ॥ ४७० ॥

गाथा। सिंघासने सुरेसं। अह सु लच्छि सा चयं अप्पियं ॥
सो अग्गे वर सिंघं। मुक्के राज परिकरं सव्वं ॥ छं० ॥ ४७१ ॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इँकार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो।

कवित्त ॥ रंजि राज दप्पिन गिरेस। राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिंद। कहा गुन कहै सु भल्लिय ॥

मन जाने वर अप्प। लग्गि आनान राज उर ॥
चित्त मच्चावनगैंद[1]। बहुरि उतरैन अवर पर ॥
तन धीर करत पावस तुरिनि। छिन छिन जुग जुग जात जिय ॥
वर मोर सोर दद्दुर वचन। लग्गि तपत तन असम किय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना।

कवित्त ॥ मोर सोर चिहुं ओर। घटा आसाढ़ बंधि नभ ॥
मच दादुर झिंगुरन। रटन चातिग[2] रंजन सुभ ॥
नील वरन वसुमतिय। पहिर आभंग अलंकिय ॥
चंद वधू छिर व्यंज[3]। धरे वसुमत्ति सु रज्जिय ॥
बरषंत बूंद घ। मेघ सर। तब सुमरै जद्दव कुंअरि ॥
तन हंस धीर धीरज तुनन। रूप फुट्ट मनमथ्थ करि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ घन घटा बंधि नभ मेघ छाय। दामिनिय दमकि जामिनिय जाय ॥
बोलंत मोर गिर वर सुहाइ। चातिग रटत चिहुं ओर नाइ ॥ छं० ॥ ३६ ॥
दादुरन सोर दस दिस उगाइ। रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ ॥
विरहिनी दूरि जिन[4] पंथ नाह। तिहि बुंद लगत जनु ईष जाह ॥ छं० ॥ ३७ ॥
दंपती करै क्रीला उमंग[5]। मनमथ्थ रहसि बढि अंग अंग ॥
विरहनी रटत पप्पीह[6] नार। प्रफुल्लित्त लता लह्हरिय बार ॥ छं० ॥ ३८ ॥
घन दुच्छ लता लल्लिपुप्फ[7] मंत। सब रंग रंग पावसह कंत ॥
उम्भरिय चल्लिय सलिता संूर। चलि मिल्लिय संग सायरह नूर ॥ छं० ॥ ३९ ॥
रति करत कीलनह[8] राज थाह। तन हंस धीर तन सुष्य नाह ॥
नहि सजे सुष्य छवि विषन दाइ। तन होत तपति शीतल सुहाइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
मन प्रीत सुहय गय नारि मांहि। अतिताप जंत तन रोम मांहि ॥
नन नीदसुष्य[9] तन राज अंग। जग्गेतु वाग मन मध्य पंग ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

१ ए० कृ० को०--गयंद, गयँद। २ मो०--चातुक। ३ मो०--व्यंद।
४ ए०--तिन। ५ मो०--कृ०--उतंग। ६ शा०--बप्पीह।
७ ए०--पुष्प। ८ ए० कृ०--कील। ९ मो०--दुपं।

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है।

नृप सन रावर उच्चरिय। तुम सम नेह न कोइ ॥
जीव एक पंजर उभय। कवन लोइचे दोइ ॥ छं० ॥ ४७७ ॥

रावल समर सिंह गद्गद हो विदा हुए, और अपने देश की ओर चले।

तब सनेह नृप नैन भरि। अंसुअ आप सु राज ॥
समर सिंघ चित्तौर कौं। दिय आया सु समाज ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी आदि भेट भेजा।

जब रावर सीवह सु करि। चढ़ि दष्पिन गिर राह ॥
तब सुराज प्रथिराज गुर। बोलि चंद बिरदाइ ॥ छं० ॥ ४७९ ॥

कवित्त ॥ तबहि राज प्रथिराज। बोलि कैमास चंद बर ॥
दिय आया बर सेव। कीए आएस राव गुर ॥
*जुगम सिंघ बर कमिय। लेहु परिकर करि वेसं ॥
गय सुपंथ मद गंध। सच चय साज सुरेसं ॥
लै चले चंद बर दाइ बर। जर्हा राज रावर सुभर ॥
सैभरी वसन अनेक सुर। करि अस्तुति सुष कोटि नर[1] ॥ छं० ॥ ४८० ॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आप चित्तौर को कूच किया ॥

दूहा। राजन वर रष्यिय प्रसन। करिय सब्ब सामंत ॥
माल मुत्ति दिय चंद कवि। चल्यौ चित्रगढ़ भंति ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना।

* मो०—"मत सिंह जिहि क्रमिय"।

(१) मो०—नर।

ओतांन राग चहुआन हुअ। कथा जंपि सखित्त किय॥
अब कथत कथ विस्तार किय। जो राजन दूतन करिय॥ छं० ॥ ४७॥

राजा का शिकार के लिये सवार होना।

गाथा॥ नुक्क दिन अन्तर क्रमियं। राज[1] कीलंत अप्प घर मझ्झं॥
एक सुदिन राजानं। कीलन आषेट अप्प चढ़ि चलियं॥ छं० ॥ ४८॥

दूहा॥ कील राज आषेट चढ़ि। अन्तर दिन हुअ आदि॥
मिलिन जोग बिधि लिषियवर। करि सनद्ध चढ़ि सादि॥ छं० ॥ ४९॥

माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना।

अरिल्ल॥ कीलन राज[2] चढ़े आषेटं। माघ बद्दि दुतिय दिन भेटं॥
दिन सुभवार सु मंगल लद्दियं। करन सिकार अप्प चढ़ि चलियं॥ छं० ॥ ५०॥

राजा की धूमधाम का वर्णन।

कवित्त॥ चढ़िय राज प्रथिराज। साज आषेट लिए सजि॥
सथ्थ सुभट सामंत। संग सेना सु तुच्छ रजि॥
जाम देव का कन्ह। अत्त ताई निडुर गुर॥
मति मंची कैमास। राव चामंड जुझ्झ[3] भर॥
परमार सिंघ सूरन समथ। रघुवंसी राजन सुवर॥
इतनें सहित भर सेंन चलि। उडी रेनु आयास पर॥ छं० ॥ ५१॥

बन में जानवरों का वर्णन।

बागुर जाल बयल्ल। हिरन चीते सु स्वांन गन॥
कालबूत, म्रग, बिहंग। बिबाह तद्दीय चल्लत बन॥
सर नावक बंदूक। हरित जन बसन बिरज्जिय॥
गै जिमि गिरि करि अग्ग। अप्प बन संपति सज्जिय॥
है भारि भईय कांनन सकल। मग अमग्ग दल संचरिय॥
षिल्लन सिकार चढ्ढिय न्रपति। प्रथिराज मद्दि संभरिय॥ छं० ॥ ५२॥

शिकार का वर्णन।

(१) मो०—दत्तणेश। (२) मो०—भाइय। (३) मो०—षट्टोन।

बंदे व चढ़े तुरियं समय। आप नंद उछाह घर ॥
जित्ते मलेच्छ लभ्यौ सुधन। अति तोरन उच्छव नयर ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

जेठ सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए।

गाथा ॥ अति तोरन उच्छाहं। आए जेठ सुदि त्रयोदसियं ॥
सुभ जोगं रविवारं। गहनं साह वद्धि जस भारं ॥ छं० ॥ ४८७ ॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया।

दूहा ॥ ग्रहन साहि जस वढ्ढिय धर। आइ धवल मधि साल ॥
त्रिया सकल आई सु तहँ। मुजरा करन सु चाल ॥ छं० ॥ ४८८ ॥

दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं।

गाथा ॥ दाहिम्मी प्रथु भट्टी। पुंडीरी आइ नृप ढिग्गं ॥
करि न्यौछावरि सकलं। नृप दी सीप गइय ग्रह अप्पं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सवेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा।

राजा धवल संपत्तं। गये ग्रह रति तथ्य पुंडीरं ॥
करि रस अनंग क्रीडा। वढ्ढिय सुवेलि सुमन मन मथी ॥ छं० ॥ ४९० ॥
सुमन वेलि मन मथ्थी। करि क्रीडा हुअ वर प्रातं ॥
अंतर साल वयट्ठं। मन विचार साहयं दंडं ॥ छं ॥ ४९१ ॥

बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा ॥

कवित्त ॥ दंड सुभर पतिसाह। दीय हय बंटि राज वर ॥
बीस सुभर हय कन्ह। बीस हय उंबह निढ्ढर ॥
बीस हूअ रघुबंस। बीस उभय दाहिम्मं ॥
अत्तताइ अल्हन पहाड़। बीस हय जैत गुरंमं ॥
औरह सु सकल भर बीस अध। बंटि बंटि दिय सबन नर ॥
रप्पन सु गल्ह राजंद गुर। जस रष्यौ निज वर सुकर ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक वधिक का आकर शूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना ।

और सकल सानंत भर । आइ संपते तथ्थ ॥
अरज रान प्रथिराज सम । कही बधिक इह[1] कथ्थ ॥ छं० ॥ ५९ ॥
चय सु दिवस राजन कमिय । तीस कोस चै अग्ग ॥
जंगल धरनें वेद चय । सिल नालूर सुरंग ॥ छं० ॥ ६० ॥
बधिक कही इह राजप्रति । घात करै सुभ संच ॥
दल समूह तजि चल्लियै । तुवक गही तुर तंच ॥ छं० ॥ ६१ ॥

राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुवक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना ।

तब राजन्न तुरंग तजि । गहि दिढ़ तुवक सुकंध ॥
कोदर मध्य बराह दर । करिय चोट सुर संध ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना ।

कवित्त ॥ हन्निग राज बाराह । अप्प बधिक इन्नाम दिय ॥
सुभर सकल सामंत । रंजि राजन्न[2] सुभंलिय ॥
बारी को सहुआन । तास धरा अह सुब्बर ॥
तहं विराम करि राज । अवर सामंत अप्प जुर ॥
जब भई गोठि तथ्थह सुबर । तब परिहार सु सद्द किय ॥
सामंत सुभर राजन[3] अप्र । आहारे विंजन सुलिय[4] ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना ।

हा ॥ दिल्ली वैहे वैगहत । खना* अषेटक राज ॥
चावदिसि सुर जंपई । धन चहुआन समाज ॥ छं० ॥ ६४ ॥

---

(१) मो.-इक । (२) मो.-राजन्नप्रति । (३) मो.-राजान ।
(१) मो.-धारैं । (२) मो.-राजान । (३) मो.-लय ।
* ए.-कृ.-को.-वैगहन बरन अखेटक राज ।

अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव ।

(पचीसवां समय ।)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ।

दूहा ॥ आदि कथा शशिवृत्त की । कहन अब्ब संभूत ॥
दिल्ली वै पतिसाहि अहि । कहि छत्रि उन धूत ॥ छं० ॥ १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रुतु क्रीडन[1] सुराजन । चिंति उकष्ठंत येह नभ साजन ॥
विषम वायु तपित[2] तनुभाजन । लगिग सीत समीर सुकाजन[3] ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ लगिग सीत कछु मंद । नीर निर्झर सु रजत घट[4] ॥
अमित सुरंग सुर संध । तनह उवटंत रजति पट ॥
मलय चंद मल्लिका । धाम धारा ग्रह सुब्बर ॥
रंजि बिपन बाटिका । तीस द्रुम छांह रजति तर ॥
कुमकुमा अंग उवटंत अति । मधि केसर घनसार घसि ॥
क्रीलंत राज ग्रीषम सुरिति । आगम पावस भइय भति ॥ छं० ॥ ३ ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ।

गाथा ॥ ग्रीषम बित्तिय कालं । आगम पावस दीह मझेनं ॥
दिसि दष्षिन बर देशं । नाइक[5] आइ चंद्रोदयं नामं ॥ छं० ॥ ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा ।

सभा विराजित राजं । तत्थां नट आइ पत्त संगीतं ॥
मिलत मान दिय राजं । पुच्छिय विगति देस रह मझझं[6] ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए०-कृ०-को०-क्रीलत । (२) ए०-कृ-को०-तपि तम तन ।
(३) मो०-राजन । (४) मो-घट ।
(५) ए०-कृ०-को-तादक । (६) ए०-कृ०-को०-मझ्य ।

... ... । हुम चिंतिय मन मझ्झि।
कै करो पति जुग्गनि ईसह । ईस पुज्जै सु जग्गीसह ॥
शुक चिंति बाल अति लघु सुनत । ततविन विस उपज्जै तिहि ॥
देव सभा न जहुव न्रपति । नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं० ॥ ६८ ॥

ब्राह्मण का जैचन्द के यहां जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से ससिव्रता की सगाई का संदेसा देना। एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरंत देवगिरि की ओर चला।

नाल केर दुज गहिय। द्वार जै चंद गयो बप ॥
करी षबर है जमह। अप्प अंदर बुलाइ न्रप ॥
नाल केर दुज आनि। कह्यो राजन अब धारी ॥
देव सु गिरि न्रिप भ्रात। पुंज ससि वृत्त कुमारी ॥
सो दइय बंध नृप बीर कहु। लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंध्रब कथ। चल्यौ सु दक्खन देव धर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी।

दूहा ॥ चल्यौ सु दच्छिन देव गिरि। जहां शशिवृत्त कुमारि ॥
विपन मद्धि क्रीड़ा करन। समह बाल चितचारि ॥ छं० ॥ ७० ॥

सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो। हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूं।

कवित्त ॥ हेम हंस तन धरिय। विपन मद्ध विश्राम लिय।
दिष्षि तास शशिव्रत्त। अतिहि अचरिज्ज मानि जिय ॥
बल कर गहिय सु तत्व। हत्व लै करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम थान। कवन माया तन अच्छिय ॥
उच्चर्यो हंस ससिव्रत्त सम। मति प्रधान गन्धर्व हम ॥
सुरराज काज आए करन। तीन लोक हम बाल गम ॥ छं० ॥ ७१ ॥

राजा का नट से उसके निवासस्थान का नाम पूछना ।

तब राजन यों उच्चरिय । अहो सु नटवर राय ॥
कोन ग्राम ठौरह सु तुम । कहो सु गुन प्रति भाय ॥ छं० ॥ १४ ॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूं वहां का राजा सोमवंशी जादव बड़ा प्रतापी है । राजा की बड़ाई ।

तब नट नमि करि उच्चरिय । सुनहु राज दिल्लीस ॥
सोम वंश जद्दव नृपति । देव गिरी बसि जीस ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ देवगिरी जद्दव नरेश । अति प्रबल तपन तप ॥
संगीतह वर कला । लछन शुभ ग्यान सुभत वय ॥
ग्यान[1] तान[2] गुन लछन । भेद सुन ग्यान विचारं ॥
तास राज समीप । रहों नट विद्य उचारं ।
ता ग्रह सु पाव अनेक गुन । रहैं सु नद निशि दीह पर ॥
राजंत राज जद्दव नृपति । ज्यों सुदेव[3] पति नाक गुर ॥ छं० ॥ १६ ॥

मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया ।

गाथा ॥ तिहि ग्रह नट वर रूपं । आए संगेत सीप कुरषेतं ॥
तुम गुन अति संभरिय[4] । आयन हुअ एम दिल्लि मझ्झेनं ॥ छं० ॥ १७ ॥

राजा का पूछना कि उनकी कन्या का बिवाह किसके साथ निश्चय हुआ है ।

कहि संभरि नृप राजं । हो नट राइ सुनहु वर वचनं॥
किहि व्याहन वर संगं । को राजन कवन घर मझ्झं ॥ छं० ॥ १८ ॥

नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है ।

पर घर उजेन मझ्झं । करि पामरि सगप्पनं राजं ॥
शुभ अंत करि आदं । व्याहन मन कीन राइ कमधज्जं* ॥ छं० ॥ १९ ॥

(१) मो॰—तान । (२) मो॰—मान ।
(३) ए॰—कृ॰—को॰—इंद्र। (४) ए॰—कृ॰—को॰—संभरिय ।
* व्याहन कीन कमधज्ज ।

चौपाई ॥ तब बोल्यौ दुजराज बिचारं । सुनि ससिव्रत्त कत्थ इक सारं ॥
दिल्ली वै चहुआन महा भर । सो तुम जोग चिन्तयौ हम वर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उसके सौ सरदार हैं, उसने गजनीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया ।

सत सामंत सूर बलकारी । तिन सम जुद्ध सु देव बिचारी ॥
जिन गहियौ सर वर गज्जन वै । हय गय डंडि छंडि फुनि हिय वै ।
छं० ॥ ७७ ॥

महा बली चालुक्य भीमदेव को जीता है । यह सुन शशि-व्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी ।

गुज्जर वै चालुक भीमतर । ते दिन राति डरै जंगल धर ॥
बरन जोग तुम तेह विचारं । सुनि की सुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
तहां तुम पिता कृपा करि जाउ । दिल्ली वै अनुराग उपाउ ॥
मास षटह हों ब्रत्तह मंडों । इयुना आवै तौ तन छंडों ॥ छं० ॥ ७९ ॥

हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया ।

तब उड़ि चल्यौ देह दिस उत्तरि । ढिग ससिव्रत रष्षि निज सुंदरि ॥
जुग्गिनि पुर आयो दुजराजं । सोवन देह नगं नग साजं ॥ छं० ॥ ८० ॥

बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ बय किसोर प्रथिराज । रम्य हा रम्य प्रकारं ॥
सेत पष्य विय चंद । कला उहित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन । हंस दिष्यौ अप अष्पिय ॥
चरन अग्ग दुति होत । हेम पक्खी वियलष्षिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज बर । धाइ न्नपति बर कर गहिय ॥
आपुब्ब दुज्ज गति दूत कथ । रहसि राज सों सब कहिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो।

अरिल्ल ॥ सुनि राजन्न लगो श्रोतानं। लगो मीन केतु कत बानं ॥
कहै नट सों राजंन वर प्रेमं। मह सगपन सा करहि सुकेमं ॥ छं० ॥ २८ ॥

नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा। मुझ से इस में जो हो सकैगा उठा न रक्खूंगा।

दूहा ॥ पुनि नट वर यों उच्चरिय। फिरि कहिहों राजिंद ॥
जौ मुझ कीयौ होइ है। तौ करि हौं नृप इंद ॥ छं० ॥ २९ ॥

राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना।

तब राजन नट सीष दिय। गज सु एक है पंच ॥
चल्यौ दिसि कुरषेत प्रति। परसन हरि चरनंच ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता के ओर लगा रहा।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रिति बित्ती सुभ राजं। पावस आगम भई समाजं ॥
सुनि नट बैन अपुब्ब जहव कथ। नन धीरज्ज हंस आतम पथ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना।

दूहा ॥ हर सेवा राजन करत। कमिय मास जब संग ॥
अद्ध निसा शिव आइ कै। दिय सु षचन मन रंग ॥ छं० ॥ ३२ ॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का वर देना।

जो कामन मन सहई। सो पूरे हर ईस ॥
नन चिंता करि राज गुर। आयौ गुन तुछ दीस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

राजा का स्वप्न में वर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना।

कवित्त ॥ हुअ प्रभात जब राज। सुपन मन मद्धि राज रस ॥
प्रसन होइ शिव शिवा। काम सीझै सु इंद जस ॥

छंद चोटक ॥ बय संधिह बाल प्रमान व्रनं। कहि चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
बय स्यांमऽरु शैशव अंकुरयं। अह अंत निसागम संकरयं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
जल सैसव मुद्ध समान भयं। रबि बाल बहिक्रम लै अथयं[1] ॥
बरसै सब जोबन संधि अती। सु मिलें जनु पित्तह बाल जती ॥ छं० ९२ ॥
जुर ही लगि सै सब जुब्बनता*। सुमनों ससि रंतन राज[2] हिता ॥
जु चलै मुरि मारुत भंकुरिता। सु मनों मुरवेस मुरी मुरिता ॥ छं० ॥ ९३ ॥
कलकंठ सु कंठय पंष अली। गुन जंपि कवित्त सु चंद बली ॥ छं० ९४ ॥

कवित्त ॥ ससिर अंत आवन बसंत। बालह सैसव गम ॥
अलिन पंष कोकिल सुकंठ। सजि गुंड मिलत भ्रम ॥
मुर मारुत मुरि चले। मुरे मुरि बैस प्रमानं ॥
तुछ कों परसिस फुट्टि। आन किस्सोर रँगानं ॥
लीनी न अमि नक स्यांम नन। मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥
जानी न वयन आवन बसत। अग्याता जोवन अरिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

कवित्त ॥ पत्त पुरातन भरिग। पत्त अंकुरिय उठ्ठ तुछ ॥
ज्यों सैसव उत्तरिय। चढ़िय सैसब किसोर कुछ ॥
शीतल[3] मंद सुगंध। आइ रिति राज अचानं ॥
रोम राइ अंकुच नितंब। तुछ्छं सरसानं ॥
बढ्ढै न सीत कटि छीन ह्वै। लज्ज मांन टंकनि फिरै ॥
ढंकै न पत्त ढंकै कचै। बन बसंत मंत जु करै ॥ छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना। सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना।

दूहा ॥ श्रवनन भव श्रोतान व्रप। मन बंछै चष्षुआन ॥
मनु ससिव्रत्त कुंआरि कौ। पर्यो उर हूर बान ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) मो०–अत्यमियं।
(२) मो०–रोज।
* मो०–सु लगी जनु शैशव योबनता।
(३) मो०–शीत।

मेटेव अंग अँग रोमराइ । जानै न कोइ बर अवर भाइ ॥
यों करत गई पावसी विषम्म । किय सुमन[1] दसा दछन करंम ॥छं०॥४२॥

वर्षा बीत कर शरद का आगमन ।

दूहा ॥ गत पावस आगम शरद । गई गुडल नभ मान ॥
ज्यों सद गुरु मिलि अंदरद । [2]मिलि प्रगट गुरु आन ॥ छं० ॥ ४३ ॥

शरदागमन-शरद वर्णन ।

सुक्कि पंक उत्तरि सरित । गय बल्ली[3] कुमिलाइ ॥
जलधर बिन यों मेदिनी । ज्यों पति हीन तियाइ ॥ छं० ॥ ४४ ॥

छंद पद्धरी ॥ निम्मलिय[4] कला उग्गो सोम । कंदर्प प्रगट उदित[5] व्योम ॥
सरिता सुनीर आए निवांन । पंगु रन हरै तिय द्रग लज्जान ॥
मल्लिका फूल सुगंध दाइ[6] । सजोग कंत रहिं लप्पटाइ ॥
फल फूल सकल लूटंत अंब । जस प्रभा सुभ्र सुनि राज लंब ॥
देवास पूजि नृप रजि विवेक[7] । सिर छत्र चैार राजंत[8] नेक ॥
आगम्म शरद रितु चलन साज । आनंद उग्र उमगे सु राज ॥
अति प्रीति सूर सामंत काज । पति लाक सभा हेमंत लाग ॥
किय सुमन चलन गिरि दसनेस । श्रोनान राग लग्यो अद्देस ॥ छं०॥४५॥

अरिल्ल ॥ पावस रितु कीलंत सु राजन । फिरि आइय दिन सरद सभाजन ॥
करन राज कीला आपेटं । संक्रमि देस मद्धि मन मेटं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना ।

कवित्त ॥ सम सिकार कजिराज । सुदर चतुरंग सु सज्जिय ॥
सघन सूर सामंत । अप्प अप्पन भर गज्जिय ॥
रंजि राज प्रथिराज । राज कीलन मन लाइयु[9] ॥
बर पट्टन जद्दवन । दूत राज पै पठाइय ॥

---

(१) मो०-दिसा । (२) मो०-मिलै पगट । (३) मो०-बेली ।
(४) मो०-निम्मली । (५) मो० कृ० को०-उद्दित सु । (६) ए० कृ० को-बाइ ।
(७) ए०-कृ०-को०-विमेक । (८) मो०-राजत अनेक ।

आगम वीर वसंत कौ। शिशिर संपने अंत ॥
प्रीतम पतन सु प्रीत कौ। देन थांह सो कंत ॥ छं० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ शशिर सु विथुरत बन। वियोग विकुरत बन कंते ॥
दुहन आस रहि साम। कंत आये न वसंते ॥
उपवन पत्त भंझरिय। विरह पंजर संझंभरि ॥
आस अनहिन हुल्लसि। विपन झुल्लसै सु सनेझरि ॥
अनमेष जपत इच्छा सुघन। आनँद उर भूपन तजै ॥
दोऊन होइ कवि चंद कहि। असु रप्पिस धज सम सजै ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शशिव्रता का चित्ररेखा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन।

कवित्त ॥ चित्र रेष बाला विचित्र। चंद्री चन्द्रानन ॥
स्वर्ग मग्ग उत्तरी। चित पुत्तरि परमानन[1] ॥
काम बान संजुरी। बाल अंजुरी सु लच्छिय ॥
मार कलह उत्तरी। पुव्व अच्छरी सु लच्छिय ॥
लच्छिन बत्तीस लच्छी सहज। रति पति चित्त सलंधरै ॥
संग्रहै हत चहुआन कौ। गवरि पुज्ज दिन प्रति करै ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ बरनी जोग बरन्न को। वर भुल्लै करतार ॥
तिहि कारन ढुंढ़त फिरै। सत्त समुद्रह पार ॥ छं० ॥ ११० ॥

वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए।

जा कारन ढुंढ़त फिरत। सो पायौ दीलीस ॥
अब जड्डव ससिहत चढ़िय। दीनी ईस जगीस ॥ छं० ॥ १११ ॥

मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं।

शिवा बानि शिव वचन करि। हो येठयो प्रति तुझ्झ ॥
कारन कुंअरि हत्त कौ। मन कामन भय सुझ्झ ॥ छं० ॥ ११२ ॥

शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन।

(१) मो०—समानन।

इन्द्र[1] सु राज म्रगया सु। बाज उत्तंग अंग बर॥
निमष निमष संचरहि। निमिष जोजन जोजन सर॥
छित्त लिये जिम पवन। वेग जग्गै जिम अग्गिय॥
घट कुट्टै जिम सद्द। उरह चक्कवाक बिसग्गिय[2]॥
यों बंधि राज आषेट बर। वपु सुव सुभ्र दिष्षे सु षष॥
षह मंगि अंषि मंगल पवन। सबै होइ जोजन समष॥ छं०॥ ५३॥
घुर घुरंत घन स्वांन। अप्प पंजर तीतर बर॥
मच्छ जाल बग्गुरि हि। फंद फैदैत सुवर धर॥
धनक षान चक्कां सु। सिंघ पंजर जल रष्पन॥
षांट पैर विषमिल्ल। नार नारक्क चित्त पन॥
सर हद सुरस लग्गै रमत। भुच्चै साथ श्री नाथ पति॥
कविचंद विरद बंनन करै। श्रवन सुनै दिल्लिय न्रपति॥ छं०॥ ५४॥

शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना।

गाथा॥ जित जित कुट्टै पंषी। थावर जलह जंगमं जोती॥
ससि पालं हरि[3] पालं[4]। भूपालं काल प्रति पालं॥ छं०॥ ५५॥

भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना।

भालक आइ सहीयं। बाराहं कोस अट्ठयं पंचं॥
आतुर परि राजानं। अति अदभुत रूप शूकरयं॥ छं०॥ ५६॥

राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना।

दूहा॥ गये सुवन राजन सुभर। करन घात सु प्रपंच॥
कोलाहल सुनि सूकरह। उठि चय कोस पुलंच॥ छं०॥ ५७॥
तिहि को बर इक प्रवल षह। पोदि सुद्दै डर तार॥
फिरि अप्पी राजन्न प्रति। व्यौरो कोल उचार॥ छं०॥ ५८॥

---

(१) छ०–राजन। (२) ए०–कृ०–को०–राजन। (३) ए०–भुम्भ।
(१) ए०–हन। (२) मो०–विकस्सिय।
(१) मो०–हर। (२) मो०–माल।

बुल्लस राज फिरि हंस वत्त। सुनि श्रवन बेंन मन भयौ रत्त ॥
पुच्छनह राज सब त्रिय विवेक। उच्चस्यौ* हंस सा वत्त एक ॥ छं० ॥ १२१ ॥
तुम देव अंस जानौ सु भेउ। हम कहत परम दुज लहै केउ ॥
लच्छिन प्रकार हव त्रिय विवेक। करि वरन सुनावहु भांति नेक ॥ छं० ॥१२२॥

हंस का लक्षण वर्णन करना।

गाथा ॥ कहै विवेक सुहंसं। त्रीय प्रकार चार लहि इंदं ॥
सुनि राजन सुभ वांनी। आनंदे श्रवन मझ्झेनं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
दूहा ॥ तब दुजराज सु उच्चरिय, रे संभरि पुर इंद ॥
पद्मिनि हस्तिनी चित्रिनी, संषिनि संषन नंद ॥ छं० ॥ १२४ ॥

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन।

अरिल्ल ॥ रक्त जीभ मृग अंक सु लच्छिन वान इहि ॥
बचन सु अमृत धार रती रति जांनि जिहि ॥
इला[1] सील कुल वाल क्रती क्रामोदरी ॥
इन गुन नृप भय चारु सु चार जु सुंदरी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

पद्मिनी का वर्णन।

कवित्त ॥ कुटिल केस पदमिनी। चक्र हस्तन तन सोभा ॥
स्निग्ध दंत सोभा विसाल। गँध पद्म आलोभा ॥
सुर सम्रह हंसी प्रमांन। निंद्रा तुछ जंपै ॥
अलप वाद मित काम। रत्त अभया भै कंपै ॥
धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज। असन बसन चतुरंग गति ॥
आवंक लोइ लग्गै सहज। कांम वांन भूलंत रति ॥ छं० ॥ १२६ ॥

हस्तिनी का वर्णन।

उद्ध केस हस्तिनी। वक्र अस्तन दसनं दुति ॥
मधुर गंध गरनाट। भुक्ति श्रम कांम वाम रति ॥
गूढ़ स्रवद मन जा। विषान रंगज क्रामोदरि ॥
चित्र नयन चंचल। विसाल बरनी जंमोदरि ॥

---

* मो०—करि हंस राज यों वत्त एक। (१) क्र० स०—इली।

कवित्त ॥ उभय सत्त म्रग मुदित । वंधि फै दैत रहति बर ॥......
यों वंधे म्रग बीय । कहे ओपमा चंद बर ॥
मन वंधि कुलटा विटप । ग्यांन वधि मुकतित आवै ॥
दिन वंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि-डुलावै ॥
आनई लज्ज गुन जस पकरि । आनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध वर कलह को । यों आने म्रग वीय गस ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवत वाय पुर ॥
काल दढ़ अग्गि सु ज्वाल । जीव पुच्छै न चित्त शुर ॥
दीप नयन प्रज्जरै । कन्न लंबे कँध डारे ॥
कहि ओपम कवि चंद । बीज चंचल गति धारे ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोसभर । दुति तरंग छिति जल छलिय ॥
पामर सुपाट पंजर विहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥ छं० ॥ ६६ ॥

राजा का अकेले वधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे पीछे चलना।

कवित्त ॥ इक्क समय राजन्न । करन क्रीड़ा धर अप्पं ॥
विपन मध्य संक्रमन । करन आपेट सु तप्पं[1] ॥
ग्रह करि तुपक सु राज । म्रग्ग छत्ती धर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छैं धरि हल्लिय ॥
कर हथ्थ डार इक्कन सुपर । चले राज तुछ वधिक सथ ॥
लग्यौ सुरंग आपेट कौ । कम्यौ राज पर भूमि पथ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा।

पुच्छ कथा शुक कहो । समह गंध्रवी सुप्रेमहि ॥
स्रवन संमि संजोगि । राज समधरी सुनेमहि ॥

(४) उपमा सु। (५) मो.-सु।
(१) आखेटक।

मराल चोड़ मुक्कियं । चरंन चंपि लुक्कियं ॥
सुरेष पिंड सुभ्भियं । अनंग अंग लुभ्भियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
दीपंत जंघ पिंडुरी । भराइ काम सुंढरी ॥
दुती उपंम जंघ की । किधों उलहि रंभ की ॥ छं० ॥ १३५ ॥
चितिय उपंम जंघरी । पराद काम की करी ॥
कनक्क थंभ रंभ सी । अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥
नितंब तुंग मंडली । सयन्न काम की थली ॥
उतंग भाग अग्रता । मनों तुलाकि दंडिता ॥ छं० ॥ १३७ ॥
छक्षीन हीन लंकयं । कमांन काम अंकयं ॥
सरोम राइ राजई । उपंम कब्बि साजई ॥ छं० ॥ १३८ ॥
सुमेर शृंग कंदकै । चढ़े पपील चंद कै ॥
उपंम कब्बि ठहई । धनक्क मुट्ठि चड्डई ॥ छं० ॥ १३९ ॥
थनं विपान थोरयो । अनंग वान ओरयो[1] ॥
सुरंग रोम वाल सी । जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० ॥ १४० ॥
उपंम चंद ग्रीव की । मनो अनंग सीव की ॥
दुती उपंम तं लहै । कपोत कंठ कंक है ॥ छं० ॥ १४१ ॥
चिबुक्क चारु बिंद को । हस्यौ कलंक चंद को ॥
दसन्न जोति कामिनी । मनों दमक्कि दामिनी ॥ छं० ॥ १४२ ॥
हसंत छब्बि सें कही । सु लच्छि रंक ढंकही ॥
सुरंग ओठ अद्ध सी । सु अद्ध रेष चंद्र सी ॥ छं० ॥ १४३ ॥
दसन्न चारु मानयं । प्रभात के प्रमानयं ॥
दिषंत जोति नासिका । सु गत्ति कीर चासिका ॥ छं० ॥ १४४ ॥
पुभी जराइ राजई । उपंम कब्बि साजई ॥
मनों तरक्क विक्कुरे । मिलंत चंद उक्कुरे ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तटंक कन्न राजई । उपंम ता समाजई ॥
सुकांम बाम चाढ़िकै । धरे षरास बाढ़िकै ॥ छं० ॥ १४६ ॥

(१) ए० कृ० को०-आरयो ।

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थीं और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू चित्ररेषा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की वेटी हुई।

कवित्त ॥ कहै बाल सुनि हंस। कवन हम पुव्व जम्म कह ॥
कवन पत्ति हम लहँहिं। लेप विचार लहो इह ॥
तबै हंस उच्चश्चौ। सुनहि शशिहत्ता नारी ॥
चित्ररेप अपक्षरि। सगीन अति रूप धरारी ॥
तिहि गरव इन्द्र सम कलह करि। क्रोध देववंडी सुरम ॥
दच्छिन नरेस न्टप तान वँधु। पुंज ग्रहै अवतार सुम ॥ छं० ॥ ७२ ॥

हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कान्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा वाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य वर नहीं है।

चैापाई ॥ कहै हंस सुनि बाल विचारी। पंग बधुर बीर सु पुत्तारी ॥
तिहि तु दई मातु पितु वंधं। सो तुम जोग नहीं वर कंधं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

तेम रहै वर वरप इक्क महि। वय गय अनत भुम्मिक है समतहि ॥
तिहि चार करि तुमहि पै आयैा। करि करुना यह इन्द्र पठायो ॥ छं० ॥ ७४ ॥

शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा वाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं व्याह करूं॥

तब उच्चरिय बाल सम तेहं। तुम माता सम पिता सनेहं ॥
मुझ्झ सहाय अवरि को करिहो। पानि ग्रहन तुम चित अनुहरिहो ॥
छं० ॥ ७५ ॥

हंस का कहना कि दिल्लीपति चैाहान तुम्हारे योग्य वर है।

किय शृंगार सुंदरिय । आइ उभ्भी सुर बामं ॥
देषि त्रिया मन प्रमुदि । हुऔ मन उद्दित कामं ॥
अब सरस न्टत्य कारनह कजि । जंच मृदंग [1]उपन्न सजि
अस्तुति अनेक पढि घोष त्रिय । पहुपंजुलि सुर इंद्र कजि ॥छं०॥१५६॥

अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना ।

तब सु कोप धरि ईस । दियौ सुर श्राप पतन धरि ॥
और रंभ किय न्टत्य । सुबर अनेक विद्धि पर ॥
बहु बिवेक कल मान । ताल मंडै त्रिगन सुर ॥
रंजि राज सुर ईस । दीन बर बानि रंभगुर ॥
अति प्रमुदि चित्त कैलास पति । उभय देव आनंद हुअ ॥
सुभ सभा बिराजै राज सुर । सुबर प्रमोदिय मन सँभुअ ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शिवजी का प्रसन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा । पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा ।

दूहा ॥ करि प्रसंन सुर राज त्रिय । मुष अस्तुति सुर कीन ॥
बर बानी पुर इंदकै । [2]यह सुवाक्य सिव दीन ॥ छं० ॥ १५८ ॥
परै तुम्भ्म उत्तिम घरनि । पुत्री भूमि नरिंद ॥
दुअ पष्षां सिर छत्रहै । करि सेवा हर इंद ॥ छं ॥ १५९ ॥
बचन ईस तें बर लहै । हरन होइ तुअ नारि ॥
कलह केलि भावन भवन । ह्वै है जुद्ध अपार ॥ छं० ॥ १६० ॥

शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है ।

कही बांनि कैलास पति । मैनकेस सुनि नारि ॥
परस दोष भरतार सम । करत सु क्रीड अपार ॥ छं० ॥ १६१ ॥

---

(१) मो०—उपम्म ।

(२) किय वधाय दिवतीन ।

दूहा ॥ विपन मध्य आचिज्ज इह । दिष्षि राज प्रथिराज ॥
धूत दूत कलधौत तन । हंस सरुप विराज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

संध्या का हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना।

सेभ सपत्तौ न्त्रपति पै । दूत सु जद्दव राइ ॥
बर कग्गद न्त्रप हथ्थ दै । कहि श्रोतान बधाइ ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है। इतना कहकर चुप हो जाना।

कह्यो दूत मन अप्पनै । जो ब्रंनो विधि जोइ ॥
दोषु[1] जानि तन ब्रंन बहि । न्त्रप श्रोतान न होइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चौपाई ॥ अति सु मनह चिंते परि मांन । मानहु थके सिंध जल वांन ॥
दारुन अप्प एक सोइ जाइ । चिंतौ कहा सु अंनह पाइ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ इह कहि बत्त ठठुक्कि रहि । उत्तर एक न आइ ॥
मानो उरग छछूंदरी । कंठ लगावहि धाइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

गाथा ॥ सुप जंपी मन बत्तं । इतं जे नवाइ चिर पुछं ॥
बर चहुआन कमानं । किम जहां नमों नम नाउं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है।

दूहा ॥ इह अप्पी चहुआन सों । नतो मार कहि आइ ॥
सुनिविकों ससिहत्त गुन । सारदऊ लजचाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो।

राका अरु सूरज्ज विच । उदै अस्त दुहु वेर ॥
बर शशिहत्ता सोभई । मनों शृङ्गार सुमेर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन।

इन वै इन रूपह तरुनि । इन गुन आवै मान ॥
सो बर बर कविचंद कहि । सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ९० ॥

(१) मो०—देेषु ।

छंदगाघा ॥ हंस कहै न्टप राज बिचारं। जो पूछै कारन कत्यारं ॥
देव गिरि जहां ... भानं। ता पुत्री ससिवृत्त सुजानं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सो मंगी क्रम धज्ज सुराजं। तिन्हि गुन सुनि चहुयानं सुताजं ॥
छंडे तमि पित मान सुज्ञानं। वरन वृत्त लीने चहुवानं ॥ छं० ॥ १६६ ॥
हर सेवा सुमंडय कलेसं। तप आचरन क्रम्म संदेसं ॥
हों गुन तास हंस भय रूपं। पुच्छि चिय कारन सुनिय सु भूपं ॥छं०॥१६७॥
दीह्री वै अच्छे दृढ़ नेमं। हों पठयौ सु तुम्भ प्रति प्रेमं ॥
प्रसन ईस अंबिका समेतं। वुल्यौ राज सैल संकेतं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
चढ़न कहिय राजन सो देसं। उट्ठि चलौ दच्छिण तुम देसं ॥
सुनत श्रवन चढ्यौ न्टप राजं। कहि कहि दूत दुजन सिरताजं॥छं०॥१६९॥
भय अनुराग राज ढिल्ली वै। दस सहस्स सज्जी न्टप देवै ॥ छं० ॥१७०॥

राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो।

गाथा। जंपै दुज सम राजं। तव गुन तंग कीन अपारं ॥
इम गुन किम संभरियं। लग्गे श्रोतान राग किम जहां ॥ छं ०॥ १७१ ॥

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना।

दूहा ॥ हंस कहै राजन्न सुनि। इह उतपति अनुराग ॥
श्रवन सुनौ संभरि सु पहु। कहौं वृत्त संजोग ॥ छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ देवग्गिरि नृपभान। सोम वंसी सुतपै नृप ॥
तिन अनंत बल तेज। बहुल है गै पैदल तप ॥
नयर मध्य कोटीस। बसै बानिक्क अनंत लच्छि ॥
धर्म तथ्यनह पार। न कोऊ दास रहै इक्कु ॥
सो एक लष्ष पयदल पुलत। षग्ग जोर [1]षूंनं वहै ॥
जद्दव नरिंद सव गुन कुसल। धन प्रताप दिन दिन लहै ॥छं० ॥ १७३ ॥

उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन।

तास पुत्र नारेन। पुत्रि ससिवृत्ता प्रमानं ॥
दुअ अनंत सूरत्ति। रूप मकरंद सु जानं ॥

(१) मो०--खूनी।

कवित्त ॥ निसि नरिंद चहुआन । चित्त मनोरत्य विचारै ॥
भई दीह सब निशा । निशा सयनंतर धारै ॥
सयनंतर ससिव्रत्त । चाटु चटु वैन उचारै[1] ॥
चारु चारु वर बयन । मान माननि संभारै ॥
द्वैवान मनोरथ चित्त वर । भव भव कन्नन कह करै ॥
भो प्रात दूत पुच्छे न्त्रपति । शहोवै चित्तै धरै ॥ छं० ॥ ९८ ॥

हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना ।

दूहा ॥ वर बंध्यौ ससि व्रत्त कौ । अरु न्त्रप भान कुंआर ॥
वेंधी दिन कमधज्ज कै । नाम वीरवर भार ॥ छं० ॥ ९९ ॥
ससिव्रता व्रत आइ वै । वह देख्यौ वर कौन ॥
न्त्रप वै भान स्वयंवरह । एक व्रत्त वल लीन ॥ छं० ॥ १०० ॥
जैत षंभ मंड्यौ नृपति । वान चनन व्रत लीन ॥
ता काजै दिसि दिसि नृपति । धर धर कग्गर दीन ॥ छं० ॥ १०१ ॥
दूह अमंत[2] न्त्रप वर जिते । कियौ न मन्नै ताम ॥
दारुन व्रत लीजै नहीं । दूह कहि पूरि सु ठाम ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूह सुनंत प्रस्थान दै । वर पंचमि रवि बार[2] ॥
पच्छ चलाइ गवन्न सुनि । कांनन वीरन[3] वार ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दोऊ वाल पावक्क बनि । सुनि परि उट्ठह गात ॥
मानों चीय चतुद्दशी । कै शशि उट्ठिय प्रात ॥ छं० ॥ १०४ ॥
सुनि कै आसन उट्ठि वर । ढुंढत फिरत सु जोइ ॥
कंत कंत के करत ही । कान भनक कछु होई ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बीर चंद जैचंद बँधु । देवह पुंज कुंअरि ॥
न्त्रप पठये चहुआन पै । दै शशिव्रत्ता नारि ॥ छं० ॥ १०६ ॥

शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन ।

(१) ए०-क्ट०-को०-उचारै । (२) मो०-अमृत ।
(३) क्ट०-वार ।

जे जे सु पराक्रम राज किय। सोइ कहै पिचिन समय ॥
श्रोतान राग लग्यौ उत्तर। तो वृत्त लिनौ सुनौ सुकथ ॥ छं० ॥ १७८ ॥

यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी।

दूहा ॥ यों वरष्ष दुत्र वित्ति गय। भद्दय वैस वर उंच ॥
तन्न कामन सु कलेव सुर। करै सेव सुचि संच ॥ छं० ॥ १७९ ॥

तभी से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही।

हर सेवा निस प्रति करैं। मन वचा क्रम बंध ॥
वर चहुआन सुकामना। सेवा ईस सुगंध ॥ १८० ॥

कवित्त ॥ कहै हंस सुनि राज। करों अंनन सु कह्यो गुर ॥
दिवस च्यार प्रजंत। और मो सरन लहो पर ॥
सेवत नित प्रति ईस। मास पंचह वित्तिय वर ॥
एक सुदिन सिव सिवा। वचन संपुट लग्गी कर ॥
देवाधि देव सुनि ईस वर। करि सुचित्त कूंअरि सु व्रत ॥
पारथ्थ रुंड माली सरस। पर संगा गवरी करत ॥ छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ इह सुनि दस दिन गए वहि। सुनि रहि वचन सुईश ॥
एक सुदिन ससिवृत्त ने। किय द्रढ नेम जगीश ॥ छं० ॥ १८२ ॥
वर वरिहों संभरि सु पहु। वियौ पुरुष मुक्क भ्रात ॥
मिलन किया हर मास प्रति। भषिवै संनर घात ॥ छं० ॥ १८३ ॥

शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में वर देना।

बचन सिवा सिव वाच दिया। पति पावै चहुआन ॥
वर प्रमुदिय प्रथमाधि पति। हुअ सुपनंतर मान ॥ छं० ॥ १८४ ॥
कै जानै मन अप्पनौ। कै षिचिन कै ईस ॥
और शिवा सुनि ईस प्रति। किय अस्तुति वर दीस ॥ छं० ॥ १८५ ॥

(१) मो.–करन।

सुभ लच्छ जइव प्रिया । कहिये का सु विवेक ॥
हंस कहै राजन सुनिय । उत्तिम लच्छिन कोक ॥ छं० ॥ ११३ ॥

काव्य ॥ पीनो हपीन उरजा, सम शशि वदना, पद्म पत्रायताक्षी ॥
दयंबोष्ठी तुंग नासा, गज गति गमना, दत्तना वृत्त नाभी ॥
संस्निग्धा चारु केशी, मृदु प्रथु जघ्रा, वाम मध्या सु वेसी ॥
हेमांगी कंति हेला, वर रुचि दसना, काम वाना कटाची ॥ छं० ॥११४ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो ।

अरिल्ल ॥ सुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय । तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय ॥
चारि जुगत्ति त्रिया परकारं । कहु दुजराज सु लच्छिन सारं ॥ छं० ॥११५॥

हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती ।

दूहा ॥ कही हंस जहो सु कथ । लगि श्रोतान सुराज ॥
छिनन हंस धीरज धरै । लगै वान सम साज ॥ छं० ॥ ११६ ॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है ।

कहै हंस वर राज सुनि । अति अनेक है जाति ॥
पदमनि है जइव कुंअरि । आंन तरुनि अनि भांति ॥ छं० ॥ ११७ ॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना ।

राज कहै दुजराज सुनि । करि वरनन कथि सोइ ॥
को लच्छिन उत्तिम त्रिया । कहिये सो सब जोइ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना ।

चारि जाति है त्रीय तन । पद्मिनि हस्तिनि चित्र ॥
फुनि संषिनिय प्रमान हुच । मन नह रंजिय मित्त ॥ छं० ॥ ११९ ॥

राजा का चारों के लक्षण पूछना ।

छंद पद्धरी ॥ सुनि हंस वैनं उर लगी वत्त । विधिना लिषंत क्यों मिटै पत्त ।
श्रोतान राग उर लगे राज । तन लगे वान समरह सु साज ॥ छं० ॥ १२० ॥

पठए जद्दव सुनाथ। वस्त श्रीफल सुभ सत्थं ॥
हय साकति सजि पंच। सहस इक वस्त्र पटंबर ॥
मुत्ति माल जुरि पंच। अवर जो वस्त व्याह पर॥
हेमंग पंच सत लेइ दुज। सुर राजन अग्गै धरिय॥
ते बस्त अनेकं बिधि सुवर। रंजि राज अप्पन सु जिय॥ छं० ॥ १८९ ॥

टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए।

मिलि प्रोहित जैचंद। दियौ श्रीफल सुबिंद कर॥
जे पठई बर वस्त। अग्ग लै धरिय राज बर॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज। दियौ सुइ अवध पुंज नर॥
अति उछाह माननिय। मिले रस हास परसपर॥
बोलयौ तब प्रोहित सुवर। अहो राज पंगुरन सुनि॥
लै चलै बींद ननकरि [1]बिलंब। दिन तुच्छै साहौ सु मुनि॥ छं०॥१९०॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना।

दूहा॥ ह्वै प्रसन्न बहु पंगुरै। दियौ हुकुम सुभ्र बंध॥
प्रेरि सथ्थ जव अप्प पर। अति पर घर सुभ्र नंघ॥ छं० ॥ १९१ ॥
सज्जि सेन चतुरंग नर। देवग्गिरि काज व्याह॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय। नर उच्छव करनाह॥ छं० ॥१९२॥

हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा।

छंद पद्धरी॥ चढि चलिय सब्ब रठ्ठौर सेन। उडि रेंन रथ्थ रुक्किय सुगेन॥
दस लष्ष सेन सज्जिय कमंध। वारुनिय गंध द्वै सजि मदंध॥ छं०॥१९३॥
सा अद्ध लष्ष पै पुल्लिय नैर। हज्जार सात मैगल सु भैर॥

(१) मो.- विरम।

छिन हृदय हसय विहसय लहय । बसि चित्तह चित पुत्तलिय[1] ॥
नीवीय मान जानैं बहुत । कंत चित्त जाइ न कलिय ॥ छं० ॥ १२७ ॥

चित्रनी का वर्णन ।

दीर्घ केस चिचिनी । चित्त हरनी चंद्रानन ॥
गंध मग चिच निद्र । कोक शब्द्न उच्चारन ॥
सील नील लज्जा प्रमांन । रत्ति भै भय घन मारै ॥
अलस नयन रस वलित । कलित कल बोल उचारै ॥
धीरज्ज छिमा छवि लोक करि । अवलोकन गुन औसरै ॥
विस्तीर्ण संच मोहन पढै । चित्त वित्त कंतहु हरै ॥ छं० ॥ १२८ ॥

संषिनी का वर्णन ।

अलप केस कुच स्थूल । थूल दंती उच्चारन ॥
थूल उदर लंकीस । थूल किस लंगध बारन ॥
घोर निद्र[2] तन नास । अलप रसना रस छंडै ॥
अलप सील गंभीर । सबद कलहंतर मंडै ॥
आचार ध्रंम नहि सुद्द मन । विधि विचार विभचार घन ॥
आसंप संष संषिनि गुननि । सुष्य नाह पावै न तन ॥ छं० ॥ १२९ ॥

शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन ।

दूहा ॥ सुनौ श्रवन चहुवांन वर । देवगिरि न्रप भान ॥
रूप अनूप अनूप गति । कहि ओपम सुनि कान ॥ छं० ॥ १३० ॥

छंदनाराच ॥ चढंत वेस सामयं । अरंभ ग्रेह कामयं ॥
उठंति एहि हल्लिता । वियद्द चंद्र चल्लिता ॥ छं० ॥ १३१ ॥
नपं सुरंग रंजनं । तरक्क दर्प्प कंजनं ॥
हलंत पेंड रहयौ । अरुन्न नील कहयौ ॥ छं० ॥ १३२ ॥
रही सु कंति थावकं[3] । चलंत हंस सावकं ॥
दो हंस अंग अंगुरी । उपंम काक्र विज्जुरी ॥ छं० ॥ १३३ ॥

---

(१) मो०--पुत्तरिय । (२) मो०--नीद ।
(३) ए० कृ० को --जावकं ।

दस हजार सेना सहित पथ्वीराज का तैयारी करना।

दस सहस्र हैंवर चढ़िय । न्रप दिल्ली चहुआन ॥
हुकम सद्दि साहन कियौ । दै सूरन विलहान ॥ छं० ॥ २०४ ॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि वाहन देना।

छंद भुजंगी ॥ दियौ कन्ह चहुआंन मानिक्क वाजी । जिनैं देषतें चित्त की गत्ति लाजी ॥
मुषं मभ्भक्क पायं कढ़ै वाज राजं । मनो वग्ग भीपं क्षतं कढ़्ढि पाजं ॥ छं० ॥ २०५ ॥
दियौ बाजि इंदं वरं जाम देवं । दिपै तेज ऐसैं चिरं पंष एवं ॥
धरै पाइ ऐसे इलं मभ्भि जैसे । सुनै जैन अंमं धरै पाइ तैसे ॥ छं० ॥ २०६ ॥
चढ्यौ राव कैमास चिन्तं तुरंगी । रहै तेज पासं उछलंत अंगी ॥
[1]चमक्कंत [2]नालं विसालं खुरंगी । मनो बीज छत्री कि आभा अनंगी छं० ॥ २०७ ॥
उड़ै झार झारं पयं नाल झारी । समं बूंद धावै मनैं चार तारी ॥
चढ़े राजहंसं सु [3]धामंड जोटं । मनो तेज बंधी मुनी वाइ मोटं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
डुलै [4]कंल नाहीं सिलीका सुग्रीवं । मनों जोति बंधी [5]सुनुवात दीवं ॥
चढ्यौ राज षीची प्रसंगं पल्हूपा । उड़ै वास ज्यों वाय [6]वग्गै अनूपा ॥ छं० २०९ ॥
बंध चौंर चित्तं चमक्कंत चाहं । हरद्वार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं ॥
चढ्यौ राज पट्टं अजानंत बाहं । कही कव्विराजं उपम्मा ति चाहं ॥ छं० ॥ २१० ॥
दियै [7]बीच तारी कोई नाहि पुज्जै । वलं ताहि दिष्षै सरित्ता असुझ्झै ॥
दियौ मृग्गराजं चढ्यौ देवराजी । उड़ै पंखि पाजी रही पच्छ लाजी ॥ छं० ॥ २११ ॥
चढ्यौ निड्डुरं राइ अंगं अभंगं । छुटै जानि तारान के व्योम मग्गं ॥
चढ्यौ हाहुली राइ जंबू नरिंदं । वढ्यौ बांन ज्यों तज कम्मान चंदं ॥ छं० ॥ २१२ ॥
चढ्यौ लंगरी राव लंगा सुबीरं । किधों वाय वढ्यौ बुभ्रं जानि धीरं ॥
चढ्यौ राज गोइंद आहुट्ठ राजं । किधों वाय बुंदं स छुट्टीय साजं ॥ छं० ॥ २१३ ॥
चढ्यौ राव लष्षं सु लष्षं पवारं । भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं ॥
किधों अग्गि दंडं भ्रजं बाल फेरैं । किधों भोर हथ्थं किधों चक्र हेरैं ॥ छं० ॥ २१४ ॥

---

(१) मो.--चमक्कति । (२) मो.--तालं ।
(३) ए.--जोतं । (४) ए.--कैन । (५) ए.--सुनि बात ।
(६) मो.-वेगै । (७) मो.--वाच ।

सुमत्ति नास जीपकै। चुनंत कीर सीपकै ॥
सुभाइ वंक नैन की। चरंत चित्त मैन की ॥ छं० ॥ १४७ ॥
चलंत नेंन भूव ले। धरंत चंद जूव ले ॥
लिलाट आड़ सोभई। अनंग थान लोभई ॥ छं० ॥ १४८ ॥
सुरंग केस पासयं। सु मुत्ति मंडि भासयं ॥
किरंन सूर साजकी। अचार दूष भास की ॥ छं ॥ १४९ ॥
चिपंड मंडयौ गुची। उपंम काक विच्चुची ॥
सोवन्न पंभ दुस्तरी। उरग्ग चीय उत्तरी ॥ छं० ॥ १५० ॥
शृंगार भार भारियं। विलोकि काम पारियं ॥
अवन्न मंडनं धरी। अनंग चित्त चीं हरी ॥ छं० ॥ छं० ॥ १५१ ॥
विसाल बाल विभ्भरी। कविंद बुद्धि विस्तरी ॥ छं० ॥ १५२ ॥

राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ।

दूहा ॥ जंपि राज दुज राज सम। तुम मति रूप अलोइ ॥
कवन काज अवतार इन। सत्य कहौ तुम सोइ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंस का विवरण कहना।

हंस कहै राजन्नसुनि। [1]कहौं उतपत्ति चियेन ॥
सुनहु राज मन प्रसन होइ। विवरि कहौं सब बेंन ॥ छं० १५४ ॥

इन्द्र और चित्ररेषा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन।

कवित्त ॥ एक समै सुर ईस। अप्प पुर इन्द थान गय ॥
आगम देव सुनेव। नाग पति अति उछाह भय ॥
अरघ पाद करि धूप। करै मंगल अपुव्व सुर ॥
सुभ आसन रजि छद्र। करै घर सार वारि तर ॥
अस्तुत्ति करन लग्गौ सुरिंद। तब प्रसन्न भय ईस प्रति ॥
उच्चरिय कूट जट इंद सों। सुभ दिष्षौ अच्छर नृपति ॥ छं ॥ १५५ ॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना।

रंभ घृताची मैन। मँजुघोषा सुरंग त्रिय ॥
उरवसि केसी नारि। तुरत तिल्लोत्तमानि पिय ॥

(१) मो०—कए उतपति तिय होन।

जिहि च्यार परे सगना सगनं। सुभ अच्छिर लाइ तजै अगनं॥छं०॥२२६॥
विवहार धरै बरनं सु बरं। पढ़ि पिंगल वाहन कोन हरं॥
वर चोजन चारु सुरंग इलं। तहां भौर न मोर सुरंग हुलं॥छं०॥२२७॥
गज उप्पर ढाल ढलक्कि तरं। सुकहों तहां केलि [1]अचिज्ज बरं॥
तहां पल्लव [2]लल्लित रत्त वचं। तहां जे धन दंतिय पंति रचं॥छं०॥२२८॥
झमकैं वर नंग मयूष कसी। निकसी तहां केतक सी विकसी॥
सु चलें वर मंद सुगंध प्रकार। वढ़ी दिसि दस्स सु उज्जल मार॥छं०॥२२९॥
वजै महु रंग सु गंधन भ्रंग। वजे सहनाइ न फेरि [3]उपंग॥
हलै वर लत्त पवन्न झकोर। घरघ्घर होहिं पिलप्पित जोर॥छं०॥२३०॥
बुलै कल कंठ सु कंठह सद्द। तहां चढ़ कव्वि वसीठ उवद्द॥
सकेस कुसंम रु अंकुस पानि। हने हर काम असो [4]गज जानि॥छं०॥२३१॥
अतसी वर पुप्फ सु वाढ़हि भृंग। वजै गज पांनि सु इंदुव रंग॥
लता ललिताह हलावन ढाल। उतह जम लग्गय रुपतिताल॥छं०॥२३२॥
विकासित केसर [5]कुंकुम कांम। सरोज [6]सुरंभ अनूपम नांम॥
उहां मिटि ताल तरंगिनि कांम। उहां चलिते निय ना तिहि ठांम॥छं०॥२३३॥
उहां बरहा जनु उप्परि केल। किने तव ढीठ हिया छवि मेल॥
हलें जनु नेजे षजूर बसंत। ढली वन राह सुढालह मंत॥छं०॥२३४॥
तजी वर बाल सुरंग सुभेस। चल्यौ प्रथिराज सु दष्पिन देस॥
विरदै चहु विप्र कहै कविचंद। सही चहुआन प्रथी पर इंद॥छं०॥२३५॥

दूहा॥ चढ्ढि चलिय प्रथिराज वर। देवग्गिरिधर राज।
त। सुकन्ह बरदाय बर। पुच्छिय बिगत सुकाज॥ छं० ॥ २३६ ॥
कहत कन्ह बरदाय बर। अहो राज सुभ मांनि॥
कहो पथांन सज्यौं कहां। सोहम कहों प्रमांन॥ छं० ॥ २३७ ॥

चलने के सयम राजा को भय दिलानेवाले सकुनों का होना।

(१) मो.--अचाज्जि। (२) मो--लालित।
(३) ए.--उतंग। (४) मो.--गिन।
(५) ए.--कुसुम। (६) मो.--सरूप।

दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी ।

गाथा ॥ तुछ दिन अंतर क्रमियं । आगम भरतार पांमि उद्ध लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पांमै तुम्भक ईस बर बांनी ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शाप के पीछे शिव जी कैलस गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति वरन किया है ।

कवित्त ॥ दै सराप सुर नारि । अप्प करि ईस थान चलि ॥
घन अस्तुति कर इंद्र । प्रमुदि अति रुद्र वानि फलि ॥
चले थान कैलास । परी अच्छरो [1]मृतं पुर ॥
जद्दव ग्रह त्रिय जाइ । उअर उप्पजी कुंअरि वर ॥
देवास थान तपि भान न्रप । तिहि पुत्री ससिवृत्त कुंअरि ॥
सोई वाच रुद्र देवह सुचिय । तुअ कारन हाथह उअरि ॥ छं० ॥ १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है ।

दूहा ॥ और सुवर संकेत [2]सुनि । हंस कहै नर राज ॥
मैंन केस अवतार हुह । तुअ कारन [3]कहि साज ॥ छं० ॥ १६४ ॥

हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को व्याहना विचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया हूं। शीघ्र चलो। राजा का प्रस्तुत होना। दस सहस्र सेना सजना।

(१) मो०—धारा ।　　(२) मो०—कह ।　　(३) मो०—अरि ।

कवित्त ॥ वेस मद्द बल मद्द। और बंध्यौ सुरतानी ॥
राज मद्द उनमद्द। काम मद्दह परिमानी ॥
अरु अवनी औतांन। तौन बंध्यौ चहुआनं ॥
दल बद्दल पावस्स। चल्यौ दछिन धर वानं ॥
[1]छतीस कुली वर वंस विय। चढ़ि प्रथिराज नरिंद चलि ॥
उपवन्न बंब बज्जी विषम। खान थान द्रिगपाल हलि ॥छं०॥२४२॥

पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना।

दूहा ॥ इन अग्गैं कमधज्ज लै। आइ सँपतो थान ॥
माघ नवमि चंबक बजै। चहुआना परिमान ॥ छं० ॥ २४३ ॥

जैचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन।

जैचन्द का आना सुन शशिव्रता का दुखी होना।

कवित्त ॥ [2]एक लष्ष दस अग्ग। सेन सज्जे कमधज्जं ॥
वीय सहस बारुन्न। सत्त हज्जार फवज्जं ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल। अद्ध साइक वहंतं ॥
सजि समूह चतुरंग। दिसा दछिन [3]परजंतं ॥
सुनि श्रवन कुंआरि शशिव्रत्त लिय। सुनि अवाज वर वीर घन।
चहुआन व्रत्त लीनी अधम। प्रान हीन कद्ढन सुमन ॥छं०॥२४४॥

शशिव्रता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना।

दूहा ॥ मिलि पूजै बर बीर कौ। करी भगति घन भाइ ॥
बाला प्रान [4]सुकढ्ढनह। अंतर भ्रम्म न जाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता है। ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता। सखियों

(१) मो.-छत्रीस। (२) ए.कृ. को.-एह।
(३) ए. कृ. को.-फरजंतं। (४) मो.-फढ्ढतँह।

भगिनि भ्रात दुअ प्रीत। पिता माता प्रिय मानं॥
अति उछाह रग रमै। असन इक ठाम प्रधानं॥
सबरिप्प भई सचहारु दुअ। अति अभूत लच्छिन प्रबल॥
लालित सरूप पिय चंद सम। राजकुंअरि राजै अतुल॥ छं० ॥१७४॥

एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया।

तिन राजन कै मंच। नाम आनंद चंद भर॥
तिन भगिनी चंद्रिका। ब्याह ब्याही सु दूरि धरि॥
नैर कोट हिस्सार। तास पिचीय प्रमय बर॥
अति सु प्रीति नर नारि। सुष्य अनुभवै दीह पर॥
कोइक्क दिवस भर तार वहि। तुच्छ दीह परलोक गत॥
आनई वहनि फिर अप्प ग्रह। अति सु दुष्य निसि दिन करत॥छं०॥१७५॥

वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी।

दूहा॥ अति प्रवीन विद्या लहन। गान तान सुभ साज॥
केइक दिन अंतर वहिग। गइ अंते बर राज॥ छं० ॥ १७६॥

उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी।

तिन संगह ससिव्रत्त सुअ। पठन विद्य सुभ काज॥
देवि कुंवरि अदभुत अवय। रंजित है अति लाज॥ छं० ॥ १७७॥

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है।

कवित्त॥ जब पिचिन चंद्रिका। कहै गुन नित चहुवानं॥
जेस पराक्रम राज। तेइ बरनै दिन मानं॥
राजकुंअरि जब सुनै। तबै उभभरै रोम तन॥
फिरि पुच्छै ससिव्रत्त। सदि एकंत मत्त गुन॥

चहुआन चिंत जुग्गिन [1]पुरेस। आयत्त वीर जिन करहु भेस॥ छं०॥२५८॥
लिब्बरै बाद जो करौ मंच। साधम्म वीर कढ्ढै [2]जु कंत॥छं०॥२५९॥

राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा।

दूहा॥ कंति कंति प्रति बढ्ढई। चढ़ै चाइ चहुआन॥
मो पुच्छै प्रति तान जो। वीर चंद दै दान॥ छं०॥ २६०॥

हंमीर संमीर का मत देना कि वीरचन्द को कन्यादान दीजिए।

गाथा॥ बीरं चंद सुदानं। पानं विधाय नित्तयौ गुरयं॥
बुल्लै न्रप हंम्मीरं। साइ संमीरं साइ मंगायं॥ छं॥ २६१॥
दूहा॥ जं हंमीर संमीर गति। समुह सु दुज्जन भेव॥
जिन बड़वानल कुप्पयौ। सार मंत्ति प्रति सेव॥ छं०॥ २६२॥
सार भार संसार कौ। नव निधि नव प्रति पान॥
व्याह वीर शशिव्रत्त कौं। अप दीजैं प्रति दान॥ छं०॥ २६३॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा।

बाल प्रान कढ्ढत सुपुनि। सगुन एक मन मान॥
बढि अवाज चहुआन की। अली सुन्यौ अप कान॥ छं०॥ २६४॥
यों सु सुनिय न्रप भांन नैं। पुच्छि प्रलय व्रत कीन॥
चर [3]पिष्षिय चहुआन पै। जद्दव [4]मोकल दीन॥ छं०॥ २६५॥

राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिव्रता मिलेगी।

सुक्कार मति वंतिनी। न्रप कग्गद दै हथ्थ॥
पूजा मिसि बाला सुभर। संभु थान मिलि तथ्थ॥ छं०॥ २६६॥

---

(१) ए. कृ. को.- परेस। (२) मो.-सु।
(३) ए. कृ. को.-छिप्पय। (४) मो.-कलि।

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द ब्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो।

कवित्त ॥ हुअ प्रसंन सिव सिवा। बोलि हूं पठय तुझ्झ प्रति ॥
इह बरनी तुम जोग। चंद जौसना वान व्रत ॥
ज्यों रुकमिनि हरि देव। प्रीति अति बढ़ै प्रेम भर ॥
इह गुन हंस सरूप। नाम दुजराज भनिय चर[1] ॥
बुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर। ब्याहन पठयौ सु गुर दुज ॥
आवै सु भ्रात जैचंद सुत। कमध पुंज ब्याहन सुकज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा।

दूहा ॥ फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुज्ञान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा। वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा।

कवित्त ॥ कहै दुज सकल बांनि। अहो ढिल्ली नरेस सुनि॥
देवगिरी जद्दव नरेस। रचि बहु भांति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय। तासु गुन कहि न सकों बर ॥
संपपक दुज कही। सुनि रु राजंन कहै नर ॥
प्रोहित सुहत्थ जदुनाथ लै। पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिसा इक मास प्रति। चलि[2] राजन गुर मिलि सुजुरि॥छं०॥१८८॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया।

मिले राज जयचंद। सु गुर प्रोहित्त समत्थं ॥

(१) मो—नर।　　(२) मो.—चल्लि राजगुर।

माया हीन मसंद। दंद दारुन डर नाइय॥
दल दुंदन सिंधु रहि। वाहु दंतन उप्पारहि॥
एक एक संग्रहै। एक शस्त्र करि डारहि॥
दैवत्त वाह दैवत्त भर। देवग्गिरि संम्हो चलिय॥
बर बीर धीर साधन सकल। अकल मह्हरति मति कलिय॥छं०॥२७३॥

दूहा॥ अकल वीर रस अफल भुज। कलि न जाहि सामंत॥
भीम भयानक बल सु इत। जे भंजै गज दंत॥ छं० ॥२७४॥
[1] लभ्भै जस लिष्षीय बर। दैव जोग नह[2] हत्थ॥
पुब्ब दई प्रथिराज कौं। सोइ प्रन मन समरथ्थ॥ छं० ॥ २७५॥
चाहुआन कै कृत सयन। मरन सरन प्रथिराज॥
उभै सिंघ दुअ बीच पल। उभै सिंघ सिर ताज॥ छं० ॥२७६॥

गाथा॥ घटिका उभय सु देवो। रहियं निकट राजनं ग्रामं॥
जानिज्जै न्रप नैरं। दिष्ष न काजैव सोभियं नैनं॥ छं० ॥२७७॥

दूहा॥ रंध्र गवष्षनि नैर मधि। जारि न चिंत प्रमान॥
मानहु न्रप प्रथिराज कौ। रंध्र नैन [3]प्रत प्रान॥ छं० २७८॥

पृथ्वीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना। शशिवृता का प्रसन्न होना।

कवित्त॥ दुहूं पास न्रप नयर। राज दिष्षै प्रति राजं॥
मनों हथ्थ बर नयर। राज संमुह प्रति साजं॥
कोट कठिन मेखल सु। कटि द्रिग पलक उघारिय॥
राज किति संभरन। गोष अवनंन संभारिय॥
किंकिनि सुपाइ घुंघर सु गज। राज निसान सबद्द प्रति॥
चहुआन राव आगम सुव्रत। कमल हीय बद्धिय मुरति॥छं०॥२७९॥

राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ।

(१) मो.-लभै सुजस लिक्खंत बर (२) मो.-नन।
(३) मो.--तजि।

दर कूच परे बल बंस [1]बीर। व्याहनह काज उच्छव सु बीर ॥छं०॥१९४॥
कह हंस राज राजन सु वत्त। चढ़ि चलौ कलू रप्पन सुकत्थ॥
तुम योग नारि बरनी [2]कुमारि। हूं पठय ईस तुअ हत्त नारि॥छं०॥१९५॥
उन लियौ हत्त तुअ दृढ़ नेम। नन करि विरम्म राजन सु एम॥
इक मास अवधि दुज कहै वत्त। व्याहन सु काज मन करौ [3]रत्त॥छं०॥१९६॥
बर ईस भयौ अरु सिवा बानि। सुख लह्यौ बहुत हम दुज बषानि॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कीन। तन रोम अंग उब्भारि चीन्ह॥छं०॥१९७॥
दस सहस सेन सजि पास राज। चढ़नैं सुचित्त करि बाज साज॥छं०॥१९८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना।

दूहा॥ कह संभारि बर हंस सुनि। कह जहौं संकेत॥
कोन थान हम मिलन है। कहन बीच संमेत॥ छं० ॥१९९॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना।

गाथा॥ कह यह दुज संकेतं। हो राज्यंद धीर ढिल्लेसं।
तेरसि उज्जल माघं। व्याहन बरनीय थान हर सिद्धिं॥छं०॥२००॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा।

दूहा॥ तब राजन फिरि उच्चरै। हो देवस दुजराज॥
जो संकेत सु हम कहिय। सो अप्पी चिय काज॥ छं० ॥ २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए।

अरिल्ल॥ सो अप्पिय हम नेम सु दृढ्ढं। तुम अवस्य आवो प्रभु गढ्ढं॥
सेत माघ त्रयोदसि सा वहि। हर सुकलेव थांन सुति भावहि॥छं०॥२०२॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना।

दूहा॥ इह कहि हंस सु उड़ि गयौ। लग्यौ राज श्रोतान॥
छिन न हंस धीरज धरत। सुख जीवन दुख प्रान॥ छं० ॥ २०३ ॥

(१) मो.—धरि। (२) मो.—कुंआरि। (३) मो.—सत्त।

सखी का शशिवृता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख।

यों करंत [1]दुत्तिय वियौ। कथा श्रवन सुनि मंत॥
जाकौ तें पतिवृत्त [2]लिय। सो आयौ अग्नि कंत॥ छं०॥ २८८॥

शशिवृता का आँख उठाकर देखना। दोनों की आँखें मिलना।

श्रवन नयन का मेल कै। भय चंचल चल चित्त॥
श्रोताने दिष्टांन अरु। मिलि पुच्छै [3]दोइ मित्त॥ छं०॥ २८९॥

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई।

चंद्रायना॥ कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग विराजही।
कछु पुच्छन कों जाहिपै पुच्छत लाजही॥
नेंन मेंन में वात स्रवनन सों कहै॥
काम किधों प्रथिराज भेद करिना लहै॥ छं०॥ २९०॥

नैन श्रवण का संवाद।

दूहा॥ नेंन श्रवन्नन पूछई। तुम जानैं वहु भंत॥
मेरे जीय अंदेस है। कही न मैं पिय जंत॥ छं०॥ २९१॥
श्रवनन सन नेंना कही। [4]तुम जानौ चहुआन॥
काम न्टपति कौ रूप धरि। आवत है इन थान॥ छं०॥ २९२॥

हंस ने पहुँचकर शशिवृता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय में तुझ से मिलने आ गया।

ताम हंस आयौ समपि। कह्यौ अहो शशिवृत्त॥
चाहुआन आयौ प्रछन्न। मिलन थांन हर सित्त॥ छं०॥ २९३॥
कवित्त॥ [5]घेरि गांम जद्दव नरिंद। उभ्भे चिहु पासं॥

---

(१) मो.-दुद्दिय। (२) मो.-लियौ।
(३) मो.-दोय। (४) ए. कृ.--जिन। (५) ए.-वोरि

किधौं राति बोहित्थ भ्रमि भोर नारं। कही चंद कब्बी उपंमाति चारं।
चढ्यौ चंद पुंडीर राजीव नामं। तिनं [1]ओपमा चंद देषी विरामं॥छं०॥२१५॥
जिनें गत्ति जीती सयन्नं पगारं। चली झंपि के पंप चित्तं बधारं॥
चढ्यौ अत्त ताई उतंगं तुरंगा। मनों बीज की गत्ति आभा अनंगा॥छं०॥२१६॥
चढ्यौ राव रामं [2]रघूवंस बीरं। गतिं सूर जित्ती स्वर्गं चंद भीरं॥
चढ्यौ दाहिमं देव नर सिंघ कैसे। मनो चित्त की अर्थ की गत्ति जैसे॥छं०॥२१७
चढ्यौ भोज राजं पहारं चिनैतं। फुटै सद्द तेजं अवाजं [3]चितेतं॥
चढ्यौ वीर जोइं कनकं कुमारं। चलौ छत्य पूरन्न आचार पारं॥छं०॥२१८॥
चढ्यौ राव पज्जून कूरंभ बीरं। बढे लोह अग्गं धनं जैतपूरं॥
चढ्यौ सामलौ सूर सारंग ताजी। गही होड़ बंधी वयं वाम पाजी॥छं०॥२१९॥
चढ्यौ अल्हनं वीर बंधव्व पानं। चढ्यौ दान ज्यों ग्रहनं जुद्ध वानं॥
चढ्यौ लष्य लष्यी सलष्यं बघेला। चढ्यौ नेत ज्यों देह देषै सु हेला॥छं०॥२२०॥
चढ़े सब्ब सामंत छल वलत बीरं। मनों भान छुट्टी [4]किरन्नी कि तीरं॥
चढ्यौ बाज राजं प्रथीराज राजं। तवै पष्परयो बाज साकत्ति साजं॥छं०॥२२१
उडें सूर ज्यों हंस तुट्टै कमंधं। वरं ओपमा चंद जंपी कविंदं॥
द्रुमं ज्यों मरोरै [5]शिरं स्वामि हेतं। मयूरं कला बाज रची बंधि नेतं॥छं०॥२२२॥
चढ़े सब्ब सामंत सामंत बीरं। तवै जग्गियं जानि जोगाधिधीरं॥
जगी जोग माया सु जग्गीय थानं। प्रलीनं प्रलै ज्यों प्रलीनं प्रमानं॥छं०॥२२३॥
जगें वीर वीराधि डोरूं वजावैं। नचै नद नंदी चिघाई चिघावैं॥छं०॥२२४॥

माघ वदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना।

दूहा॥ [6]आगम निगम जांनि कै। चलि न्रप [7]सुक्कवार॥
माह वद्दि पंचमि दिवस। चढ़ि चलिये तुर तार॥ छं० ॥ २२५ ॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना।

छंद चोटक॥ कवि चंद सु वंनन राज करं। सोइ चोटक छंद प्रमान धरं॥

(१) मो.-उप्पमा। (२) मो.-रघोवस।
(३) मो.-त्रिनेतं। (४) मो.-किरन्नं।
(५) ए.-सिरं। (६) ए.-अगम निरागम।

दस दासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना।

दूहा ॥ ते दासी दस बाल ढिग । तिर बरने कवि चंद ॥
तिन में बाल सुसोभियैं । मनों प्रथीपुर दंद ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन ।

छंद चोटक ॥ मय मंजन मंडित बाल तनं । घनसार सुगंध सुघोरि घनं ॥
नव लोइन अंजित मंजि चली । कि मनो कस कुंदन पंभ इली ॥ छं० ॥ ३०२ ॥
सुभ वस्त्र सुअंग सुरंगनसी । सुहली मनु साप मदन्न कसी ॥
जरि जेहरि पाइ जराइ जरी । सजि भूपन नभ्भ मनौ उतरी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥
सिगरी लट यों बिथरी बिगसें । शशि के मुख तें अहि सें निकसें ॥
रँग रत्त उवट्टन उज्जल के । तिन में कछु सेत सुधा चलि के ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
नव राजियरोम बिराज इसी । जमना पर गंग सरस्वति सी ॥
परि पान सु कुंकम मज्जन कै । नव नीरज अंजन नैननि कै ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ छुटि म्रग मद कै कांम छुटि । छुटि सुगंध की वास ॥
तुंग मनों दो तन दियौ । कंचन पंभ प्रकास ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

कुंडलिया ॥ धर उप्पर कुच कनि परी । राजस तामस रंग ॥
तीजौ तिहि सत काम मिलि । सो ओपम कवि अंग ॥
सो ओपम कवि अंग । मदिन सिलि काम पतंगी ॥
चढ़त घरं संमूह । करी भइ फेरि पतंगी ॥
*बरं सिर दार बिमार । संभु चढ़आन नाह नर ॥
गंग यमुन भारत्थ । हत्थ जोरंत सु अड्डर ॥ छं० ॥ ३०७ ॥

दूहा ॥ तिमिर बीर गवनं कुवट । त्रिगुन तेज रवि चास ॥
चवनित विक्रम परिस की । [1]काम ज्वाल बल हास ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कुंडलिया ॥ करि मज्जन सज्जन सुक्रम । आभूषन न समान ॥
केहं काके कोहि दिसि । सजि सषि नैन कमान ॥
सजि सषि नैन कमान । केश वागुरि विस्तारिय ॥

---

* छंद ३०७ के दोनों अंतिम पद अशुद्ध हैं। पाठ चारों प्रतियों में समान है।

(१) मो.-द्रूल ।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज । सगुन भै भीत उपन्नौ ॥
स्यांम अंग तन छिद्र । कलस संमुहं सपन्नौ ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य । रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
मुकत माल छुट्टियं । केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
लुट्टिय अनंग भय भीत गति । मन अलुब्भ निद्रा [1]असति ॥
विब्भाइ भाइ उनमोद पति । मंद मंद सक्षति हसति ॥छं०॥२३८॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना ।

अरिल्ल ॥ सो भय भीत देषि कवि पुच्छिय । जंपि कहौ मति मोहि सु अच्छिय ॥
तुम सव जांन न्रिमान प्रमानं । जंपि कहौ कविराज सुजानं ॥छं०॥२३९॥

चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई भारी झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद ।

दूहा ॥ पाछे वीर सगुन्न भय । ते कहंत कविचंद ॥
कै दंदग्गेनय ऊपजै । कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० ॥ २४० ॥

चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व वैर का स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों वैठे वैठाए भारी शत्रु को जगाना है ।

कवित्त ॥ सौस डोलि कविचंद । चित्त अंदेह उपन्नौ ॥
पुव्व वैर चहुआन । वैर कमधज्ज दिपन्नौ ॥
सवर जोर संग्राम । निवर अँगम्यौ न जाइय ॥
को जम हथ्थ पसारि । लेह [2]ग्रह अप्प बुलाइय ।
[3]मंडाय पेट डंकिन सरसि । कौन वांह सायर तिरै ॥
[4]अपसगुन जानि चहुआन चलि । दै विधान न्रिम्मित करै ॥छं०॥२४१॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला ।

(१) मो. असित (२) मो.-सह । (३) ए. कृ. को.-मैडाप । (४) ए. कृ. को.-असुभम ।

जु भारथी सु [1]गंग लै। सुमेर शृंग तें वही ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
जराइ चौकि स्याम पाट। रत्ति पत्ति तें पुली ॥
सुरंग तित्थ थान मंडि। हंस शीश तें चली ॥
सुवर्न छुद्रघंटिकादि। षोडसं बषानयं ॥
सु मुत्ति तात मोर तन्न। [2]गोदरं बषानयं ॥ छं० ॥ ३१६ ॥
सुगंध गोप चिन्ह मंडि। पीत रत्त जावकं ॥
अभूषनं धरंत चित्त। मित्त हित्त शावकं ॥
बनाइ कें चौंडोल लोल। चढ्ढिता सु सुंदरी ॥
सुदोषिता सुरंग थान। अस्तु तास उच्चरी ॥ छं ॥ ३१७ ॥

शशिवृता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना।

दूहा ॥ सजि शृंगार शशिव्रत्त तन। चढ़ि चौंडोल सुरंग ॥
पूजन कौं बर अंबिका। आई बाल सु अंग ॥ छं० ॥ ३१८ ॥

तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना।

सज्जि सेन जद्दव न्रपति। दसत तीन चौंडोल ॥
लकरि लाल से पंच अग। दस दिसि [3]लष्षन लोल ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना। राजा की सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ अरुनोदय उद्यमह। सुच्छि लिन्नै सु बंध भर ॥
उभय सहस बाजित्त। ढोल चंबकी सुमत गुर ॥
अद्ध सहस नफ्फेरि। सहस सहनाइ सुरंगी ॥
सुवर बीर पूजा प्रमांन। कीनी मति चंगी ॥
बिन पुंज संग सेना सकल। अकल अपूरब वत्त बर ॥
चर सकल विकल अलि कुलन कौं। सुचित मित्त इक्कह सु थिर ॥ छं० ॥ ३२० ॥

(१) मो.-मंग (२) ए.-सादरं
(३) मो.-दिष्षन।

का श्रीरामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना।

[1]कहै सपी समझाइ कर। पुब्ब कथा कहुं मंडि ॥
घरी अद्ध जो सुनिहि तुअ। प्रान वाल नन छंडि ॥ छं० ॥ २४६ ॥
छंद पद्धरी॥ मिलि बाल ताहि रचि कहै वत्त। संग्रहन भवन क्यों मिटै पत्त॥
दैवान वत्त जानै न कोइ। लिष्षे जु अंक मिट्टय न सोइ॥छं०२४७॥
वल वीर जुद्ध पंडव नरेश। वन ग्रह्यौ राज मुक्कौ सुदेश॥
[2]जिप्पनह सब्ब दृगपाल जोग। संध्यो सुजोग तजि राज भोग॥छं०॥२४८॥
वलि राइ जग्य आरंभ सत्य। जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त॥
मुक्किय सुथान तिन मान पंडि। सेवह सुदेव पाताल मंडि॥छं०॥२४९॥
कढ्ढन कलंक शशि जग्य कीन। का कुष्ट अंग छिन मान हीन॥
नधु राइ कोन राज सु अनूप। का कुष्ट काल संहर्यौ कूप॥छं०॥२५०॥
श्रीराम हथ्थ पकर्यौ प्रवीन। आरन्य वहुत दुप सीय कीन॥
गुरुदेव त्रिया तारा प्रमान। झकझोरि परी देवन समान॥छं०॥२५१॥
सिय लई निशाचर रूप चीन्ह। मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन॥
आतम्म घात [3]मंडो विशाल। पावैं न सुष्य व भ्रमें काल॥छं०॥२५२॥
तिय मात तात वंधह सु देहि। वाला विचित्र ते [4]छत्त लेहि॥
कुलजाहि भंम ग्रह राजनीति। जे मँडहि बाल गुर जनन जीति॥छं०॥२५३॥
शशिवृत्त जु वत्तिय मत्ति मानि। हित काज मत्ति हम दै प्रमान॥
पंषी न पच्छि को लगै धाइ। आवै न छत्त पै जंम जाइ॥छं०॥२५४॥
आवै न मेह ग्रह लगै अग्गि। पावै न जीव को दान मग्गि॥
मानै न विनति तिन मंत सुझ्झ। जनु कान हीन गुर कही गुझ्झ॥२५५॥
मंनै न बाल उर मत्त मान। चिंत्यौ सुतात कढ्ढन परान॥छं०॥२५६॥
चौपाई॥ मिलि मिलि बाल रचावैं वाल। तन मन मनै न चित व्रत साले॥
वहुत करें सिंगारे सारे। मनो मृतक नव रंग न धारे॥छं०॥ २५७॥
छंद पद्धरी॥ राजन अनक पुची त्ति व्याह। शशिवृत्त देव कन्या सिवाह॥

(१) मो.-कही। (२) मो. जिप्पतह।
(३) मो.-मंडे। (४) ए. कृ. को.-छद।

एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना।

कवित्त ॥ देषि सुभर [1]लच्छिनति। फौज चतुरंग रिंगावै ॥
अरी सेन सम भार। धार भंजत मग पावै ॥
बहु गिरष्टता रिष्ट। हक्कि अप्पन पर धावहु ॥
सुबर स्यंघ आलस्य। स्याल ह्वधौ करि पावहु ॥
उठ्ठैन बीर बोरहु उठत। सुबर मंत्र फुनि करिय बर ॥
अभ्भंग सेन भद्दव सरिस। अभँग अंग [2] सज्जे कहर ॥छं०॥३३३॥

पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना।

दूहा ॥ चाहुआन सब सेन जुरि। भिरि रूंधे चहुंपास।
देव दुतिय देवह दरस। बल बढ्ढिय आयास ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना।

कवित्त ॥ असुर सेन कमधज्ज। सु सुर प्रथिराज सेन बर ॥
अमृत किक्ति संग्रह्यौ। मदह भौ क्रोध वीर [3]तर ॥
महन मोह रंभनी। तहां शशिव्रता समानं ॥
दुहुन बीच सिुभ्भयै। हेत चहुआन सुजानं ॥
अक्कित्त राह पच्छै फिरग। चक्र तेग सज्जिय सुबुधि ॥
अलि सकति सेन माया विषम। सुबर बीर बढ्ढिय सु सुधि ॥छं०॥३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं। जिसने द्रोपती का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा।

दूहा ॥ दुहूं तेग तारुन्य तन। सयन सुक्रति प्रतिकाल ॥
जिन रष्यौ द्रोपत्त पन। सो [4]रष्यै प्रति बाल ॥ छं० ॥ ३३६ ॥
देह कंचुकि दह दून अलि। विच संदरी अमूल।
डोल तीस संयोग भति। भी भारथ्थ समूल ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

---

(१) मो.-लष्षिन सु। (२) मो.-सज्जै।
(३) ए. कृ. को.-त्रासि। (४) ए. कृ. को-रष्वै।

इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना।

कवित्त ॥ हय गय दल चतुरंग। कंक संचोति कन्ह सिर ॥
राजह्व वग्गरी। रांम रघुवंस जुद्ध जुर ॥
निडुर रा रठ्ठौर। सेन सज्जै भ्रत रज्जै ॥
एक एक संपज्ज। एक एकन गुन लज्जै ॥
जुग्गिनि डहकि बंबरि लसथ। जिम जिम शंकर सिर [१]धुनिय ॥
अत ताइ उत उत्तंग वर। वावारी सारह [२]सुनिय ॥ छं० ॥ २६७ ॥

कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं।

गाथा ॥ सार प्रहारति भेवो। देवो देवत्त जुद्धयौ वलयं
गंध्रव्वी प्रति व्याहं। सा व्याहं स्तर कलयामं[३] ॥ छं० ॥ २६८ ॥

पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना।

कवित्त ॥ सन [४]सद्धि संमुहिय। भान आवाज राज सुनि ॥
प्रान लद्धि जो मद्धि। लाज लब्भी जु स्तर धुनि ॥
प्रिय विरहिनि रिधि रंक। कै ध्यांन लब्भै जोगिंदं ॥
वलह काम कलहंत। कि कह विस्वासत इंदं ॥
संभरिय कान संभरि न्टपति। वीर चंद आगम विषम ॥
निह काल काल भंजन गढ़ै। वढ़ै सार सारह विभ्रम ॥छं०॥२६९॥
दूहा ॥ सार धार पूजै नहै। पिति सामंत न नाथ ॥
आवृत वीर क्यों पूजई। दैव दैवतह साथ ॥ छं० ॥ २७० ॥
गाथा ॥ दुअ्र वंस ऋंस सारसं। वज्जं बाहु वलयो वलयं ॥
वज्जं दृष्टिति रिष्टं। सालिष्टं अष्टयो किलयं ॥ छं० ॥ २७१ ॥
अरिल्ल ॥ वर वरिष्ट वर लोभ प्रकार। लष्प लष्प सा मंतह सार ॥
तिन वर वर अंगम प्रति जानिय। सो देवत देवत्तह मानिय ॥छं०॥२७२॥
कवित्त ॥ अति प्रचंड वलवंड। वैर [५]बाहरू तत्ताइय।

(१) मो.-धुनय। (२) मो.-सुनय। (३) कलयामि। (४) मो. मध्य।
(५) मो.-बाहरू तनाइय।

विरुध जुद्ध बंधन सुदल। स्वामि भ्रंम्म चित पान ॥
दुतिय भ्रंम जानै नही। धनि सामंत बषान ॥ छं० ॥ ३४४ ॥

गाथा ॥ बद्धे दलं समूरं। लष्यं सेनाय अट्टतं बलयं ॥
ते जग्गे रस बीरं। जानिज्जै जोग जोगायं ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

सेना में बीर रस का जाग्रत होना।

छंद भुजंगी ॥ जग्यौ बीर बीरं सु डौंरू बजावै।
महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै ॥
जग्यौ बीर बीराधि बिराधि रूपं।
मनो ईश शीशं नचै बीर [1]रूपं ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

दूहा ॥ भयौ बीर बीरह तिगुन। नच्यौ रुद्र बहु भेद ॥
सो दिष्यौ दिष्यौ [2]नहै। सो देषन गुन छेद ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
नह तारक्कि सु जुद्ध बर। नह देवा सुर मान ॥
सो दिष्यौ कमधज्ज सौ। चाहुआन बलवान ॥ छं० ॥ ३४८ ॥
चाहुआन कमधज्ज बर। बरै षटक्क सुबद्द ॥
देवग्गिरि [3]उग्गाहिये। करि भारथ्थ न सद्द ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

देवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना।

छंद भुजंगी ॥ सुसद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं।
[4]रहे देव थानं [5]बटे देव थानं ॥
रहे सब्ब योंही ठगी ठग्गा लग्गे।
मनो चित्रलिष्षे विचित्रंत ठग्गे ॥ छं० ॥ ३५० ॥

गाथा ॥ जो इज्जै मन चरियं। हरियं एक कग्गयौ सबदं ॥
सब सेना कमधज्जं। विंटे वा बाल सर सायं ॥ छं० ॥ ३५१ ॥

सखियों का जैचंद के भाई को शशिव्रता का वर कहना जो उसे बिष सा लगा।

(१) ए. कृ. को.-सूपं। (२) मो.-नहीं।
(३) मो.-सु उगाहिए। (४) मो.-रहं (५) कृ. को.-बद्दे, ए.-बद्दे

दूहा ॥ काम कलह रत वढ्ढि प्रति । सुनिय भान न्टप कान ॥
आनंदह दुप उपपज्यौ । मरन सु निश्चय मान ॥ छं २८० ॥
श्लोक ॥ मंगलस्य सदा व्याहं । अव्याहं सु मंगलं ॥
ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे । [1]जेक कंज सु कंजभिः ॥ छं० २८१ ॥

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना ।

कवित्त ॥ फिरिग पंति चिहु पास । सूर उभ्भौ चाव दिसि ॥
अतित जुद्ध आवद्ध । मत्त[2] वरपंत वीर असि ॥
और व्याह मंगलह । व्याह मंगल अधिकारिय ॥
परि पिशाच दानव । सु वुधि मग्गह विच्चारिय ॥
नन करहु तात दुप पुत्त कौ । घर लीनौ जम सद्दकैं ॥
प्रथिराज राज राजन वलिय । को पुज्जै रन वद्दिकै॥ छं० ॥ २८२ ॥
दूहा ॥ को पुज्जै वद्दत [3]सुरन । वयन सयन प्रथिराज ॥
अद्दत जित्ति जित्तिय सयल । [4]को मंडै कृत काज ॥ छं० ॥ २८३ ॥
गाथा ॥ को मंडै क्रत काजं । साजं जुद्धय सूर योवनं ॥
तारिज्जैं सजि राजं । वंकिम भूमायं विषमयं होई ॥ छं० ॥ २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना । पृथ्वी-राज का वहां पहुंचना ।

देवालय भगवती । पूजैवं पूजयो वालं ॥
सुवर पुछ्यौ प्रथिराजं । कुज संसा वीरयो हथ्यं ॥ छं० ॥ २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा ॥ विषम ठौर बंकम विषम । कल [5]सोभित दृत कंद ॥
जो प्रथिराजह अंग में । मनों प्रथी पुर इंद ॥ छं० ॥ २८६ ॥
मनों राज पृथ्वी पुरह । धनि सुभ्रम्म लवलेश ॥
मानहु वीर नरिंद कौ । रति आयौ अविशेश ॥ २८७ ॥

(१) मो.-कंजे कंज सुकं कजभि । (२) ए. कृ. को.-बरपत्त ।
(३) ए. कृ. को.-नर । (४) मो.-मंडे को । (५) मो.-सोभत ।

छंद हनूफाल ॥ प्रारभं मंत्र सु राम। तिहि जपौ अजपा नाम ॥
हरि हरी वरुन विरत्ति। कवि कहौ चंद किरत्ति ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
श्रुत कह्यौ वेद पुरान। ज्यों सुन्यौ श्रवन निश्रान ॥
तन स्याम अम्मर पीत। रघुवंस राजस रीत ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
दृग कमल कमला पान। मधु मधुर मिष्टत वान ॥
जिन नाम [1]जनमह [2]कोट। कंद्रप्प लावन मोट ॥ छं० ॥ ३६० ॥
गंभीर सादर मान। आदिष्टवान प्रमान ॥
नह बाल वृद्ध किशोर। उर वरन स्याम न गोर ॥ छं० ॥ ३६१ ॥
अरि दहन उग्रस कोट। पौवै कि गोपिन [3]पोटि ॥
भ्रम भूलि ब्रह्म भुलाइ। सुरनाथ नाथ नचाइ ॥ छं० ॥ ३६२ ॥
निज पानि पद्म कटाच्छ। जिन भ्रमिय भूतल लाछ ॥
आदित्य कोटि प्रकास। सय सक्र कोटि विलास ॥ छं० ॥ ३६३ ॥
आराम कलप निधान। सुर तीन कोट प्रमान ॥
नव रूप रेष अनंग। परकार गर्व विभंग ॥ छं० ॥ ३६४ ॥
पर पाप लिपत इहै न। भुअ भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥
काकुस्थ करुना कार। गुन निद्धि सुभ्भर भार ॥ छं० ॥ ३६५ ॥
रन रंग धीर सधीर। भव पार कढ्ढन तीर ॥
सुर सुरी नाथ नचाइ। भ्रम भूल ब्रह्म भ्रमाइ ॥ छं०॥ ३६६ ॥
चतुरान घट्ट सु घूमि। सुरपत्ति फलपति तूमि ॥
तारुन्य रूप प्रकास। सहभूत अंग निवास ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
त्रय मंत्र जंपित वार। हर दीन तँह हंकार ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
अरिल्ल ॥ बाले ब्रित्त विषम्म प्रमानं। हय गय दल रुंध्यौ चहुआनं ॥
कुंकुम कलस सलेवर हेमं। देव दैव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥
पंगी पय सलह परिमानं। संमुह दलन रुँध्या चहुआनं ॥
गहह गहह कित्ती अविसेसं। सुवर चित्त चिंते जु नरेसं ॥छं०॥३७०॥
गाथा ॥ वर छित्ती छिति धारी। सारं संग्राम नेहयो वलयं ॥
अग्गैई मृग जूथं। ना झुक्कै [4]मृग्गयं राजं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनमहि। (२) ए. कृ. को-जोट। (३) मो.-फोटि।
(४) ए. कृ. को.-मृगयो।

पल नंपिय रंभा सु। कारन आरंभ प्रवासं ॥
एक एक गुन करहि। सब्ब फूले सत पत्तं ॥
तिन मध्यह शशिव्रत्त। भई कम्मोदनि मंचं ॥
[1]पित पुच्छि पुच्छि परिवार सब। पुच्छि वंध रज्जन सकल ॥
आहत्त तात अग्या सुग्रहि। भईय बाल वुध्धा विकल ॥ छं० ॥ २९४ ॥

दूहा ॥ विकल वाल जहं सकल हुअ। वुद्धि विकल प्रति साज ॥
[2]भान वचन सच्चं सुकरि। जिन अप्पी प्रथिराज ॥ छं० ॥ २९५ ॥

गाथा ॥ वीरं चंद सुव्याहं। सो व्याहं जोगिनीपुरयं ॥
संभरि क्रन शशिव्रतं। अगम वीराइमं जनंत तयौ ॥ छं० ॥ २९६ ॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना।

कवित्त ॥ पुच्छि मात पित पुच्छि। पुच्छि परिवार ग्रेह सव ॥
में हत लियौ निवद्ध। गवरि पुज्जनं वाल जव ॥
तिन थानक सव देव। नीति आरंभ व्रत लीनौ ॥
तव प्रसाद उप्पनौ। मोहि इच्छा व्रत दीनौ ॥
तिन काल व्रत्त लीनौ सुमैं। गवरि प्रसाद सु पुज्ज फल ॥
वारंज वात तुअ मोह हुअ। कहै और अव लहि [3]अफल ॥ छं० ॥ २९७ ॥

दूहा ॥ दुप देवल कौ छंडनह। उर सिंचन अंकूर ॥
दीह काल वल वीचि वदि। लिय समान संपूर ॥ छं० ॥ २९८ ॥

शशिवृता के रूप का वर्णन।

वाला वेनी छोरि करि। छुट्टे चिहर सुभाइ ॥
कनक थंभ तें उतरी। उरग सुता दरसाइ ॥ छं० ॥ २९९ ॥

कवित्त ॥ तजि भूखन वर वाल। एक आचिज्ज उपन्नौ ॥
लता हेम पर चंद। उभै पंजन ढिग चिन्हौ ॥
श्रीफल उरज विसाल। वाववर अंग, सुपत्ती ॥
सुकि सुत रंग अरन्नि। करी भग्गावल वत्ती ॥
सोभंत उरगपति भुअ शरन। हंस मुत्ति चर [4]बर करी ॥
सुध काज चढ़ै पप्पील सुत। काम पत्तिनी दुख डरी ॥ छं० ॥ ३०० ॥

(१) मो.-पति। (२) मो.-तान। (३) मो.-नरल। (४) मो.-चर।

अपमंगल जिय जानि। सु नैंन मुष वही॥
मनों षंजन मुष मुत्ति। भरक्कत नंपही॥ छं० ॥ ३७५॥

दुहु कपोल कल भेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल बिसाल। सु उरज परक्कही॥
सो ओपम कवि चंद। चित में बस रही।
मनु कनक कसौटी मंडि। म्रग्ग मद [1]कसरही॥ छं० ॥ ३७६॥

गाथा॥ म्रग मद कसयति चित्ते। मित्तं पुनरोपि चित्तयं बसयं॥
अजहूं कन्ह वियोगे। कालिंदी कन्हयो नीरं॥ छं० ॥ ३७७॥

गहियं गद्द गद्द कंठो। वचनं संजनाइं निठुयो कहियं॥
जानिज्जै सत [2]पच्चं। बंधे [3]सदाइ भवरयं गहियं॥ छं० ॥ ३७८॥

तप तंदिल में रहियं। अंगं तपताइ उप्परं होइ॥
जानिज्जै कसु लालं। घटनो अंग एकयौ सरिसौ॥ छं० ॥ ३७९॥

अपमंगल अल बाले। नेनं नषाइ नष किं सलयौ॥
जानिज्जै धन क्रपनं। सपनंतरो दत्तयं धनयं॥ छं० ३८०॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में वीभत्स रस का संचार हुआ।

कवित्त॥ गहि शशिवृत्त नरिंद। सिढी लंघत ढहि थोरी॥
काम लता कलहरी। पेम मारुत झकझोरी॥
बर लीनी करि साहि। चंपि उर मुट्ठि लगाई॥
मल सुरंग सोइ [4]बत्त। कंत लगि कान सुनाई॥
न्रप भयौ रुद्र करुना सुचिय। बीर भोग बर सुभर गति।
सगपन सुहास बीभच्छरिन। भय भयान कमधज्ज दुति॥छं०॥३८१॥

---

(१) मो.- फरसही। (२) ए. पत्तं। (३) ए. क्रु. को. शब्दाय।
(४) ए. क्रु. को.-बात।

हावभाव कटाच्छ। ठुंकि पुट्टी दिय भारिय॥
वेठि नैन न्रप मूल। पेम [1]देषन गह सज्जन॥
मन म्रग पिय क्षत काज। ताकि बंधन किय मज्जन॥ छं०॥ ३०९॥

छंद नाराच॥ सुगंध केस पासयं। सुलग्गि मुत्ति छंडियं॥
अनेक पुष्प वीचि गुंथि। भासिता त्रिपंडियं॥
मनों सनाग पुष्फ जाति। तीन पंथि मंडियं॥
दुती कि नाग चंदनं। चढ़ंत दुद्व पंडियं॥ छं०॥ ३१०॥
सिंदूर मध्य गुच्छता। म्रगंमदं विराजयं॥
मनो कि सूर उग्गतें। [2]गहे सु पुच लाजयं॥
सु तुच्छ सुच्छ पाट आट। पेम वाट सोभियं॥
मनो कि चदं राह वाल। वे प्रमान लोभयं॥ छं०॥ ३११॥
कनक काम कुंडिलं। हलंत तेज उभभरे॥
ससी सहाइ मान भाइ। सज्जि सूर दो करे॥
दुती उपम्म विंद की। किरन्न चंद दिठ्ठयं॥
मनों कि सुर इंद गोदि। अप्प आनि विठ्ठयं॥ छं०॥ ३१२॥
भुवन्न बंक संक जूअ। नैन स्रग्ग जूवयं॥
जरद्वता चपल गत्ति। [3]अच्छ आनि जवयं॥
कटाक्ष नैन वंक संक। चित्त मान बंकयं॥
सुछंडि वै सु कुंचितं। श्रवन्न वान नंपयं॥ छं०॥ ३१३॥
सुगंधता अनेक भांति। चीर चारु मंडियं॥
सु केहरी कटिं प्रमान। बीच वंधि छंडियं॥
सुरंग [4]अंग कंचुकी। सुभंत गात ता जरी॥
वनाइ काम पंच वान। ओट जोट लै धरी॥ छं०॥ ३१४॥
सुरंग [5]माल लाल वाल। ता विसाल छंडयं॥
सु पुब्ब वैर जानि काम। अग्गि संभ मंडयं॥
[6]दुती उपम्म मुत्ति माल। यों विसाल ता कही॥

(१) मो. पेदन। (२) मो.-गहंत रहे लाजय। (३) ए. कृ. को. अप्प।
(४) ए. कृ को.-रग। (५) मो.-लाल माल (६) ए.-उदी

उठी मुच्छि एनं। सिरं लग्गि गेनं॥ छं० ॥ ३८८ ॥
कमंद्धं निहारी। सयंनं विहारी॥
कमानै निहारी। तरक्कस्स झारी॥ छं० ३८९ ॥
अरी तुंग तारी। फिरै [1]गज्ज भारी॥
सरोसं विहारी। मया मोह जारी॥ छं० ॥ ३९० ॥
महंतं विडारी। ....॥
किए नैन रत्तं। रसं रोस पत्तं॥ छं० ॥ ३९१ ॥
मुरं बीन बीरं। करौ आज तीरं॥
परै मोहि गत्त। हरै शशिशट्टत्त॥ छं० ॥ ३९२ ॥
असी जा पहारं। चढ्यौ धार धारं॥
लियौ घ्रत भारी। परगं सीस डारी॥ छं० ॥ ३९३ ॥
पर्‌यौ मद्ध धाई। असीजा पुलाई॥
बजी कूह कूहं। अवाजं सजूहं॥ छं० ॥ ३९४ ॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई।

कवित्त॥ सुनि वज्जी [2]घरियाल। लाग [3]नीसानन बाजिय॥
इक दिन दोऊ सेंन। चंपि चावद्दिसि साजिय॥
महन रंभ सा जग्य। मध्य मोहन शशिवृत्तं॥
असुर सु सुर मिलि मथहि। सूर बंसी रजपूतं॥
आरंभ पच मंड्यौ कपट। कपट मुक्कि कढ्ढिय लपट॥
दुहूं बीच जद्दों कुंअरि। उभय सिंह सारह झपट॥ छं० ॥ ३९५ ॥

चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले।

दूहा॥ चाहुआन कमधज्ज बर। मिले लोह जल छोह॥
भर भर टट्टर बज्जही। बंसह लग्गिय कोह॥ छं० ॥ ३९६ ॥

शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे।

(१) मो.-गन्न।
(२) ए. कृ. को.-घरि, घरी पंच।
(३) मो.-नीसानत।

गाथा ॥ गुज्जर वै गुज्जर धनी। सथ्थं सेनाह सब्बयौ बीरं ॥
जांनैनि सबर अद्धं। उग्गे वा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

मन्दिर के पास पहुंचकर शशिव्रता का पैदल चलना।

हरनंत पति तुरंगं। साहस मंचाय गिह्वयौ रनयं ॥
देवालेयं पासं। सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

शशिव्रता के उस समय की शोभा का वर्णन।

छंद नाराच ॥ चली अली घनं बनं। सुभंत सथ्थ संघनं ॥
विहंग भंगयो पुरं। चलंत सोभ नोपुरं ॥ छं० ॥ ३२३ ॥
अलीन जुथ्थ आवरं। मनौ विहंग सावरं ॥
चुवंत पत्त रत्त जा। उवंत जानि अंवजा ॥ ३२४ ॥
कलिंद सोभ केसयं। अनंग अंग लोभयं ॥
उठंत कुंभ कुचयं। उपंम कब्बि सुचयं ॥ छं० ॥ ३२५ ॥
मनों जरंत बाल की। धरी सु आनि लालकी ॥
सुभंत रोमराजयं। [1]प्रपील पंति छाजयं ॥ छं० ॥ ३२६ ॥
मनोज कूप नाभिका। चलंत लोभ आलिका ॥
सुरंग सोभ पिंडुरी। परादि काम पिंडुरी ॥ छं० ॥ ३२७ ॥
नितंब तुंग सोभए। अनंग अंग लोभए ॥
मनौ कि रथ्थ रंभ के। सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ॥ ३२८ ॥
नषादि आदि अच्छनं। मनों कि इंद्र [2]दृप्पनं ॥
ढरंत रत्त एड़ियं। उपम्म कब्बि टेरियं ॥ छं ॥ ३२९ ॥
मनौ कि रत्त रत्तजा। चिकंत पच अंबुजा ॥ छं० ॥ ३३० ॥
गाथा ॥ [3]मढ़ मे रप्पत बाले। लग्गा सेनाय पास चिहु बीरं ॥
धरि धीरं तन दुरयं। रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना।

दूहा ॥ बाल धरक्कति वचनि गति। ग्यान मोह विष पान ॥
त्यों कमधज्जै देषि कै। बर चिंतै चहुआन ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

(१) मो.-पपील। (२) मो.-दर्प्पनं। (३) को.-पढ़।

बहै नाग मुष्पी सु सोहै विकंतं। फटै हस्ति कुंभं ठनंकंत घंटं ॥
विथं वांह पंचै गिरै गज्जराजं। मनो द्रोन पंचै कपी काज पाजं ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

पिजै दंत दंती भरं कंध डारै ॥ मनो कोपियं भीम हथ्थी उच्छारै ॥
भरं लोहि गिद्धी भ्रमै भंति छुट्टै। मनो देवलं द्रष्ट चल्लि डोरि तुट्टै ॥
छं ॥ ४०७ ॥

लगै लोह हथ्थी सिरं वंबिक्कारै। तिनं गात तिंद्र जरै अग्गि लारै ॥
परै पोपरी तुट्टि मेजी सुभावै। दधी [1]भाजनं जानि वायस्स आवै ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

फटै वीर वीरं सुवीरं सुघट्टं। मनो कर्क करवत्त विहरंत कट्टं ॥
नचैजा कमंधं करै हाक सीशं। चरंमं सुभज्जै हसै देषि ईशं ॥
छं० ॥ ४०९ ॥

युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ मानिक्क प्रति ताजं। हेमं हेमेल विद्ध साधरियं ॥
जालिज्जै निसि मद्धं। निरमल तारक सोभियं गैनं॥ छं० ॥ ४१० ॥
मुच्छी उच्चस वंकी। बाल चंद सुभ्भियं [2]नभ्भं ॥
[3]गज गुर घन नीसानं। रीसानं पंग पल्ल याई ॥ छं० ॥ ४११ ॥

अरिल्ल ॥ दहांक बज्जि नीसानति [4]नद्दं। सबै सेन संग्राम विवद्दं ॥
इक्क अंग चावद्दिसि सेनं। जरै राज रत्ते [5]रस नैनं ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

छंद रसावला ॥ लगी कार कोह। लगें घन लोह ॥
छकै अति छोह। महा लाज मोह ॥ छं० ॥ ४१३ ॥
भरा भर भार। तुटै तरवार ॥
मची घन मार। परंत प्रहार ॥ छं० ॥ ४१४ ॥
धुकंत धरन्नि। सरोस सरन्नि ॥
निफूटत रुन्नि। बरै सु बरुन्नि ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

---

(१) मो.- भोजनं। (२) मो.-गैनं।
(३) मो. को.-गत्त, गत। (४) ए. कृ. को.-नेदै, विषदे। ५ मो.-रन।

गाथा ॥ भारथ्थं प्रति राजं। सज्जे सेनाय वीर वीरयं ॥
धीरं धीर सधीरं। अधीरं [1]सब्ब सेनायं ॥ छं० ॥ ३३८ ॥
दूहा ॥ देषि वाल पारस फिरिय। मेर भान प्रति मान ॥
ज्यों शशि मछ पारस सुभति। शंकर सोभत थान ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिव्रता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया।

शंकर रस आचार किय। मढ़ दिष्यिय प्रति जोइ ॥
मन लग्गिय बंधत सु पय। मन कंद्रप रस मोइ ॥ छं० ॥ ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिव्रता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं। ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे।

कवित्त ॥ [2]दहति तीन चैंडोल। मध्य चैंडोल वाल भय ॥
भमर टोल झंकार। दासि विंटिय सु पंच सय ॥
सित्त पंच असवार। पंति मंडिय चावद्दिसि ॥
अद्ध लष्य पैदल्ल। सथ्थ आयो सुअंग कसि ॥
मंगल विवेक विधि उच्चरे। बंधी बंदन मार करि ॥
उत्तरी वाल देवल सुढिग। लग्गि पाइ परदच्छि फिरि॥ छं० ॥ ३४१ ॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की।

दूहा ॥ उतरि वाल चैंडोल तें। प्रीति हेत प्रथिराज ॥
जिन देवत्त जु संपज्जौ। सो मंडन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना।

मंडन रन छंडन कलह। दल दैवत्त सु जुद्ध ॥
वर वज्जे बाजित्र सुनि। भौ सामंत विरुद्ध ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

(१) मो.-सर्व, सरव।　　　　(२) ए. कृ. को.-दसत।

कंठ कील कीली सुद्दत। द्दतत जुद्ध सम पाइ॥
सुबर वीर भारथ्थ गुन। उठे वीर विरुझाइ॥ छं०॥ ४२६॥
पल संकुल अंकुल प्रक्षित। चतुर चित्त विरुझाइ॥
मनु बड़वानल मध्य तें। समुद सत्त गुन भाइ॥ छं०॥ ४२७॥
वीर थान विभ्रम भइय। नयन रत्त सम सार॥
मानहु बर धरि अद्ध में। नाकपत्ति गिरि झार॥ छं०॥ ४२८॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ नाक पत्ति संभरिय। उभै काया अधिकारिय॥
वह जित्यौ बलि राइ। यहन दुज्जन सम सारिय॥
छित्ति पत्ति अति अभ्भ। दुहन आभा पति वुद्धं॥
वह गोरी सुरतान। इहति दानवति विरुद्धं॥
षग षुलै दुहुन पुज्जै न को। दोऊ वाउ वर वीर रन॥
लै चल्यौ हरिव शशिवृत्त को। पहु पंजलि पुज्जै तरुन॥छं०॥४२९॥
दूहा॥ तरुन तेज तम हरन वर। वाल वहिक्रम उच्छि॥
मानों रति आरूढ़ करि। वर बारधि मति लच्छि॥ छं०॥ ४३०॥
लच्छि सु लच्छिरु लीन हरि। इह लीनी संग्राम॥
घटि बढ़ि मंचह समन बरि। दोऊ वीर बढ़ि [1]वाम॥ छं०॥ ४३१॥
गाथा॥ चावद्दिसि न्रप [2]बिंध्यौ। पुंजं सेनायं सेनयौ वीरं॥
धर धरनी आधारं। सा धारं डुलियं शीशं॥ छं०॥ ४३२॥

उस युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे।

[3]मुरिल्ल॥ बढ़ि सस्त्र दुहाइय वीर रसं। दुहु सेन सुधावत अंग कसं॥
मुष वीर विगस्सिय रेन ससी। भय कायर चंद प्रभात दिसी॥
छं०॥ ४३३॥
छंद विराज॥ लगे लोह सारं। दोऊ वीर भारं॥
महा तेज तारं। बरं कंज झारं॥ छं०॥ ४३४॥

(१) मो.-काम। (२) मो.-विंटं।
(३) मो.-प्रति में यह छन्द त्रोटक नाम से लिखा है।

बर जैचंद सुबंधं। प्रोहित पंग रप्पियं [1]आइयं ॥
सहचर चारु सुपढ़ियं। हालाहलं बालयं मनयं ॥ छं० ॥ ३५२ ॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया।

दूहा ॥ चढ्यौ पंग नव साज बर। अरु भर लिन्ने सथ्थ ॥
शंभु थान पूजन मिसह। चलि बर आयौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ३५३ ॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में धँस पड़े।

तब लगि दल चहुआन को। यह गुपंति कर आइ ॥
रुक्कि सकौ नन मध्य लिय। बोलै संमुह धाइ ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कौनौ तिन बारं ॥
गोप तेग गहि गुपत। कपट कावरि सब भारं ॥
किहुन फरस किहुं छुरी। चक्र किन हायन माही ॥
किन त्रिसूल किन डंड। सिंगि सब सथ्थ समाही ॥
सा अंग रिद्व चहुआन लै। दूतन दूत बताइ हरि ॥
सा अंग बाल उतकंठ करि। पै लग्गी परदच्छि फिरि ॥छं०॥३५५॥

शशिवृता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की।

अरिल्ल ॥ फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी।
सुमन काम कामना सुभग्गी ॥
मन मन बंधि [2]कियौ हथ लेवं।
सुमन मंच प्रारंभ सुदेवं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

* दोहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीत प्रात छुटि लाज ॥
शिवहिं पूजि अस्तुति करी। मिलन करै प्रथुराज ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

शशिवृता का शिव जी की स्तुति करना।

(१) ए. कृ. को.-आहि।
(२) कृ.-किए, कियउ, कियव।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते।

अरिल्ल ॥ द्रव्य [1]वस्य नन होइ प्रमानं। अप्पन [2]प्रान स्वांम क्रत दानं ॥
जिन जग जित्ति कित्ति बसि कीनी। मरन सूर सस्त्रह बर लीनी ॥
छं० ॥ ४४५ ॥

दूहा ॥ कहां पंच पंचौ बसत। कहां प्रकृति प्रति अंग ॥
कहां हंस हंसह बसै। कौन करै रन जंग ॥ छं० ॥ ४४६ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध।

इह कहि कढ्ढिय सार कर। षोलि षग्ग दोउ पानि ॥
मानहु मत्त अनंग द्वै। छुट्टे [3]जम जांनि ॥ छं० ॥ ४४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ मिले हथ्थ बथ्थं न सथ्थं स धारे। मनौ वारुनी मत्त गज दंत न्यारे ॥
उड़ै लोह पंती परै श्रोन [4]रुंदं। मनौ रुद्धि धारा बरष्षंत बुंदं ॥
छं० ॥ ४४८ ॥

घुमै घाय घायं अघायं अघायं। झुमै झार झारं झनंकै झकायं ॥
करैं जोगनी जोग काली कराली। फिरं पैट धाये महा विक्कराली ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

परै सूर वाहै बहथ्थी क्रपानं। कढ़ी तांत बाढ़ी मलं चारि जानं ॥
धमां धम्म मत्ती महो माहि [5]धानों। पिंजारे सतं रुव पीजंत मानों ॥
छं० ॥ ४५० ॥

महादेव मालानि में गूथि मथ्थं। [6]कहैं वाह वाहं वहै सुर हथ्थं ॥
छं० ॥ ४५१ ॥

मुरिल्ल ॥ [7]हाहरे रूष कायर प्रकार। [8]छंडीति लज्ज अरु बीर मार ॥
अभ्यसै सूर जिन सूर रूप। दैवत्त भूप दिष्षै अनूप ॥ छं० ॥ ४५२ ॥

---

(१) मो.-वसें। (२) ए. कृ. को.-काम। (३) मो.-यम।
(४) ए. कृ. को.-रुद्दं। (५) मो.-घानों। (६) मो.-वहै।
(७) मो.-हारें। (८) मो.-छंडी लज भये बासि मार।

उद्दरे सेन सेनो। [1]संग्रामं वीर सुभट्टायं ॥
कालिंदीय सुरंगे। सो अंगो सुद्ध [2]भूतायं ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी कामरथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में धँस पड़े।

कवित्त ॥ सद्दस सत्त कप्परिय। भेष कीनो तिन वारं ॥
कपट कंध कावरिय। धसिय देवी दरवारं ॥
सर्व शस्त्र आरंभ। हस्त आरंभ सुरी सल ॥
धसिय भीर सम्मूह। जूह पाई समंडि कल ॥
दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज। भुज सुकिस चहुआन किय ॥
शशिवृत्त बाल रंभह समह। मिलिय गंठि वंधन सुद्दिय ॥ छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आंखें होते ही लज्जा से शशिवृता की नज़र नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया।

दिठ्ठ दिठ्ठ लग्गीं समूह। उतकंठ सु भग्गिय ॥
निप लज्जानिय नयन। मयन माया रस पग्गिय ॥
छल वल कल चहुआन। बाल कुअंरप्पन भंजे ॥
दीपचौय मिट्टयौ। उभय भारी मन रंजे ॥
चौहान हथ्थ बाला गहिय। सो ओपम कविचंद कहि ॥
मानों कि लता कंचन लहरि। मत्त वीर गजराज गहि ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आगई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया।

चंद्रायना ॥ गहत बाल पिय पानि। सु गुर जन संभरे ॥
लोचन [3]मोचि सुरंग। सु अंसु बहे परे ॥

(१) ए. कृ. को.-सग्रामे। (२) ए. कृ. को.-भूताय। (३) मो.-कामुचि।

पांइ पिंड विधि पंप । गरुअ गहिलोत वीर सजि ॥
पुंच्छ राज रघुवंश । चरन पुंडीर चंद रजि ॥
दुहु लोह कढ्ढि परियार तें । सारधार में अग्गि भर ॥
पल पंच तरंगनि रुक्कि जल । जांनि कमोदनि नंचि सर ॥ छं० ॥ ४५९ ॥
दिषि वर [1]लष्पिन फवज । चंपि चतुरंग रिंगावहु ॥
अरि सयन्न संभार । धोर भंजे मग पावहु ॥
वहु गरिट्ट तारिष्ट । हक्कि अप्पन पर धावहिं ॥
सु वर सिंघ आलसैं । स्याल सूधौ करि ध्यावहिं ॥
उट्ठै न वीर वीरह उठत । सुवर [2]मंत फुनि फुनि करै ॥
वरसै न अंब सर मेघ कौ । जो न [3]समर सरवर भरै ॥ छं० ॥ ४६० ॥
गाथा ॥ समर सु मथ्यौ सेनं । तारं झंकार वीर भद्रायं ॥
केवल गति कल रूपं । भूयं वीर जुद्धयो समरं ॥ छं० ॥ ४६१ ॥

वीररस में श्रृंगाररस का वर्णन ।

दूहा ॥ समर जुद्ध मच्चिय समर । हालाहल वर [4]मत्ति ॥
कोलाहल पंषिन कियौ । कांम रूप वर जित्त ॥ छं० ॥ ४६२ ॥
छंद नाराच ॥ वरंत काम रूपयं । असी वहै अनूपयं ॥
लगै सु गौरि पासयं । परक्रिया कटाछयं ॥ छं० ॥ ४६३ ॥
सरंत तीर सोहयं । उरंद सुट्ठि छोहयं ॥
हला हलं हलं मलं । मिलंत अंग संभिलं ॥ छं० ॥ ४६४ ॥
[5]कडा कडी कडक्कयं । दडा दडी दडक्कयं ॥
पडै सिरं पडक्कयं । डकंत वीर डक्कयं ॥ छं० ॥ ४६५ ॥
घिसै न ज्यों षडक्कयं । तुटंत तेजि डक्कयं ॥
हडा हडी हडक्कयं । .... ॥ छं० ॥ ४६६ ॥
निरष्षि पत्ति नाकयं । परंत हीय धाकयं ॥
वरंत अच्छरी वरं । भषंत गिद्धनी भरं ॥ छं० ॥ ४६७ ॥
लगंत लोह [6]सो लरं । अरिंम मत्त संमरं ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लच्छन । (२) ए कृ. को.-मंत्र । (३) मो.-समूर ।
(४) को.-सत्ति । (५) ए. कृ. को-कटा कटी । (६) मो.-सौलरं ।

वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ।

दोहा ॥ वीर गत्ति संधिय सुमति । वृत्त अवृत्त न जाइ ॥
घरी एक आवृत्त रषि । सुबर बाल अलुराइ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

शशिवृता के पिता ने कन्या के वैर से और कमधज्ज ने स्त्री के वैर से लड़ाई का विचार किया और सेना सजी ।

बाल सु वैर स वैर चिय । भान विरुद्ध न कौन ॥
सकल सेन साधन घरी । कलहंक्रत गति [1]चीन ॥ छं० ३८३ ॥

अरिल्ल ॥ आवृत्त वृत्त गुन निग्रह राज । देव जुद्ध देवत्तह साज ॥
है गै दल सज्जे तिहि वीर । हरी बाल चहुआन सधीर ॥छं०॥३८४॥

शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ।

कवित्त ॥ घरिय पंच दिन रह्यो । मंत जद्दव प्रारंभिय ॥
मिलि कमधज्ज नरिंद । सकट व्यूह आरंभिय ॥
अर्द्ध सथ्थ अप्पनौ । चरन मंडिय बाम दिसि ॥
व्यूह चक्र बिय पाइ । सथ्थ उभभौ नरिंद कसि ॥
उज्जवन भार अंगत सकट । सवर पुंज अप्पल सजिय ॥
रघुनाथ साथ बलियं विहसि । हंकि सु लछिमन तहँ रजिय ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

कमधज्ज की सेना का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ भरं भीर भाजी । कहं क्रह वाजी ॥
सुके पुंज राजी । मनो मेघ गाजी ॥ छं० ॥ ३८६ ॥
सनाहं सु साजी । चढ़्यो वीर वाजी ॥
बगं मेल ताजी । सबे सेन साजी ॥ छं० ॥ ३८७ ॥
करों काम आजी । सिरं मोहि लाजी ॥

(१) ए. चिन्ह ।

धनयं लछि नरिंदं। तिहि संचिय सायरो नथ्थी ॥
कलहंतं बल विषमं। जुपमं देहीय लज्जतौ सूरं ॥ छं० ॥ ४७८ ॥
कढ्ढौ लोह दुहथ्थं। सत्त घरियाय बज्जयौ अंगं ॥
चावद्दिसि चतुरंगी। अनुरंगी सेन सम्राइं ॥ छं० ॥ ४७९ ॥

दूहा ॥ अनुरंगी सेना [1]सकल। सद्द सुरद्ध विरुद्ध ॥
अबुध बुद्ध भारथ्थ में। दान मान सु [2]प्रबद्ध ॥ छं० ॥ ४८० ॥

गाथा ॥ बर अथवंत सु दीहं। झुझं विन जोतयं कलयं ॥
घरिघट अघट नरिंदं। सा बुद्धं वीर भद्रायं ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

पृथ्वीराज के वीर सामंतों का प्रशंसा।

मुरिल्ल ॥ बीरभद्र अरु रुद्र जलप्पिय। कहौ सत्त संकरषन थप्पिय ॥
तुम सकल कलित भारथ फिरि दिष्यौ। इन समान कोइ बीर विसष्यौ ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

गाथा ॥ को [3]दिठौ सम बीरं। सामंतं स्वामयौ [4]क्रमयं ॥
इक्कं करन प्रमानं। अंगद कामेय रावनो [5]भिरयं ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

चौपाई ॥ राम कांम अंगद अधिकारी। स्वांमि कांम सामंतव धारी ॥
जिन हय गय तन तिन वर जान्यौ। सुमत ध्रंम स्वामित्त पिछान्यौ ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

[6]सुपति ध्रम्म जिन तंत प्रमानिय। मुकति सुर्ग केवल सुनि बानिय ॥
घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंज्यौ। सुपथ साथि आपथं सु मंज्यौ ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
जिन छंडिय मंडिय क्रत धारिय। सार कढ्ढि हय तज्जि सु धारिय ॥
[7]परनि प्रहार सार तजि सारं। जड़ता तज्ज लगत तम तारं ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

छंद विराज ॥ लगे बीर सारं। किए मत्त पारं ॥
बहथ्थंत धारं। अनुज्जा प्रहारं ॥ छं० ॥ ४८७ ॥
तुटै धार धारं। मनों श्रुत्त तारं ॥
अवित्तं विहारं। कलिंदी कहारं ॥ छं० ॥ ४८८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुबल। (२) ए. कृ. को.-प्रबुद्ध।
(३) मो.-नट्ठौ। (४) को-मो.-कृतयं।
(५) मो.-भरयं। (६) ए.-सुमति। (७) मो.-पराति।

गाथा ॥ उच्चरियं अरि भार्यं। सायक कस्सेव अप्प अप्पायं ॥
कढ्ढे लोह करारं। मार मारं जंपि जौ हाई ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
दूहा ॥ अद्दत घाइ घट भंग कौ। कारन मतहु वर वीर ॥
मनहु काल कपि दल निरति। लेन [1]लंक मति धीर ॥ छं० ॥३९८॥
[2]धर धीरत्तन वीर वर। करिय न पंग प्रवाह ॥
चच्चर सीचव रंग गति। विधि वंधन रिन चाह ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी॥ मिले घाइ [3]निघाइ सा पुंज राजै। लगे अंग अंगं सुरं गति छाजै॥
मिले हथ्थ वथ्थं सु सथ्थं निनारैं। मनो वारुनी मत्त [4]मय मत्त भारैं॥
छं० ॥ ४०० ॥
किधों जुद्ध लग्गे कि मल्लं सवारैं॥ .... ॥
उरैं लोह पंती परैं श्रोन रुद्रं। मनों रत्त धारा वरष्यै समुद्रं॥
छं० ॥ ४०१ ॥
उड़ै छिंछि इछं सनाहं सुभिज्जै। मनो पुफरत्तं नभं देव पुज्जै॥
सुनैं ईस सद्दं निसानं गहारं। वजै धार धारं घनं कै प्रहारं॥
छं० ॥ ४०२ ॥
मनो पट्टनं मंझि कंसी डकारं। दुती [5]ओपमा चंद जंपै विचारं॥
वज झल्लरी देवलं द्वार मारं। उड़ै सार किंचौ कि रच्चै प्रहारं॥
छं० ॥ ४०३ ॥
मनो झिंगनं भद्दवं रैनि भारं। .... ॥
*सवै सस्त्र मंत्रं भरं जेम वाहे। पिझै पग्ग कढ्ढै विहथ्थै समाहे॥
छं० ॥ ४०४ ॥
करं कंस मत्तं पलं पारि छंडै। रुधं धार हल्लै प्रसादेति मंडै॥
सिवा लीति सोभै [6]प्रनाली अनेकं। फिरैं अच्छरी पंति विय वार वेकं॥
छं० ॥ ४०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-फलक। (२) मो.-धन।
(३) मो.-निघ्घान। (४) मे.-मै।
(५) मो.-उप्पमा। (६) ए. कृ. को.-मूनाली।
* ए. कृ. को.-सवै शास्त्र मंत्रं भजैरं समाह। विजै खग्ग कढ्ढै विनी हथ्थ, वाह॥

षेत दूंढ़ि प्रथिराज। सुभ्रत झोरी करि डारिय ॥
इतनें सु भान अस्तमित भये। दोऊ सेन बर उत्तरिय ॥
मुक्की न बग्ग कमधज्ज की। रोस राह विसरन भरिय ॥छं०॥४९४॥
बजी संझ घरियार। सार बज्यौ तन झंझर ॥
जनु कि बज्जि झननंक। ठनकि घन टोप स [1]उच्चर ॥
अनल अग्गि सम जग्गि। जेन ध्रज बंधि सलग्गा ॥
मनु द्रप्पन में बैठि। नेत बडवा नल जग्गा ॥
घन स्यांम पीत रत रंग बर। त्रिविध बीर गुन बर भरिय ॥
हर हार गंठि रुठि उमां। किम उतारि पच्छो धरिय ॥ छं० ॥ ४९५ ॥

कमधज्ज का अपने बीरों को उत्साहित करना।

छंद भुजंगी ॥ भिर्‌यौ राम रन बीर कमधज्ज बीरं।
करो आज सर्वं [2]सुन्निब्बीर धीरं ॥
गुहै माल ईशं नचैं जोग बीरं।
निरं तंत प्रेतं धरं धीर हीरं ॥ छं० ॥ ४९६ ॥

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं।

दूहा ॥ परि पथ्थर सथ्थर सुरन। गनक गनें नहिं जाइ ॥
हथ्थ तीन लुथ्थह चढ़ी। मुरबी [3]मद्ध न माइ ॥ छं० ॥ ४९७ ॥
संझ सपत्ते न्रपति बर। नव नव रस अरयंत ॥
बर प्रथिराज नरिंद दुति। सो ओपम कविकंत ॥ छं० ॥ ४९८ ॥

तीन घड़ी रात्रि होजाने पर युद्ध बंद हुआ।

कवित्त ॥ घरिय तीन निसि गइय। बार बर सुक्र सु आगम ॥
पंति परी अरिजूह। बीर विंध्यौ अरि जागम ॥
कोट षलन सोभै। विसाल सामंत सूर थँभ ॥
जस देवल उप्पनौ। बीय गय गिरी सेत रँभ ॥
प्रथिराज देव दानव दलन। लच्छि रूप जद्दव कुँअरि ॥
नव रस विलास पूजा करहि। बर अच्छरि भइ पहुप सरि ॥छं०॥४९९॥

(१) ए.–उव्बर। (२) ए०—सन्निवरि। (३) ए०-सद्ध।

करै घन घत्त । महा इत मित्त ॥
लरै बर लत्त । फटै रिन षत्त ॥ छं० ॥ ४१६ ॥
कटारिय एक । लगंत अनेक ॥
सु चंदन साष । संजोइय भाष ॥ छं० ॥ ४१७ ॥
धषै अति धीर । मनों बर बीर ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

कमधज्ज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ [1]सबर बीर कमधज्ज । अरघ अप्पिय पग मग्गं ॥
इष [1]अच्छित उच्छरहि । जानि परिमानन मग्गं ॥
सार धार पुंषियै । बीर मंगल उच्चारै ॥
सबै साथ बंदियहि । सकल पूजा संभारै ॥
बर मुक्ति बरन बरनी सुबर । इह अपुब्ब पिष्यौ नयन ॥
उप्पनौ बीर सिंगार सँग । रुद्र बीर चौरौं नयन ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

दूहा ॥ सिर सोहत बर सेहरौ । टोप ओप अति अंग ॥
बगतर बागे केसरे । रुधि भीजत विषमंग ॥ छं० ॥ ४२० ॥
[2]सकट भग्ग लइ बग्ग बर । कमधज बीर विसेज ॥
[3]मिले बीर बीरत्त बर । दोज दैवत तज ॥ छं० ॥ ४२१ ॥

शशिवृता का चहुआन प्रति सच्चा अनुराग था।

देव तेज दैवत्त गुन । अट्ठत मत्ति गुन कंति ॥
शशिव्रत्ता चहुआन सौं । सुट्ठत मंत गुन पंति ॥ छं० ॥ ४२२ ॥
सांइ स्हर सांई सु गति । दल दुंदुभि दैवत्त ॥
विधरं कर वीरह करह । सुबर बीर मारुत्त ॥ छं० ॥ ४२३ ॥
कालकूट कीनौ विषस । कोलाहल घन कीन ॥
अट्ठत ठत्त अंतह भयै । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
भारथ दिप्पिय तत्त मति । अट्ठत चिंत बल छीन ॥
जिन गुन प्रगटित पिंड किय । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२५ ॥

(१) मो.-अप्पित । (२) मो.-संगट ।
(३) मो.-मिलें ।

केस कंस मरदन्न । नंद नंदन लिलाट किय ॥
भोह भुअद्धर धरि समुह । नैंन निज्जिय नाराइन ॥
बदन दिह्न श्रीकृष्ण । हृदय थप्पौ मथुराइन ॥
कटि जंघ गुविंद रक्षा करन । चरन थप्पि असरन सरन ॥
गुर इष्ट समरि प्रथिराज कौ । इह सुदिह्न रक्षा करन ॥ छं० ॥ ५०३ ॥

कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ परि पारस जद्दव सयन । मिलि कमधज्ज प्रमान ॥
षट बिय ग्रह मनु नछित लै । [1]पंति सु मंडिय भान ॥ छं० ॥ ५०४ ॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ ।

छंद चोटक ॥ परि पारस पंग नरिंद घनं । मनो भान सुमेर कि पंति बनं ॥
घन सद्द सुरंग निसान धुनं । मनौं बज्जत दुंदुभि देव तनं ॥ ५०५ ॥
चव दून निसान सु कन्ह धनी । जु कियौ सिरदार सु पंग अनी ॥
दिसि पच्छिम बालुकाराय अर्यौ । तिनके मुख कन्ह पजून लर्यौ ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

हुअ ईस दिसान दिसा न्टप मान । तिन कें मुष भौ रन भाटिय भांन ॥
दिसि पूरब भो षुरसान षँधार । तिन कै मुष मंडि सलष्ष पवार ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

अगिनेव दिसा वन सिंघ अचाइ । तिन के मुष मंडिय निढ्ढुर राय ॥
दिसा जम लच्छिन बंधिय फौज । तिन के मुष चामँड दाहर कौज ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

सुनै रति छच उथ्यौ कर बीर । तिन कें मुष मंडिय चंद पुंडीर ॥
जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल । [2]तिनें मुष भीम भिरं रिनमाल ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

[3]सु उत्तर दै प्रभु पंग कुँआर । तिनें रघुवंस वजावत सार ॥
वढै गुर जंबुर [4]हथ्थह नार । मनौं गज भद्दव की उनिहार ॥
छं० ॥ ५१० ॥

(१) ए.०--पत्ति ।

(२, ३) पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है । (४) ए. कृ.०को.-हथं हथ ।

घरी यार सारं । परें कै प्रहारं ॥
भए पार पारं । मनों प्रात तारं ॥ छं० ॥ ४३५ ॥
करैं मार मारं । ववक्कैं वक्कारं ॥
चलैं रुद्धि पारं । पलं नच्चि गारं ॥ छं० ॥ ४३६ ॥
चरं मंस चारं । दिपै प्रेत दारं ॥
धपै धार धारं । टरैं जे न टारं ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
डकै भूत डारं । ढरै सीस ढारं ॥
उड़ी वीर रैंनी । भ्रमैं भैंर सैंनी ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
अवध्यं न गोपं ॥ इसे वीर कोपं ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

दूहा ॥ कोपि वीर कायर धरकि । परपि पयंपन जोग ॥
यह गति छंडै वीर वर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ वांन पथ्थ वलभीम । सत्त [1]सिवरी अधिकारी ॥
[2]गंभीरां गुर सिंघ । नेह करनह क्रत [3]धारी ॥
वल सुजग्य सऋह विसाल । पुरषारथ सारी ॥
सुर सिधि वुद्धि गनेश । क्रम्मन धुन घू अधिकारी ॥
सामंत सूर सूरह विरुध । वीर वीर पारस फिरिय ॥
वर सिंघ सिंघ रथ्थै मरन । वर कोविद कोविद डरिय ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ।

दुहा ॥ सु रिधि वुद्धि वुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥
चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि वीर सिरताज ॥ छं० ॥ ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज वर । मिले लोह छुटि छोह ॥
धार मुरै मुष ना मुरै । मरट [4]मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
चाहुआन कमधज्ज दुति । रति नाइक प्रति धीर ॥
सारंगी सारंग वल । इह लग्गी अति वीर ॥ छं० ॥ ४४४ ॥

(१) मो.-सिवरं । (२) मो.-गंभीरं ।
(३) मो.-भारी । (४) मो.-मूल ।

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठीं लगाई, शूरवीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे।

कवित्त ॥ [1]सुफट किरनि पहु बीर। परिय आरन्नि निसा गय ॥
उभय षट्ट प्रगटीय। हक्क बोलंत हयनि हय ॥
तिमिर तेज भंजन। प्रमान कमधज्ज नरिंदह ॥
मांन तुंग चहुआन। जग्य जंपिय कवि चंदह ॥
नव ग्रेह नवल्लिय नव निसा। नव निसान दिशि मान धुरि ॥
सामंत सूर भुज उप्परै। रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥ छं० ॥ ५२० ॥

शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य्य से उपमा वर्णन।

गाथा ॥ सुघटं किरनं बीरं। पारस मिसह सेन कमधज्जं ॥
उदयं अस्तमि भानो। मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ॥ ५२१ ॥

दूहा ॥ दष्षिन पत्त सुमेर फिरि। यों पारस पहु पंग ॥
सार धार धारह मिले। सुबर बीर प्रति अंग ॥ छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ सार धार प्राहार प्रकार। मनौं मत्त घन पंति विभार ॥
उठे बीर सत्तों बिरझाइ। भाल पयान न मत्त सुचाइ॥ छं०॥५२३॥

पृथ्वीराज का शुद्ध हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना।

गाथा ॥ ग्रह सुद्धा प्रथिराजं। अष्ट ग्रहं बंकमो विषयं ॥
विष्णुं बीर सुधारं। पंजर भंजे राजयो अंगं ॥ छं० ॥ ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था।

दूहा ॥ सा पंजर दिय राज बर। सस्त्र लगै नहिं चाइ ॥
कोटि अंग घावह घने। भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ॥ ५२५ ॥

बैकुंठ बासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे।

गाथा ॥ बैकुंठह बर वासी। सासी गहनाय गिरन सा धरियं ॥
सो रक्षा चहुआनं। अनरष्षा मंचयो धरयं ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-भट।

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ विषम जग्य आरंभ। वेद प्रारंभ शस्त्र बल ॥
हे गे नर होमिये। शीश आहुत्ति [1]स्वस्ति कल ॥
क्रोध कुंड विस्तरिय। कित्ति मंडप करि मंडिय ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। पेषि पल साक्रत छंडिय ॥
तुंबर सु नाग किंनर सु चर। अच्छरि अच्छ सु गावहीं ॥
मिलि दान अस्स अप्पन जुगति। भुगति मुगति तत पावहीं ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

दूहा ॥ करि सुचार आचार सब। समद कित्ति फल दीन ॥
गुरुजन मिसि करुना करिय। कायर हाहर कीन ॥ छं० ॥ ४५४ ॥

कमधज्ज का सर्पव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मिलि जद्दव कमधज्ज। अहिर व्यूहं आरंभिय ॥
पुच्छ सु लपि मनि बंध। पांडु गुज्जर पारंभिय ॥
सुधर मंडि वर बीर। पंग बंधह रचि गढ्ढै ॥
फन अप्पन भय पुंज। जीभ कूरंभ सु ठढ्ढै ॥
हयनारि जोरि जंबूर घन। दसन हट्ट हग सुप्प करि ॥
मनि भयौ मेर मारूफ़ा पां। [2]चच्चर सीचौ रंग परि ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

गाथा ॥ अप्पं व्यूह अरंभो। प्रारंभो बीर भद्रायं ॥
जानिज्जै चव रंगं। चतुरंग इक्क घंटायं ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

दूहा ॥ घटिय घट्ट अघटन घटिय। पढ़िय सार दुअ सैन ॥
पंगराइ बंध्यौ सु हत। किये रत्त वर नैन ॥ छं० ॥ ४५७ ॥
रत्ते नैन विषम्म गति। दावानल प्रथिराज ॥
बीर चंद घन उन्नयौ। सार सु वुट्टन आज ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोर व्यूह प्रथिराज। सथ्थ [3]सज अप्पन कीनौ ॥
चुंच केश मंडली। कन्ह चहुआन सु दीनौ ॥

(१) ए.-सुस्ति। (२) को.-पच्चर। (३) मो.-जल।

तिन की उपमा कविचंद करी।
मनौं मेघ महेंद्रव बीज झरी॥
घन मन्निय नद्द बिवंक सुरं।
सुभिहै बिब हथ्थ धजा विथुरं॥ छं०॥ ५३३॥
गज नद्द जंजीरन के घुरयं।
मनौं बंधिय झिंगुर सा सुरयं॥
तिन के कछु दान कपोल झरे।
सु मनौं नभ के वरसे बदरे॥ छं०॥ ५३४॥
बजि लाग निसान धमंक सजी।
सहनाइन सिधुंअ राग बजी॥
नव नारद सारद ते किलकै।
नब बंदि बिरद्द नदे हलकै॥ छं०॥ ५३५॥
घन देषि अरिष्ट सुबाल डरी।
मुदरी नव आनद चित्त हरी॥
कमधज्ज कला चढ़ती बर पेषि।
मुंदरी ससिट्त्त दइ [1]शशि [2]लेखि॥ छं०॥ ५३६॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत बेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना।

निसाणी॥ फौज रची तिन दोय घन मध्य मसंदा।
जालिम जोध जुवान सेर रस बीर रजिंदा॥
अग्गैं उभ्भा अप्प आइ जादव्व नरिंदा।
मनौ उभ्भै मेर कै अड्डी अग डंदा॥ छं०॥ ५३७॥
पीछै ठाढ़े राठ बड़ बल जे विचरंदा।
जानकि उत्तर उन्नया घन लोह सहंदा॥
पाइक पंति अपार वर जनु मोर नचंदा।
बाग गहिग्गहि बाज कीन रन बीर नषंदा॥ छं०॥ ५३८॥

(१) ए. कृ. को.--गति। (२) मो.--पेपि।

अरिल्ल ॥ आरिष्टन सम दिष्टन दिष्षिय। बीर चंद गह गह मुष भष्षिय ॥
यद भरि होंन न परत सुबंधं। बर भारथ बीर रस संधं ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गाथा ॥ उठ्ठहि एक प्रमानो। धावंताय पंचयो सयनं ॥
[1]वाहंतं वर लोहं। साइनं देषयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७० ॥
रुधिरं पच तसतयौ। दो मझ [2]काय हक्कयौ सिरयं ॥
अति गति दुष्ट प्रकारं। अगिनत होइ बीर सम सेनं ॥ छं ॥ ४७१ ॥
अगनित गने न जानं। ई कोइ कोपि रुड्यो सहसं ॥
वर बीरार सुभट्टं। दावानलं पंगयौ वीरं ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना।

दूहा ॥ तव चहुआन सु कन्ह वर। ठढ्ढौ करि गुरुराज ॥
हुकम नृपति छुट्टौति इम। [3]जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ ४७३ ॥
कवित्त ॥ मुष छुट्टत नृप बैन। नैन दिठ्ठौ धावंतौ ॥
क्रम बंध बल मोह। छोह बंध्यौ सु बरत्तौ ॥
सु बर सेन चहुआन। सिंग जद्दूनं [4]नवाई ॥
जनु मंदिर विय बार। ढंकि इक बार बनाई ॥
तकसीर करन दोउ अंस बर। किति भग्ग करतव्य कर ॥
अथवंत रविह आदित्य दिन। अगनि सार वुट्टिय कहर ॥
छं० ॥ ४७४ ॥
गाथा ॥ मुष छुट्टा नृप बैनं। कै दिठ्ठाय धावता नैनं ॥
बज्जी वाहु सुबारं। धारं ढारि [5]मत्तयौ धरयं ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ मत्त ढरहि संमुष भिरहि। स्वांमि सनाह सस्रूर ॥
आज मुष्य चहुआन कन्ह। सिंधु सत्त कौ नूर ॥ छं० ॥ ४७६ ॥
गाथा ॥ सह सिझत नूरं। कास्रूरं करनयो नथ्थौ ॥
एको अंग सुरंगो। दिष्यं वा वीरयं बीरं॥ छं० ॥ ४७७ ॥

(१) को.-व्याहंतं। (२) मो.-काम। (३) मो.-मनु
(४) मो.-नमाई। (५) ए. कृ. को-मत्तयो।

सभा के पुस्तकालय की सूची...	=)	)||
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	||)	-)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ	||)	)||
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित)	३||)	=)||
दादू दयाल की बानी	१|||)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१||)	=)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	|)	)||
योगदर्शन	२)	-)
गुरुगीता	|)	)||
रामचरितमानस	८)	|||)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

मनौं नभ्भ धारं। सु भारथ्थ सारं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

*चौपाई ॥ सार धार भारथ प्रहारं। मानहु दुत्तिय अंग विहारं ॥
धार तिथ्थ कै तिथ्थह राजं। जनक काम कामनि सिरताजं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

कवित्त ॥ वर अथवंत सु दीह। झुझ्झि [1]लच्छिन जद्दव भर ॥
लोह धार लगि विषम। ईस लीनौं जु शीश कर ॥
रह्यौ न तन दझ्झन सु मंस। पल चरन न पाइय ॥
अश्व शस्त्र पष्पर [2]पलान। ढुढंत नन पाइय ॥
वरि लियन बीर अंतर मिल्यौ। [3]अच्छर [4]सुच्छर ना लियौ ॥
मिलि गय सु भान सुत भान कौ। दिव दुंदुभि वज्जत वियौ ॥ छं० ॥ ४९१ ॥
अगनि झार धर धार। सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंक दिष्ट सिंघा सुरारि। भग्गौ नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात। वथ्थ अन वथ्थ सु लग्गा ॥
सुरत अंतरित सेत। मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन नृप द्वै करिय। दोउ घाव घन घुम्मि घट ॥
उवर्‌यौ कन्ह प्रथिराज क्रम। झुझ्झि पुंज बंध्यौ सुभट ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

इस युद्ध को देख कर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना।

छंद भुजंगी ॥ वजी दुंदुभी आज आयास थानं। करे लोह लोहं [5]सुलोकंति गानं।
कहै चंद सूरं महावीर पाई। परै पुप्फ वर विष्ट वज्जै विधाई ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

सांझ हो गई परंतु कमधज्ज की अनी न मुड़ी।

कवित्त ॥ जोति लियौ जै पत्ति। चारु चतुरंग स मोरी ॥
वर बंध्यौ नृप पुंज। ढाल जद्दव न ढंढोरी ॥
वर [6]लच्छिन परि पेत। कन्ह चहुआन उपारिय ॥

---

* मो.-प्रति में अरिल्ल। (१) मो. लन।
(२) मो.-प्रमान। (३) मो. अत्सर। (४) मो.-सुत्सर।
(५) ए. कृ. को.-लोकेसु। (६) मो०—लष्पिन।

सूचीपत्र ।

—:o:—

दूसरे भाग का टाइटिल पेज और सूचीपत्र ।

—:o:—

———

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन।

श्रम सु अंग विंटयौ। सुधा [1]विंटयौ जु बाल रस ॥
अमिय चंद विंटयौ। समुद विंटयौ वडवा तस ॥
अरि कैं दिल विष उरग। मंत्र ससि वृत्त प्रेम भर ॥
लहि न सुद्धि सत्र वसन। आइ लग्गेति रोस भर ॥
वजि वीर बार दुज दल सघन। लाग निसानन नृत्य पर ॥
प्रथिराज सेन बंधौ स अति। सु कविचंद उच्चारि बर॥ छं०॥ ५००॥

युद्ध में नव रस वर्णन करना।

भान कुंअरि शशिवृत्त। नैन स्रृंगार सुराजै॥
वीर रूप सामंत। रुद्र प्रथिराज विराजै॥
चंद अद्भुत जानि। भए कातर करुना मय ॥
बीभछ अरिन समूह। सात उप्पनौ मरन भय॥
उप्पज्यो हास अपछरि अमर। भौ भयान भावी विगति॥
कूरंभराव प्रथिराज [2]वर। लरन लोह चिंते तरनि॥ छं० ॥ ५०१ ॥

राम रघुवंश का कहना कि जिस वीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है।

कहै राम रघुवंस। सुनौ सामंत सूर तुम॥
अमर नरन वंछहि सु। जुद्ध किन कथ्थ नरिंद भ्रम॥
धार तिथ्थ वर आदि। तिथ्थ काशी सम भज्जै॥
असि वरुना तिन मध्य। लोह तेज सम गज्जै॥
सिव सिद्ध जोग सज्जै सकल। अकल अपूरब वत्त इह॥
लभ्यौ न वीर जिन ब्रह्म पद। छिनक मद्धि गति लभ्भि इह॥छं०॥५०२॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना।

पढ़ि सुमंत्र गुर राम। विष्णु पंजर सनाह दिय॥

(१) मो.-वींट्यौ। (२) ए. कृ. को.-छर।

घोड़ों की टापों से आकाश में धूलि छागई।

हय पुर [1]उच्छरि पेह अयासह धुंधरी।
बान गंग प्रथिराज देषनह उत्तरी ॥ छं० ॥ ५४६ ॥

चहुआन का घोड़े पर सवार होना।

दूहा ॥ बहकि निरह नष्पर भिदै। यह पारथ पविचान ॥
सो प्रति सारह उत्तरन। फिरि चढ्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ५४७ ॥

उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त ॥ देव दसमि दिन दीह। दीह पद्धरौ नरिंद ॥
गुरु पंचम रवि नमो। सुबर ग्यारमो सुचंद ॥
चतिय थान बर भोम। सुक्र सप्तम बर कीनौ ॥
न्रप सुपनंतर आइ। ईस [2]जीपन बर दीनौ ॥
चौसट्ठि पुट्ठि वि पुट्ठियन। अरिन सेन संमुह [3]परे ॥
त्रिघोष सद्द बज्जैत सब। सुवर लोह कट्ठे करे ॥ छं० ॥ ५४८ ॥

युद्ध वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ कविचंद सुबरनं करै सुकरनं सूरह लरनं भर भिरनं ॥
तिरभंगी छंदं नाग नरिंदं कथ्थय करिंदं दुष हरनं ॥
[4]पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता ॥
घन घाइ सघत्ता सूर सरत्ता में गल मत्ता करि धत्ता ॥ छं० ॥ ५४९ ॥
बज्जै बर कोहं लग्गै लोहं छक्कै छोहं तजि मोहं ॥
सूरा तन सोहं स्वामिन दोहं मत्ते ढोहं रिन डोहं ॥
बर बान बिछुट्टै बगतर फुट्टै पारत षुट्टै धर तुट्टै ॥
तरवारनि तुट्टै धभ्भर लुट्टै अंग अहुट्टै गहि भ्रुट्टै ॥ छं० ॥ ५५० ॥
बीरा रस रज्जं सूरस गज्जं सिंधुअ बज्जं गज गज्जं ॥
अच्छरि तन सज्जं बरे बर जंजं चित्ते बज्जं मन मज्जं ॥

(१) मो.-उत्सरि। (२) को.-जीयन (३) मो.-परै, करै।
(४) ए. कृ. को.-परि मंदह मन्तापुर नन्दी।

छुट्टै गुरजं बवियानन सें। यह तें पलटे मनों तारक सें॥
पति बंधि सनाह सयान करैं। अरि के मुष सामँत सूर लरैं॥
छं०॥ ५११॥

रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ।

भयें प्रात जगंतय सूर परे। तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे॥
गय सब्ब निशा पहु फट्टि ननं। दोउ संगम अंग विभंग घनं॥
छं०॥ ५१२॥

प्रिय प्रातक सीत चलै मधुरं। निशि लीय उसास निसास डरं॥
बर तोरत तारक भूषन सो। मुष मूंदि कमोदनि ना विगसो॥
छं०॥ ५१३॥

पहु फट्टिय वीर प्रमांन नयै। रवि [1]रत्त सुतत्त वियोग लपै॥
जु भई गति सिथ्यल ता सगरी। सर छिप्पन केलि कला निसरी॥
छं०॥ ५१४॥

[2]बजि दुंदुभि देव निसान धुअं। प्रगटे सत पच सुरंग हुअं॥
बर रंग [3]जवा सन जोति फिरी। घन देहि असीस चकी चतुरी॥
छं०॥ ५१५॥

घन रोर चकोर कमोद भगे। जु गए दुरि चोर सु देव जगे॥
जमुना हुलसी जमराज हंस्यौ। जु गयौ तिमरं भजि तेज सज्यौ॥
छं०॥ ५१६॥

वर इंद अनंदिय चंद काढ्यौ। जु सज्यौ रथ उंच अरुन्न गह्यौ॥
सु चल्यौ चक्र एकहु चक्र कह्यौ। सु गह्यौ कमलं कर को अकरयौ॥
छं०॥ ५१७॥

बर उद्दग नीर पवन्न उछं। जु चले सब क्रमज जग्गि गछं॥
जु भयौ धन भ्रंम मिटी वनिता। वल जाप अजाप न सो जपता॥
छं०॥ ५१८॥

गाथा॥ गई सर्व्वरी सु संबं। फट्टी पहुवँ नट्ठयौ तिमिरं॥
तम चूरन प्रति किरनं। तरुनं विराइ तरुनयो रचयं॥ छं०॥ ५१९॥

---

(१) को.-वृत्त। (२) को.-वट्टि। (३) ए.-जवासनि।

करैं कायरं चीय करुना प्रमानं।
लगै बाह्र कालिंदि चंपे समानं॥*
उनं चीय जंपी उनं पीय जंप्पौ।
सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्पौ॥ छं० ॥ ५५८॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

दूहा॥ देवप्पति देवह सु दुति। मति सामंत सधंत॥
जिन अच्छरि सच्छार कहैं। सो जस वांढ दर कंत॥ छं० ॥ ५५९॥
गाथा॥ जस धवली वर वढयं। चय लोकं साध [1]यौ तरयं॥
जानिज्जै परिमानं। सतं समुद्द सींचयो [2]नीरं॥ छं० ॥ ५६०॥
छंद लघुत्रोटक॥ मिलि जुद्ध मच्चौ। रन षेत रच्चौ॥
सम सार सच्चौ। नव एक मुच्चौ॥ छं० ॥ ५६१॥
रस बीर षच्चौ। तन रारि [3]तच्चौ॥
कहूँ जाई दच्चौ। .... ॥ छं० ॥ ५६२॥
जुग्गनि जितनी। किलकें तितनी॥
घन घाइ घुरैं। पट सीस परैं॥ छं० ॥ ५६३॥
दोउ वीर बड़े। लगि लोह अड़े॥
घट घाइ पड़े। झुर होइ झड़े॥ ५६४॥
सस कोश उफै। तन सों तड़फै॥
फिफरा फड़कै। कढि सों कड़कै॥ छं० ॥ ५६५॥
पग हथ्थ परैं। ढौ चाल [4]ढुरैं॥
धक धींग धकें। मुष मार बकें॥ छं० ॥ ५६६॥
रस बीर छकें। हक हूक हकें॥
बहु सूर लरें। न्रप भार परें॥ छं० ॥ ५६७॥

---

* ए. कृ. को. प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियां हैं।
उने मैन त्रासं उनै सत्र सारं। लभ्यो काइरं कामनी ना प्रभासं॥

(१) ए. कृ. को.-सो। (२) मो.-नीयं।
(३) ए. कृ. को.-रच्यौ। (४) मो.-ढरे।

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तैयारी होना।

दूहा ॥ बज्जि राग चौहान भर। उत कमधज्ज नरिंद ॥
सार धार वज्जिय विषम। कहि अंनन कविचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना।

छंद चोटक ॥ सुर तीन फवज्ज सु बंध थपी।
अग जद्दव राइ नरिंद रूपी ॥
तिन पच्छ सु वीर सुरंग अनी।
बिच बंधिय हथ्थिय पंति घनी ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
बर हब्बसि किन्नर रूमि बिचै।
झननंकत पाइक पंति नचै ॥
तिन सौर सुगंध बिछाइ घनं।
बहु जुम्भ्भ कयट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
हय उच्छरि पेह अयास लगी ॥
नव तुट्टि [1]तिनं बनि वारि भगी ॥
अरची सरसीरुह [2]संकुचिता।
चकई चक मूंकति चूक तता ॥ छं० ॥ ५३० ॥
पवनं गवनं नन पंप वहै।
नव नेज धजा [3]धज लग्गि रहै ॥
फन फूंक फनं पति को बिसरी।
मुदरी दिग अट्ठ हगं धुंधरी ॥ छं० ॥ ५३१ ॥
घन वज्जत घंट सघंट घनं।
नव नोरथ नारि निभंग मनं ॥
ढलकै गज ढाल सुनेज बनं।
[4]चमकै बल के मन चौज मनं ॥ छं० ॥ ५३२ ॥

(१) मो. नितम्बनि। (२) ए.-कृ. को.-संकुरित, संकरित।
(३) मो.-धन। (४) मो.--चमकें वलकें यमकें जमनं।

सुबर बीर कमधज्ज। राज संमुह अरि झारिय ॥
मरन षूंज षावास। मरन अप्पनौ विचारिय ॥
सब सु सथ्थ पुच्छयौ। तंत मंतह उच्चारिय ॥
सकल मंत रजपूत। मंत मो देहु सुचारिय ॥
हारिये धूंम जित्ते सुसब। ता उप्पर तन रष्षियै ॥
मो मंत्त सुनौ तौहूं कहूं। दुज्जन दल बल भष्षियै ॥ छं० ॥ ५७६ ॥

मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया।

एक समै सुग्रीव। त्रिया रष्षी न अप्प बल ॥
एक समै दुरजोध। कन्नि पुक्कार मंडि कल ॥
एक समै श्रीराम। त्रिया अप्पनी न रष्षी ॥
एक समै पंडवन। चीर कढ्ढत द्रग लष्षी ॥
रष्षिय न गोप पारथ बलिय। ससि सुबैर तारक्क बर ॥
त्रिघात वात गोविंद बिना। जीव रषिन सर्ब्बंग गहि ॥छं०॥५७७॥

कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति।

दूहा ॥ भल भल तुरी चढंत बर। तिन अष्षरन अषार ॥
मरन जानि भूनंग हर। कट्टर चढ़े तुषार ॥ छं० ॥ ५७८ ॥

कवित्त ॥ सु कवि गत्ति ननग्रही। कु कवि गतिय सु क्रम बदन ॥
सलिल बानि बोलै न। कढिन कुव्वचन सु स्वदन ॥
छूटत घोट कवित्त। चित्त लहु गुरन प्रकासं ॥
अघट घाट गुन करै। घाट सुद्ध न प्रगासं ॥
अच्छरि सुरंग जै जै करहि। बन प्रस्तावन पढ्ढियै ॥
घन घट्ट थट्ट क्षुभ्भयौ करैं। कुकबि जे महि चढ्ढियै ॥छं०॥५७९॥

दूहा ॥ फेरि पंति पारस सु दत। अगति करी नहिं गत्ति ॥
जिन सांई सधनो कला। बनि सामंति सु मत्ति ॥ छं० ॥ ५८० ॥

मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधज्ज ने अपनी अनी मोड़ ली।

सूचना ।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

पुस्तक	मूल्य	डाक व्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
कविवर बिहारीलाल—(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)।
गद्यकाव्यमीमांसा—(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्ण दास रचित)	।)	)।
समालोचना (पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श-पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र—(पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)।
हरिश्चन्द्र-पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
भगवद्गीता—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
उथेलो—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) १० भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर—(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१॥)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)।
प्राचीन-लेख-मणि-माला—१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
" समय १२-२५	३)	≡)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	)॥
ओभर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)

[illegible] ॥
[illegible] ॥ छं० ॥ ५९१ ॥

दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी ।

कंध बंध संधिय निजर । परी पष्षर मध्यान ॥
तब बहुन्यौ पारस फिरिय । फिन्यौ [२]भीछ चहुआन ॥ छं० ॥ ५९२ ॥

कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म्म में प्रवृत्त हुए ।

कवित्त ॥ छल संज्यौ बल जोग । बुद्धि बलजोग पसारिय ॥
चाहुआन कमधज्ज । षग्ग षचीवस डारिय ॥
रत्तन जुद्ध विरुद्ध । सद्द सद्दह मति कीनी ॥
चात्रद्दिसि विढ्ढुरै । वीर बीरं रस पीनी ॥
संग्राम धाम धंमार परि । काम धाम धम्मार तजि ॥
सामंत सूर सांमत वर । धीर बीर धारहति लजि ॥ छं० ॥ ५९३ ॥

शूरबीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे ।

दूहा ॥ मैं लज्जानी लज्ज वर । गज्ज दष्ष सामंत ॥
अंत अलुझ्झय पंति पय । भिरि भंजै गज दंत ॥ छं० ॥ ५९४ ॥
भै हत्त अहत्त सरीर गति । सिंध सरोज सु पान ॥
सूर बदौं सामंत दुज । जिन अप्पै जिय दान ॥ छं० ॥ ५९५ ॥
जीव दान अप्पन सु हत । दल दंतिय बढ़ि कंत ॥
हनूमान जिम द्रोन वर । बारधि अंत [३]सुपंति ॥ छं० ॥ ५९६ ॥
चौपाई ॥ बार बारधि वर पंति सुमान । सूर धीर सामंत सुजान ॥
दल बल बल बिछोरहि बीर । षग्ग मुष झलकंतह नीर ॥ छं० ॥ ५९७ ॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना ।

कवित्त ॥ षग मुष वर चढ्ढिये । धाइ तुट्टै है राजं ॥
बार बार हक्कही । करै अग्गा बिन साजं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-छंध, छंद । (२) मो. -भीच । (३) ए. कृ. को.-सुपाति ।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-8.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B A.

CANTOS XXV and XXVIII.

महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया ।

पर्व्व २५ और २८

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य १॥)]   Issued 15th December 1906.   [*Price Re. 1-8.*

छंद भुजंगी ॥ विरुझ्झाय उट्ठे रनं रोस वीरं । महा मत्त दंतीन की पंति भीरं ॥
गहै दंत धावै सु वाहै पचारै । महा मत्त बोलै सुवारं अपारै ॥
छं० ॥ ६०८ ॥
काली कित्त कूदं करै दूरि दंदं । वजै सार सारं महा काल मंदं ॥
महा ठट्ट घट्टै अहुट्टै जु यट्टं । वजै घाइ ऐसे वकै जानि भट्टं ॥
छं० ॥ ६०९ ॥
रुधिं धार रत्ती सु मत्ती उछारै । इसी वीर वत्ती सु भारथ्थ भारै ॥
छं० ॥ ६१० ॥
दूहा ॥ भारथ्थह नथ्थी सुवत । अवृत वृत्त गति देव ॥
जिन सांई दुज्जन हत्यौ । सो सांई प्रति सेव ॥ छं० ॥ ६११ ॥
सेव देव देवन सुबल । रुंधत गिद्ध सु मंस ॥
मोह पान माया सुक्रत । उडत मुक्ति तिन हंस ॥ छं० ॥ ६१२ ॥
हंसन हंसिय हंस बर । मुगति सरोवर वीय ॥
तनु छंड्यौ उह मंडि कै । निसा भ्रम्म नह नीय ॥ छं० ॥ ६१३ ॥
क्रम सांई पर हथ्थरें । [1]परम तंत पद पाइ ॥
देवग्गिरि भंजन मती । रा चामंड विरुझाइ ॥ छं० ॥ ६१४ ॥
कवित्त । रा चामंड जैतसी । राम बड़ [2]गुज्जर बुल्लिय ॥
वल्लियभद्र बलिराम । सार धारह मति षुल्लिय ॥
कालह कित्ती विस्तरै । राइ निड्डुर सम सारं ॥
दुह्न बोल दुअ चरन । मरन किती [3]अधिकारं ॥
वैकुंठ लेन लिन्ने सु षग । विहँग मग्ग पंषी सुगति ॥
नरसिंह सिंह छंडै नहै । सार धार मारह दिपति ॥ छं० ॥ ६१५ ॥
गाथा ॥ सारं धार वरदियंति । रुधिरं छंडेव हरयो अंगं ॥
जानिज्जै मधु मासं । सा फूलेव षष्परो वनयं ॥ छं० ॥ ६१६ ॥
अरिल्ल ॥ रत्त सु रत्त सु वीर उडाइय । घाइ मृदंग उपंग बनाइय ॥
कै माया मोह ग्गति छंडै । काल दंड कालह क्रत छंडै ॥ छं० ॥ ६१७ ॥
दूहा ॥ काल दंड षंडन करै । भिरै वीर भारथ्थ ॥
सुबर वीर सामंत गति । दै दुवाह पारथ्थ ॥ छं० ॥ ६१८ ॥

(१) मो.-मुगति परम पद पाय। (२) मो.-गूजर। (३) मो.-अवधारें।

बीरा रस्स उतावल न रहै वरजिंदा।
अलवेला सु उछंछला अनमी अवलंदा॥
गाहड़ मल्ल गुमान गुर गुन गात गुरंदा।
वजे निसान नफेरियान घोर घुरंदा॥ छं०॥ ५३९॥
त्तत्त बीर सुनंत तन तामस्स भरंदा।
सुनि चौसट्ठी जुगिन किलकि किलकंदा॥
भूत भयानक भाव भरि भहरें भहरंदा।
थेइ थेई गति थेच पाल किलकार करंदा॥ छं०॥ ५४०॥
बावन वीर [1]वलिष्ट बर वल्ल कारि विलसंदा।
देषैं देव विमान चढ़ि कौतिग्ग अनंदा॥
तारी दै दै तान तुट्टि नारद नचंदा॥ छं०॥ ५४१॥
गाथा॥ नंचै नारद सिद्धं। वुद्धे वुद्धिवंत सुभट्टाई॥
वंधे वुधिवर भट्टं। सहकारं वीर [2]भट्टायं॥ छं०॥ ५४२॥

सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन।

चौपाई॥ नाम नाम जिम पूरन स्याम। तडित वेन धुक्की भर धाम॥
गर्जित सिंह अपास सवद्द। करनि भज्जि होतें जिन मद्द॥छं०॥५४३॥
गाथा॥ मदंक रीति भग्गा। आकास यौ सद्दयौ सद्दं॥
सो क्रमं वर मंचं। फेरे अंकुस सीसर मारं॥ छं०॥ ५४४॥

अंकुस लगा कर हाथी वढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरवीर लोग आगे वढ़े।

दूहा॥ अंकुस मारि प्रहारि गज। वंधन अध पूजान॥
शस्त्र कड्ढि संमुह भिरन। धनि संभरि चहुआन॥ छं०॥ ५४५॥

कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा।

अरिल्ल॥ उठ्यौ छच कमधज्ज नरिंदह शीश पर॥
मनों कनक दंड पर ज्यूं इंदी इंदवर॥

---

(१) ए० कृ० को०—वलिष्ट। (२) ए. कृ. को.-भट्टाई।

.... ॥

मयन मत्त विच्छुरिय। मोह पारी तजि पग्गिय ॥

धनि निड्डुर रट्ठौर। स्वामि छल स्वामि सु जग्गिय ॥ छं० ॥ ६२४ ॥

गाथा ॥ जग्गिय स्वामित कामं। भ्रमियं वीर वीर विस्तारं ॥

तिम तिम तामस तेजं। सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं ॥ छं० ॥ ६२५ ॥

शशिवृता का व्याह धन्य है जिस में अनन्त वीरों को मुक्ति मिली।

मुक्ती धारन धोरं। पंजर सज्जेव मथ्थनो परयं ॥

बर ससिव्रत्त सु व्याहं। दाहं देहाइ दुष्पनो तजयं ॥ छं० ॥ ६२६ ॥

कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आए।

दूहा ॥ देह दुष्ष कट्ठिय सुक्रम। रन जित्तिय सुग पान ॥

पंच दून पंचो परिग। सुनिय वीर रस पान ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

गाथा ॥ परियं वीरति नामं। सुरति चौदूह नंदह घट्टी ॥

सजले सूर सुधारी। भारी भरनेव भारथं भिरयं ॥ छं० ॥ ६२८ ॥

कमधज्ज के जो वीर मारे गए उन के नाम।

दूहा ॥ परे सूर तिन नाम कहि। वरनत वनै विसेष ॥

देव देव अस्तुति करहिं। नाग रह्यौ सिर सेष ॥ छं० ॥ ६२९ ॥

छंद भुजंगी ॥ परे वीर वीरं तिनं नाम आनं।

पर्यौ पुंज राजं महा (१)वीर थानं ॥

पर्यौ देव सिङ्घंत सादुल्ल वंधं।

मुर्यौ षग्ग नाहीं भयो रंध रंधं ॥ छं० ॥ ६३० ॥

पर्यौ किल्ह कामं जु जद्दौ जुवानं।

तिनं कट्टिया जेन गयदंत मानं ॥

पर्यौ वीर भट्टी कियौ अंग घट्टं।

जिनं मोरिया पंग रा मीच यट्टं ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पर्यौ राइ राइं अजम्मेर सूरं।

(१) ए. कृ. को. वंध।

कायर रन भज्जं तज्जि सलज्जं स्वामि सु कज्जं भर सज्जं ॥
जम दड्ढ सु सज्जें हथ्थह मज्जें छिन्छन छज्जें रिन रज्जें ॥छं०॥५५१॥

घायल सामंतों की शोभा ।

सोरठा ॥ रिन मंते सामंत । घाइ अंग तज्जे घने ॥
मनो मत्त [1]मय मंत । विना महावत रारि मिलि ॥ छं० ॥ ५५२ ॥

शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना ।

छंद भुजंगी ॥ कढै लोह कोहं दुदीनंति वज्जै ।
सजे तामसं राजसा [2]तुक्क तज्जै ॥
[3]कटे कंध सूरं मिले सार कोहं ।
सना हंत सूरं फिरैं [4]वेश सोहं ॥ छं० ॥ ५५३ ॥
उड़ै टोप टूकं बजे सार घंटै ।
मनो अग्ग दंगी लगी बंस फुट्टै ॥
मनों मीन माया जलं सब्ब तुट्टै ।
.... ॥ छं० ॥ ५५४ ॥
असी मंस तुट्टै करं कांस हल्लै ॥
मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
सु भट्टं सु सूरं कुघट्टं सु कीनं ।
उलथ्थें सभेजी हतं जान षीनं ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
चढ्यौ पावसं जद्दवं संभरेशं ।
दलं बद्दलं सद्दलं ते नरेशं ॥
घनं घोर घंटा निसानं दिसानं ।
तिनं भूलियं सब्ब आषाढ मानं ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
झबै दामिनी तेग वेगं प्रमानं ।
पढ़ै भट्ट बीरं बुलै मोर वानं ॥
लगै बाइ बुट्ठं सरं सार गोरी ।
रुधिं नार मानो प्रवाहै स [5]ओरी ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-में । (२) मो.-सात्विक ।
(३) ए. कृ. को.-कढे । (४) ए. कृ. को.-वेस । (५) ए.-आरी ।

छंद चोटक ॥ सु उतारन पारति वीर भटं। घटकै घन नद्द उमद्द घटं॥
भननंकत हथ्थत हथ्थ करं। मनु पाइक पंति पुँतार वरं॥
छं०॥ ६४३॥
किधौं केवल की मुगती मति पान। किधौं रस [1]वीर विश्रम सु मान॥
किधौं करुना करकै किधु काम। मनौं मय मत्त भिरं रस जाम॥
छं०॥ ६४४॥
किधौं विधि वंधन वंधहि जोर। पढ़े दोउ मंच सु वीरह और॥
करै दोउ वीर दुहाइय मुष्य। मनो रवि उग्गव मासम पुष्य॥
छं०॥ ६४५॥
दूहा॥ पुष्य मास रवि उग्गयौ। भूमि न छिचन सीस॥
मनहु वुद्ध वंदन सु बुधि। कारन काम क्रत ईस॥ छं०॥ ६४६॥
क्रतन ईस वल वुद्धि वल। वुद्धि पराक्रम संधि॥
सुबर वीर संग्राम गुन। अति गुन निर्गन वंधि॥ छं०॥ ६४७॥
गाथा॥ वंधे वुद्धि सु धारे। प्राहारे वीर सु भद्दायं॥
निजतं नेह सुधारी। आहारी अंकुरी वीरं छं०॥ ६४८॥
दूहा॥ अंकुरि वीर शरीर गति। सुभट सुथट्ट सुभट्ट॥
अघट घट्ट नह किये परै। परे वीर दह पट्ट॥ छं०॥ ६४९॥

कमधज्ज का स्वेत छत्र देख कर चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधज्ज की सेना में हाय हाय मच जाना।

कवित्त॥ हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट अंवरिय सूर वर॥
मुक्ति कर वल चामंड। करहु गोलक उप्पर धर॥
गोलक तुंबा भग्ग। बंध भग्गै चहुआनं॥
स्वेत छच दिषि सीस। पर्यौ कमधज्ज निधानं॥
घरी एक विभ्रम भयौ। सार सार प्राहार बर॥
जानै कि मत्ति दंतिन कला। कूट मंच धारह सुधर॥ छं०॥ ६५०॥

(१) ए. कृ. को.-वीरा रस, वीर रस।

कमधज्ज के वीर खवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सुवर वीर पावास भिरि । मुक्कि सु धाम धमारि ॥
सो ओपम कविचंद कहि । झुकि कट्टी परिहार ॥ छं० ॥ ५६८ ॥

अरिल्ल ॥ मोह पारि जिन छंडिय सूर । तिरन वीर भारथ्थह पूर ॥
दैव जुड आकत्ति अवुड । कढ़े लोह दुव कोदह जुड ॥ छं० ॥ ५६९ ॥

छंद विराज ॥ कढ़ै लोह वीरं । महा मल्ल तीरं ॥
हको हक्क वज्जी । गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ॥ ५७० ॥
काढें मत्त मंती । अहतं न दंती ॥
वहै लोह सारं । प्रहारंत भारं ॥ छं० ॥ ५७१ ॥
झनंके झनंकी । रथं भान थक्की ॥
हलक्कंत सूरं । वजे देव तूरं ॥ छं० ॥ ५७२ ॥
उतं मंग तुट्टै । [1]धरी दोम लुट्टै ॥
घरो इक जानं । सु भारथ्थ मानं ॥ छं० ॥ ५७३ ॥

दूहा ॥ सुवर वीर पावास पिजि । कट्टी वंकी असि ॥
सोभै सीस गयंद कै । मनुं तेरस कौ ससि ॥ छं० ॥ ५७४ ॥

खवास तो मारा गया परंतु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा।

कवित्त ॥ सुवर वीर पावास । पिझ्झि कट्टी सु वंकि असि ॥
सुभै सीस गज राज । अन तेरसि कि बाल ससि ॥
मुट्ठि चंपि द्रग पानि । नीर बानं सुझारह ॥
मनु सुत्तिय वारुन्न । वंदु वंधे इन वारह ॥
साम रम देन पावरि धनि । स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥
जीरन [2]युमास संदेस सदि । गलह एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ ५७५ ॥

खवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए।

(१) मो.-धरी। (२) ए. कृ. को.-जुगा।

गाथा॥ लग्गिय चास न सूरं। बीरं सुभटाइ मत्तयो दंती॥
जानिज्जै परिमानं। भारथ्थं बीरयो कंती॥छं०॥ ९९१॥

दूहा॥ हल देवत विछरत्त बर। परपिय जंपहि जोग॥
सुबर सूर सामंत गुन। [1]अुग्ग मत्त [2]मति भोग॥ छं०॥ ९९२॥

स्त्रियों की प्रशंसा।

भोग जोग दुअ विद्धि विध। दान भुगति संगाइ॥
चीय कहै नट्टै सु चिय। चियन गती मुह पाइ॥ छं०॥ ९९३॥
चियन गत्ति पावहि पुरुष। धरन धरत्तिय ताम॥
सूर धीर सूरह भिरत। वर विश्राम तजि जान॥ छं०॥ ९९४॥

चौपाई॥ एक एक उट्ठै परिमानं। सुमति मंत मंत्रिय गुरु दानं॥
[3]षग्ग टेकि बाहै बर षग्गं। ज्यों बावन छलि भूमि [4]विगंगं॥छं०॥९९५॥

दूहा॥ भुमि विभग कीनिय सुद्दत। देवत्तह प्रति देव॥
मद्दन रंभ मच्यौ सु भर। गुन अम न ग्रभ भेव॥ छं०॥ ९९६॥
मरन सीस मुक्यौ सु वसु। रस पारायन देव॥
दुतिय सुतिय दुति बैर तिन। भ्रम भग्गा जुग भेव॥ छं०॥९९७॥
अद्दत दत्त विभ्रम [5]भइग। हय गय दुल चतुरंग॥
चाहुआन कमधज्ज सों। भय बीरा रस भंग॥ छं०॥ ९९८॥

गाथा॥ भौ बीरा रस भंग। जंग जुग तीय बीर सु [6]भट्टाइं॥
सद्दिर सुद्दिर सुघटं। साठट्ठई घट्टयो भंगं॥ छं०॥ ९९९॥

रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनों सेनाओं के बीर विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए।

मुरिल्ल॥ ठट्ठ सेन [7]भग्गौ चतुरंगह। लुथ्थिथ लुथ्थिय आलुथ्थिय विभंगह॥
कल किंचित किंचित रस भारी। इते अस्तमित भानं [8]सारी॥छं०॥९७०॥

गाथा॥ अस्तमितं [9]बर भानु। पायानौ परम संतोषं॥
जानिज्जै जस बंधुअं। नव चंदनं तिलकयौ दीयं॥ छं०॥ ९७१॥

---

(१) ए.कृ. को.-स्वर्ग (२) को.-मानि। (३) मो.-खडग। (४) मो.-वगंगं।
(५) मो.-ए-भइय। (६) ए. कृ. को.-सुट्टयं।
(७) ए. कृ. को.-भगौं (८) ए.-सारं। (९) ए. कृ. को.-मांनु सु भानु

सुनति मत्ति पारस फिरि। सुभट सेन कमधज्ज॥
एक लष्य दल लष्य में। धनि सामंत सु रज्ज॥ छं०॥ ५८१॥

कमधज्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल बढ़ा।

गाथा॥ लग्गा दल बल कलनं। सिंधुर असमान सीस गोरनयं॥
बल बध्या सामंतं। कायर कर षेव सूर क्रम [1]छलयं॥ छं०॥ ५८२॥

दूहा॥ [2]बल छचिय मंचिय तरन। भिरि भंजै गज दंत॥
रंभ अरंभन ढूंढए। अच्छे अच्छरि कंत॥ छं०॥ ५८३॥
झुकि भारी भगवान भिरि। राम कुलह कुल चंद॥
सार सार संमुह [3]भिन्यौ। स्वामि सु मेटन दंद॥ छं०॥ ५८४॥
रघुबंसी कामधज्ज झुकि। बंध सु पंग नरिंद॥
सो श्रोमें देखो सबर। कहि तत्तौ कविचंद॥ छं०॥ ५८५॥
बसि कीनौ सामंत जुरि। बल अबुद्धि बुद्धि पेन॥
छिति संग्रह संग्राम किय। बल बलिष्ट बल तेन॥ छं०॥ ५८६॥

गाथा॥ डंकी काल उच्छारे। उच्छारंत मत्त नो हथ्थी॥
मत्ती मत्त सुमंतं। सो दिट्ठी भारथं नथ्थी॥ छं०॥ ५८७॥

कवित्त॥ कहै मात बड़ कोय। सुरत मत्ती अप्पारै॥
दुति पहार संभार। बीर बीरह [4]बिचारै॥
रुधिर बूंद कंदल। परत कंदल परि उट्ठै॥
सार धार निरधार। सार धारह असि बुट्ठै॥
चावंड राइ दाहर तनौ। तिन बोहिथ चढ़ि उत्तरै॥
बीजलह दाग तिलकं मिसह। अदग दग्ग नहि बिस्तरै॥छं०॥५८८॥

गाथा॥ सो दग्गंत तिलक्कानं। सो दिष्टाय सारयो सरयं॥
अपकित्ती मिस दग्गं। ना लग्गंत तासयं कुसलयं॥ छं०॥ ५८९॥

जिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता।

दूहा॥ तिन कुल दग्ग न लग्ग बर। जिन कुल बल [5]चावंड॥
दोष रहित अच्छरि अमी। किए पंड पापंड॥ छं०॥ ५९०॥

(१) मो. छलनं। (२) ए. कृ. को.-छल। (३) ए. कृ. को. पन्यौ।
(४) मो.-सुविचारै। (५) ए. कृ. को.-चामंड।

सहस्त्रों सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता।

गाथा ॥ जै जै घर चहुआन। एकं होइ सध्ययौ सूरं ॥
को रष्यो परमानं। अरि रष्यै कढ्यौ मच्छी ॥ छं० ॥ ६७९ ॥

चौपाई ॥ कोटि मभ्भि अरि होइ प्रमान।
ता भंजै निश्चै चहुआन ॥
हरि ग्रसित्त जाइ पहु इंद।
रुकमनि व्याह बरिय गोविंद ॥ छं० ॥ ६८० ॥

गाथा ॥ गोविंदं प्रति व्याहं। सनमानं सूरयो इत्ती ॥
अप रष्यै अरि जुद्धं। रष्यै स्वामि मरनयौ अप्पं ॥ छं० ॥ ६८१ ॥

चहुआन के सामंत स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है।

दूहा ॥ अप्प इत्त इह सूर किय। सूर इत्त चहुआन ॥
स्वामि रहै लज्जै जलनि। भौ इत [1]इत्तिय पान ॥ छं० ॥ ६८२ ॥

गाथा ॥ कालिंदी तन स्यामं। लग्गो नथ्थि अगनतं स्यामं ॥
भय अवि इत्तिय तामं। अन्यं जानि त्तत्तयो सारं ॥ छं० ॥ ६८३ ॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जांय हम लड़ाई करेंगे।

अरिल्ल ॥ त्तत्त सार प्रति प्रत्ति प्रमानं। जाहु राज दिल्ली चहुआनं ॥
गुन बद्धे हम बद्धे सत्तं। दुष्य मानि सुनि सुनिय विरत्तं ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य्य नहीं हो सका। मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता।

---

(१) मो.—वृतपौ।

[1]बाल स्वामि अग्या। विभंग चित ओपम चंदं ॥
चिय कठोर निर्द्दन्न। क्रमी अग्या गुन मंदं ॥
करतलह सु कवि कित्तिय सुवर। पथ यक्कै आजान जिम ॥
भारथ्थ वीर पारथ्थ जिम। अग्गिवान सामंत [2]भ्रमि ॥छं० ॥५९८॥

घोर संग्राम का वर्णन।

छंद हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद। कवि पढ़ै भारथ चंद ॥
भ्रम भ्रमहि बीर प्रकार। ज्यों चक्र चक्रिय धार ॥ छं० ॥ ५९९ ॥
घरि घट्टै एक विघट्ट। वर बीर भंज्या पट्ट ॥ छं० ॥ ६०० ॥
दूहा ॥ पट्टन भंज्या वीरवर। ज्यों दधीच सु अस्ति ॥
देवकाज वज्जी लियौ। सोइ वर तत्त सवत्ति ॥ छं० ॥ ६०१ ॥
कवित्त ॥ वस चत्तीय प्रकार। घाइ वज्जै घट घुम्मै ॥
मार मार उच्चार। सार सारहु वर झुम्मै ॥
एक मार संमार इक। सु मारति तै मारै ॥
एकं भार उभार। एक जारति उभ्भारै ॥
घरि एक तरंगनि जक्कि जल। कमल जानि नंच्यौति सर ॥
सामंत सूर सामंत वल। पहर वज्जि वज्जे पहर ॥ छं० ॥ ६०२ ॥
दूहा ॥ पहर वज्जि पर पहर वर। पहर पहर आवत्त ॥
मत्त दंत मदह सुकै। वान राज सावत्त ॥ छं० ॥ ६०३ ॥
वान राज सावत्त दुति। छिति छत्री आकार ॥
धन्नि सूर जे अंग में। धनि [3]झिल्लै सु दुधार ॥ छं० ॥ ६०४ ॥
गाथा ॥ दुद्धार सार सहियं। हय गय नर बीर बीरायं ॥
जुज्झिय धीमति धीमं। सा वीरं बीरयो राजं ॥ छं० ॥ ६०५ ॥
बीरं राजिय बीरं। बीरं बीरं सु बीर सुप बीरं ॥
बीरं होइ सबीरं। सो बीरं उव्वियं नथ्थी ॥ छं० ॥ ६०६ ॥
दूहा ॥ नथ्थह मुग्गी वीर वर। वल बंकम घट घाइ ॥
घरी एक आचिज्ज भौ। जोति मग्ग विलभाइ ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) मो.-ज्यौं वाजि। (२) ए. कृ. को.-भरि।
(३) मो.-झेलै।

ता छची कुल लज्ज। छत्र धरि सिर हति [1]लज्जै ॥
जं होइ प्रात दिष्षौ सकल। मद्दन रंभ इत्तौ करौं ॥
चहुआन चिंत चिंतह सुरा। बर भारथ गुन विस्तरौं ॥ छं० ॥ ६८९ ॥

गाथा ॥ विस्तारि गुनयो प्रातं। रत्तं रत्त सूर बीरायं ॥
चावद्दिसि बर वीरं। सा धीरं मत्तयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९० ॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय।

दूहा ॥ मत्ति बीर संमुह [2]भिरत। कठिन शस्त्र अति पान ॥
भान पयानह दीह गुन। लोह पयान पयान ॥ छं० ॥ ६९१ ॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना।

चोटक ॥ बिन भान पयानति लोह कढ़े।
जल मत्तिय रत्तिय बीर पढ़े ॥
दोउ बीर दुवं दिशि धूंध धरी।
कलहं तत केलिय ता उघरी ॥ छं० ॥ ६९२ ॥

रण मदमाते निढ्ढर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना।

गाथा ॥ अंकुर बीर सुभट्टं। अघटं घट्टाइ क्रोधयो कलहं ॥
हय मुक्या चलि बंधी। निढुर सथ्यव सठयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९३ ॥

शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े।

दूहा ॥ बीर बीर बीराधि बर। [3]कढ़े लोह तजि छोह ॥
सूर बीर सामंत गति। नहिं माया नहिं मोह ॥ छं० ॥ ६९४ ॥

तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ जिते सूर पत्ती। लगै लोह तत्ती ॥
नचे सूर छत्ती। उड़े काल पत्ती ॥ छं० ॥ ६९५ ॥

---

(१) मो.-भज्जे। (२) मो.-भिरन। (३) मो.-कढ्ढि।

पारथ पारत्थिय सुबृत्त। सारथ्थिय चहुआन ॥
मानहु वीर समुद्र गति। तिरन मते भ्रम पान ॥ छं० ॥ ६१९ ॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा।

भ्रम्म यार सामंत वर। उदै अस्त भौं भान ॥
बहुरि पंथ पारस फिरिय। बल न घट्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६२० ॥

दोनों सेनाओं के वीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत पवास के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया।

कवित्त ॥ बल छंड्यौ न विराज। सूर उभ्भै दुअ पासं ॥
जंघारो रा भीम। स्वामि सन्नाह सुभासं ॥
दुहु वाहां सामंत। दून दह दहु अधिकारिय ॥
अमर बंध पावास। पग्ग पोल्यौ पिक्खि सारिय ॥
जंघार राव जोगिंद वर। भुगति मुगति अप्पन अनिय ॥
तामस [1]न बुझ्यौ दोउ सेन कौ। बजि निसान आभा धुनिय ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

गाथा ॥ आभ सुनिय सु देवो। बज्जे साराइ मुंदरे बज्जे ॥
नीसानं निसि सारं। साहारं [2]पारयं होई ॥ छं० ॥ ६२२ ॥

दूहा ॥ पर पपरत्त पवित्त गति। रा निड्डुर राठौर ॥
बंधु दोय जान्यो नहै। स्वामि ध्रंम पति मौर ॥ छं० ॥ ६२३ ॥

स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है।

कुंडलिया ॥ तजिय पुंज पावास वर। तिरन तुंग तन अप्प ॥
चरन लग्गि बंछ्यो मरन। सो सांइ भ्रत तप्प ॥
सो सांई भ्रत तप्प। जन्म जानत जंजारे ॥

(१) ए. कृ. को.-तज्यौ न। (२) मो.-पारखा।

शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शास्त्राघात करते हुए युद्ध करना।

रसावला॥ पंप छुट्टैं ननं। सूर मत्त धनं॥
घाव वज्जैं घनं। टूक टूकं तनं॥ छं० ॥ ७०७ ॥
आज इक्कं मनं। बान नंसं [1]धनं।
भीतकं विद्घनं। कीय लीयं पनं॥ छं० ॥ ७०८ ॥
जद्ध झुझ्झै बनं। जानि कुल्लालनं॥
षोदि कढ्ढै गनं। देव चढ्ढि विमनं॥ छं० ॥ ७०९ ॥
पेषि इक्कं मनं। कुहक बानं घनं॥
नारि छुट्टै पनं। ....॥ छं० ॥ ७१० ॥
गज्ज तें गग्गनं। सार वे सग्गनं॥
सिद्धता मग्गनं। लोह ज्यों लग्गनं॥ छं० ॥ ७११ ॥
इक्क इक्कं गनं। कुंभ हथ्थी [2]छिनं॥
रुद्धि धारा घनं। दुद्ध मानों थनं॥ छं० ॥७१२ ॥
दोड पट्टै दनं। ओप इभ्भै इनं॥
इष्प वेसं मनं। मन्न गिज्जं गनं॥ छं० ॥ ७१३ ॥
गोरियं छन छनं। टूक होयं रनं॥
सूर ह्वै तन तनं। नंमतं फन फनं॥ छं० ॥ ७१४ ॥
वार पारं जनं। रोस चढ्ढै रनं ॥
लग्ग गे बंभनं। रुंड केसिं भनं॥ छं० ॥ ७१५ ॥
गिद्ध सिद्धं गनं। टारि रषषै तनं॥
दद्धि ज्यों उप्फनं। अस्सि वाहै बनं॥ छं० ॥ ७१६ ॥
मीन जातं पनं। पिप्पनं चिम्मनं॥
कौन को चिम्मनं। भूत प्रेतं धुनं॥ छं० ॥ ७१७ ॥
जुग्गनी जित्तनं। पत्त भ्रत्तं तनं॥
नारदं नंचनं। मुत्ति मै मंचनं॥ छं० ॥ ७१८ ॥
अंमरं गंमनं। विष्टता सुंमनं॥ छं० ॥ ७१९ ॥

(१) मो.-वनं। (२) ए. कृ. को.-छिन, विन।

जिनं स्वामि भ्रंमं तज्यौ सिंध पूरं ॥
पर्यौ अंग अंगं सु जर्जोन रायं।
लगे पंच दूनं महा वीर घायं ॥ छं० ॥ ६३२ ॥
परे पंच बंधो बलीभद्र वीरं ।
जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ॥ ६३३ ॥

कवित्त ॥ परत देव वर क्रांन । सरन रष्पन सांई वर ॥
परि मुष रन पुंडीर । सार सारंग देव धर॥
पर्यौ वीर बलिभद्र । जात पाँवार पवित्रं ॥
धार धनी चढि धार । सलष लष्पन दुति मंचं ॥
लायन्न सिंह भुज पाइ बर । अरिन पाइ उठाइ लिय ॥
धनि धन्नि सूर सामंत वर । जुग जीरन जीरन सुजिय ॥छं०॥६३४॥

शूरवीरों की प्रशंसा ।

दूहा ॥ जुग जीरन जीरन सुवर । चरन कित्ति सा किद्ध ॥
सुवर वीर सामंत बर । गत्ति न पुज्जै सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३५ ॥
सिद्ध न पूजै गत्ति तिन । छाया मोहन माय॥
इन छाया मंडी तहां । भ्रंम छांह रहि छाइ ॥ छं० ॥ ६३६ ॥
भ्रंम छांह रहि छाइ बर । करिय सूर सामंत ॥
सो करनी करिहै न को । करिय वीर गुन मंत ॥ छं० ॥ ६३७ ॥
गुननि मंत गंभीर गुर । जै जै सद्द सु सिद्ध ॥
बरन बिहुसि बरनिय बरहि । रंभ अरंभन सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३८ ॥

गाथा ॥ रंभा अरंभ वरयौ । अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनौ ॥
केकी गवनी कित्ती । साकित्ती बंधयौ रष्पी ॥ छं० ॥ ६३९ ॥

चौपाई ॥ बढ्ढि रष्पि कित्तिय परिकार । सार सिंध उत्तर बन पार ॥
जोग सिद्ध जोगाधिय अंत । बजि डक्क डमरु उमया कंत ॥छं०॥६४०॥
उमा कंति जोगाधि सु जानै । वीर सगुन बीरा रस मानै ॥
जै जै सद्द भयौ तिन वार । राज द्वार घरियार विभार ॥छं०॥६४१॥

दूहा ॥ राज द्वार घरियार बजि । सार बज्जि रत्ति सार ॥
सूर सुमति सामंत की । वीर उतारन पार ॥ छं० ॥ ६४२ ॥

क्रत काम काज सांई विभ्रम। दल दंतिय पंतिय[1] गमै ॥
सामंत स्रूर सांई विभ्रम। रोम रोम राजी [2]भ्रमै ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की।

दूहा ॥ रोम राज राजी भ्रमहि। [3]थोर थनी ढुंढि बाल ॥
उतकंठा उतकंठ की। ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

साटक ॥ साता से उतकंठ रंभति गुना रंभा अरं भावरं ॥
संधं बिद्धि सु सुद्ध कारन मिते देवंगना सुंदरी ॥
जा बंदे मिति चंद कारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
पाषंडं तजि लीन स्रूरति बरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ॥ ७२६ ॥

सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूंगा।

गाथा ॥ आरंभं प्रारंभौ। उतकंठा किंनयौ हतयं ॥
साधा धरी सु धरयं। रन छुट्टै तीनयौ पनयं ॥ छं० ॥ ७२७ ॥

यह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना।

मुरिल्ल ॥ बालप्पन जुब्बन पन बीर। दई बीर बडपन्नह [4]धीर ॥
बडपन्नह मति सु तजि डिढाइ। धंनि लई तिहुं पन्न बड़ाइ ॥ छं० ॥ ७२८ ॥

दूहा ॥ बालप्पन जुवपनह गति। कथ तिय पनहति काज ॥
भर कट्ठे न्रप राज गुन। नह चल्लै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७२९ ॥

पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए।

नह चल्लै पृथिराज रिन। लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
चय जोरै कर हथ्थ दो। चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ॥ ७३० ॥

---

(१) मो.–गमें, ग्रसें। (२) मो.-भ्रमें।
(३) मो.-घोरि। (४) मो.-भीर।

दूहा॥ धारा हर बित्यौ सुधर। चर चरिष्ट चतुरंग॥
रा निड्डुर रट्ठौर बर। रुप्यौ पेत भ्रत भंग॥ छं० ॥ ६५१ ॥

गाथा॥ पंगुर पाइ सुधारं। पंगु भयौ चित तिन बीरं॥
नह पंगुर कर नैंनं। पंगुर नां सूरयौ बैनं॥ छं० ॥ ६५२ ॥

दूहा॥ बयन सूर चंचल भइय। निहचल पग सिर नाग॥
अदग दग्ग भंजै सकल। करत अदग्ग न दाग॥ छं० ॥ ६५३ ॥
अदग दग्ग मग्गिय सु क्रत। बर बीरा रस पान॥
छित्ति छित्ति स्वामित्त गति। सु कति सु अप्पन वान॥ छं० ६५४ ॥

कवित्त॥ घरी इक्क इक रंग। रंग सबरथ्थ बिछोरिय॥
पगी जानि पारथ्थ। जेम दरिया हिल्लोरिय॥
यों [1]पग धपि दोउ सेन। सूर सामंत विलोकिय॥
मनों मत्त उठि द्रष्टि। पिय बीयोग बिसोकिय॥
झुंमयौ धार धारह धनी। सुनिय कित्ति मित्तह पनौ॥
सामंत सूर सामंत गुन। सु [2]वर बीर सत्तह सुनौ॥ छं० ॥ ६५५ ॥

छंद रसावला॥ सार बुट्ठी अनी। मत्त मत्तं धुनी॥
कूह मची घनी। अंत तुट्टै रनौ॥ छं० ॥ ६५६ ॥
बीर बीरं अनी। देव बज्जी धुनी॥
नेह भंज्यौ पनी। काल [3]जैसो पनी॥ ६५७ ॥
बीर बीरं बनी। रत्त रंगं रनौ॥
सार सारं धुनी। जोति मग्गं जनौ॥ छं० ॥ ६५८ ॥
पिंड सारे घनी। कब्बि [4]चंदं तनौ॥
....। मुक्ति [5]लुट्टै फनी॥ छं० ॥ ६५९ ॥

दूहा॥ फनि मनि लुट्टन काज गुर। भौ गुर इत गुर देव॥
सार सूर संरुहौ भिरिय। बरन पथ्थ सुष सेव॥ छं० ॥ ६६० ॥

कमधज्ज का छत्र गिरने से शूरवीरों को भय न हुआ।

(१) मो. पग्ग। (२) मो.-बीर, बीर।
(३) मो. जैसें, जैसे (४) ए. कृ. को.-चित (५) मो.-लुट्टैं।

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है।

दूहा ॥ तूं लज्जी सची चवै। तत लगि ध्रंम प्रकास ॥
आरत्तह गुन भ्रत्त किय। जोग सुद्दंदा चार ॥ छं० ॥ ७३८ ॥

इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उस के स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे।

छंद पद्धरी ॥ निब्बन्यौ बाद वै वर [1]प्रमान।
मानहि न वत्त लज्जी निधान ॥
वै आहु जाहु तन रूप छंडि।
जिन चलै लजज लज्जी चिपंडि ॥ छं० ॥ ७३९ ॥

कहि वीर राज आए स वीर।
मानहु कि छुट्टि धन वर सरीर ॥
आभास भार तुट्टैति अंग।
जोर वरज हर मत्तीत जंग ॥ छं० ॥ ७४० ॥

क्रतत केलि क्रत करहि काम।
सोभहति सूर दक्षिन ति[2]ताम ॥
अति स्वामि ध्रंम नह वाम मग्ग।
लग्यौ न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

प्रथिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान।
अरि भजत मनहुं तिन अग्गि जान ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था।

दूहा ॥ अग्गि पान सामंत बल। अत धीरत्त न जोध ॥
शस्त्र लग्गि लग्गै न मन। तउन पच पति जोध ॥ छं० ७४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रकांम। (२) मो.-नाम।

चंद्रायना ॥ दुरि निसान गत भान भइग बर।
सिंधु संपतौ जाइ तिमिर चढ़ गुर ॥
कुमुद विमुद अंकूर सूरातन धरियं।
मानौ तम को तेज सु तत्त उधरियं ॥ छं० ॥ ६७२ ॥

[1]मुरिल्ल ॥ बर भान संपतौ थान गुरं। [2]सरसीरुह उदित मुदित बरं ॥
बर बीर कमोदनि की सु गती। सु भए रिसिराज उदोतपती ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

सूर्योदय से भ्रमर चकवा चकई और शूरवीरों को आनन्द होता है।

दूहा ॥ निसि गत बंछे भान बर। भँवर चक्कि अरु सुर ॥
मंतह मत्त पयान गति। बर भारथ्य अँकूर ॥ छं० ॥ ६७४ ॥

रात्रि को संयोगिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करती है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती।

कवित्त ॥ कुमुद उघरि मुँदिय। सु बंधि सतपत्र प्रकारय ॥
चकिय चक्क विच्छुरहि। चक्कि शशिहत्त निहारय ॥
जुवती जन चढ़ि काम। जाहि कोतर तर पंथी ॥
अहत हत्त सुंदरिय। काम बढ्ढिय बर अंषी ॥
नव नित्त हंस हंसह मिलै। विमल चंद उग्यौ सु नभ ॥
सामंत सूर न्रप रष्षि कै। करहि बीर वीश्राम सभ ॥ छं० ॥ ६७५ ॥

गाथा ॥ विश्रामं वर लैही। सूरं सूरयौ धरयं ॥
धायं अंग विश्रंगं। जानिज्जै [3]कैतु यो लग्गी ॥ छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ तम वढ्ढिय धुंधर धरा। परप पयं पन मुष्प ॥
तम्म तेज चावद्दिसह। जुभझनि भग्गि अरुष्प ॥ छं० ॥ ६७७ ॥
जुझझ भग्गि आरुघ्घ बर। रोकि रहिग बर स्याम ॥
सुबर सूर सामंत गुन। तम पुच्छे न्रप ताम ॥ छं० ॥ ६७८ ॥

(१) मो.-त्रोटक। (२) ए. कृ. को.-सरुही रुह उद्दित जर।
(३) ए कृ. को.-केन, केत।

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधज्ज क्यों जीवित जाने पावे।

चौपाई ॥ नह सज्जै पंजर प्रतिमान। कहै सूर निहचै प्रतिमान ॥
वीरचंद बंधव कमधज्ज। जीवत स्वामि जाइ क्यों लज्ज ॥छं०॥७५२॥

गाथा ॥ हम बहुलं वेसतयं। बंधे तेग मुक्कि न्रप जायं ॥
जीवत सुनि कमधज्जं। ना मुक्कै लष्षयो वलयं ॥ छं० ॥ ७५३ ॥

मुरिल्ल ॥ लष्ष लष्ष वर सुभट सु भट्टह।
अघट घट्ट सु घटै न घट्टह ॥
सुव्रत वीर छत्रिय छिति राजै।
मनो इंद घन मद्धि विराजै ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

गाथा ॥ यों रज्जै न्रप भरयौ। सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥
उग्गं तौ रवि मानं। यों रत्ताइ रत्तयो मुषयं ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे।

दूहा ॥ सत्य सु तुम्भ कह्यौ सु सब। सुभट भट्ट वड़ भृत्य ॥
क्यों न जाइ जीवत घरह। कहा करौगे मृत्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

आतातार्इ का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा।

छंद भुजंगी॥ तबै उच्चर्यौ अत्तताइ अभंगं। सज्यौ गैन सीसं जुर्‍यौ जुद्ध रंगं॥
हनों याहि भंजों सु गंजो पलानं। करों षंड षंडं जु मंडै बलानं॥
छं० ॥ ७५७ ॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना।

तबै गज्जि क्रम्यौ गुरं चाहुआनं। अगे जोगिनी जग्गिक्रम्यौ गुरानं॥
क्रम्यौ सथ्थ जद्दो स जामानि तामं। दुअं बद्ध हड्डा चले बंध ठामं॥
छं० ॥ ७५८॥

मिली रारि अंकं दुअंकं प्रमानं। परे जादवं राइ अरु चाहुआनं॥
कहै भूलि भारत्थ इत्तं सपूरं। उठे कांह्लं हक्कि ते कौन सूरं॥
छं० ॥ ७५९ ॥

कवित्त ॥ दुष्य मानि सो रत्त। सुनै सामंत सूर वर ॥
[1]चंद उडग्गन काम। सर्यौ कहुं दिष्षि सूर नर ॥
भान काम नन सरें। अरुन जो होइ तेज वर ॥
काम राम [2]नन सरैं। हनू [3]कूचौति लंक धर ॥
नन सरैं काम मंगल सु विधि। जो मंगल आदत्त तप ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। कढ्ढि मोहि भुम्भहुति अप ॥ छं० ॥ ६८५ ॥

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूं यह मैंने नहीं पढ़ा है।

दूहा ॥ मुहि कढ्ढिरु तुम रहौ वर। जियत जांहि उन थान ॥
ऐसी रीति अरीत वर। पढ्ढी नह चहुआन ॥ छं० ॥ ६८६ ॥

गाथा ॥ जम्मन मम्भिम्म सुरंगं। सो जंपेव सूर तुम तत्तं ॥
दिन भौ रव संग्रामं। [4]सम्मान दारेति एव गसं ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया।

विष लग्गा न्रप वैनं। हाला हलयो तत्तयो सूरं ॥
उत्तर दिय नह राजं। गाम निस भा वुद्धि जन वत्तं ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

कवि चंदादि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊँगा।

कवित्त ॥ बार बार भर कहिग। राज माने न तत्त [5]मत ॥
बीर चंद ता अग्ग। चलै प्रथिराज हारि गत ॥
मो भंजै अरि गज्ज। मोहि [6]भंजै अरि भंजै ॥

(१) मो.-चंद उगन काम सर्यौ। (२) ए. कृ. को. तन। (३) मो.-उचौत।
(४) मो.-समान दारें निय वगसं। (५) ए. कृ. को.-वत। (६) मो.-गंजै।

पऱ्यौ राव मोरी मुरयौ अव्व सथ्थं। ननं पाइ चल्लै चलै हथ्थ वथ्थं ॥
परे सूर हक्केव धक्के कलेवं। सिरं जुद्ध आनुद्ध देषंत देवं ॥
छं० ॥ ७७० ॥

करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं। गजैं बीर सूरं सु आवद्ध धक्कं ॥
चलै श्रोन अंमान पूरं प्रनारं। अदभ्भूत माया न रच्यौ सु भारं॥
छं० ॥ ७७१ ॥

तवै अत्तताई लग्यौ लोह रस्सं। भगी फौज कमधज्ज दिस्सं विदिस्सं॥
परे सेत सेते न थानं सु दिस्सं। लगै अच्छरी माल नभ्भं सु जिस्सं॥
छं० ॥ ७७२ ॥

अनंछित्त अंगं बरं अत्तताई। भई जीत चहुआन प्रथिराज राई ॥
छं० ॥ ७७३॥

रण में अगनित सेन को मरा देख कर निढ्ढर का कमधज्ज से कहना कि अब तूं किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया।

दूहा ॥ परे सुभर दोऊन दल। निढ्ढुर देष्यौ वंध ॥
कोन भुजा बल जुध करै। सुनि कमधज्ज अमुंद्ध ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
बाला लै प्रथिराज गय। गहिय बग्ग कमधज्ज ॥
रोस रीस बिरसोज भय। रह बाजे अनबज्ज ॥ छं० ॥ ७७५ ॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ।

कवित्त ॥ अद्ध कोस न्टप अग्ग। बीर ठढ्यौ करि ठड्डौ ॥
मद समूह गजराज। छंडि पट्टै बल गड्डौ ॥
लाज बंधि संकरिय। बीर बंध्यौ सु अष्ट कसि ॥
अरिन बौर छंडै न। क्रन्न मंडै दिलीय दिसि ॥
मनमत्थ महावत बंधि अति। मन मत्तौ उन को धरै ॥
घन घाइ रुधिर छुट्टे परे। अमर पुहप पूजा करै ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

[1] जुटे जोध पत्ती। उडी रेन गत्ती॥
मह्रा वेन तत्ती। कला कोटि कत्ती॥ छं०॥ ६९६॥
म्रवे ग्राव गत्ती। सुरं पंच छत्ती॥
मचे कूह मत्ती। पचे रोस रत्ती॥ छं०॥ ६९७॥
करे घाव कत्ती। इसे सूर चित्ती॥
शिर फल्ल सत्ती। घुमें घाइ घत्ती॥ छं०॥ ६९८॥
भजै भीम मत्ती। हनूमान जत्ती॥
अनाभूत अत्ती। दिये दारु दत्ती॥ छं०॥ ६९९॥
रुधिं धार [2] रुक्कं। भभक्कै भभक्कं॥
धका धीग धक्कं। बकै मार बक्कं॥ छं०॥ ७००॥
इसे चित्त अक्कं। छुटे मत्त छक्कं॥
डकारंत डक्कं। चिलोकंत हक्कं॥ छं०॥ ७०१॥
मनो मोह यक्कं। हकी हक्क बक्कं॥ छं०॥ ७०२॥

युद्ध करते हुए वीरों की प्रशंसा।

कवित्त॥ हको हकि बजिय प्रकार। सार बज्जै सु वीर वर॥
सु बुधि बुद्ध आवुद्ध। मत्त लग्गै असि वर अर॥
इकत रुद्ध आरुद्ध। नंद नारद अधिकारिय॥
रंभ सिंभ आरंभ। सिद्ध बुद्धं दै तारिय॥
धनि धनि सूर दिन धनित बल। छल छचिय अंकूर रजि॥
कलहंत काल कालह विषम। सुबर वीर वीरत्त रजि॥ छं०॥ ७०३॥

दूहा॥ बीर रजिज बीराधि भर। बलिय वीर गन सज्जि॥
सुबर सूर सामंत के। मंत कलह तुटि बज्जि॥ छं०॥ ७०४॥
मंत कलह बज्जिय तुटहि। घटहि अघट तुटि मंस॥
सुबर सूर सामंत कौ। बर उड्डै तन अंस॥ छं०॥ ७०५॥
हंसति उड्डहि अंस दै। कंसत केसिय प्रान॥
बर पंपिय पावै न जन। बर छुट्टै किरवान॥ छं०॥ ७०६॥

(१) यह छंद मो. प्रति में नहीं है। (२) मो.-रुक।

युद्ध में कमधज्ज और यद्धव को जीत कर शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुंचे।

चाहुआन चतुरंग जिति। निगम बोध रहि राज॥
वर शशिवृत्ता जित्तिगो। धाम सु ढिल्ली साज॥ छं०॥ ७८४॥

शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे।

गाथा॥ तपय सु नरपति ढिल्ली। दीह दीहं पञ्चरे राजं॥
जं मंगे क्रत कामं। सा देवं सोइयं देहिं॥ छं०॥ ७८५॥
दीहं पासा रूवं। सारूवं भूपयो सव्रं॥
जे नष्पै ते मंगै। देवानं देवयो दीहं॥ छं०॥ ७८६॥

दूहा॥ सारिन सालै पंस वर। सारि पंस वर भोग॥
सुवर सूर सामंत लै। करि ढिल्ली प्रति जोग॥ छं०॥ ७८७॥

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बादशाह से वैर बढ़ा।

जै जै जस लड्डौ सुवर। वैर न्टपति सुरतान॥
सुवर वैर वर वड्डयौ। सुवर जित्ति चहुआन॥ छं०॥ ७८८॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था।

कवित्त॥ भई जीति चहुआन। अरिय भंजे अभंग भर॥
जै जै सूर बषान। देव नंषैं सुमन्न वर॥
लै शशिवृत्ता राज। अप्प दिल्लीय संपत्तौ॥
अति तोरन आनंद। चित्त रत्तौ मन मत्तौ॥
अरि अवनि कोन मंडै मनहु। षग्ग दाग अरि षंडइय॥
कवि चंद दंद दारुन कयहि। इक अडंड करि डंडइय॥ छं०॥ ७८९॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके शशिवृता कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण॥

———:o:———

शूरवीर स्वामिकार्य्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व्व कर्म्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं।

कवित्त ॥ सूर संधि विधि करहि। क्रम्म संधी जस तोरहि ॥
 इक लष्य आहुटहि। एक लष्य रन मोरहि॥
 सुवर वीर मिथ्या। विवाद भारथ्थह पंडै ॥
 [1]विच्चि बीर गजराज। वाद अंकुस को मंडै ॥
 कलहंत केलि काली नियम। जुद्ध देह देषी सु गति ॥
 सामंत सूर भीषम बलह। स्वामि काज लग्गे ति मति ॥ छं० ॥ ७२०॥

स्वामिकार्य्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है।

दूहा ॥ [2]स्वामि काज लग्गे सुमति। षंड षंड धर धार ॥
 हार हार मंडै हियै। गुथ्थि हार [3]हर हार ॥ छं० ॥ ७२१ ॥

गाथा ॥ सिर तुट्टै धुर तारं। [4]लारं तुट्टि वीरयो सिरयं ॥
 धर तुट्टै प्राहारं। सा वज्जै तारयं तारं ॥ छं० ॥ ७२२ ॥
 तारं तार प्रहारं। देवल दरियाइ झल्लरी वज्जं ॥
 वज्जं ते सिर सारं। प्राहारं पंच घट्टि कांई ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला को पछेलते जाते थे।

कवित्त ॥ घटिय पंच दिन घय्यो। उमरि आरब्भ पुंज पिरि ॥
 एक दिना दोउ सेन। मोह छंड्यौ क्रम निक्करि ॥
 बान गंग पत्तयौ। वीर ग्यारसि दिन सोमं ॥
 सूर धीर सामंत। सूर उड्डै रन रोमं ॥

(१) ए. कृ. को.-वेचि। (२) मो.-पति काज लग्गे तिमत।
(३) मो.-हाथ। (४) को.-लारयं।

कवित्त ॥ सुबर बीर कम्मदह। पंग करि अप्पि सु जंपिय ॥
वह दुचित्त संजुत्त। लज्ज आजुत्त प्रकंपिय ॥
सुर सुकीय कर पंग। नैन नीचे न्टप दिट्ठौ ॥
तब पहु पंग नरिंद। कुशल जानौ न गरिट्ठौ ॥
पुच्छौ सु बात इह करिय तम। जानि सोक कह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन भिरन। मरन कहौ मारन पुनिश ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दुज्जन दवने पीर के। वज्जै पै वर केक ॥
भर भीरौ रहि अंक के। मरन सरन के केक ॥ छं० ॥ ५ ॥

कुंडलिया ॥ तब पहु पंग नरिंद प्रति। दूत सु उत्तर जप्पु ॥
इह अपुब्ब कथ सुनि न्टपति। जीतें हार सु अप्पु ॥
जीतें हारि सु अप्पु। देषि कह्यौ चहुआनं ॥
ढिल्ली वै अधकोस। बीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ। अद्ध भर पारि असुर जब ॥
दिषि निढ्ढुर कमधज्ज। वग्ग सेना पंचय तब ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ देवगिरि गढ़ घेरि फिरि। [1]हैं मुक्यौ न्टप काज ॥
मतौ मंडि रा पंग पै। वे [2]पुक्करि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ इह कहंत न्टप पंग सु अष्षी। वियौ दूत न्टप अंषन दष्षी ॥
दुचित चित्त मुक्की वर बानी। कुसल बीर कमधज्ज न [3]जानी ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ भयौ स्वेद सुर भंग भौ। नैन झलक्यौ पानि ॥
कै फिरि दंद सु उप्पनौ। कै वर बंधव हानि ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त। [4]कही कुसल तन दूत। कित्ति कुसलत्तन भग्गिय ॥
जेनि रहे कमधज्ज। रहे सो जम्भह लग्गिय ॥
जे निकलँक ग्रह आदि। कलँक कालंक सु कुप्पै ॥
[5]दे विधान न्निम्मान। कौन मेंटै को थप्पै ॥
भष जोइ सिंघ जम्बक हरै। काकलंब पप्पील गहि ॥
जद्दिनह भई भावी विगत। जिम रक्खै तिमि तिमि सुरहि ॥ १० ॥

(१) क.-होन। (२) मो.-पुकारि। (३) ए. को.-आनी।
(४) मो.-कहै। (५) मो.-दो।

उक्त विषय पर पृथ्वीराज का विचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए।

लज्ज परब्बत ह्वै रही। बैन तजै न्रप पास ॥
दुहूं वीर [1]मंडन सु बुधि। अति गत्तिय रति चास ॥ छं ॥ ७३१॥

यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए।

फिरि बुल्ली लज्जी सुनहि। हौं मंडन तन वीर ॥
मो विन इक्कै काज न्रप। बुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ॥ ७३२ ॥

राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्वत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं।

तूं वै एकह पन रहै। रंग कसूंभ प्रमान ॥
हौं नन छंडौं पास तुअ। तीनौं पनह समान ॥ छं० ॥ ७३३॥
तूं लज्जी मो सथ्थ है। दान पग्ग अरु रूप ॥
मों चल्लै तीनों चलैं। संची चवै न भूप ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
सुन रे वै लज्जी चवै। हूं मंडन नर लोइ ॥
मो विन अप्पन [2]लद्ध है। नर [3]न्निभासन होइ ॥ छं० ॥ ७३५ ॥

शशिव्रता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी।

वै बुल्ली लज्जी कलह। क्रत कै काम सुनंत ॥
इक्कै पल पल मंडनौ। है रज्जन रजकंत ॥ छं० ॥ ७३६ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है।

अरिल्ल ॥ [4]लज्जी सुनि सुनि हसी प्रमान। तूं जानै सुनि [5]वैन निधान ॥
लज्ज रूप मंडन चहुआन। सुबर वीर [6]आकास निधान ॥ छं० ॥ ७३७॥

(१) मो.-मंतह। (२) मो.-लद्ध, लम्भ, लभ। (३) मो.-निर्भासन।
(४) मो.-लज्जा सुन रहसी प्रमान। (५) ए.-कृ. को.-वै सुन निधान। (६) मो.-आकार।

निसा मंत उप्पाइ। सहस नव लिषि वर पट्टै ॥
इष्ट भत्त सगपन्न। सु भत वहु फट्टत पट्टे ॥
वज्जित्त न्निघोष अरि घोष पर। छोरि पंग दिष्षे सु हय ॥
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम। [1]गात गिरव्वर नाग सय ॥छं०॥१४॥

घोड़े की प्रशंसा वर्णन।

भुजंगी ॥ [2]तियं फेरियं अश्व दीसैति पंगा। तिनं देषते छाँह कंपंत अंगा ॥
तिनं ओपमा चंद वरदाइ कैसो। दिषै तीर मानों छुट्टै अंग तैसो॥
छं० ॥ १५ ॥
पयं मझ्झ मंडे तिमं चित्त इष्षं। पयं पातुरं चातुरं तो विसष्षं ॥
षुरं वज्जतें भुम्मि [3]धुज्जै धसक्कै। फनं फेलि से संमुहं फूंक सक्कै ॥
छं० ॥ १६ ॥
द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी। मनों मंडियं नील कंठं उछंगी ॥
तिनं भाल संमेलयं धाट झुझ्झै। [4]छिलै पूर ऐसें सरित्तान सुझ्झै ॥
छं० ॥ १७ ॥
डुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं। मनो देषियं सीष निर्वात दीवं ॥
दिषै कब्बि चंदं सुरंगं सु सेसी। दुहं पष्ष नाहीं तिनं षोरि कैसी ॥
छं० ॥ १८ ॥
सुभै सालिग्रामं समानंत अंषी। तिनं पूजिवै चित्त चित्तंत नंषी ॥
पियें अंजुली नीर दीसै उपंगा। फिरै कच्छ रचीन में रत्त गंगा ॥
छं० ॥ १९ ॥
दिसानं दिसानं सबै जाति राकी। कही चंद कब्बी उपंमा सु ताकी॥
छं० ॥ २० ॥

[6]कवित्त। चत्तिय नयन रुद्र कै। उट्ठि घन अग्गि तिनंगा ॥
तास मध्य ते प्रगटि। तेजवंता सु तुरंगा ॥
भुअपत्ती संग्रहे। पीठ संडै पल्लानं ॥
अंबर करत बिहार। देषि कोपयौ मघवानं ॥

(१) ए.-जात। (२) ए. नियं।
(३) कृ.-भूजे। (४) मो.-कंठा।
(५) ए.-दिले। (६) २१ छंद मो. प्रति में नहीं है।

शशिवृता की आशा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई।

चिय चिघाइ स्रन भए। चियति उमापति मुंड ॥
उमा चयति रुधिरं भई ॥ धनि स्रन भुज दंड ॥ छं० ॥ ७४४ ॥

शूरवीरों के शौर्य्य और बल की प्रशंसा।

स्रर सुधनि भुज दंड बल। बल विक्रम ज्यों [1]पाय ॥
बल किन्नौ छल छंडयौ। वर बीरा रस चाइ ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

कवित्त ॥ बीर घाइ आघाइ। बीर विरुझाइ सेन वर ॥
लष्य लष्य इक मद्धि। लष्य उभ्भिरे लष्य भर ॥
दल दंतन विच्छुरें। घाइ है वर किन तंकहि ॥
एक लष्य रुंधियै। पग्ग पग्गनि झननंकहि ॥
ठननंकि घंट घंटिय परहि। कज्जल कूट विवान भ्रम ॥
सामंत स्रर सामंत हय। करहि चंद अस्तुति सु क्रम ॥ छं० ॥ ७४६ ॥

शशिवृता के व्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ आसंभ सेन सेना विरुद्ध। शशिवृत्त व्याह दैवान जुद्ध ॥
नर मथहि मेघ रथ गज सु वादि। होमियै पग्ग रिस अग्ग सादि॥
छं० ॥ ७४७ ॥

उच्चरे बैन वाजंत वीर। सद्दै जु जुद्ध बुद्धं सरीर ॥
दैवत्त दुग्ग छिति मति अक्रूर। निर्घोष दोप वज्जै सपूर॥ छं०॥७४८॥
हय गय गँभीर तन तुंग ताम। स्ररह सु बीर विश्राम जाम ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

गाथा ॥ रन घन तन विश्रामं। सँग्रामं इक घरी पाइ ॥
दावानल चहुआनं। सा बीरं बीर वीराधं ॥ छं० ॥ ७५० ॥
बीराधं वर वरयौ। सा भज्जै आवनं गवनं ॥
[2]मोहं सलाकं भंजो। नां सज्जं पंजरो दियो ॥ छं० ॥ ७५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-आइ। (२) मो.-मोहं।

गाथा। वाले मलयं चंपं। दै दै चंपत उरह [1]उरहीती॥
तिन विपरीतं वामं। कामं रस जग्गयौ घनयौ॥ छं०॥ २६॥

भ्रमरावली॥ बढ़ि वाल वियोग सिंगार छुब्यौ।
सुख कौ अभिराम कि काम लुब्यौ॥
घन सार सुगंध सु घोरि घनं।
वनि जानि प्रकीन क्रपान वनं॥ छं०॥ २७॥
तल पत्ति तजे तल पत्ति मनों।
वहु वाढ़िहै अंग अनंग घनों॥
नव चंदन अंग अनंग जरै।
दिप दीपक भौन में भान वरै॥ छं०॥ २८॥
लगि मोदक से अन मोदकयं॥
दिसि प्राचिय देषि परी धुकयं॥
प्रति दृत्ति सरत्ति यपी पयनं।
उमगे तहां अंसुअ द्दै नयनं॥ छं०॥ २९॥
घन ज्यों तन छंडि न उत्तर [2]देइ।
लगि कानन नाम पिया अलि लेइ॥
कछू वर भोंहन उत्तर देत।
मनौं दस [3]वस्थन दंग अचेत॥ छं०॥ ३०॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं।
सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं॥
बिय भाव सु अंसु अनंदि लता।
हर नंषिय रष्ष तिगी पतिता॥ छं०॥ ३१॥
तिन अंग अचेतकिता भ्रमयं।
दुष दूषन भूषन से तनयं॥
दिषि दिष्षि अली अलिके जकरें।
लय सास उसासन तानि परे॥ छं०॥ ३२॥
पन प्रान प्रियान प्रयान पुटं।
लगि साहस एक घटी न घटं॥

(१) ए. कृ. को.-उरहीति। (२) मो.-देत, लेत। (३) ए. कृ. को.-अयस्थन

नरं रत्त बीजं विनं केन दिट्ठं । इतें हंकि सामंत की बुंद उट्ठं ॥
मिले घाइ घायं असी पंगदायं । मिलो रीठ आवद्द सावद्द घायं ॥
छं० ॥ ७६० ॥

परे सीस भारं चहुआन धारं । मनो इम्भ झंकोर अंबूज झारं ॥
गजं वाज तुट्टं परे षंड षंडं । नचंतं पिनाकी करं सज्जि दंडं ॥
छं० ॥ ७६१ ॥

कटे तुच्छ हड्डं सु मंसं निमंसं । परे सूर मुभ्भोति मध्यं उतंसं ॥
तिनं सत्त नामं जुअं जू वषानं । रठं निद्दुरं कन्ह वर वीर जानं ॥
छं० ॥ ७६२ ॥

तहां अत्तताई रु गोविंद मानं । उठे हक्कि हाकं सु पज्जून षानं ॥
रघूवंस भीमं तिनं नाम जानं । परीहार नन्हं तिनं नाम ठानं ॥
छं० ॥ ७६३ ॥

इते उग्गरे कंदलं चंद कब्बी । मनों देषियं जानता जोति छब्बी ॥
परे पंच रायं ढहे राज सत्तं। मुरं पंच रा हत्त मा वेद हत्तं ॥छं०॥७६४॥

दुहुं पष्य लग्गे तिनं नाम जानं । तिनं जाति चंदं रु सूरं वषानं ॥
पऱ्यौ झूभ्भि रघुवंस परताप राजं। परयौ राव चालुक्क ता जैत लाजं ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

पऱ्यौ दलपती राउ दल सब्ब संध्यौ । पऱ्यौ कन्ह राजा दलंनेत बंध्यौ॥
झंडा गड्डि वीरं पऱ्यौ राज षीची। जिने कित्ति लच्छी तियं लोक सींची॥
छं० ॥ ७६६ ॥

पऱ्यौ जावलौ राव सारंग सूरं । तिने झग्गरीं अच्छरी छंडि छूरं ॥
पऱ्यौ दाहिमा देव मिलि धार पंती। हरै अंत कंती विराजै सुंदती॥
छं० ॥ ७६७ ॥

पऱ्यौ किल्हनं राव माल्हन हंसं । तुट्यौ सार धारं मिल्यौ हंस वंसं॥
पऱ्यौ जंगली राव दहिया नरिंदं। न्रपं कित्ति भष्षी भषी कित्ति चंदं॥
॥ छं० ॥ ७६८ ॥

पऱ्यौ टांक सूरं मिल्यौ सूर मंदे । मिल्यौ सार धारं जसं डंड षंडे॥
चल्यौ धार धारं धनी धार नाथं । मुकी मोह माया लई कित्ति हाथं॥
छं० ॥ ७६९ ॥

कद्वत्ति सलिल जहां सलिल पंक। चित चित्त वक जे करें कंक ॥
चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव। भुमियां ससंक सव लगत पांव॥छं०॥४१॥

गढ़ घेरि पंग किय अप्रमान। मानों कि मेर पारस्स भान ॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरद्द। सर्वरी परस चंदा सरद्द ॥छं०॥४२॥

चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिंघ। गहिलौत स नरवर लहु सु वंध ॥
पंगुरा सुभर लगि उंच गत्त। जाने कलंक लंगूर यत्त ॥छं०॥४३॥

जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना।

कबित्त ॥ दिशि दष्षिन को वलिय। गयौ कामधज्ज चित्त करि ॥
यों फिरंत तहँ सूर। छित्त आगस्ति पान फिरि॥
पंच तत्त विय विरह। छुट्टि लगो सु पंच पथ ॥
तोइ काज हम करैं। चरन सेवकह जंपि तथ ॥
तो अंब प्रपी अब जानि बस। जस क्रीड़ा धर उग्गनह ॥
कच्छू सु जोसि वलि जोति तन। हवि सरुक भेदै मनह ॥छं०॥४४॥

हाथियों की शोभा वर्णन।

गज्जनेस कमधज्ज। दान वरषंत बीर सजि ॥
नव अंगुर इक विहथ। स्हर तल इक प्रवाह लजि ॥
सिरी सत्त सोभै। बिसाल सिंदूर विराजै ॥
मनु कज्जल गिरि शिखर। शूर मंगल तन साजै ॥
सज्जिय अनेक न्रप पंग ने। गामी तर गोड़न वियौ ॥
जाने कि अकासह भान दिन। ऐ वसट्ट गिर पय दियौ ॥छं०॥४५॥

दूहा। रंभ ऊन तट पंषुरी। लग्गि बधू सित माल ॥
भंग सुता की पंति तें। बढ़ी विरह बनमाल ॥ छं० ॥ ४६ ॥

राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना।

बान पंग पहु पंग परि। मिली क्रंन की कान ॥
इह अपुब्ब बर भान सजि। दै कग्गद चहुआन ॥ छं ॥ ४७ ॥

अपनी और कमधज्ज की सब सेना मरी देख कर यद्दव का हार मानना और सब डोलीं पृथ्वीराज को सौंप देना।

पूब राज प्रथिराज। पूब जैचंद बंध बर॥
पूब सूर सामंत। पूब न्टप सेन पंग बर॥
पूब सेन ढंढोरि। पूब झोरी करि डारिय॥
पूब षेत विधि गाम। बानगंगा पथ झारिय॥
आसेर आस छंडिय न्टपति। विपति सपति जानीय भर॥
सुठिहार राज प्रथिराज कौ। धरे सबह चौंडोल घर॥छं०॥७७७॥

पृथ्वीराज ने तेंतालीस डोलियों सहित बीच में शशिवृता को ले कर दिल्ली को कूच किया।

चौपाई॥ गौ ढिल्ली ढिल्ली प्रति वीर। सूर घाइ जर्जर किय श्रीर॥
किति सजी त्रैलोक प्रमानं। अंग कियौ जर्जर चहुआनं॥छं०॥७७८॥

दूहा॥ डोला ग्यारहु दून दस। एकादस तिन मद्धि॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी। काम विरामन संधि॥ छं० ॥ ७७९॥
डोला घाइन बंधि न्टप। बजि निसान त्रिघोप॥
सब सामंत समंध चढ़ि। विच सुंदरी [1]अमोघ॥ छं० ॥७८०॥

शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुंचे।

गाथा॥ विच सुंदरी अमोघं। दोपं नैव बालयो मद्धिं॥
तेरसि गुन अधिकारी। संपत्ते राजयो ग्रेहं॥ छं० ॥ ७८१॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन।

दूहा॥ इन परंत पत्तौ सु ग्रह। सुवर राज प्रथिराज॥
हय गय दल बल मथत बर। रंभ सजीवन काज॥ छं० ॥ ७८२॥

चामुंडराय की प्रशंसा।

सह जहौं चामंड बर। बर बर जुद्ध विरुद्ध॥
सुद्ध करै सामंत की। बर धीरज्ज सु बुद्ध॥ छं० ७८३॥

(१) ए. कृ. को.-अदोप।

धर लई सब्ब साहिब सुरत। भान न उप्पर मुक्कही ॥
चित्रंग राज रावर समर। इह अवसान न चुक्कही ॥ ५३ ॥

समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली में अकेले न छोड़ना चाहिए। मेरे साथ अपने सावंत और अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा।

बंचिय कग्गद समर। समर साहस उच्चारिय ॥
तव सुमंत बर न्रपति। मंत जानै न विचारिय ॥
हम सुमंत जो करै। राज दिल्ली मति छंडौ ॥
इह गोरी सुरतान। अनगपालह फिर मंडौ ॥
सामंत [1]देहु हम संग बर। रन रुंधै पहुपंग नर ॥
आरंभ महन रंभह मतौ। इह [2]सुमंत कुसलंत घर ॥ ५४ ॥

समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बड़गूजर के साथ अपनी सेना रवाना की।

कुंडलिया ॥ समुद रूप गोरिय सुबर। पंग ग्रेह भय कीन ॥
चाहुआन तिन बिबध कै। सो ओपम कवि लीन ॥
सो ओपम कवि लीन। समर कग्गद लिय हथ्थं ॥
भिरन पुच्छि बट सुरँग। बंधि चतुरंग रजथ्थं ॥
समर सु मुक्कलि सोर। लोह फुल्यौ जस कुमुदं ॥
रा चावँड जैतसी। रा बड़गुज्जर समुदं ॥ छं० ॥ ५५ ॥

रावल समरसिंह ने अपने भाई अमरसिंह को साथ लिया। ये लोग देवगिरि की ओर चले।

दूहा। अमरसिंघ बंधव समर। समर समोकलि दीन ॥
ते सामंतन संग लै। देवग्गिरि मग लीन ॥ छं० ॥ ५६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दीहि। (२) ए.-समतं।

अथ देवगिरि समयौ लिख्यते ।

(छव्वीसवां समय ।)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

दूहा ॥ ना चल्लै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्यौ फिरि भान ॥
मानहु चंद सरद्द [1]जिम । गिर नछिन [2]परिमान ॥ छं० ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥ गढ़ घेर्यौ फिरि भान कौ । दूत सु दिल्लिय मुक्कि ॥
[3]यह अजोग संजोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि । प्रान इन कै दुप मुक्कै ॥
इन समान भर सत्त । जीव जावंतै धुक्कै ॥
* प्रथम पुंजा लष्यिन । कुंआरि ससिव्वत्त धीर वढ़ ॥
धन भर लज्ज सुबंध । घेरि सह वीर राजगढ़ ॥ छं० ॥ २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ।

दूहा ॥ इन कग्गद चहुआन पै । उन मुक्कलि [4]कनवज्ज ॥
दुहूं वीर कविचंद इह । कै वज्जै कै बज्ज ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

---

(१) ए. कृ. को.-दिन ।　　(२) ए. कृ. को-परजानि ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रह ।　　(४) ए.कृ.को.-कमधज्ज ।

* छंद २ की अंतिम दोनों पंक्तियों का चारों प्रतियों में समान मूल पाठ इस प्रकार है— "प्रथम पुंज लष्यिन कुँआरि कुँअर ससिवृत सुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध राजगढ़ घेरि सवीरह "— यह कुंडलिया छंद के नियम से विरुद्ध पड़ता है परंतु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ होगया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

धसि नरिंद चामंड। कूह बज्जी रन जंगं॥
भर भग्गी चौकी समूह। लग्गा रन जंगं॥
रन नरिंद [1]वाहन कुआर। सारह हसि झिल्लै॥
पंग टटी बौछार। जितै भिंजे तित मिल्लै॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी। उघरि मेह घन सार जल॥
जग्गयौ जोध कामधज्ज अब। मनों सिंघ जुथ्यौ सु छल॥छं०॥६१॥
तब [2]रावत उच्चरे। राज जोरी बर पंगं॥
जिन [3]चंपे बल पुंछ। रोस जग्यौ नृप [4]दंगं॥
नाग पत्ति कोपत्ति। अप्प बर कन्ह जगायौ॥
राह सुमलि बित्तए। जम्म जुग राज झुकायौ॥
उच्चरे वीर कुट वार रिन। रन रुंधया अप डिंभरू॥
संभरे बीर कमधज्ज कौं। भये रोम गति विम्भरू॥ छं०॥६२॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया।

अमरसिंह आहुट्ठ। नाग [5]मुष्षी वर कड्ढी॥
शीश शोभि गजराज। नाग मुष नागिनि चड्ढी॥
हाड हटक्की हथ्थि। वीर षच्यौ कर सद्दे॥
कै हथनापुर चन्द। तीर षंचै बलिभद्रे॥
दंती सुभग्गि धर पर पच्यौ। डूल षुच्यौ दत अड्डकवि॥
सिंघ हति भूमि बर सुम्भई। मिलत भूमि हथ्थह तिरव॥ छं०॥६३॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना।

हस्ति काल जम जाल। काल रुध्यौ चामंडह॥
सुनत पंग रस भगं। सीस लग्यौ ब्रह्मंडह॥
रन रुंध्यौ बद्दछरू। मीन गति [6]नीर प्रमानं॥
जग्गि बीर पहुपंग। तोन पारथ्थ प्रमानं॥

(१) क.-प्राति में "पंगु पुत्र" भी पाठ ऊपर दिया हुआ है।
(२) ए.-राजन, रावन। (३) ए.-जंपे। (४) ए.-दंसं।
(५) ए.-मुठी मुट्ठी। (६) मो.-हीन।

कवित्त। यह कहंत पहु पंग। दूत तिय आन सपत्तौ ॥
वाचा शीतल जंपि। अंग आरम्भ न सत्तौ ॥
चढ़ि नरिन्द कमधज्ज। तौना तन सज्जन वारौ ॥
मिलि यद्दव चहुआन। वीर परिहै ससि भारौ ॥
दाहिम्मराय चामुंड सौं। सब्ब साथ न्टप थप्पयौ ॥
ते काज राज सम्हैं सुमति। लिपि कग्गद्द महिं अप्पयौ ॥ ११ ॥

जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है। उसे मेरा एक मीर बंदा जीत कर बांध सकता है।

क्रोध भरिय कमधज्ज। काक वर बोल उचारै ॥
जो भज्जे ग्रह अपन। कौन अप्पनौ विचारै ॥
अरे सुनहु भर सुभर। जुम्झ भग्गौ पति छंडै ॥
वेचि वीर गजराज। वाद अंकुस कौ मंडै ॥
चहुआन सेन कित्तिक है। एक मीर बंदा वधै ॥
लभ्भयौ राज अप अप्पुनह। लोह धार मो सम सधै ॥ छं० ॥ १२ ॥

जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा।

कुंडलिया ॥ सुनि सुमंत्त मंत्रिय समत। कुमति मंत क्यों मंत ॥
वचन भेद जिहि हम कही। सोइ गही बल तंत ॥
सोइ गहि बल तंत। वल न अप्पन पहिचान्यौ ॥
उदो राग उचर्‍यौ। संच तेता करि मान्यौ ॥
उननें कुंवरी [1]बरी। तिनं कु करै तिन गुन्नौ ॥
[2]सु वरि एक बुल्ले दुवान। सो सव सह सुन्नौ ॥ छं० ॥ १३ ॥

पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी। सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया।

कवित्त ॥ वर अथवंत सु दीह। आइ चतुरंग सपन्नौ ॥
मझ्झ महल न्टप बोल। बंचि कग्गद कर लिन्नौ ॥

(१) मो.-मुरी। (२) क-सुबरन।

रिस छुट्यौ कमधज्ज। बोल बंका बर बोले॥
ज्यों बावन बल रूप। कुहर थानह बल मेलहैं॥
रावन पबय समान। काज कैलास भुलावै॥
कै बलि बंधन पाज। द्रोन हनुमंत जु ल्यावै॥
गिरिराज काज साइर मथन। कै अमरस मिल्लिय नहीं॥
[1]नंषयौ अप्रव कमधज्ज नै। सो उण्पम कवि भाषहीं॥
॥ छं० ॥ ७४ ॥

देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन।

मापि पंग गढ़ देखि। कोस द्वादस बर ऊँचौ॥
दहति कोस विसतार। कोठ मरहट्ठय चिपुंचौ॥
नारिगोरि सा बक्ति। राज मंडी चावद्दिसि॥
ढोह मंडि पाषान। तीर बरषंत मंच असि॥
पावस्स मास बीतौ उभै। जुरि कमधज्ज सु छंडयौ॥
मंची सुमंच परधान ने। फेरि मंच[2]तव मंडयौ॥ ७५॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना।

बल बंध्यौ कमधज्ज। किल्ह भंज्यौ भंभानं॥
लग्गि चरन पहु पंग। बंदि लीनौ फुरमानं॥
दूत भेद्यौ मंडि। द्रब्ब नंषै चावद्दिसि॥
कछु सलोभ कछु मोह। मेलिह पर ध्यान पलहनिसि॥
अप्पनौ साथ लै सिंघ तब। जियन मरन ते उद्दए॥
जम जीव जार पंजर परै। कोइन कलि महि छुट्टए॥ छं० ॥ ७६॥
संवत ग्यार सँजुत्त। अदिस उन लग्गिय पंचं॥
मरन अग्गि जांनिय न। गोऊ पल्हन जो पंचं॥
दिन नछिच रोहिनी। समय च्यालीस विअग्गल॥
मत्त बीर जद्दव नरिंद। भग्गी ग्रह भग्गल॥
जग्गयौ धार धारह धनी। भोज कुंअर रन मंड कै॥
सा भ्रम्म भ्रम्म छंडै नहीं। गो अभ्रंम छिति छंडि कै॥ छं० ॥ ७७॥

(१) ए.-अंषयौ। (२) ए.-सत्र।

प्रगट्टि नषि दिय वज्र सों। गयन गवन तब मिट्टि गय ॥
कहि चंद मनहु [1]पहुपंग तें। फेरि आज पष्परत हय ॥ छं० ॥२१॥

जयचन्द घोडे पर चढ़ा। तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ।

चढ़त पंग हय सज्जि। सज्जि गजराज सज्जि [2]नर ॥
यों जानी सुर असुर। करै कमधज्ज विया पुर ॥
बजि त्रिघोष त्रिय सहस। मीर वंदा दस लष्षिय ॥
तीस लष्ष पाइक्क। सुबक पारंक विश्रष्षिय ॥
जू सन विराग बल वीर सजि। दल सज्ज्यौ गंजन अरिन ॥
पहु पंग वीर परतष्षि लै। किरन सु सम सज्जी किरन ॥छं०॥२२॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तव मैं राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूहा। इह प्रतंग पहुपंग लिय। बधि जद्दव चहुआन ॥
जग्य अरंभ जु मंडिहौं। ता पच्छै परवान ॥ छं० ॥ २३ ॥

सेना की शोभा वर्णन।

कवित्त। चढ़त पंग मिलि सेन। पूर जिम नदिय मिलत चिन ॥
वज्जि वीर वा तूल। जत्थ कथ्थयह उड्डै पिन ॥
एकट्ठां फुनि जम्म। तुट्टि जू जू फल लद्धौ ॥
दैव क्रम्म करि जोग। आइ एकट्ठ अरुद्धौ ॥
बंधेत काल डोरी तनै। छूटि धार घन मिलहि [3]तिम ॥
आदत्त क्रम्म लिष्षे विना। मिलै न पंचौ [4]पंच [5]जिमि॥छं०॥२४॥

जयचन्द्र की स्त्री का विरह वर्णन।

दूहा। इह अवस्थ पहु पंग की। बाल अवस्था कौन ॥
जियन आस नहिं सांस तन। डरहि देषि [6]अलि जौन्ह ॥छं०॥२५॥

(१) ए.को. पकु। (२) ए.-हय। (३) ए. कृ-जिम।
(४) ए. को.-पंप। (५) ए. कृ. को. जिम। (६) ए. कृ. मो.-अति।

तब बसीठ न्टप पंग। भान एकत्त मंत करि॥
मिलौ पंग कमधज्ज। जंम संसार जंम डरि॥
तमस भेद न्टप एह। बाल उत्तर गढ़ भेदं॥
अरि अमंत जद्दव। नरिंद कीनौ घर छेदं॥
लगि कान बात मंची कही। आहुट्ठां बल गढ्ढियां॥
त्रिय पुत्त हत्त पुत्री लिये। दुज्जत जनम सुवढ्ढियां॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा॥ विष धर दुज्जन सिंघ फुनि। अग्गि अनंग अनेह॥
ए अपना ना लेषिये। ये परि अप्पै छेह॥ छं० ॥ ८३ ॥

कवित्त॥ हसि जद्दौं चामँड। पँवार हथ्थें दिय तारी॥
सुनि बड़गुज्जर राम। मतौ अप्पौ मों भारी॥
सामि एक बंदी स। प्रीति जल जंतं तक्की॥
लियौ अधर सम रस्स। वात सा दोहमन क्की॥
क्यों जामन मंत रहंत द्रुत। केह कंत जो मंगयौ॥
सो मंत पंग कमधज्ज नें। अप्प हेत सो उग्गयौ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दूहा। इह उत्तर न्टप पंग सों। कहै सु जद्दव राय॥
दूध विनट्ठौं सुद्ध हिय। किन अप्पन मुष पाइ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चौपाई॥ उठे भट्ट तिहि ठौर विचारी। ज्यों उठि जोगी कंथा झारी॥
मन की मनें रही मन माया। ज्यों तरंग जल जलें समाया॥छं०॥८६॥

कवित्त॥ मतौ मंडि न्टप पंग। गट्ट सुक्क धर लीनी॥
पट्टन पाट नरिंद। थान यानं रचि दीनी॥
उभै बीर जौजन प्रमान। भारह रचि गाढ़ी॥
[1]अप्पनगै कमधज्ज। हाम राजसु मन बाढ़ी॥
कनवज नरिंद अज्जू समन। जोगी मिसि कर कढ्ढयौ॥
दिसि विदिसि पंग जीपन सुबल। रचि चतुरंगी चढ्ढयौ॥छं०॥८७॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की।

(१) कृ.-अपनग्गौ।

सु[1]थनं सब तैं विमन मन तैं।
निज निश्चल [2]रैनि गई गिनतैं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
चलि सीत सुगंध सुमंदय बात।
मनों लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल शीतल काज।
लगै मनों तीर [3]तरुन्निय जाज ॥ छं० ॥ ३४ ॥
भुअंगम भोजन अंगम नारि।
करै करुना रसकी उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पूछत ताहि।
मनों जड़ श्रोत सुनै रस जाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाइ।
[4]सु जे मरविंद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कह नाह।
लगे विहजानि कुमुद्दिन राह ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नदीय निवान [5]अपीत सयं।
नव पंथय सुज्झय बुज्झ कयं ॥
वजि मारुत तत्त समीत प्रकार।
उडै घन भ्रम्म बहै अनिवार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
करै तरु तुंग गई सुधि धाम।
तजी पहु पंग नरिंद सु वाम ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जयचन्द की चढ़ाई का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ पंग कमधज्ज राय। सो छिन्न भिन्न डम्मरित छाइ ॥
पद्धरी छंद बरनो सुरंग। लहु बरन बीच विचि अति सुरंग॥छं०॥३९॥
ढ़लकंत ढाल तरवर प्रमान। हलके हलंत गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन [6]चित्तहि न चित्त। [7]न्निम्मान वत्त गुन धरत तत्त॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. को.-सुथानं। (२) ए. को. नैनि। (३) मो.-तरुन्नित।
(४) ए.-सजे। (५) ए. को.-अपीन।
(६) मो.-मन्नहि। (७) ए.-त्रिम्मान, त्रिमान।

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम में आजाना।

रति पति पत्त आलुझिझ्झ घन। तिहि कग्गद मुकि दूत॥
तजि सिंगार भौ [1]वीर रस। जिमि आयौ वर [2]धूत्त॥छं०॥४८॥

बाल कमोदनि पीय ढिग। ससि समान रस पान॥
बर बिलोकि जो देपियै। तौ [3]चहुआनह भान॥ छं०॥ ४९॥

कवित्त॥ लाज सरस चहुआन। जोग उब्भै जुध सुत्तम॥
चियन पाइ दिपि काम। बेर दिष्षे जु वीर सम॥
घरि इक पंग नरिंद। कलंक उननि करि देपै॥
इत्त सु जद्दव राइ। सजम अप्पनौ सु लेपै॥
सुरतंत स्वामि अभिलाष रिन। ग्रव्व राज मद्दह न्रपति॥
मार सु नरिंद संकर भयौ। अति निकलंकह चित दिपति॥ ५०॥

इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई उधर जयचन्द की राजा भान से लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चित्तौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी।

दूहा। घरी एक बंधी सुनी। पै मुक्कलि प्रथिराज॥
बीय सोम अप्पन चढ़न। लै दीनौ रस पाज॥ छं०॥ ५१॥

चढ़त गाज प्रथिराज को। चढ़ प्रवाज सुरतान॥
समर सिंघ रावर दिशा। दै कग्गद चहुआन॥ छं०॥ ५२॥

कवित्त॥ दिल्ली धर गोरी नरिंद। बँध पल्हन प्रपत्तौ॥
षां हुसेन कै बैर। अनगपालं सु मिलत्तौ॥
तिर भर जल गंभीर। हसम हुै गै कमधज्जी॥
देवग्गिरि दिसि भान। बीर पावस जिम सज्जी॥

(१) ए.-बार। (२) ए. को.-धत्त। (३) मो.-चहुआने।

चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़ दिया इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो ।

कवित्त ॥ हेमाचल उपकंठ । एक वट वृष्य [1]उसंगं ॥
सौ जोजन परिमान । साष तस भंजि मतंगं ॥
बहुरि दुरद मद अंध । ढाहि मुनि वर आरामं ॥
दीर्घ [2]तपारी देषि । श्राप दीनों कुपि तामं ॥
अंबर विहार गति [3]मंद हुअ । नर आरूढ़न संग्रहिय ॥
संभरि नरिंद कवि चंद कहि । सुरग इंद इम भुवि रहिय ॥छं०॥५॥

अंग देश के पूर्व एक सुन्दर बनखंड है वहीं वह गजयूथ विहार करता था । वहां पालकाव्य नामक एक थोड़ी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों से बड़ा स्नेह होगया था परंतु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया ।

अंग देस पूरब्ब मद्धि । बन षंड गहब्बरि ॥
उज्जल जल दल कमल । बिपुल लुहिताच्छ सरब्बर ॥
आपति गज को जूथ । करत क्रीड़ा निसि बासर ॥
पालकाव्य लघु वेस । रहत एक तहां रुषेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर । रोमपाद नृप संभरिय ॥
आषेट जाइ फंदनि पकरि । दुरद आनि चंपापुरिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा ।

(१) कृ.-उतंगं । (२) ए.मो.-तयारी । (३) को.ए.-मंड ।

हम सु राज चहुआन नें। राये घेरी राइ॥
पंग [1]औट बर कोट हूँ। देवगिरि गढ़ आइ॥ छं० ॥ ५७ ॥

जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामुंडराय ने चढ़ाई की।
इधर राजा भान मिला।

कवित्त॥ देवगिरि गढ़ घेरि। ढोह मंड्यौ बर पंगं॥
[2]रन त्रिघोष प्रमान। वीर बाजे रन जंगं॥
चिहुदिसान उड़ि चक्र। उनैभी झंझर लग्गा॥
द्वादस दिन रन मंडि। राव चामंड भिरि भग्गा॥
सामंत पंग वित्त नृपति। छल सज्जै बलहारियां॥
दाहिम्म राव दाहिर तनय। रत्ति वाह विश्वारियां॥ छं० ॥ ५८ ॥
मिलि जद्दव चामंड। रत्ति वाहं संपन्नौ॥
जोइज्जै सथ टारि। साथ टारिज अपन्नौ॥
अंत साथ सो साथ। और सब साथ [3]सुपन्नौ॥
कै भर तरकस बंध। यान मन [4]आकन्नौ॥
जीवंत दान भोगइ समर। मरन तित्थरँभ [5]भिरन गति॥
ए करै बात उभ्भैत नर। ता स राज मंडल [6]मिलति॥ छं० ॥ ५९ ॥

राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन।

हथ्थ हथ्थ सुझझैन। मेघ डंमरि मडि रज्जो॥
निशि निशीथ अंतरी। भान उत्तरि सथ सज्जी॥
विज्ज वीर झलकंत। [7]पवन पच्छिम दिशि वज्जै॥
मोर सोर पप्पीह। श्रवनि सक्रित घन गज्जै॥
बट्टी जु सिलह निशि सत्त मिलि। [8]धसिय पंग दरबार दिसि॥
चामंड राइ दाहर तनौ। लरन लोह कड्ढेति रिसि॥ छं० ॥ ६० ॥

राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना।

(१) ए.-ओर।　(२) ए.-इन।
(३) ए.-सुपंथं।　(४) ए. कृ.को.-आकप्य।　(५) ए.-निरन।
(६) मो.-मिलनि।　(७) ए.-भवन।　(८) ए. कृ. को.-सधिय।

एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीक स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया।

दूहा ॥ एक ताप पहु पंग कौ। अरु रवनीक [1]जु थान ॥
चावँडराव वचन्न सुनि। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज धूम से चला। रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ। इस समय सुलतान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। वीर अगनेव दिसा कसि ॥
सब्ब भूमि न्टप न्टपति। चरन चहुआन लग्गि धसि ॥
मिल्यौ भान विस्तरी। मिल्यौ पट्टल गट्टी न्टप ॥
मिल्यौ नंदि पुर राज। मिल्यौ रेवा नरिंद अप ॥
बन जूथ म्टग्ग सिंघह रु गज। न्टप आषेटक खिल्लई ॥
लाहौर थान सुरतान तप। वर कग्गद·लिषि सिल्लई ॥ छं० ॥ १३ ॥

मारू खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण करने का *बीड़ा उठाया।

दूहा ॥ षां ततार मारूफ षां। लिये पान कर साहि ॥
धर चहुआनी उप्पर । बज्जा बज्जन बाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

यह समाचार पा शहाबुद्दीन का चढ़ाई की तयारी करना।

साटक ॥ श्रोतं भूपय गोरियं वर भरं, वज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उललं, तत्तार मारूफयं ॥
तुझ्झौ सार स उप्प राव सरसौ, पल्लानयं षानयं।
एकं जीव साहाव साहि ननयं, वीयं स्तयं सेनयं ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) मो.-सु।

* प्राचीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य्य आ उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रख कर अपेक्षित कार्य्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस काम के करने योग्य देखता वह बीड़ा उठा लेता।

जग लोह कोह कढ्ढिय सु असि। भिरत न अपु अरि तक्कए ॥
रहि जाम एक निसि पच्छली। चढ़ि विहूर हय नष्यए ॥छं०॥६४॥

रसावला ॥ पंग जंगं घुलं, कूह मची हुलं। सार तुट्टे पलं, पग्ग मच्चेपलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

हाल हाला हलं, सोइ वित्यौ तलं। गिद्ध कोलाहलं, अंत हंती रुलं॥
छं० ॥ ६६ ॥

उद्धपौयं छलं, चर्म अस्तिं तलं। वीर निद्धीचलं, सिद्ध ठट्टे रलं ॥
छं० ॥ ६७ ॥

संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं। भूत वित्ता तलं, पथ्थ पारथ्थलं॥
छं० ॥ ६८ ॥

देव देवा नलं, फट्टि फारक्कलं। घाय छज्जे घलं, सूर घुम्मे रुलं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

तारचौ सठ्ठलं, बाइ भूत सलं। रीति पछ्छी पिनं, तार आयासनं ॥
छं० ॥ ७० ॥

सूर उग्यो ननं। कोर चट्टे फनं ॥............ छं० ॥ ७१ ॥

लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना।

दूहा ॥ रन मुक्के गो भान चढ़ि। सब सामंतन सथ्थ ॥
भूत वीर पहु पंग ने। पत सु ढुब्बौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ पर्यौ बंध गोइंद। नाम हरचन्द प्रमानं ॥
पर्यौ बंध नरसिंघ। रेह रष्यन चहुआनं
पर्यौ कन्ह पुंडीर। बीर जैचन्द सु जायौ ॥
पर्यौ सूर बाघेल। हक्कि कपि जिम बल धायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही। असिन ढार बड़गुज्जरै ॥
सामंत हथ्थय बर बज्र सम। पेत सु ढुंढहि पंगरै ॥ छं० ॥ ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन।

पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुलतान का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयौ सुन्यौ । वर गोरी चहुआन ॥
वर अवाज सब मिट्टि कै । सजे सेन सुरतान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि वहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला ।

दूत बचन संभलि न्त्रपति । वर आषेटक पिल्ल ॥
रेंवातट [1]पड्डर धरा । जूह म्रगन वर मिल्लि ॥ छं० ॥ २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ।

कवित्त ॥ मिले सब्ब सामंत । मन्त मंड्यौ सु नरेसुर ॥
दह गूना [2]दल साहि । सज्जि चतुरंग सजी उर ॥
मवन मंत चुक्कौ न । सोइ बर मंत विचारौ ॥
बल घर्यौ अप्पनौ । सोच पछ्छिलौ निहारौ ॥
[3]तन सट्टौ लीजै मुगति । जुगति बंध गोरी दलह ॥
संग्राम भीर प्रथिराज बल । अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ छं० ॥ २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का बचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है ।

सुनिय बत्त पज्जून । राव परसंग [4]मुसक्यौ ॥
देव राव वग्गरी । सेन दे पाव कसक्यौ ॥

(१) ए.-धधार । (२) मो.-बल ।
(३) मो.-सट्टै लीजै, ए.-सद सटैं । (४) मो.-सुसक्यौ ।

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना।

बज्जि कूह संमूह। अमर[1] उट्ठे समरं भिरि॥
यंड मुष्य भौ कोट। समर बंध सुझे जुरि॥
रा चावँड जैतसी। राव बड़गुज्जर धाए॥
आहुट्ठे कमधज्ज। सार बज्जै सुरझाए॥
बर यंग जंग भज्जी सहर। लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि परि॥
चहूने अरिय संग्राम भिरि। यट्ट सहस सेना गिरी॥ छं० ॥ ७८॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना।

परत पंग आरोहि। सु रँग दीनौ सुभान गढ़॥
नाग[2] समूह ररी। ढाहि देवल सुरंग मढ़॥
थान थान नर उड़ैं। चंद तस उप्पम पाइय॥
कालबूत[3] कागद। पंग इह काज उड़ाइय॥
अज्जुन सपिहिय सेन को। दच्छ देव बर बोलहीं॥
सामंत सूर संग्राम कल। ताप तुरंग न डोलहीं॥ छं० ॥७९॥

चौपाई॥ बहु परपंच किए पहुपंगं। गढ़े तूटंत मग्ग मन अंगं॥
गिरि सम्मूह बंक भर ठट्टं। मंतौ मडि मुक्यौ बर भट्टं॥छं०॥ ८०॥

जयचन्द का किर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना।

कवित्त॥ कित्तिपाल बर भट्ट। बंधि[4] फुरमान पंग रत॥
जहँ जद्दव चामंड। द्रुग्ग दीय छचन जुरन॥
चौज चक्क चहुआन। पर्यौ सगपन मिस अट्टौ॥
उह मारन इन मरन। बज्जि गाहं बिन घट्टौ॥
आतुच्छ मिली बंधौ जियन। जुद्ध मोहि क्यों पूजिहौ॥
श्रृंगार भोग आनन्द रस। सबै बीर रस चुक्किहौ॥ छं० ॥ ८१॥

राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना।

(१) ए.-ठेडे। (२) कृ.-समुह धद्धरी ए.-समुहरद्धी, समूंरहधरी।
(३) ए.-कागच्छ.कागछ। (४) ए. कृ. को.-फुरमारस।

रघुबंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकड़ेंगे।

वह वह कहि रघुबंश। राम हक्कारि सु उर्थ्यौ ॥
सुनौ सब्ब सामंत। साहि आए बल [1]छुथ्यौ ॥
गज रु सिंघ सा पुरिष। जहौ रुंधै तहां सुभ्भै ॥
[2]असम समौ जानहि न। लज्ज पंकै आलुभ्भै ॥
सामंत मंत जानैं नही। मत्त गहैं इक मरन कौ
सुरतान सेन पहिलै बंध्यौ। फिर बंधां तौ करन कौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है। हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा।

रे गुज्जर गांवार। राज लै मंत न होई ॥
अप मर छिज्जै न्टपति। कौन कारज यह जोई ॥
सब सेवक चहुआन। देस भग्गै धर पिल्लै ॥
पच्छि काम कह करै। स्वामि संग्राम इकल्लै ॥
पंडित्त भट्ट कबि गाइना। न्टप सौदागिर वार हुअ ॥
गजराज [3]सीस सोभा वरन। कन उड़ाइ वह सोभ लह ॥ छं० ॥ २८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उस के लिये जुद्ध का सामान करो।

दूहा ॥ परी षोर तन दंग [4]गम। अग्ग जुद्ध सुरतान ॥
अब इह मंत विचारये। लरंन मरन परवान ॥ छं० ॥ २९ ॥

---

(१) ए.-थटयो, (२) ए. कृ. को.-समौ, असमौ।
(३) सा.-सोस। (४) ए.-मम।

दूहा । कोन हीन कों नीर विन । को तप भान नरिंद ॥
सह धन धर मुक्की मिलै । लज्ज रह जय चंद ॥ छं० ॥ ८८ ॥

इसके परिणाम में चहुआन और राजा भान को यश मिला और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया।

जस्स तिलक ग्रह भान कौ। जोगिन पुस्तर चिन्ह ॥
मोकलिजै आहुट्ट पति । पग्ग पंग करि हीन ॥ छं० ॥ ८९ ॥
गयौ पंग कनवज्ज दिसि । घन रप्प धन मास ॥
नव नवमी नव सरद निसि । तिन मुक्की अरि त्रास ॥ छं० ॥ ९० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके देवगिरि युद्ध वर्णनं नाम छावीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २६ ॥

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा—हिन्दुओं के दल में शोर मच गया।

दूहा ॥ बचि कागद चहुआन नें। फिरन चंद [1]सह थान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे। सुगति भोग बनि प्रान ॥ छं० ॥ ३८ ॥
मची कूह दल हिंदु के। [2]कसें सनाह सनाह ॥
बर चिराक दस [3]सहस भइ। बजि निसांन अरिदाह ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुसलमान सेना चिनाब के पार आगई। चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बांध कर मुझे इधर भेजा है।

*बा बहू न्रप मुक्कतें। दूत आइ तिहि वार ॥
सजी सेन गोरी सुभर। उत्तरए नद पार ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंचासज गोरी न्रपति। बंध उतरि नहिं पार ॥
चंद बीर पुडीर नें। [4]थटि मुक्कै दरबार ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ षां मारुफ ततार। षान षिलची बर गढ्ढे ॥
चामर छत्र मुजक्क। गोल सेना रचि गढ्ढे ॥
नारि गोरि जम्बूर। सुबर कीना गजसारं ॥
नूरीं षां हुज्जाव। नूर महमद सिर भारं ॥
वज्जीर षान गोरी सुभर। षान षान हजरत्ति षां ॥
त्रिय सज्जि सैन हरवल करिय। तहां उभौ सजरत्ति षां ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) क.-सर। (२) ए. कृ-करै सनाह अनाह। (३) ए. कृ. को.-दस दस।
(४) ए.-उत्तर यौ नदि पार, मो.-घट मुक्यौ दरवार।
* यह दोहा ए. को. और कृ. प्रति में नहीं है।

अथ रेवा तट समयौ लिख्यते ।

(सत्ताइसवां समय ।)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ।

दूहा ॥ देवग्गिरि जीते सुभट । आयौ चामँडराय ॥
जय जय न्टप कीरति सकल । कही कव्त्रिजन आय ॥ छं० ॥ १ ॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना।

मिलत राज प्रथिराज सों । कही राय चामंड ॥
रेवा तट जौ मन करौ । बन अपुब्ब गज झुंड ॥ छं० ॥ २ ॥

उक्त बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ विन्द लिलाट प्रसेद । कन्यो शंकर गज राजं ॥
एरापति धरि नाम । दियौ चढ़नै सुर राजं ॥
दानव दल तिहि गंज । रंजि उमया उर अंदर ॥
होइ क्रपाल हस्तिनी । संग बगसी रचि सुंदर ॥
औलादि तास तनु आय कें । रेवा तट बन वित्तरिय ॥
सामंत नाथ सों मिलत इह । दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यह किस जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ।

अरिल्ल ॥ च्यारि प्रकार पिष्पि बन वारुन । भद्र मंद म्रग जाति सधारन ॥
पुच्छि चंद कवि को नरपत्तिय । सुरवाहन किम आइ धरत्तिय ॥
छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिग प्रथिराज ॥
जब लगि रुपि पुंडीर नें । रोक्यौ गोरी साज ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जहां पर सुलतान चिनाव उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका । घोर युद्ध हुआ । चन्द पुण्डीर घायल हो कर गिरा । सुलतान चिनाव पार होने लगा ।

भुजंगी ॥ जहां उतऱ्यौ साहि चिन्हाव मीरं । तहां नेज गड्यौ ठठ्ठक्के पुडीरं ।
करी आनि साहाव सा बंधि गोरी। धके धींग धींगं धकावै सजोरी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

दोऊ दीन दीनं कढ़ी बंकि अस्सी। किधौं मेघ में बीज कोटि निकस्सी ॥
किए सिप्परं कोर ता सेल अग्गी । किधौं बद्दरं कोर नागिन्न नग्गी ॥
छं० ॥ ४८ ॥

हबक्के जु मेछं भ्रमंतं जु छुट्टै । मनों घेरनी घुम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी। मनों जाल में मीन अड्डी निकासी ॥
छं० ॥ ४९ ॥

लटक्के जुरंनं उड़ै हंस हल्लै। रसं भीति सूरं चवग्गान षिल्लै ।
लगे सीस नेजा भ्रमें मेजि तथ्थें । भयै वाइसं भात दीपत्ति सथ्थें ॥
छं० ॥ ५० ॥

करै मार मारं महावीर धीरं । भये मेघ धारा बरष्षंत तीरं ॥
परे पंच पुडीर सा चंद कढ्यौ । तबै साहि गोरी स चन्हाव चढ्यौ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया ।

कवित्त ॥ उतरि साहि चिन्हाव । घाय पुंडीर लुथ्थि पर ॥
उप्पाऱ्यौ वर चंद । पंच बंधव सु पथ्थ धर ॥
दिषिष दूत बर चरित । पास आयौ चहुआनं ॥
उप्पर गोरी नरिंद । हास बढ्ढी सुरतानं ॥

दूहा ॥ पालकाव्य के विरह करि। अंग भए अति पीन ॥
मुनि बर तब तहं आय कें। गज चिगछ्गुन कीन ॥ छं० ॥ ७ ॥

गाथा ॥ कोपर पराग पत्तं। 'छालं डाल फूल फल कंदं ॥
फली कली दै जरियं। कुंजर करि यूलयं तनयं ॥ छं० ॥ ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहीं आई ।

कवित्त ॥ ब्रह्मा रिष तप करत। देषि कंप्यौ मघवानं ॥
छलन काज पहु पठय। रंभ रुचिरा करि मानं ॥
श्राप दियौ तापसह। अवनि करिनी सु अवतरि ॥
क्रम्म बंधि इकंजती। लषित हूऔ सुपलंतरि ॥
तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी। बोर लियो पोगर सुनमि ॥
उर सुक्र अंस धरि चंद कहि। पालकाव्य मुनिवर जनमि ॥छं०॥९॥

पालकाव्य उस के साथ विहार करने लगा ।

दोहा ॥ ताथें तिन मुनि करिन सों। बांधि प्रीत अत्यंत ॥
चंद कह्यौ न्रप पिथ्थ सम। सकल मंडि बरतंत ॥ छं० ॥ १० ॥

चन्द ने उस वन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए ।

कवित्त ॥ सुनहि राज प्रथिराज। विपन रवनीय करिय जुथ ॥
रेवा तट सुंदर सभूह। गजवंत चवन रथ ॥
आषेटक आचंभ। पंथ पावर रुकि पिल्लौ ॥
सिंघ वट्ट दिलि समुह। राज पिल्लत दौइ चल्लौ ॥
जल जूह कूह कसतूरि म्रग। पहपंगी अरु पर्वतह ॥
चहुआन मान देषें न्रपति। कहिन बनत दच्छिन सुरह ॥छं०॥११॥

(१) ए-ढंलं, ढालं, छलं।

कवित्त ॥ प्रात स्रूर वंछई । चक्क चक्किय रवि वंछै ॥
प्रात स्रूर वंछई । सुरह बुद्धि बल सो हंछै ॥
प्रात स्रूर वंछई । प्रात वर वंछि वियोगी ॥
प्रात स्रूर वंछई । ज्यौं सु वंछै वर रोगी ॥
वंछयौ प्रात ज्यौं त्यौं उनज । वंछै रंक कारन्न वर ॥
वंछयौ प्रात प्रथिराज नें । सती सत्त वंछैति उर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन ।

दंडमाली ॥ भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय, चंद मंदय चंद यौ ।
भर तमस तामस, स्रूर वर भार, रास तामस छंद यौ ॥
वर वज्जियं नीसान धुनि, घन वीर वरनि अंकूरयं ।
थर थरकि थाइर, करषि काइर, रस सिस्रूर स क्रूरयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
गज घंट घनकिय, रुद्र [1]भन किय, घनकि संकर उद्दयो ।
रन जंकि [2]भेरिय, कान्ह हेरिय, दंति दाल थनं [3]दयौ ॥
सुनि वीर सद्दइ, सवद पद्दई, सद्द असद्दइ छंडयौ ।
तिह ठौर अदभुत, होत न्रप दल, वंधि दुज्जन पंडयौ ॥ छं० ॥ ५९ ॥
सन्नाह स्रूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई ।
मुकर में प्रतिव्यंव राजय, सत्त घन ससि साजई ॥
वर फद्धि वंवर, टोप आयो, त रोस सीसत आइए ।
नष्षिच हस्त कि, भान चंपक, कमल स्रूरहि साइए ॥ छं० ॥ ६० ॥
वर वीर धा जोगिंद पत्तिय, कद्धि ओपम पाइयं ॥
तजि मोह माया, छोह कल वर, धार तित्थह धाइयं ॥
संसार संकर वंधि, गज जिम, अप्प वंधन हथ्थयं ।
उनमत्त गज जिमि, नंख दीनी, मोह माया सथ्थयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥
सो प्रवल मह जुग, वंधि जोगी, मुनी आरम देवयौ ।
सामंत थनि जिम, षित्ति कीनी, पत्त तरु जिम भेवयौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

---

(१) ए.-मनपिय । (२) ए.-भोरिय ।
(३) ए.-घनंजयौ।

तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया।

दूहा॥ अहि बेली फल हथ्थं लै। तो ऊपर तत्तार॥
मेच्छमह्हरति सत्ति कैं। बंच कुरानी बार॥ छं०॥ १६॥

तत्तार खां का कहना कि चन्द पुंडीर को मार कर एक दिन में दिल्ली ले लूंगा।

कुंडलिया॥ बर [1]मुसाफ तत्तार खां। मरन किति [2]नन बान॥
मैं भंजे लाहौर धर। लैहूं सुनि सु विहान॥
लैहैं सुनि सु विहान। सुनैं ढिल्ली सुरतानं॥
लुथ्थि यार पुंडीर। भीर परि है चहुआनं॥
दुचित्त चित जिन करहु। राज आपेट [3]उथापं॥
गज्जनेस आयस्स। चले सब छूप मुसाफं॥ छं०॥ १७॥

चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज का छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना।

दूहा॥ षट सुर कोस मुकाम करि। चढ़ि चल्यौ चौहान॥
चंद बीर पुंडीर कौ। कग्गद करि परिवान॥ छं०॥ १८॥

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन की सेना के रुख पर जाना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का आना।

गोरी बै दल संमुहौ। गौ पंजाब प्रमान॥
पुब्ब रू पच्छिम दुहु दिसा। मिलि चुहान सुरतान॥ छं०॥ १९॥

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना।

दूत गये कनवज्ज दिसि। ते आए तिन थान॥
कथा मंड चहुआन की। कहि कामधज्ज प्रमान॥ छं०॥ २०॥

(१) ए.-मु साफ। (२) ए. कृ. को. तन। (३) ए.-उथान।

रावर उप्पर धाई। पऱ्यौ पांवार जैत पिष्षि ॥
तिहि उप्पर चांमंड। कऱ्यौ हुस्सेन पान सजि ॥
धक्काई धक्काइ। दोइ दरवल बर मझ्झै ॥
पच्छ सेन आहुट्टि। अनी बंधी आलुझ्झै ॥
गजराज बिय सु सुरतान दल। दह चतुरंग बर वीर बर ॥
धनि धार धार धारह धनी। बर भट्टी उप्पारि कर ॥ छं० ॥ ७० ॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना।

छत्र सु जीक सु अप्पि। जैत दीनौ सिर छत्रं ॥
चन्द्रव्यूह अंकुरिय। राज [1]दुअ इहां इकत्तं ॥
एक अग्र हुस्सेन। बीय अग्रह पुंडीरं ॥
मद्धि भाग रघुवंस। राम उम्भौ बर बीरं ॥
सांषलौ सूर सारंग दे। उररि षान गोरीय मुष ॥
हथनारि [2]गोर जंबूर घन। दुहूं बांह उम्भंति [3]रष ॥ छं० ॥७१ ॥

दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना।

छुट्टि अद्ध बर घटिय। चढ्यौ मध्यान भान सिर ॥
सूर कंध बर कढ्ढि। मिले काइर कुरंग बर ॥
घरी अद्ध बर अद्ध। लोह सों लोह जु रुक्के ॥
मन अग्गै अरि मिले। चित्त में कंक षरक्के ॥
पुंडीर भीर भंजन भिरन। लरन तिरच्छौ लग्गयौ ॥
नव बधू जेन संका सुबर। उदौ जानि जिम भग्गयौ ॥ छं० ॥७२॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना। योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना।

भुजंगी ॥ मिले चाइ चहुआन सा चंपि गोरी। स्वयं पंच कोरी निसानं अहोरी॥
बजे आवद्धं संभरे अद्ध कोसं। घने अग्ग नीसान मिल्लि अद्धकोसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) छ. मो.-हुअ। (२) ए. कृ. को. जो, जोरो। (३) कृ.-सख।

तन सट्टै [1]सहि मुकति । बोल भारथ्थौ बोलै ॥
लोह अंच उड्डंत । पत्त तरवर जिम डोलै ॥
सुरतान चंपि मुष्पां लग्यौ । दिल्ली न्रप दल बानिवौ ॥
भर भीर धीर सामंत पुन । अवै पटंतर जानिवौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उस से नहीं डरता।

कहै राव पज्जून । तार कब्बों तत्तारिय ॥
मैं दष्पिन वै देस । भीर जद्दव पर [2]पारिय ॥
मैं बंध्यो जंगलू । राव चामंड [3]सु सथ्थे ॥
बंभन वास विरास । वीर बड़ गुज्जर तथ्थे ॥
भर विभर सेन चहुआन दल । गोरी दल [4]कित्तक गिनौ ॥
जानै कि [5]भीम कौरव सुवर । जर समूह तरवर किनौ ॥छं०॥२५॥

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अत एव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है आगे जो आप की इच्छा हो।

कहै जैत पंवार । सुनहु प्रथिराज राज मत ॥
जुद्ध साहि गोरी । नरिंद लाहौर कोट गत ॥
सबै सैन अप्पनो । राज एकठ्ठ सु किज्ज ॥
इष्ट भ्रृत्य सगपन सु । हित कागद लिपि दिज्जै ॥
सामंत सामि इहि मंत है । [6]अरु जु मंत चित्तै न्रपति ॥
धन रहै ध्रम्म जसु जोग ह्वै । दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं०॥२६॥

(१) ए.-सट्टि ।　　(२) मो.-परिहरिय ।
(३) मो.-जु ।　　(४) मो.-किन्ती ।
(५) ए.-भीम, कौरू, कौरू, कौरौं ।　　(६) ए.-अरु जुद्ध ।

सुनी वर आगम ¹जुग्गन बैन । नच्चौ कबहूं न सु उद्दिम मैन ॥
कबहूं ढुरि क्रंनन ²पुच्छत नैन । कहौ किन अब्र ढुरी ढुरि बैन ॥
छं० ॥ ८२ ॥

मगि रोर नसै सब दुंदभि बज्जि । उभै रतिराज ³सुजोवन सज्जि ॥
कहौ वर ओन सुरंगिय रज्जि । चंपे ⁴रन दोउ बनं बन भज्जि ॥
छं० ॥ ८३ ॥

इय मीनन लीन भये रत रज्जि । भम विभ्रम भारु परी गहि नज्ज॥
सुर मारुत फौज प्रथंम चलाइ । गति लज्जि सकुच्चि कछे मिलि आइ॥
छं० ॥ ८४ ॥

दहि सीत मधूप न कंदहि जीव । प्रकटै उर तुच्छ सोऊ उर भीव॥
बिन पल्लव कोरहि ⁵तारहि रंभ । गहना बिन वाल विराजत अंभ॥
छं० ॥ ८५ ॥

कलि कंठन कंठ सज्यौ अलि पंघ । न उड्डिय भ्रंग नवेलिय अंघ ॥
सजी चतुरंग सज्यौ बन राइ । बजी इन उप्पर सैसब जाइ ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कवि मत्तिय जूह तिंन बहु घोर । बनं तब संधय चंद कठोर॥
छं० ॥ ८७॥

रसावला ॥ बोल षुच्चै घनं, स्वांमि जंपे मनं । रोस लग्गो तनं, सिंघ मद्दं मनं॥
छं० ॥ ८८ ॥

छोह मोहं षिनं, दांन छुट्टे ननं । नाम राजं घनं, भ्रंम सातुक्कनं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

मेच्छ वाहं बिनं, रत्त कंधं ननं । ढल्ल जा ढाहनं, जीवता सा हनं॥
छं० ॥ ९० ॥

बान जा संधनं, पंषि जा बंधन । स्यांम सेतं अनी, पीत रत्तं घनी॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूह मची षरी, रोस दंती फिरी । फौज फट्टी पुनं, सूर ऊभ्भे घनं॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) ए.-जुद्दन । (२) मो. ए. को.-पुच्छन। (३) ए.-सजीवन ।
(४) ए. कृ. को.-नर । (५) ए.-तारि संभ ।

[1]गजन संग प्रथिराज कै। द्वै दिष्षिय परवान ॥
बज्जी पष्पर षंड रै। चाहुआन सुरतान ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्यारह अष्पर पंच पट। लहु गुरु होइ समान ॥
कंठ सोभ वर छंद कौ। नाम कह्यौ परवान ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन।

छंद कंठशोभा ॥ फिरे हय वष्पर पष्पर से। मने फिर इंदुज पंष कसे ॥
सोई उपमा कविचंद कथे। सजे मनों पोंम पवंग रथे ॥ छं० ॥ ३२ ॥
उर पुट्ठिय [2]सुट्ठिय दिट्ठय ता। वपरी पय लंगत ता धरिता ॥
लग्गे उड़ि छित्तिय [3]चौ नलयं। सुने षुर केह अवत्तनयं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
अग वंधि सु हेम हमेल घनं। तव चामर जोति पवंन रुनं ॥
ग्रह अट्ठस तारक [4]वीत पगे। मनों सुत कें उर भान [5]उगे ॥ छं० ॥ ३४ ॥
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मनौं विंटय देषि चलै कुलटा ॥
मुष कट्टिन घूंघट अस्स वली। मनों घुंघट दै कुल वद्दु चली ॥
छं० ॥ ३५ ॥
तिनं उपमा वरनो न घनं। पुजे नन वग्ग पवंन मनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा।

कुंडलिया ॥ नव वज्जी घरियार घर। राज महल उठि जाइ ॥
निसा अद्ध वर उत्तरे। दूत संपते आइ ॥
दूत संपते आइ। धाइ चहुआन सु जग्गिय ॥
सिंघ विहथ्थे मुक्कि। साहि साहीउर तग्गिय ॥
अट्ठ सहस गजराज। लष्ष अट्टारह [6]ताजिय ॥
उभै सत्त वर कोस। साहि गोरी नव बाजिय ॥ छं० ॥ ३७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गजन सिंग। (२) ए. कृ. को.-उर उप्पर पुट्ठिय दिट्ठियत। (३) ए-दो, दी। (४) ए. कृ. को.-पीत पगे। (५) ए.-उडे। (६) ए. कृ. को.-राजिग।

अनम अठेल अभंग। नीर असि मीर समाहिय॥
अति दल बल आहुट्टि। पच्छ लज्जी पर वाहिय॥
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ। रज न लगी रज रज भयौ॥
उच्छंगन अच्छर सो लयौ। देव विमानन चढ़ि गयौ॥ छं० ॥१००॥

जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा।

परि पतंग जै सिंघ। पतँग अप्पुन तन दझ्झै॥
नव पतंग गति लीन। करे अरि अरिधज धज्जै॥
तेल ठांम बात्तीय। [1]अगन्नि एकल विरुझाइय॥
पंच अप्प अरि पंच। पंच अरि पंथ लगाइय॥
आरन्नि कूंआरी बर बऱ्यौ। दै दाहन दुज्जन दवन॥
जीतेव असुर महि मंडलह। और ताहि पुज्जै कवन॥ छं०॥१०१॥

वीर पुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना।

रुप्यौ बीर पुंडरी। फिरी पारस सुरतानी॥
शस्त्र बीर चमकंत। तेज आरुहि सिर [2]ठानी॥
टोप ओप तुट्टि किरच। सार सारह जरि भारे॥
मिलि नछ्छिच रोहनी। सीस ससि उडगन चारे॥
उठि परत भिरत भंजत अरिन। जै जै जै सुर लोक हुअ॥
उठ्यौ कमंध पलपंच चव। कोन भाइ कप्यौ जु धुअ॥ छं०॥१०२॥

पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना।

दुजन सल्ल कूरंभ। बंध पल्हन सक्कारिय॥
संम्हौ षां षुरसान। तेग लंबी उभ्भारिय॥
टोप टुट्टि बर करी। सीस परि तुट्टि कमंधं॥
मार मार उच्चार। तार तं नंचि कमंधं॥

---

(१) मो.-अगन्नि। (२) ए.-तानी।

शांहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उन का पराक्रम वर्णन।

रचि हरवल सुरतान। साहिजादा सुरतानं॥
षां पैदा महमूद। वीर बंध्यो सु विहानं॥
षां मंगोल लल्लरी। बोस टंको वर पंचै॥
चो तेगीसह ताज। वान अरि प्रान सु अंचै॥
जँहगीर षान जह गोर वर। षां हिंदू वर वर विहर॥
पच्छिमी षान पठ्ठान सह। रचि उभ्भै हरवल गहर॥ छं०॥४३॥
रचि हरवल पठ्ठांन। षान इसमान रु गप्पर॥
केली षां कुंजरी। साह सारी दल पप्पर॥
षां भट्टी मह नंग। षान पुरसानो बब्बर॥
हबस षान हुज्जाव। अब्ब आलम्म जास वर॥
तिन अग्ग अट्ट गजराज वर। मद सरक्क पट्टे तिना॥
पंच विन पिंड जो ऊपजे। जुद्ध होइ लज्जी विना॥ छं०॥ ४४॥

शहाबुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाब पार करना।

[1]करित माय वहु साहि। तीस तहँ रप्पि फिरस्ते॥
आलम षान गुमान। षान रजवक्क निरस्त॥
लहु मारूफ गुमस्त। षान दुस्तम बजरंगी॥
हिंदु सेन उप्परे। साहि बज्जै रन जंगी॥
सह सेन टारि तोरा रच्यौ। साहि चिनाब सु उत्तर्यौ॥
संभल सूर सामंत नृप। रोस वीर वीरं दुर्यो॥ छं०॥ ४५॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना पुंडीर उसे रोके हुए है।

(१) ए.-करत माइ चौसाहि।

रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा।

भुजंगी ॥ [1]छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं। मिली ढालनी माल राही समानं॥
निसा मान नीसान नीसान धूश्रं। धुश्रं धूरिनं मूरिनं पूर कुश्रं॥
छं० ॥ १०७॥

सुरत्तान फौजं तिनें [2]पत्ति फेरी। मुषं लग्गि चहुआन पारस्स घेरी॥
भये प्रात सुज्जात संग्राम पालं। चहुव्वान उठ्ठाय सालोपि थाल॥
छं० ॥ १०८॥

जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ जैत बंध ढहि पऱ्यौ। लष्प लष्पन कौ जायौ॥
तहं झगरी मह माय। देवि हुंकारौ पायौ॥
हुंकारै हुंकार। जूह गिद्धनि उड्डायौ॥
गिद्धिन तें अपछरा। लियौ चाहत नहि पायौ॥
अब तरन सोइ उतपति गयौ। देवथान बिभ्रम [3]बियौ॥
जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर। भान थान भानै बियौ ॥छं०॥१०९॥

तन झंझरि पावार। पऱ्यौ धर मुच्छि [4]घटिय बिय॥
बर अच्छर बिंटयौ। सुरंग मुक्के सुरंग हिय॥
[5]तिहित बाल तत काल। सलष बंधिव ढिग आइय॥
लिषिय अंग बिय अथ्थ। सोई बर बंच दिषाइय॥
जनम मरन सह दुह सुगति। नन मिट्टै भिंटह न तुश्र॥
ए वार सुबर बंटहु नहीं। बंधि लेहु सुक्की बधुश्र॥ छं० ॥ ११०॥

महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना।

(१) ए.-छंदानं, कृ. मो.—छदनी, छंदनीमा.। (२) ए. कृ. को.—पंति।
(३) मो.-भयौ। (४) ए.-घटय। (५) मो.-तिहित काल सतबाल।

बर मीर धीर मारूफ दुरि। [1]पंच अनी एकठ जुरी ॥
मुर पंच कोस लाहोर तें। मेच्छ मिलानह सो करी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं। पृथ्वीराज ने चन्द्र व्यूह की रचना करके चढ़ाई की।

दूहा ॥ बीर रोस बर बैर बर। भुकि लग्गै असमान ॥
तौ नंदन सोमेस कौ। फिरि बंधौ सुरतान ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चन्द्रव्यूह न्टप बंधि दल। धनि प्रथिराज नरिंद ॥
साहि बंध सुरतान सौं। सेना बिन विधि कंद ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की। (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित्त ॥ बर मंगल पंचमी। दिन सु दीनौ प्रथिराजं ॥
राह केत जय दीन। दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
अष्ट चक जोगनी। भोग भरनी सुधि रारी ॥
गुर पंचम रवि पंच। अष्ट मंगल न्टप भारी ॥
कै इंद्र बुद्ध भारथ्थ भल। कर चिहूल चक्का वलिय ॥
सुभ घरिय राज बर लीन बर। चढ्यौ उदै क्रूरह वलिय ॥छं०॥५५॥
दूहा ॥ सो रचि उद्ध अवद्ध अध। [2]उग्गि महव विधि [3]कंद ॥
बर निषेद न्टप बंद्यौ। को न भाय कविचंद ॥ छं० ॥ ५६ ॥

जिस प्रकार चक्रवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्य्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्य्योदय को चाहता था।

---

(१) ए.-खंच। (२) ए. लगी। (३) ए.-मंडि, कृ.-मंदि मंड।

कुंडलिया ॥ तेग झारि उभझारि बर । [1]फिरि उपमा कवि [2]कथ्य ॥
नैन बान अंकुर [3]बुहुरि । तन तुट्टै वहि हथ्य ॥
तन तुट्टै वहि हथ्य । फेरि बर बीर स बीरह ॥
मरन चित्त सिंचयौ । जनम [4]जिन तजी ज जीरह ॥
हथ्थ वथ्थ आहित्त । फेरि तक्के उर वेगा ॥
लंगा लंगरि राइ । बीर [5]उच्चाइ सु तेगा ॥ छं० ॥ ११६ ॥

लोहाने की वीरता का वर्णन। चौसठ खाँओं का मारा जाना।

कवित्त ॥ लोहानौ मद मुंद । बान मुक्कै बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर ज्वान । पिट्ठ जरद्द निकारी ॥
मनों किवारी लागि । पुट्ठि घिरकी उघ्घारिय ॥
बट्टारी बर कढ्ढि । बीर अवसान संभारिय ॥
एक झार मीर उरझारि [6]झर । करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसठ्ठि षान गोरी परै । तिन [7]रावव इक राज परि ॥छं०॥११७॥

मानि लोह मारूफ । रोस विड्डुर गाहक्के ॥
मनु पंचानन बाहि । सद्द [8]सिरहद्द हहक्के ॥
दुहूं मीर बर तेज । सीस इक सिंघह बाही ॥
टोप टुट्टि बहकारी । चंद [9]ओपमता पाई ॥
मनु सीस बीय शृंग विज्जुलह । रही हेत तुटि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै । मनु उड़गन न्रप तेज मति ॥छं०॥११८॥

चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सरदार मारे गए। हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन।

---

(१) क्र.-फेरि उपम। (२) मो.-तत्थ। (३) मो.-परैं।
(४) ए.-क्र.-को.-तिन (५) ए.-उच्चार।
(६) ए.-कर। (७) ए. क्र. को.-राइ। (८) मो.-सिरद्दस, सिरद्दसु।
(९) ए. क्र. को.-उपमा सु, उपमा सुइ।

दूहा ॥ क्रम गाह इक मुगत की । क्यों करिजै बाधान ॥
मन अनंध सामंत नै । [1]कच कर बति पाषान ॥ छं० ॥ ६३ ॥
बाई विष धुंधरि परिय । बद्दर छाए भान ॥
कुन घर मंगल बज्जही । कै चढ़ि मंगल आन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन ।

दिष्ट देषि सुरतान दल । लोहा चक्कत बान ॥
पहकि फेरि उड़गन चले । निसि आगम फिरि [2]जान ॥ छं० ॥ ६५ ॥
धजा बाइ बंकुर उड़ति । छबि कविंद इह आइ ॥
उड़गन चंद नरिंद बिय । लगो [3]मनों अइ पाइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
से सनि संकहि बजतहि । बाजे कुहक सुरंग ॥
मेटै सद्द निसान के । सुने न श्रवनति अंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया ।

अनी दोउ घन घोर ज्यों । [4]घाय मिले कर घाट ॥
चित्रंगी रावर बिना । करै कोन दह बाट ॥ छं० ॥ ६८ ॥
कवित्त ॥ पवन रूप परचंड । घालि असु असि वर झारै ॥
मार मार सुर बज्जि । पत्त तुरू अरि सिर पारै ॥
फहकि सद्द [5]फेफरा । हड्ड कंकर उप्पारै ॥
कटि भसुंड परि मुंड । भिंड कंटक उप्पारै ॥
बज्जयौ विषम मेवारपति । रज उडाइ सुरतान दल ॥
समरथ्थ समर [6]सम्मर मिलिय । अनी मुष्ष पिष्यौ सबल ॥ छं० ॥ ६९ ॥

रावल, जैत पँवार, चामंड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना । पीठि सेना का पीछे से बढ़ना ।

(१) मो.-ज्यौं कचकरवर्ती । (२) को.ए.-जाम । (३) ए. मो.-मानों-मानो ।
(४) ए. कृ. को.-घाघा मिलिक थाट, कर थाट ।
(५) ए. कृ. को.-फीफरा । (६) ए. कृ. को.-मनमथ मिल, मिली, मिल्यौ ।

कवित्त ॥ दस हथ्थी सु विहान। साहि गोरी मुष किन्नौं ॥
कर अकास बादी। ततार चवकोद स दिन्नौं ॥
नारि गोरि जंबूर। कुहक बर बान अघातं ॥
गज्जि भग्ग प्रथिराज। चित्त करयो अकुलातं ॥
सो मोह कोह बर बज्जि कों। ब्रज उन धारय धमसि कैं ॥
सामंत सूर बर बीर बर। उठे बीर बर हमसि कौं ॥ छं० ॥ १२७ ॥
अद्ध अद्ध जोजनह। मीर उड़ि संगा केरी ॥
तब गोरी सुरतान। रोस सामंतह घेरी ॥
चक्र अवन चौंडोल। अग्ग [1]सेषन पंचासौ ॥
सूर कोट ह्वै जोट। सार मारनह हुलासौ ॥
बर अगनि बगी [2]हल्लौ नहीं। पद्दर कोट सुजोट हुअ ॥
बर बीर रास समरह परिय। सार [3]धार बर कोट [4]हुअ। छं०॥१२८॥
रसावला ॥ मेलि साहं भरं, षग्ग षोले रुरं। हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं॥
छं० ॥ १२९ ॥
दंत कढ्ढे करं, उप्पमा उप्परं। केद भीलं जुरं, कोपि कढ्ढे करं ॥
छं० ॥ १३० ॥
कंध ननं धरं, पंष जष्षं फिरं। तीर नंषे करं, मेघ बुढ्ढं बरं ॥छं०॥१३१॥
आवधं संभरं, बंक तेगं करं। चंद बीजं बरं, अद्ध अद्धं धरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥
बीय बंधं धरं, कित्ति जपै सरं। अस्सु ढुंढै फिरं, रंभ बंछै बरं ॥
छं० ॥ १३३ ॥
थान थांनं नरं, धारधारं तुटं। भ्रंम वासं छुटं, ... ॥
छं० ॥ १३४ ॥
साह गोरी बरं, षग्ग षोले करं। .... ॥ छं० ॥ १३५ ॥

खुरासान खां का सुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना।

(१) ए.-नेषन। (२) मो.-हसौ, हस्यौ। (३) ए.कृ को.-धरि। (४) ए.-तुव।

बर बंबर चौर माहौति साई । हलै छच पीतं बलै यार घाई ॥
बुलै सूर हक्के दहक्के पचारं । घलै बथ्थ दोऊ धरं जा 'अपारं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

उतंमंग तुट्टैं परैं श्रोन धारी । मनों दंड सुक्की अगौवाइ वारी ॥
नचैं कंध बंधं हकैं सीस भारी । तहां जोग माया 'जकी सी विचारी॥
छं० ॥ ७५ ॥

बढ़ी साँग लग्गी वजी घार धारं । तहां सेन दूनं करैं मार मारं॥
नचै रंग भैरू गहैं ताल बीरं । सुरंग अच्छरी बंधि नारद्द तीरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

इसी जुद्ध बधं उब्बद्धे उभानं । भिरैं गोरियं सेन अह चाहुआनं ॥
करैं कुंडली तेग बग्गी 'प्रमानं । मनों मंडली रास तं कन्ह वानं ॥
॥ छं० ॥ ७७ ॥

फुठी आवधं माहि सामंत सूरं । वजै गोर ओरं मनों वज्ज कूरं॥
लगै धार धारं तिनै धरह तुट्टै । दुहूं कुंभ भग्गे करंकं अहुट्टैं ॥
॥ छं० ॥ ७८ ॥

फुटी श्रोन भोमं 'अपं विंब राजं । मनों मेघ वुट्ठैं प्रथीमैं समाजं॥
पराक्रम्म राजं प्रथीपत्ति रुथ्यौ । रनं रुंधि गोरी सहं जंग जुथ्यौ ॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुलतान का घबराना। तातार खां का धैर्य दिलाना।

दूहा ॥ तेज छुट्टि गोरी सुबर । दिय धीरज तत्तार ॥
मो उभ्भैं सुरतान को । 'भीर परी इन वार ॥ छं ॥ ८० ॥

उक्त युद्ध की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

मोतीदाम ॥ रतिराज रु जोवन राजत जोर । च प्यौ ससिरं उर शैशव कोर ॥
उनी मधि मद्धि मधू धुलि होय । तिनं उपमा बरनी कवि 'जोय ॥
छं० ॥ ८१ ॥

(१) ए.-अपारं । (२) मो.-जुकीयं विचारी । (३) ए. कृ.-पमानी ।
(४) कृ. ए.-अपी । (५) ए.-भरी । (६) ए. कृ. को.-कोह, कोय, होइ ।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला।

कवित्त ॥ पच्छै भौ संग्राम। अग्ग अप्छर विचारिय ॥
पुछै रंभ मेनिका। अज्ज चित्तं किम भारिय ॥
तब उत्तर दिय फेरि। अज्ज पहुनाई आइय ॥
रथ्थ बैठि औथांन। सोइतह कंत न पाइय ॥
भर सुभर परें भारथ्थ भिरि। ठाम ठाम चुप जीत सय ॥
उथकीय पंथ हल्लै चल्यौ। सुथिर सभौ देपीय [1]तय ॥ छं० ॥ १४४ ॥

रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए।

कुंडलिया ॥ कहैं रंभ सुनि मेंनकनि। ए रहु जिन मत जुथ्थ ॥
अरिय अनंमति जानि करि। जुति आवें ग्रह रथ्थ ॥
जुति आवें ग्रह रथ्थ। ब्रह्म शिव लोकह छंडी ॥
विश्न लोक ग्रह करै। भान तन सों तन मंडी ॥
रोमंचि तिलक्क वसि वरी। इंद्र वधू पूजन जही ॥
ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि। अब तारन वरहै कही ॥ छं० ॥ १४५ ॥

हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ खां, तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा।

कवित्त ॥ षां हुसेन ढरि पर्यौ। अस्व फुनि पर्यौ सार बहि ॥
झुझझ्झ फेरि सति सीव। षान उजबक्क षेत रहि ॥
षां ततार मारूफ। षान षाना घट घुम्मैं ॥
तब गोरी सु बिहान। आइ दुज्जन मुष झुम्मैं ॥

(१) ए.कृ.को.-नथ।

लेहु लेहु करी, लोह कट्टे अरी। कन्ह जा संभरी, पाइ मंडे फिरी ॥ छं० ॥ ६३ ॥

वीर हक्कं करी, नैन रत्तं वरी। पंड जा पोलियं, वीर सा बोलियं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

वीर वज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं। झार संकोरीयं, फौज विप्फौरियं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

दंत रुद्दी परे, अग्ग फूलं झरे। हेमयं नारियं, जावकं ढारियं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

आननं हंकयं, अंग (१)जानंचयं। सत्त सामंतयं, वांन सा पथ्थयं ॥ छं० ॥ ६७ ॥

फौज दोज फटी, जांनि जूनी टटी। .... ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा। शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया।

कवित्त ॥ सौलंकी माधव। नरिंद पिलची मुष लग्गा ॥
सुवर बीर रस बीर। बीर बीरा रस पग्गा ॥
दुअन बुद्ध जुध तेग। दृह्न हथ्थन उभ्भारिय ॥
तेग तुट्टि चालुक। बथ्थ परि कढ्ढि कटारिय ॥
अग अग्ग रुकि ठिल्ले बलन। अधम जुड लग्गे लरन ॥
सारंग बंध घन घाव परि। गोरी बै दिन्नौ मरन ॥ छं० ॥ ६९ ॥

वीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा।

पग्ग हटकि जुटिक। जमन सेना समंद गजि ॥
हय गय बर हिल्लोर। गरुअ गोइंद दिष्षि सजि ॥

(१) ए.-जामं।

एक महीना तीन दिन क़ैद रखकर नौ हज़ार घोड़े और
बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर
सुलतान को गज़नी भेज दिया।

मास एक दिन तीन। साह संकट में रुंद्धौ॥
करिय अरज उमराउ। दंड हय मंगिय सुद्धौ॥
हय अमोल नव सहस। सत्त से दिन ऐराकी॥
उज्जल दंतिय अट्ठ। वीस मुर ढाल सु जक्की॥
नग मोतिय मानिक नवल। करि सलाह संमेल करि॥
परि राइ राज मनुहार करि। गज्जन वै पठयौ सुघरि॥छं०॥१५०।

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रेवातट
पातिसाह ग्रहनं नांम सत्तवीसमो प्रस्ताव
संपूरणम्॥ २७॥

तहँ देषि रुद्र रुद्रह [1]हस्यौ। [2]हय हय हय नंदी कह्यौ ॥
कविचंद [3]शैलपुत्री चकित। पिष्षि बीर भारथ नयौ ॥छं०॥१०३॥

जै सिंह के भाई का मारा जाना।

सोलंकी सारंग। षान षिलची मुष लग्गा ॥
वह षंगानौ भृत्त। इते चहुआन विलग्गा ॥
है कंध न दिय पाय। कन्ह उत्तरि विय वाजिय ॥
गज गुंजार हुँकार। धरा गिर कंदर गाजिय ॥
जय जयति देव जै जै करहिं। पहुपंजलि पूजत रिनह ॥
इक पन्यौ षेत सोधै सकल। इक रह्यौ वंधे धुनह ॥ छं० ॥ १०४ ॥

गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना।

करी मुष्ष आहुट्ठ। बीर गोइंद सु अप्पै ॥
कविल पील जनु कन्ह। दंत दारुन गहि नप्पै ॥
सुंड दुंड भये षंड। पीलवानं गज मुक्यौ ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल। आइ अंषिन पल रुक्यौ ॥
वर बीर पन्यौ भारथ्थ वर। लोह लहरी लगात झुल्यौ ॥
तत्तार षान सम्हौ सु क्रत। सिंघ हक्कि अंबर डुल्यौ ॥ छं० ॥ १०५ ॥

नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उस की रक्षा करना।

षोलि षग्ग नरसिंघ। षिझ्झि षज सीसह झारिय ॥
तुटि धर धरनि परंत। परत संभरि कट्टारिय ॥
चरन अंत उरझंत। बीर क्रूरंभ करारौ ॥
तैग घाइ चुक्कंत। झरी झर लोह संभारौ ॥
चलि गयौ [4]क्रमनं क्रम्मन चलै। डुल्यौ न [5]डुल्ल तन हथ्थ वर ॥
तिन परत बीर दाहर तनौ। चामंडा वज्जी लहर ॥ छं० ॥ १०६ ॥

(१) मो.-भंयौ। (२) मो.-हय हय। (३) ए.- सवल, कृ. को.- समल।
(४) मो.-न क्रमन क्रमनत। (५) ए.-नरं डुल्लन।

निरदै नरिंद इन यिधि विसास। आनंग लोक हिरदै निरास॥
उपगार को न मानै विवेक। संसार माहिं ऐसे अनेक॥ छं० ॥ ७॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है।

कवित्त॥ तसकर[1] चेलक विप्प। बैद [1]दुरजन अति लोभी॥
प्राहुन अहि जल ज्वाल[1]। काल न्रिप इन में मोभी॥
इन परचिंता नाहिँ। बहुत करि जौपै कहिये॥
[2]अप्प सहज चालंत। चित्त की वात न लहिये॥
प्रथिराज लोक तूंअर घरह। अरुचि दिट्ठ मंडै तनह॥
भोगवै धरा जीवत धनिय। संक न कोइ मानै मनह॥ छं० ॥ ८

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज के दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा।

दूहा॥ संभरि वै सोमेस न्रप। अति उतंग आचार॥
ढिल्ली प्रथि तूंअर दइय। सुन्यौ घिज्यौ महिपार॥ छं० ॥ ९ ॥

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख क बुलाया। गक्खर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय।

कवित्त॥ चंदेरी चतुरंग। सैन हय गय पक्वानं॥
ठौर ठौर कग्गदह। दए मालव धरवानं॥
गषषड़ गुंड भदौड़। सोरपुर सूर समाहे॥

---

(१) ए.-को. जुरजन।
(२) ए.कृ.को.-आप।

दूहा ॥ राम बंध कौ सीस बरं । ईस गह्यौ कर चाइ ॥
'अथ्थि दरिद्री ज्यौं भयौ । देषि देषि ललचाइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

एक पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया।

जाम एक दिन चढ़त बर । जंघारौ झुकि वीर ॥
तीर जेम तत्तौ पऱ्यौ । धर अप्पारै मीर ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ जंघारौ जोगौ । जुगिंद कढ्यौ कट्टारौ ॥
परस पानि तुंगी । त्रिसूल मप्पर अधिकारौ ॥
जटत वांन सिंगी । विभूत हर वर हर सारौ ॥
सबर सद्द वद्दयौ । विषम मद गंधन झारौ ॥
आसन सदिट्ठ निज पत्ति में । लिय सिर चंद अम्रित अमर ॥
मंडलीक राम [2]रावत भिरत । नभौ वीर इत्तौ समर ॥छं०॥११३॥

शस्त्र सजकर सुलतान का युद्ध में टूटना। लंगरी राय का घोर युद्ध मचाना। लंगरी राय की वीरता की प्रशंसा।

सिलह सज्जि सुरतान । झुक्कि वज्जे रन जंगं ॥
सुनें श्रवन लंगरी । वीर लग्गा अनभंगं ॥
बीर धीर सत मध्य । बीर हुंकारि रन धायौ ॥
सामंता सत मझि । मरन दीनं भय सायौ ॥
पारंत धक्क हक्कंत [3]रन । पग प्रवाह पग पुल्लयौ ॥
विभ्भूत चंद अंगन तिलक । बहसि बीर हकि बुल्लयौ ॥छं०॥११४॥
लंगा लोह उचाइ । पऱ्यौ घुंमर घन मझ्झै ॥
जुरत तेग सम तेग । कौर बद्दर कछु सुझ्झै ॥
यौं लग्गौ सुरतान । अनल दावानल दग्गं ॥
ज्यौं लंगूर लग्गया । अगनि अगै आलग्गं ॥
इक मार उभार अपार मल । एक उझार सुझारयौ ॥
इक बार तऱ्यौ दुस्तर रुपे । दूजै तेग उभारयौ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.-अथिर।   (२) मो.-रावन।   (३) ए.-रिन, तरिन।

सिंघ पँवार असिंघ। गौड़ संजम चहुआनं॥
बाहन बीर सधीर। राज गुर राम सुजानं॥
मंत मंति भर अवर। करे समचित्त अनेकं॥
तुम लज्जा धर धीर। बीर बीराधि [1]विवेकं॥
संभरिय सोम पुच्छत बयन। कहिय बत्त सम तत्तकल॥
छल बल अनेक छचिय करन। तुच्छ सत्थ पुज्जे न [2]पल॥छं०॥१३॥

दूहा॥ चंद चंद निसि दंद मति। [3]ऋतु सरद गुरवार॥
तेरसि तकि सज्यौ सयन। रचि [4]रति वाह विचार॥ छं०॥ १४॥

सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी।

कवित्त॥ रत्ति वाह छल जुद्ध। अधम [5]षिची परिमानं॥
[6]कूड़ कपट मारियै। अधम निद्रा गति जानं॥
मल मोचन रति रवन। सेन पूजन जल न्हानं॥
मंच जाप जप्पंत। करै नह घात सुजानं॥
तुम मंत तंत संचौ कहिय। इह अध्म्म छल हारिये॥
जो गिनइ पुरुष निंदा अपर। लछ रति वाह विचारिये॥
छं०॥ १५॥

सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इस में कोई दूषण नहीं है।

छल तक्यौ श्री राम। सेत साइर तव बंध्यौ॥
छल तक्यौ सुग्रीव। बालि जिउ ताड़ह संध्यौ॥
छल तक्यौ लछिमना। सूर मंडल अरि बेध्यौ॥
छल तक्यौ नरसिंघ। अग्गकुस नष उर छेद्यौ॥

(१) ए.कृ.को.-बिमेकं। (२) ए.कृ.को.-पल। (३) ए.कृ.को.-रित, रति।
(४) मो.-रबि। (५) ए.कृ.को.-छत्रि। (६) ए.कृ.को.-कूड कूड़।

भुजंगी ॥ परे पांन चौसट्ठि गोरी नरिंदं । परे सुभर तेरह कहै नाम चंदं ॥
परे लुथ्थिलुथ्थी जु सेना अलुझ्झं । लिषे कंक अंकं बिना कौन बुझ्झं॥
छं० ॥ ११९ ॥
पऱ्यौ गोर जैतं मधिं सेस ढारी । जिनं राषियं रेह अजमेर सारी ॥
पऱ्यौ कनक आहुट्ठ गोविंद बंधं । जिने मेछकी पारसं सब्ब पद्धं ॥
छं० ॥ १२० ॥
पऱ्यौ प्रथ्थ बीरं रघूबंस राई । जिनें संधि पंधार गोरी गिराई ॥
पऱ्यौ जैत बंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मीर बानेति वानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
पऱ्यौ जोध संग्राम सो हंक मोरी । जिनें कट्टियं बैर गोदंत गोरी ॥
पऱ्यौ दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यौ पान गंसी॥
छं० ॥ १२२ ॥
पऱ्यौ बीर बानेत नादंत नादं । जिने साहि गोरी [1]गिल्यौ साहि जादं॥
पऱ्यौ आवलौ जालहते सैन भष्षं । हए सार मुष्षं [2]निकस्संत नष्षं॥
छं० ॥ १२३॥
पऱ्यौ पाल्हनं बंध माल्हन राजी । जिनें अग्ग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
पऱ्यौ बीर चहुआन सारंग सोरं । बजे दोइ ग्रैहं ज आकास तोरं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
पऱ्यौ राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंथ चल्लाइ संचं ॥
पऱ्यौ भान पुंडीर ते सोम कंमं । [3]झिल्ले जुझ्झयं बज्जयौ पंच जंमं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
पऱ्यौ राउ परसंग लहु बंध भाई । तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझि पाई ॥
पऱ्यौ साहि गोरी भिरै चाहुआनं । कुसादे कुसादे चवै मुष्प पानं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूसरे दिन तत्तार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना।

(१) ए.-मिल्यौ। (२) मो.-निसकत। (१) ए. जिने जुझ्झतें बज्जयो पंच जंमं।

पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था।

दूहा ॥ पट्टन जादव आय नृप। किय डेरा बरवान ॥
सुनि सोमेसर दौरि करि। ज्यों निधि रंक प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आतुर अजमेर पहु। आइ कुलिंगन बाज ॥
यों रस रत्ता सूर भर। मुकत्ति चिया धरि साज ॥ छं० ॥ २६ ॥

चारों ओर खलबली मच गई। रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे।

कवित्त ॥ अप्प अप्प मुष अरिन। सूर संमुह झल्लारिय ॥
हाइ हाइ उच्चार। धरनि अंबर लुटि डारिय ॥
चमकि चित्त चिपुरारि। अष्ट गन नारद नंचिय ॥
सेस सटप्पटि सलकि। दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मानों कि जलद लुट्टिय तड़ित। बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
रति वाह प्रात हूं ते दियौ। अगनि सार बुझ्यो कहर ॥ छं० ॥ २७ ॥

योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन।

रसावला ॥ कट्टि षग्गं लगं, आइ जुट्टे अगं। जानि सूरं उगं, लग्गि षग्गं बगं ॥
छं० ॥ २८ ॥
जानि प्रब्लै जगं, सामि ध्रम्मं मगं। षंड षंडं अंगं, श्रोन [1]तुट्टे रगं ॥
छं० ॥ २९ ॥
पानि वाहै षगं, सूर साधें सगं। देबि [2]ताली ठगं, ठाम ठामं ठगं ॥
छं० ॥ ३० ॥
डंक्कनीयं डगं, एक एकं दिगं। सूर रोपे पगं, नग्ग मानों नगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
सार धारं तमं, जानि ऊकं अगं। बसं जालंदगं, फुट्टि [3]षोपं षगं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ.-बुढ़्ढे। (२) ए. कृ. को.-लागी।
(३) मो.-षोपे।

कवित्त ॥ षाँ षुरसान ततार। पिष्षि दुज्जन दल भष्पै ॥
बचन स्वामि उर पटकि। हटकि तसबी कर नंषै ॥
कजल पंति गज विथुरि। मध्य सैनं चहुआनौ ॥
अजै मानि जै रारि। वियस तेरह चपि प्रानौ ॥
धामंत फिरस्तन कढ़ि असी। दहति पिंड सामंत भजि ॥
वर बीर भीर बाहन [1]कहर। परे धाइ चतुरंग सजि ॥छं० ॥१३६॥

रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ रघुवंसी अरी सेन जाड़ी। हृतौ बाल वेसं संपं लज्ज डाड़ी ॥
बिना लज्ज पष्षे सची ढुंढि पिष्यौ। मनों डिंभरू जानि कै मीन कष्पौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

पऱ्यौ रूक रिनवट्ट अरि सेन माही। मनो एक तेगं झरी नीर दाही ॥
फिरैं अड्डवट्टं उपम्मान वट्टे। विश्वंक्रम्म वंसी कि दारुन्न गट्टे ॥
छं० ॥ १३८ ॥

परे हिंदु मेच्छं [2]उलथ्थी पलथ्थी। करैं रंभ भैरं ततथ्थे ततथ्थी ॥
गहे अंत गिद्धं वरं जे कराली। मनों [3]नाल कट्टें कि सोभै मनाली ॥
छं० ॥ १३९ ॥

तुटे एकटं गाढ़ि कै पग्ग धायौ। मनों विक्रमं राइ गोविंद पायौ ॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेच्छं भ्रमायौ। जनौं भीम हथ्थीन उप्पम्म पायौ ॥
छं० ॥ १४० ॥

ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसौ। ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसौ ॥
झकं बज्जि झंकारयं झंपि उट्ठै। वरं लोह पंचं बधं पंच छुट्टै ॥
छं० ॥ १४१ ॥

मनों सिंघ उझ्झौं अरुझ्झंत छुट्टै। रनं देव सांई सर आव षुट्टै ॥
घनं घोर ढुंढं उतक्कंठ फेरी। लगै झग्गरैं हंस हज्जार एरी ॥छं०॥१४२॥
तुटै रुंड मुंडं वरं जो करेरी। बरदाइ रिझ्झें दुहूं दिन्न भेरी ॥छं०॥१४३॥

(१) ए.-कहर। (२) मो.-उलथ्थी। (३) ए. को.-माल।

संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है।

दूहा ॥ रह्यौ न को रवि मंडलह । रहि कवि मुण्प सु भलह ॥
जीरन जुग पाषान ज्यों । पूर रहंदी गलह ॥ छं० ॥ ४१ ॥

यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था।

फिरि जद्दव भर देस दिसि । समर घाइ लै सैन ॥
अवर चित्त तें अवर परि । कढ्ढि न सक्कै बैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥

सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया।

ग्रिह सोमेसर आनि तिन । मास एक दिन बीस ॥
रष्षि जतन किय न्हान जब । दियौ दान सु जगीस ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा।

सुनिय [1]बत्त प्रथिराज न्रप । चिंति भविष्यत वत्त ॥
अरियन तौ आहोड़ियै । जो लब्भीजै घत्त ॥ छं० ॥ ४४ ॥

इधर दिल्ली की प्रजा ने बाद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास जाकर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए।

कवित्त ॥ अनँगपाल प्रज लोक । जाइ बद्री [2]पुक्कारिय ॥
हम तुम सेवक सामि । छंडि ग्रह राज निकारिय ॥
नहि अदब्ब मन्नयौ । क्रूर मच्चौ चहुआनं ॥

(१) मो.-षबर। (२) मो.-पुकारय, निकारय।

कर तेग झल्लि [1]मुट्ठिय सुबर। नहि सुलतानह पन करी ॥
अदि हार दीह पलटे सुबर। तबहि साहि फिरि पुकरी ॥छं०॥१४६॥

सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे कमान डालकर पकड़ लिया।

तब साहिब गोरी नरिंद। सतबान समाहिय ॥
पहिल बान बर बीर। हने रघुवंस गुसांइय ॥
दूजै बानत कंठ। भीम भट्टी बर भंजिय ॥
चाहुआन तिय बान। पान अद्ध धरि रज्जिय ॥
चहुआन कमान सु संधि करि। तीय बान हथ हथ रहिय ॥
तब लगि चंपि प्रथिराज नें। गोरी वै गुज्जर गहिय ॥छं० ॥१४७॥

सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए। चारों ओर जैजैकार हो गया।

गहि गोरी सुरतान। षान हुस्सैन उपाऱ्यौ ॥
षां ततार निसुरत्ति। साहि झारी करि डाऱ्यौ ॥
चामर छत्र रषत्त। बषत लुट्टे सुलतानी ॥
जै जै जै चहुआन। बजी रन जुग जुग बानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतान कों। गय ढिल्ली ढिल्लीन्द्रपति ॥
नर नाग देव अस्तुति करैं। द्रिपति दीप दिव लोकपति ॥
छं० ॥ १४८॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया।

दूहा ॥ समै एक बत्ती न्रपति। बर छंड्यौ सुरतान ॥
तपै राज चहुआन यौ। ज्यों ग्रीपम मध्यान ॥ छं० ॥ १४९ ॥

(१) मो.-पुट्ठिय।

राज दाम गज तुरिय [1]द्रव। देत न लग्गे वार॥
धरतिय रष्षन यौ सुदृढ़। अहि मनि रष्षन हार॥ छं० ॥ ४९॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला।

मंचि सु मंतह सीष लै। चलि दिल्लिय चहुआन॥
आइस कों जोइस का हा। [2]इह भ्रत भ्रम्म प्रमान॥ छं० ॥ ५०॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो।

चंद्रायना॥ मिल्यौ न्रिपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यौ॥
सा चहुआनह पास नरिंद सु इक्कल्यौ॥
षिज्यौ अनंग नरिंद भूमि हमहीं तजौ॥
कै मिलौ आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जौ॥ छं० ॥ ५१॥

इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

बोल्यौ हंकि नरिंद बसीठ जु दुब्भ्यौ।
तब कमधज्ज नरिंद न उत्तर संभर्‍यौ॥
बात अनंक्कन कौन हीन हुइ उठ्ठयौ।
चंपि लुहट्टिय हथ्थ बीर वर टुट्टयौ॥ छं० ॥ ५२॥

बसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं।

दूहा॥ उठ्यौ बीर बसीठ बल। करि जुहार चहुआन॥
धनी उभै धर लुट्टियै। इह अचिज्ज परिमान॥ छं० ॥ ५३॥

पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं।

---

(१) मो.-वर। (२) मो.-भ्रत्त ध्रम्म सुप्रमान।

अथ अनंगपाल समयौ लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय ।)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

दूहा ॥ दिय दिल्ली चहुआन कौं । तूंअर बद्री जाइ ॥
कहौ दंद कौं मुक्करिय । फिरि दिल्ली पुर आइ ॥ छं० ॥ १ ॥

अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वन्द शासन करना ।

रष्पि वीर प्रथिराज कौं । गौ तीरथ्थह राज ॥
व्यास बचन आनंद सजि । तिहं पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २ ॥
जुग्गिनिपुर प्रथिराज लिय । वज्जि त्रिघोष सुदंद ॥
अनंगपाल तूंअर वरन । किय तीरथ्थ अनंद ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वन्द राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पद्धरी ॥ तूंअर नरिंद तप तेज जानि । प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि ॥
त्रिमान ग्यान मेटै न कोइ । इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥ छं० ॥४॥
दस दिसा अमिट धरती अकास । (१)चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥
ब्रह्मा टरंत टारंत काल । राहंत पंच भूते बिचाल ॥ छं० ॥ ५ ॥
विष्यात बात दस दिसि कहंत । विथ्थुरी देस देसन तुरंत ॥
अप अप्प आनि दीजै निवास । तूंअर नरिंद परजा निकास ॥छं०॥६॥

---

(१) ए.कृ.को.-चंद्रमा सूर दिन दिन प्रकास ।

अनगपाल न न मानि । कूंच किन्नौ दिल्लीय दिसि ॥
भूत [1]भविष जानी न । किये रत्तंत नयन [2]रिस ॥
अप्प सेन सजि जूह । आइ ढिल्ली धरवानं ॥
मात पिता मरजाद । चिंत लग्यो चहुआनं ॥
कैमास मंत पुच्छ्यौ नृपति । कहौ कहा अव किज्जिये ॥
अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै । नैन जठर भषि छिज्जिये ॥छं०॥५७॥

जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लडता हूं और जो छोड देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो।

दूहा ॥ जो मारैं तौ मातपित । छंडौ तौ बल हानि ॥
कहि मंत्री मंत्रं नृपति । न्याय रीति विधि जानि ॥ छं० ॥ ५८ ॥

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानैं यहीं आकर भिड़ैं तो फिर लड़ना चाहिए।

कवित्त ॥ सुनौ नृपति चहुआन । न्याय तौ कलह न किज्जे ॥
इन दीनी धर अप्प । अप्प तौ इनह न दिज्जे ॥
जो न्निमान प्रमान । होइहै सोइ नियानं ॥
जब लग्गौ गढ़ आइ । जाइ तब जुद्ध जुरानं ॥
सजि कोट ओट सामंत सथ । नारि गोर जंबूर वहि ॥
लग्गै न जोर छिज्जै सुभर । इत सामंत लगंत नहि ॥ छं० ॥ ५९ ॥

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लडाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई।

(१) ए. कृ. को.-भवष । (२) मो.-रस ।

मिलि आए महिपाल। अप्प बल सेन उमाहे॥
एकांत मत्त सोमेस पर। धुर संभरि वै लिज्जिये॥
प्रथिराज तुंअर ढिल्ली दिसा। फिरि कलहंतर किज्जिये॥
छं० ॥ १० ॥

मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना।

बर मालव महिपाल। चढ्यौ चहुआन [1]सु उप्पर॥
सेन सजी चतुरंग। दियौ मेलानह सो पुर॥
हय गय थट्ट अघट्ट। घाट चंबिल परि आइय॥
घुरि निसान घमसान। थान थानह हलाइय॥
जादव नरिंद हरिवंस कुल। अति आतुर अजमेर पर॥
उत्तर्यौ सरित [2]संमित सकल। धुंस धरा रावत्त धर॥ छं० ॥ ११ ॥

शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगै और नाम हँसा जाय।

सुनि सोमेसर सूर। चिंति मन मंत उपाइय॥
बर प्रथिराज नरिंद। अनंगपालह बुलाइय॥
रज रजवट रषियै। राव रावत्तन कीजै॥
रहै गल्ह संसार। आव जल अंजुल छीजै॥
मो बंस अंस आनल अटल। कोइ न कहो काइर कहिय॥
अप्पान सुभ्भ संबोधि न्रप। जुद्ध घात [3]पुब्वत लहय॥ छं० ॥ १२ ॥

सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए।

(१) ए. कृ. को.-नु। (२) ए.-समत। (३) ए. कृ. को.-पुस्तक।

नीतिराव खत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति (१)राव षिची सुबर। तूंअर तिहि परधान॥
गोरी दिसि न्रप अप्प दिसि। भेद दियौ चहुआन॥ छं० ॥ ६६॥
अनँगपाल मान्यो नहीं। वरजिय पंडि नरिंद॥
तूंअर अरु चहुआन कै। रहै न एकौ बंध॥ छं० ॥ ६७॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त। दई भूमि मापित्त॥ लई हम हथ्थ पसारह॥
सो पाओ फिर किम सु। बोल बोलहु अविचारह॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहौ सु करन अब॥
दयौ राज तुम हमह। कहा उपजी चित्तह तब॥
मंगौ जु आइ फिरि भूमि तम। सोव राज पाओ नहीं॥
जो गयौ जंत चलि ग्रेह जम। कहौ सु फिरि आवै कहीं॥ छं० ॥ ६८॥

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए।

जलद बूंद परि धरनि। कबहुँ जावै न (२)नभ्भ फिर॥
पवन तुट्टि तरु पच। तरु न लग्गै सु आइ थिर॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जाऔ॥
सिंघ उलंघि सवजह। सोइ फुनि हनि नह पाऔ॥

---

(१) ए.-तत्त। (२) मो. को.-अम्भ।

छल बल करंत दूषन न कोइ । किस्न कलह कंसह करिय ॥
सोमेस राज तकि अप्प विधि । रत्तिवाह छल मन धरिय
छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ ससि न्रिम्मल ससि सूर अप । दिय अस अस्त्र उतान ॥
प्रथुक जोग जिन साल [1]धर । संजोजन सव्वान ॥ छं० ॥ १७ ॥

सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना ।

भुजंगी ॥ ग्रहे सूर सोमेस सा आयुधेसं । इकं सोभई राज जोगिंद भेसं ॥
तजे मोह माया ग्रहन्नी कहन्नी । तजे वंध पुत्तं हरिं चित्त मन्नी ॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

इकं सामि भम्मं ग्रहे अंग लाजं । * तिनं सस्त्र ग्रल्ले जुधं कित्ति काजं ॥
न काया न कामं धरे रामराजं । हवैं हाक सूरां कपैं काइराजं ॥
छं० ॥ १९ ॥

यचं विस्नुकान्ता जलं जान्हवीयं । वपुं उद्धरे कोटि सौ पाप कीयं ॥
वरैं रंभ वामं दुती साम कामं । मनों दाहिनाहत्त पीरंभ रामं ॥
छं० ॥ २० ॥

तिनं सस्त्र हल्लै जुधं कित्य काजं । हुवै हाक सूरं कपैं काइराजं ॥
भुरं द्वादसं आयुधं दंड धारै । तिनं नाम चंदं मु छंदं उच्चारै ॥
छं० ॥ २१ ॥

नसी तन्न चंसं ग्रहे सूल पासं । परस्सं असन्नी सकत्ती विकासं ॥
ग्रहे तून तोमार भल्ली कपानं । जुधं काज नालीक नाराज जानं ॥
छं० ॥ २२ ॥

सरं चक्र सारंग बज्रं गदायं । दंड मुद्गरं भिंडिमालं सघायं ॥
हलं मूसलं सेल सावल्ल पग्गं । ग्रहे सूरता अप्प अप्पन्न वग्गं ॥
छं० ॥ २३ ॥

छुरिका कती कन्न वंकी कुंतायं । [2]फलकं कनीका भुसुंडी वतायं ॥
लियं संक [3]दुस्फोटकं पारिघायं । पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं ॥
छं० ॥ २४ ॥

(१) मो. जर ।　　　　* यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।
(२) ए. कृ. को.-पलक्कं ।　　　　(३) मो.-दुस्पोटं ।

दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला।

गए दूत गज्जनै। साहि सम बत्त बदै वर ॥
तप सु छंडि तोंवरह। आइ हरद्वार लियन घर ॥
पहुमि मंडि प्रथिराज। राज अप्पै न इक्क तिल ॥
दैवादर चढ़ि साहि। भूमि लिज्जै सु उभय मिलि ॥
सुनि साह घाव नीसान किय। चढ्यौ सेन चतुरंग सजि ॥
हय गय समूह साकति सकल। अनंगपाल साहस्स कज ॥छं०॥७३॥

सुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन।

चढ़त साहि साहाब। चढ्यौ तत्तार खान वर ॥
षान षान [1]षुरसान। षान मारूफ महा भर ॥
कालिम षान कमाम। मीर [2]नासेर अभंगह ॥
अलूषान आलील। चढ़िय हय गय चतुरंगह ॥
सथ सयन सकल सारद्व [3]लष। उभय सहस मत मत्त इभ ॥
नीसान बज्जि नौबति निहसि। रहे गज्ज धर पुर सु नभ ॥छं०॥७४॥

छंद लघुनाराच ॥ चढ्यौ सहाब सज्जियं। निसान जोर बज्जियं ॥
मिले [4]सु साह उम्मरं। सजें अनूप संभरं ॥ छं० ॥ ७५ ॥
गयंद मद्द गंधयं। सुझै न राह अंधयं ॥
पगं ठिलै पहारयं। नगं परं निहारयं ॥ छं० ॥ ७६ ॥
सकाज बाज साजयं। कुरंग देषि लाजयं ॥
अनूप चाल उज्जवै। सद्धर चित्त रिझ्झवै ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए.-षुरसेंम। (२) ए. कृ. को.-नासेंन।
(३) ए.-लष, लष्षि। (४) ए. कृ. को.-जु।

दद्वि मट्टं भगं, हंस उड्डै मगं। मार मारं रगं, मुष्य बोले दगं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

लट्ट चट्टं परं, लथ्थ वथ्थं भरं। अंत ओनं झरं, जानि पन्नै सरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कट्टि पंडं गुरं, हथ्थ जंगं जुरं। जानि पित्ति पलं, चंच गिद्धी पलं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

ईस सीसं झलं, माल मध्ये [1]घलं। सूर जद्दों वलं, अब्भ तुच्यौ कलं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भूर भूपं मिलं, आयुधं अत्तुलं। .... ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ सार मार मच्ची कहर। दोउ दलनि सिर मंधि ॥
प्रौढ़ा नायक छयल रमि। प्रात न वंछै संधि ॥ छं० ॥ ३८ ॥

सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ सोमेश्वर भजि सूर। सूर उभझारिग झरि झरि ॥
सार फुट्टि चहुआन। भिरिय जद्दों भरि लरि लरि ॥
घरी एक तिन रत्त। सार मैंगल सिर वुट्ठिय ॥
संभर वैर सु आनि। सार भग्गि जु सिर तुट्टिय ॥
भग्गइय सूरमा दुहुं सयन। किहि न कोई बर चंपयौ ॥
उप्पारि लियौ अजमेर पहु। दागन [2]किहुं दीयौ गयौ ॥ छं०॥३९॥
हथ्थिय ढाल ढलकि। घालि लीनौ अजमेरी ॥
परि लंगा लंगरी। सेन दुज्जन दल फेरी ॥
भाग बीर प्रथिराज। अरिन उप्पारि स लीनौ ॥
इन सोमेसर राव। सत्त हथ्थिन बर कीनौ ॥
जिम तिमर सूर भंजै सुभर। गुरु गल्हान न कवि टरै ॥
जब लगै भूमि साइर [3]सुम्रित। तव लगि कवित सु[4] उब्बरै ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए.-धलं, वल। (२) मो.-किन। (३) मो.-सुमति। (४) मो.-विस्तरै।

तातार खां ने रात भर रहकर सवेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे।

कवित्त ॥ मिले षान तत्तार। बत्त मत तत्त रत्त वर ॥
दै निसान पहु फटत। चले पुर सोन उभै भर ॥
भए साह दल निकट। रष्षि जोजन जुग अंतर ॥
दई षबरि सुलतान। चढ़्यौ साहाब समंतर ॥
दस कोस अग्ग अनगेस कहूं। मिल्यौ जाइ साहिब सुहित ॥
बैठे सु उतरि अति प्रीति पर। भनहु उभै जन इक्क चित ॥छं०॥८४॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करै अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता।

पद्धरी ॥ सुरतान समिलि न्रप अन्नगेस। किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
गज पंच मत्त पंचास बाज। साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥
छं० ॥ ८५ ॥
किरवान [1]तीन कम्मान एक। सिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
दै प्रीति चढ़े निस्सान पाव। आए सु सोनपुर उभै ठाव ॥छं०॥८६॥

(१) ए.-तीन, संमान, सामान।

हो अनगेस नरेस। गई ढिल्ली धर जानं ॥
जा जियत राज धर पर बसिय। नीति न्याय न प्रकासियै ॥
नर नाग देव निंदैं सकल। न्रिप करंत तहँ बासियै ॥ छं० ॥ ४५ ॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा। मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए।

सुनिय तेज जाजुल्य। दूत परधान पठाइय ॥
हम भँडार धर धान। द्रब्ब सब्बह भरि लाइय ॥
व्यास बचन संभारि। कहै तब मंत्री पुच्छह ॥
देस क्रपौ धन आदि। राज ग्रहयौ गढ़ सब्बह ॥
न्रिप सेव देव दुज्जन उरग। इन ढिल्लै नन मुक्कियै ॥
वर बंध पुत्त अरु तात न्रप। इन बिसास धर चुक्कियै ॥ छं० ॥ ४६ ॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतहासिक घटनाओं का वर्णन।

धर काजैं कौरवन। पंड जानिय न [1]बंध गति ॥
धर काजैं [2]दसग्रीव। बंध बंध्यो भभियन मति ॥
धर काजैं नल राइ। बंधवन षेत न अप्पौ ॥
धर काजैं बलि राइ। देव देवाधि उथप्पौ ॥
धर काज मुंज चिय के कहै। भोज प्रहारन मत कियौ ॥
धर काज कन्ह तूंअर अधम। पुत्तह सै मुष [3]विष दियौ ॥ छं० ॥ ४७ ॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिया।

दूहा ॥ तुम तूंअर मति चूकना। करि किल्ली ढिल्लीय ॥
फुनि मत अप्पन ही करिय। प्रथीराज धर दीय ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे।

(१) मो.-बेध। (२) मो.-दशशीश। (३) मो. बसि॰।

पावै न तऊ दिल्ली सु थान। झुकि राय घाव कीनौ निसान॥
छं० ॥ ९७ ॥

पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला।

गाथा ॥ झुकि किय घाय निसानं। चढ़ि प्रथिराज वाज साजेयं॥
सब सामंत समेतं। दिय डेरा सु दोइ जोजनयं॥ छं० ॥ ९८ ॥

दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा। जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए।

दूहा ॥ देषि दूत गये साहि ढिंग। कही षबरि प्रथिराज ॥
चढ्यौ सूर संभर धनी। हय गय दल बल साज ॥ छं० ॥ ९९ ॥
सामत सूर समस्त वर। भय संसार विरत्त ॥
स्वामि ध्रम्म साधन सु बर। मरन लरन मन रत्त ॥ छं० ॥ १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुकम दिया।

अरिल्ल ॥ संभलि बत्त [1]चरं [2]सुलतानं। निहसे [3]वज्जि सु वीर निसानं ॥
भयौ हुकुम साहाब अमानह। सजहु अमीर उम्मरा षानह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा।

दूहा ॥ चर सु दिष्षि चहुआन कै। साह षबरि कहि राज ॥
सुनत राज प्रथिराज बर। चल्यौ जुद्ध कज साज ॥ छं० ॥ १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी।

(१) ए.-बरं। (२) कृ. ए.-सुरतानह, निसानह। (३) मो.-बज्जे।

कवित्त ॥ रे बसीठ मति [1]ढीठ। बोल बोलै मतिहीना ॥
सनेपात उप्पन्नं। किनें सक्कर [2]पय दीना ॥
[3]धर कर छुट्टी संगि। हथ्थ चढ्ढें मरदाना ॥
फिरि बंछै जो मूढ़। होइ ताही जिय ज्याना ॥
सट्ठीय बुद्धि नट्ठिय न्नप्रति। तुम [4]बिमत्ति दिन लहि कहिय ॥
उग्गमै सूर पच्छिम [5]अरक। तौ दिल्ली धर तुम नहिय ॥छं०॥५४॥

मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना।

दूहा ॥ सुनि यह बत्त सो दूत चलि। बिन आदर मन मंद ॥
हीन दीन दिष्षत इसौ। मनों कि [6]वासर चंद ॥ छं० ॥ ५५ ॥

मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावैगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए।

कवित्त ॥ [7]तूंअर वीर बसीठ। सामि संदेस सु अष्षिय ॥
तुम छ्त्तन कुसल। बत्त पहिलैं हम भष्षिय ॥
वह वलिष्ठ दैवान। दैत्यबंसी चहुआनं ॥
सूज अग्र उप्परै। देय नह तास प्रमानं ॥
तुम दई भूमि निज हथ्थ करि। अथ्थ मित्त नन षोइये ॥
संभरहि देस देसन न्नपति। तौ छ्त्त विगोइये ॥ छं० ॥ ५६ ॥

अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए।

(१) दीठ, ढाठ, धठि। (२) ए.-पर। (३) मो.-धर कर सेगिय बुद्धि।
(४) ए. कृ. को.-विपति। (५) ए. कृ. को.- परक।
(६) ए. कृ. को.-वासुर। (७) मो. तोअर।

गाथा ॥ मुष्ष सु रिष्षी ततारं । बांई दिसा षान मारूफं ॥
दाहिन षाँ षुरसानं । मद्धि अनगेस पुट्ठि साहावं ॥ छं० ॥१११॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया।

सजि ठट्ठौ सुलतानं । सुनि चहुआन अप्प व्यूहानं ॥
मुष कीनौ कैमासं । चावँडराइ पुच्छ सज्जायं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए।

दूहा ॥ मद्धि फौज प्रथिराज रचि । कह्यौ सु कर करि उंच ॥
अनँग राज जीवत [1]गहौ । इह सु रचौ परपंच ॥ छं० ॥ ११३ ॥

दोनों दलों का सामना हुआ कैमास ने युद्धारम्भ किया।

जिन सु हनौ अनगेस जिय । गहौ सु जीयत [2]सास ॥
इतें दुदल दिट्ठाल भय । लई षग्ग कैमास ॥ छं० ॥ ११४ ॥

दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा।

बिह दल बल सिंधू बजै । उपजत सूर उहास ॥
[3]ष्योहनि पर नष्षौ षयंग । करि कलकौ कैमास ॥ छं० ॥ ११५ ॥

कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धरम्भ किया। युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लई षग्ग कैमास बीरं अमानं । धमंके धरा गोम गज्जे गुमानं ॥
उतें उप्परी बाग तत्तार षानं। मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मानं ॥
छं० ॥११६॥

[4]वजे राग सिंधू सु मारु अवग्गे । गजे सूर सूरं असूरं सु [5]भग्गे ॥
चढ़े व्योम विम्मान देषंत देवं । वढ़ै स्वामि कज्जै सु सज्जै उभेवं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

(१) ए. कृ. को.-गहें गहै । (२) मो.-साह । (३) ए. कृ. को.-षोहनि ।
(४) ए. कृ. को.- वज्जे । (५) ए. कृ. को.-भज्जे ।

अनंगपाल बल मंडि। सुभर ढिल्ली गढ़ लग्गा ॥
लेहु लेहु करि दौरि। अप्प वर अप्प बिलग्गा ॥
नारि गोरि आतस्स। कोट पारस भर घाइय ॥
जे भर मंडे आइ। सोर करि मोर उठाइय ॥
लग्गै न घात तूंअर न्रपति। दिवस च्यार मंडिय ररिय ॥
पुज्यौ न मान पानय घटत। दिल्ली धर ढिल्ली करिय ॥ छं० ॥ ६० ॥

हार कर अनंगपाल का फिर वद्रीनाथ लौट जाना।

चौपाई ॥ दीह च्यारि ढिल्ली न्रप भारी। बर चहुआन संमुहे हारी ॥
गोतं चर फिर रावर छंडिय। वद्री छोर सरन ग्रह मंडिय ॥छं०॥६१॥

आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया।

अनगपाल पंडिय गयौ। सैन सु वंधिय यट्ट ॥
अद्ध सेन अजमेर पर। [1]टारे हथ्थ सुभट्ट ॥ छं० ॥ ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा।

बीर बसीठ सुमंत मिलि। स्वामि बचन [2]समुझाइ ॥
मतौ मंडि चहुआन कौ। माधो भट्ट चलाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला।

माधो भट्ट सु मुकल्यौ। मिल्यौ जाइ सुलतान ॥
चढ्यौ साहि गोरी सुवर। मिलि वंधन चहुआन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
तूंअर अरु चहुआन के। [3]घर बज्यौ वहु दंद ॥
माधौ भट्ट सु मुकल्यौ। वर गज्जनै नरिंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) मो.-टारिग। (२) मो. मम काय। (३) कृ.-धर।

उभै मीत मानैां रहे लग्गि छत्ती। पछें भीर सामंत की आइ पत्ती ॥
षुरासान मारूफ तत्तार जोरी। करें एक फौजं धप्पी साहि गोरी॥
छं० ॥ १२७॥

इत चहुआनं भुजा के भरोसैं। मनों [१]लंघनो सिंघ तुट्टो सरोसैं॥
[२]गढ़ं इंद्पथ्थं सु हायं सु कज्जें। उभै दोन जुट्टे करे पग्ग धज्जें॥
छं० ॥ १२८॥

रसं लूक लग्गै हुए टूक टूकं। रिनं पत्त पट्टैं [३]पुराने अचूकं॥
थटे जाइ आघाट बैकुंठ थानं। मिथ्यौ नट्ट गोटा जिसौ आव जानं॥
छं० ॥ १२९॥

बरं चंग चंगें परी हूर हूरं। रचें रुंडमालं महेसं गरूरं॥
सिवा ओन [४]धप्पी सु कोनौ डकारं। करें षेचरा भूचरा किल्लकारं॥
छं० ॥ १३०॥

उड़ै रेनं गेनं भयौ अंधकारं। पराए न अप्पं न सुझ्झै लगारं॥
इसो भांति भारथ्थ मंतो करूरं। घरी च्यार पंचै रह्यौ रथ्थ हूरं॥
छं० ॥ १३१॥

हरद्वार लों जाइ लायौ सु भग्गौ। सबै सेन भग्गौ तिनं लार लग्गौ॥
रह्यौ पातिसाहं भुजं लाज झल्लै। षरं षंचि साइक्क छंडै सु भल्लै॥
छं० ॥ १३२॥

गनें कौन नामं अनेकं फवज्जं। लग्यौ दाहिमा कै तुरंगम्म कज्जं॥
बड़गुज्जरं कम्मधज्जं पुंडीरं। छलं पारि दोन्यौ करे नाहिं सीरं॥
छं० ॥ १३३॥

धरे सिप्परं अड्ड ह्वै काल भेसं। लियौ संग्रहै चौंडरा गज्जनेसं॥
फटे पारसं सत्त साहस मीरं। परें पंचसै षेत हिंदू सु बीरं॥
छं० ॥ १३४॥

उभै पाहुने कौन चंदं प्रकासे। ढले मुष्ष मंगे प्रथीपत्ति पासे॥
छं० ॥ १३५॥

---

(१) ए.-लंघलं, लंघने,लंघनं। (२) मो.- प्रति "हकं एक एकं सहायं सु कज्जे"।
(२) मो.-सही कें।
(३) ए. कृ. को.-पीनौ।

अपिपत्र सु पढ़मि तुम उदक सह। सो पाओ दूजै जनम॥
तप्पौ सु जाइ बद्री तपह। मत विचार राजस मनम॥ छं० ॥ ६९ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह। कहैं जिन [1]मत भरमावहु॥
सत्त ध्रंम साहस्स। काइ पर कहैं गमावहु॥
सामंतनि सुलतान। बार बहु गहि गहि छंड्यौ॥
उन अपत्ति के सथ्थ। सपति तुम मत्त सु मंड्यौ॥
जिम लग्गि जन्म विधवा चरन। अप समान होवन कहै॥
मंगौ सु द्रव्य कारन स भ्रम। कछू अप्प चित्तह चहै॥ छं० ॥ ७०॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सँदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल॥ सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह। कथ्थि अनग सम सकल दिचारह॥
सुनत श्रवन अति रोस [2]भ्रुकित मनु। जिम सु सिंघ दुक्कत कुलिंग जनु॥
छं० ॥ ७१ ॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को ग़ज़नी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त॥ अनँगपाल भ्रुकि आप। दूत ढिंग हुंते साह जे॥
तिनहि कह्यौ तुम जाइ। कहौ साहब लिप्पौ ते॥
दिय पत्र [3]तिन हथ्थ। धरा देत न बहुआनह॥
तुम आवहु, चढ़ि अतुर। कूंच पर कूंच मिलानह॥
मिलि अप्प एक एकह सुमंति। लरि सु लेंहि दिल्लिय धरा॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिवर। अब सु पाँइ लप्पें परा॥ छं० ॥ ७२॥

(१) ए. कृ. को.-मन। (२) ए. कृ. को.-झुकत। (३) ए. कृ. को.-फुनि।

आन्यौ साहि हजूर। मिल्यौ प्रथिराज राज वर॥
बैठि साह साहाब। मुष्य देषैं जु [1]सुभर भर॥
बोल्यौ जु राज प्रथिराज वर। अनँगराइ तुम अति सुमति॥
भरमौ सु केम कहिं साहि कौ। इह तौं [2]पति उत्तरि अपति॥
छं०॥ १३८॥

दूहा॥ कहै राज प्रथिराज गुर। सुभर बोलि वर अग्ग॥
अनँग सीस उंच न करै। नाग दमन सिर नग्ग॥ छं०॥ १३९॥

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है।

कवित्त॥ कहै [3]गज्जि गहिलौत। कहूं सामंत सुनौ सहु॥
अप्प अनी [4]एकंत। [5]असुर सुरतान वही कहु॥
समुद सजल जल धार। ससी लग्गौ सु कलंकह॥
सूर गिलै रस राह। पंथ लुट्टाइ गोय बहु॥
दसरथ्थ आप काक सु विक्रम। दइ दिवान विपरीत गति॥
पतिसाह कही सुनतें सकल। अनगपाल नट्ठी सुमति॥ छं०॥१४०॥

चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है।

दूहा॥ बदै राइ चामंड बर। इह अवस्थ होइ अंग॥
जब सु मानसर तजि करै। हंस काग कौ संग॥ छं०॥ १४१॥

सामंतों ने जितनी बातें कहीं सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला।

जिते वचन सामँत कहे। तिते सहे अनगीस॥
पील चीलह सम सुनि रह्यौ। उथ्यौ न ऊरध सीस॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खि़ल्लत) देकर छोड़ देना।

(१) मो.-सुर सुभर। (२) ए. कृ. को.-पाविं (३) कृ.-गाजि। (४) मो.-एकंग
(५) ए. कृ. को.-असुरन नं निबही कहूं।

रजोद मोद उप्पली। सपूर सूर पप्पली॥
रिधं सु साहि आतुरं। कंपें सु अंग कातरं॥ छं०॥ ७८॥

लगन्न छीन उल्लहं। पॅड़े जु दूरि दुल्लहं॥
न आन पान जानयं। उड़ान ज्यौं सिंचानयं॥ छं०॥ ७९॥

करंत इल्लगारयं। सु आप सिंधु पारयं॥ छं०॥ ८०॥

सिन्धु पार उतरकर, वीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने तातार ख़ां को अनंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा। तातार ख़ां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल वड़े हर्ष से उससे मिला।

कवित्त॥ सिंधु उतरि सुरतान। कह्यो सम पान ततारह॥
तुम अनगेसह लैन। जाहु जँह तॅह हरिदारह॥
सहस वीस लै सेन। अनॅग सम मिलिय सोनपुर॥
विलम करहु जिन बहुत। अभँग सजि आवहु आतुर॥
करि नवनि पान तत्तार चलि। पहुँच्यौ हरद्वारह सहर॥
करि पवरि तब्ब अति प्रीत तन। मिल्यौ राज अनगेस वर॥
छं०॥ ८१॥

अनंगपाल ने वहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई की तयारी की।

दूहा॥ तहँ तोंअर अनगेस न्नप। लए मोल वहु वाज॥
उभय सहस सेना सजित। रष्पि सुभर किय साज॥ छं०॥ ८२॥

तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए।

सत्त तीन भर सुभर जे। निज वैराग सरूप॥
तिन बंधी तरवार फिरि। वदलि भेप वहु रूप॥ छं०॥ ८३॥

अरिल्ल ॥ तब सुमंत परधानह पुच्छिय। कहौ मंत्र मंत्री मत अच्छिय ॥
किहिं विधि क्रम्म ध्रम्म जस रष्षै। सुनि परधान एह विधि अष्षै ॥
छं० ॥ १४८ ॥

मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिए।

दूहा ॥ अनगपाल तिन पावि ग्रह। अरु बर बंधव साल ॥
हृद्ध जोग वपुजोग धरि। चंपि जरा अरि काल ॥ ॥छं० ॥१४९॥
जोगिनपुर प्रथिराज कौ। दैव दियौ दिन वित्त ॥
मोह बंध बंधन तजे। ध्रम क्रम कीजै चित्त ॥ छं० ॥ १५० ॥

मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इस की चिन्ता न कीजिए।

कवित्त ॥ न रहै सर वापीय। अनुप गढ़ मँडप वहुज्जं ॥
न रहै धन वन तरुनि। कूप प्रवत फिरि छज्जं ॥
न रहै ससि रवि भोम। जाइ [1]थावर अरु जंगम ॥
न रहै सात समंद। धरै भंजय सोइ अंगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम। प्रलै इहै सो दिष्षियै ॥
राषौ न चिंत आचिंतका। जीमन मरन विसिष्षियै॥ छं० ॥१५१ ॥

रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्यास जी कहें सो करो।

पुनि बरज्यौ न्रप चीय। जीय तिय [2]तीय उतारिय ॥
तजिय मान घरवार। पुच्छयौ व्यास हँकारिय ॥
चाहुआन अरि भज्जि। होइ धर अनग नरेसं ॥
पंच नदी करि अद्ध। बंटि अप्पै अध देसं ॥

---

(१) ए.-अवर अंवर। (२) मो.-मीस।

मिलि साह अनग बैठे सुमत्त । तत्तार षानषाना सुचित्त ॥
कहि अनगपाल न्रप पुब्ब कथ्थ । चहुआन मन न मानैं समथ्थ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

जंपै सु साह चढ़ि चलौ प्रात । भंजे सु जुग्गनिय पुरह जात ॥
जो मिलिह अप्प चहुआन आनि । दीजै तौ उभय मिलि प्रान दान ॥
छं० ॥ ८८ ॥

मंनी सु राज अनगेस मन्न । उच्चर्‍यौ तांम तत्तार पन्न ॥
देषो सु अप्प दूतह पठाइय । लिष्यौ सुवत्त सम विषम दाई ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चर चारु चाहि हक्कारि लीन । लिपि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन ॥
अनगेस पुच्छि सुत तुम्म अप्प । तुम समपि राज गय बद्रि तप्प ॥
छं० ॥ ९० ॥

करि तप्प आइ फिरि अन्नगेस । दिज्जै सु इनहि हय गय सु देस ॥
आनौ न चित्त चहुआन और । जग्गे सु सामि न विरस्स चौर ॥
छं० ॥ ९१ ॥

भुगई न जाइ पर लेइ बस्त । समपौ सुराइ आनग समस्त ॥
गे चार पहर चारै सु गोइ । कबहूं न धेन वर धनी होइ ॥ छं० ॥ ९२ ॥
यनवार अस्व सौंपै सु राज । ना होइ ओय पति तास बाज ॥
कारसनी छप्पि रष्यौ सुभाय । तिन भोग सुभर रावर [1]सुभाय ॥
छं० ॥ ९३ ॥

अप्पौ सु देस अनगेस रस्स । जिन करौ अप्प मझ्झह विरस्स ॥
भयें विरस सुष्प पावै न कोइ । हम देत सीप तुम हितू होइ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

भये वीरस सुष्प कह भयौ षंड । कुल सकल नास भौ वप्पु षंड ॥
अप्पौं न भूमि जो जीय सुद्ध । तौ सजहु आनि इन समहि जुद्ध ॥
छं० ॥ ९५ ॥

ढिय पत्र दूत प्रथिराज जाइ । सुनि श्रवन अप्प बहु दुष्प पाइ ॥
अनगेस राज सुलतान जोर । ऐसे जु सजे कोटिक ओर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-सुजाय ।

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठ कर तप और भगवान का भजन करूं, पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं।

कवित्त ॥ अनगराइ अति सेव। करै प्रथिराज राज अति ॥
मास एक द्वष वित्त। बहुरि उपजी सु राज मति ॥
कह्यौ पुचि सुत सभह। मोहिं मुक्कलि बद्री दिस ॥
तहां [1]बपु साधन करौं। धरौं [2]हरि ध्यान अहो निसि ॥
बोल्यौ सु राज चहुआन बर। रहौ इहां साधन करौ ॥
तप तुला दान धर्मह बिबिध। ध्यान ग्यान हिरदै धरौ ॥
छं० ॥ १५६ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही। तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया। अनङ्गपाल वहां जाकर तपस्या करने लगा।

कही सुत्त सोमेस। राज अनगेस न मानी ॥
बपु साधन तप काज। बद्रि दिसि मनसा ठानी ॥
तब पुची बर पुच। लष्ष दह द्रब्य सु अप्पौ ॥
सत अनुचर इक जान। बिप्र दस एक समप्पौ ॥

(१) मो.-तप। (२) ए.-अहि।

चोटक ॥ सजि साज चल्यौ प्रथिराज वरं । सत सामत सूर सपूर भरं ॥
विरदैत महावर वीर वली । तिन सौं किन आत न रार कली ॥
छं० ॥ १०३ ॥

[1]परसैं भिरि भारथ पारथ से । न वदैं अप ऊपर आनन से ॥
जुध कौं तिनके मुष कौंन जुरे । न मुरें मुष धार अनी सुमुरे ॥
छं० ॥ १०४ ॥

सजि साहन सैंन हजार दसं । रह सेर सवान सु वीर रसं ॥
गज [2]सत्त दसं मुर मत्त गजै । तिन देषि बंध्याचल पब्ब लजै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
घमके घन घुघ्घर घंट वनं । भननंकत भौरनि झौर भनं ॥
गति देषि तुरंग कुरंग दुरें । तिन के उर अठ्ठन कोट परें ॥ छं० ॥ १०६ ॥
चहुआन चल्यौ चतुरंग दलं । सजि भैरव भूत विताल वलं ॥
चर चौसठ जुग्गिनि सथ्थ चलीं । किलकैं करि भारथ वैर रलीं ॥
छं० ॥ १०७ ॥

चमकंत सनाह सु जोति इसी । सु करं मधि मूरति विंव जिसी ॥
सजि टोप रंगावलि [3]हथ्थ लयं । वनि राज सु [4]पष्षर सा [5]वलयं ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दोइ कोस रह्यौ विच साहि दलं । चहुआन निसान वजे सवलं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया ।

दूहा ॥ सजि आयौ चहुआन जुध । सुन्यौ श्रवन पतिसाहि ॥
हुकम पान उमरान हुअ । सज्यौ अंग सन्नाह ॥ छं० ॥ ११० ॥

आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया ।

(१) मो.-पर्सें ।　(२) ए. कृ. को.-सत्त मुरं मदमत गजै ।
(३) ए.-हाथ ।　(४) मो.-परकर ।　(५) मो.-वनयं ।

छुटे नाल गोला हवाई उछंगं। [1]न पिंनं मनों जानि [2]तुट्टे निहंगं॥
करघ्ये चलै बान बानं कमानं। भई अंध धुंधं न [3]सुभ्भैति भानं॥
छं० ॥ ११८॥

मिले सेल भेलं समेलं अपारं। सनाहं फटें होय होवत्त पारं॥
मदं मत्त दंतं उपारै मसंदं। मनों भिल्लिया पब्ब उष्पालि कंदं॥
छं० ॥ ११९॥

लगै नाग नागं मुपी सूर ऐचै। हथनापुरं जानि वल्लिभद्र पैचै॥
झरं ओझरं झार झारं झनंकै। करै गज्ज चिक्कार [4]ताजी किनंकै॥
छं० ॥ १२०॥

छत्रं पूरनं जाम मध्यान जंची। मिले दिट्ठ तत्तार आनंग मंची॥
चलै मातुलं ओर हक्कै कमासं। हन्यो पान पग्गं पहुंचे हहासं॥
छं० ॥ १२१॥

तकै तूंवरं पै लयौ गज्ज राजं। धपे दाहिमा पागरा छंडि वाजं॥
जरी सेल गाढ़ी विचं [5]पीलवानं। वियो घाव कीयौ सु कड्ढै कृपानं॥
छं० ॥१२२॥

कटी दंत लौ सुंड लोही भभक्कै। मनों सारदा कंदरा थी उवक्कै॥
पन्यो कज्जलं कूट ज्यौं तूटि हथ्थी। तजे तूंअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी॥
छं० ॥ १२३॥

भगंदंत वाली किधौं सु प्रतीकं। महा दिग्घ कायं अरज्जुन्न झीकं॥
दवी द्वादसं कोस भू घंट मद्धे। पढ़े वेद बानी पुरानं प्रसिद्धे॥
छं० ॥ १२४॥

पन्यौ दाहिमा भीम ज्यौं गोल कूंडै। घटो काल पथ्यं न सथ्यं उमंडै॥
अलुझ्यो पगं अग्ग में इभ्भ राजं। हरी जेम कूदे करी मध्य गाजं॥
छं० ॥ १२५॥

किलावा रह्यौ पग्ग में लग्ग पासी। ग्रह्यौ जीवतौ बद्रिकाश्रम्म वासी॥
सनद्धं रहि कढ्ढियं अद्ध विद्धी। चढ़ी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी॥
छं० ॥ १२६॥

(१) ए. कृ. को.-नछत्रं। (२) मो.-छुट्टे। (३) ए. कृ. को.-सुझ्झेसु।
(४) मो.-बाजी (५) मो. कृ.को.-पति।

शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई सात हज़ार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए।

कवित्त ॥ बंधि साहि साहाब। लियौ चावंड राय बर ॥
हय कंधह लै डारि। गयौ निज सथ्थ सेन नर ॥
नीर उतरि पतिअसुर। पेत ढुंढ्यौ प्रथिराजं ॥
मुसलमान सत सहसं। परे सामथ करि काजं ॥
पंच सै सुभर हिंदू सु परि। उभै सत्ति भोरी सु जगि ॥
जित्यौ सु राज सोमेस सुअ। [1]घनै जैत वज्जै वजिग ॥ छं० ॥१३६॥

पृथ्वीराज का सुलतान को क़ैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उन के पैर पड़ना।

मुसलमान धर गह्नि। दाग निज सुभर दिवायौ ॥
लियें जीति प्रथिराज। समह सामंत घर आयौ ॥
सभा बैठ भर सुभर। कह्यौ कैमास राइ गुर ॥
अनगेसह लै आउ। चल्यौ मंचीं सु लेन घर ॥
आन्यौ सु राज अनगेस तंह। प्रथीराज लग्गौ सु पय ॥
सनमान प्रान अति प्रीति सों। भाव भगत राजन करय ॥ छं० ॥१३७॥

दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ?

दियौ हुकम दाहिम्म। ल्याउ दीवान साह कहु ॥
सब देषें सामंत। मुक्कि आनन अपत्ति बहु ॥

(१) ए. कृ. को.-वजै।